सन्तों की महिमा

लेखक :

गणेश नारायण खन्ना (मुलतानी)

वर्तमान निवास :
सुरेन्द्र सोप फैक्ट्री
गली नं. 4/254, राजा पार्क
जयपुर–302004

दूरभाष : 46882

प्रकाशक

श्री जयगोपल खन्ना मेरा भतीजा, निवास : खन्ना कुटीर 18, बापू भाई विशी रोड़, विलेपारले (पश्चिम) बम्बे, 56, दूरभाष : 6140636, 6143534, आफिस : अजन्ता प्रिन्ट आर्टस, 52, नाथ माधव पथ (खट्टर गली) बम्बे, 4, दूरभाष : 383496, 356224

श्री अर्जुनदास खन्ना, मेरा लघु भ्राता, निवास : खन्ना कुटीर 7/20, हेमराज मिशन मार्ग, गली नं. 2, ईस्ट पटेल नगर, न्यू देहली, दूरभाष : 586979 है।

दोनों का आदेश है कि पुस्तकें बिना शुल्क प्रत्येक को दी जावे।

लेखक : गणेश नारायण खन्ना (मुलतानी)
श्री सुरेन्द्र सोप फैक्ट्री,
गली नं. 4/254, राजा पार्क
जयपुर–302004

दूरभाष : 46882

दो शब्द

क्या आप चाहते हैं कि जगत में आप का यश हो ?

यदि हां, तो ह साधन अपनाओ, क्या ?

कम खाओ सात्विक भोजन, गम खाओ, कम बोलो, कम सोवो-

निवेदन

लेखक न कोई विशेष संस्कृत जानता है, न हिन्दी, ऊर्दू, गुरमुखी, केवल स्कूल में नौ कलास तक पढ़ा है-अत: इस पुस्तक "सन्तों की महिमा" यानि संतों के चमत्कार में मेरी जो त्रुटियां हों उसे मैं विद्वित जनों से क्षमा प्रार्थना करता हूं-मैंने इस से पूर्व पाँच पुस्तकें लिखी हैं-(1) जीवन-मृत्यु रहस्य (2) प्राचीन संस्कृति वर्त्तमान संस्कृति से श्रेष्ठ थी (3) मन को शांत कैसे करें (4) आध्यात्मिक शिक्षा का गुरु (5) सत्य की खोज—अब संतों की महिमा जो आप के हाथ में है-भारत के संतों को सब देशों में बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है-भारत में बहुत ऊँचे-ऊँचे सिद्ध व चमत्कारी संत हुए हैं—सभी संतों के जीवन में ऐसी-ऐसी अद्भुत घटनाएँ मिलती हैं, जो विश्व को एक नया मार्ग दिखा सकती हैं—उन के वचनों का कहना ही क्या है ! उसमें जितनी गहरी डुबकी लगावें, उतने ही मूल्यवान रत्न हाथ पड़ेंगे-भारत के सन्तों ने परमात्मा की प्रकृति यानि माया, नेचर, कुदरत के ऊपर अपना अधिपत्य स्थापित कर रखा था-भारत के सन्तों के वचन कभी भी मिथ्या नहीं जाते थे-यहाँ के सन्त वर तथा शाप देने में पूर्ण समर्थ थे-भारत में अब भी वर्तमान समय में ऐसे सन्त हुये हैं जिन्होंने सागर में डूबते हुये जल पोत को सही सलामत किनारे पर लगा दिया है- जलते वायुयान को अपने उतरने वाले एरोड्रम तक सही सलामत पहुंचा दियाहै—यहां के सन्त मृतक प्राणी को जीवित और जीवित को मृत्युवश कर सकते थे-अत: उन को वाक्य सिद्धि

थी-इसलिये कहा है कि "सिंह गमन, साधु वचन, कदली फले एक बार । त्रिया तेल, हमीर हठ्ठ, टरे न दूजी बार ।। अर्थात सिंह अपनी सिंहनी का समभोग सारी आयु में केवल एक बार करता है-केले का वृक्ष भी केवल एकबार फल देता है, ऐसे साधु-संतों के वचन भी कहे हुये मिथ्या नहीं जाते हैं-ऐसे राजा हमीर का हठ्ठ भी था जो एक बार कह दिया सो अमिट हो गया-दूसरा विद्वानों का कहना है कि लड़का माता के कारण चरित्रहीन होता है-पिता के दोष के कारण मूर्ख-वंश के दोष के कारण कायर और स्वयं के दोष के कारण दरिद्री होता है-

दूसरा इस पुस्तक में मैंने कोई कहानी नहीं लिखी और न ही यह कोई उपन्यास है तथा न ही कोई नाटक है न ही कोई अफसाना है-न ही कोई जादूगरी है-यह तो सर्व सन्तों के चमत्कार ऐतिहासिक हैं-सन्तों के माता-पिता, जन्म स्थान, जीवन-मरण का समय, एवं उनके गुरुओं के नाम भी दिये गये हैं-यह कोई गलत या मिथ्या व गप नहीं है कई अनभिज्ञ इन्हें जादुगरी कहते हैं जब की यह सर्व सत्य है और ऐतिहासिक कसोटी पर परख कर लिखे गए हैं-अत: आप इन सर्व चमत्कारों को सत्य मानें इस में किंचित मात्र भो झूठनहीं हैं-अत: मेरी सर्व महानुभावों से सादर प्रार्थना है कि आप कृपया सर्व सन्तों के चमत्कार एक बार अवश्यमेय पढें, कारण आप को प्रत्येक सन्त का एक से एक नया अद्‌भुत चमत्कार देखने को मिलेगा, जिसे आप देख कर दंग रह जायेंगे-इस पुस्तक का अध्ययन करने से आप जीवन मृत्यु से मुक्त हो जायेंगे-इति श्री-

लेखक

गणेश नारायण खन्ना जयपुर-4

खन्ना वंशावली

अब मैं अपनी खन्ना वंशावली लिखता हूं-मैं अपने पूर्वज राजाराम से आरम्भ करता हूं-राजाराम अकबर के समय में थे, जिसे तीन सौ वर्ष से ऊपर हो गये हैं-पूर्वज राजाराम के पुत्र का नाम था श्री आशानन्द-आशानन्द के पुत्र का नाम सहाईराम-सहाईराम के पुत्र का नाम था भवानीदास-भवानीदास का पुत्र जगन्नाथ-जगन्नाथ का पुत्र हेमराज तथा नेभराज

प्रथम पूर्वज हेमराज के तीन पुत्र थे

1. सोभराज 2. दयालदास 3. तलोक चन्द

सोभराज के तीन पुत्र थे

1. तेजभान 2. चाननदास 3. आशानन्द

की सन्तान नहीं थी

1. हाकिमराय 2. गणेश नारायण (लेखक पुस्तक) ३. हर भगवानदास 4. दीनानाथ 5. अर्जुनदास

नं०3. 1. रामजी लाल 2. किशनचन्द 3. लच्छमनदास

2. दयालदास

1. लोकनाथ 2. हिमताराम 3. साधुराम 4. काशीराम 5. टाकनदास अब इनके पुत्रों के नाम नहीं जानता कारण मैं जयपुर आ गया था

3. तलोक चन्द

1. दौलतराम 2. भगवानदास 3. वीरभान 4. आत्म प्रकाश 5. मूलचन्द इन के पुत्रों का नाम मैं नहीं जानता—

1. तोताराम 2. जाँन्हींराम 3. छिणकूराम

1. तोताराम के बद्रीदास 2. हरूराम 3. रेमलदास 4. घरनी धर

1. जाँन्हींराम के मदनलाल 2 नन्दलाल

1. छिणकूराम का पुत्र रघुनाथराम

3. पूर्वज प्रीतमदास इन के पिता का नाम नेभराज था

लालचन्द दौलतराम इस की सन्तान नहीं थी

1. तौलाराम 2. राधाकिशन 3. रूपनारायण 4. रामचन्द 5. लच्छमन दास 6. नोताराम इनके पुत्रों का नाम नहीं जानता

4. पूर्वज भीम सैन में इन के भाई का नाम नहीं जानता

जुम्माराम थानाराम का एक पुत्र था नाम घन्नूराम

1. जुमाराम का पुत्र गिर्धारीलाल 2. गुलाव चन्द 3. उत्तम चन्द

5. पूर्वंज किशनचन्द आप का भाई भी नहीं जानता

रेराहीराम

बिहारी लाल　　हीरानंद

देवीदयाल　　मूलचंद, लखीराम, राधा किशन

6. पूर्वज का नाम नहीं जानता

बोधराज　राधा किशन　रतनलाल मैं इन के पुत्रों के नाम नहीं जानता कारण मैं 1930 में जयपुर आगया था–

7. पूर्वज का नाम नहीं जानता

माधोदास–माधोदास के पुत्र का नाम सुखूराम बच्चों को नहीं जानता

8. पूर्वज हरिराम

जुगलाराम　　गोकल चंद

गोवर्धनदास–धर्मचन्द। रामकिशन इनके पुत्रों का नाम नहीं जानता–

9. पूर्वज का नाम नहीं जानता

आपके पुत्र का नाम था मिलापचंद–इतना मुझे याद है। यह सब एक ही परिवार के भाई-भतिजे हैं–यह सब जन्म मरन की सूतक आपस में मानते थे–

लेखक
गणेशनारायण खन्ना जयपुर-4

सहाई वाले खन्ना जाती को जींन्हें ढाई घर खन्ना कहते थे उस का कुछ विर्वण देता हु–सहाई वाले खन्ना भी अपने बच्चों का मुण्डन तथा यज्ञो पवित संस्कार जिला

मिन्टगुमरी तहसील दिपालपुर (जो पाकिस्तान में है) में जाकर वहां श्री बाबालालू जसराय के मन्दिर में कराते थे-परन्तु वहां पर जाने में कोई साधन नहीं होता था-मार्ग में जगंलों में अक्सर डाकू यात्रियों को लूट लेते थे-इस भीषण दुःख को मिटाने के लिये इस जाती के पूर्वजों ने मुलतान में ही श्री बाबा लालू जसराय जी का मन्दिर बनवा कर यहां ही बच्चों के मुण्डन एवं यज्ञो पवीत का संस्कार करने लग गये थे-अब जो खन्ने दिपालपुर जा रहे थे उन्होंने दयालपुर न आने वाले खन्नों को गुरु छोड़ खन्ने कहना आरम्भ कर दिया था-श्री लालू जसराय खन्ना हिंग लाज में रहने वाले थे-एक बार जब आप पांच वर्ष के थे अन्य बच्चों के साथ खेल-खेल में लड़ पड़े थे-कुछ बच्चों की माताओं ने लालू जसराय की माता को जा कर शिकायत की थी-इन की माता ने क्रोध में आकर कहा कि जा निघड़ जा, निघड़ जा, का अर्थ है गुम हो जा, अर्थात मिट जा-पांच वर्ष के बच्चे ने कहा कि क्या माता मैं निघड़ जाऊं? माता ने कहा हां-हां निघड़ जा पुनः घर में एक खाली खड्डा था आप उस में कूद गये और सर्वदा के लिये गुम हो गये थे-पुनः वह कहीं भी नहीं मिले- अतः आप एक चमत्कारी दिव्य जीव थे-इसी कारण सर्व खन्ना जाती उसे अपना देव मानने लग गये थे-अत: बच्चों का मुण्डन व यज्ञोपवीत संस्कार उनके मन्दिर में करने लग गये थे-मुण्डनादि के अवसर पर इस प्रकार बाबा जी की भेंटें गाते थे-यानि "बाबाजी दी मनोए कड़ाई जिसने साढ़री आस पुजाई है-बाबाजी हिंग लाजूं आया है—मिश्री पताशा बावा खांदा नाहीं, खांदा ए लाचो दाना, जय बोल बाबाजी आया है, इत्यादि"-इति श्री

लेखक

गणेशनारायण खन्ना

वस्तुओं के निरख

मेरे जीवन काल में कुछ वस्तुओं के चकित करने वाले निरख निम्न प्रकार थे यद्यपि मेरा जन्म दिनांक 25.12.1899 का है, परन्तु निम्न निरख मुलतान में सन् 1910 के हैं—दूध खालिस एक रुपये का 12 सेर-दूध की ठोस मलाई 1/00 की एक सेर-मिठी दही 1/00 की 1/50 या 2 सेर-खांड 1/00 की 5 सेर-गेहूं शरबति फार्म 2/50 प्रति मन सूखी लकड़ी 1/00 की $1\frac{1}{4}$ मन-चावल बांस मति 1/00 के 6 सेर-मुंग 1/00 के 14/15 सेर-दालें 1/00 की 9/10सेर-लाल मिर्च 1/00 की 7/8 सेर-लठा सफेद चाबी छाप पन्ना 36" 1/00 का 4 गज-मलमल कच्चितार नं० 791 पन्ना 44" 2)/2) प्रति थान-खदर सफेद पन्ना 36"1/00 का 6/7 गज-धोति जोडा बारीकसूत पन्ना 44"22)/21)धोति जोड़ा मोटा सूत Rs1/75/1/85 पन्ना 44"-बूट मशीन मेड 3/75 रु०/3/85-देसी हाथ का बना 2/75/2/85—बूट कपड़े वाला 1/85/रु. 2 रु. अंगूर कोटा (बलोचिस्थान) 1रु. का एक सेर-बादाम गुल्ली मिठी 1रु. की $1\frac{1}{2}$ सेर-मिट्टी का तेल रु.2/25 रु 2/75 का एक टीन 20सेर वाला-सोना 24 कैरट 16रु. प्रति तोला-अशर्फि सोना फी रु./15 चांदि प्रति तोला 0/50 पैसे की। चांदी के रुपये पर उलटा 1/25 का प्रति सौ पर बटा था M.O. फी सौ पर रु. 1/00 थी पोस्ट कार्ड 1 रु. के 64 और लिफाफा 1 रु./ के 32 तनखा वहिखाता करने वाले मुनीम जो 10/11 घण्टे काम करे 30 रु. प्रति माह अब सन् 1930 में मैं जयपुर आ गया था—

अब जयपुर में सन् 1930 के कुछ वस्तुओं के निरख—घृत भैंस के दूध का बिना छाछ वाला 1 रु. का 2 सेर-घृत वें-जीटेवल पर बैन थी, परन्तु सन् 1949 में चोरी-चोरी आया 1 रु. का $1\frac{1}{4}$ सेर-तेल तिल्ली 1 रु. का 4 सेर-तेल सरसों 1 रु.

का $3\frac{1}{2}$ सेर-तेल गोला देहली में 10/11 रु. का एक टीन 16 सेर वाला-तेल महुवा देहली 9/10 रु. का एक टीन 16 सेर वाला - टीन-तेल अलसी कोटा (राजस्थान) रु. 6/$6\frac{1}{2}$ रु॰ का 16 सेर वाला—एक टीन-तेल मुंगफली काठियावाड़ 7/8 रु. प्रति 16 सेर वाला लकड़ी घोंख 4/5 रु प्रति क्विटल-वकरो का मांस 1 रु. का 4 सेर-फूल गोभी 1 रु. 16-17 नग-बेंगन 1 रु. के 5/$5\frac{1}{2}$ सेर,-आलू पहाड़ो 1 रु. के 3/50/4 सेर-, पालक 1 रु की 8/$8\frac{1}{2}$ सेर,-मूली 1 रु. की 19-20-जौ 1 रु. के 12-$12\frac{1}{2}$ सेर,-ज्वार 1 रु. को 14-15 सेर हलवाइ से पूरी घी की तली साथ में आलू का घोल तथा प्याज की चटनी व मय सर्विस 1 रु. की $2\frac{1}{2}$ सेर-दूध गर्म मय चीनी मय सर्विस 1 रु 5/$5\frac{1}{2}$ सेर-,नमक सांभरी पिसा हुआ 1 रु 16/17 सेर-, मुंग 1 रु. का 15/16 सेर चकला मकराना पत्थर 1/$1\frac{1}{4}$ रु. का एक-साबुन बहुत बढ़िया 1 रु॰ 4 सेर-कुछ घटिया साबुन रु. 1 का 8 सेर,-वैसा बहुत बढ़िया साबुन आज 20 का एक सेर भी नहीं मिलेगा-देहली से जयपुर मेल ट्रेन का टिकर 2/25 रु. 2-50 रु.-जयपुर से अजमेर मेल ट्रेन का टिकर $1\frac{1}{2}$/2 रु.-जयपुर से मुलतान का टिकट 5 रु. था- तनखा नौकर जो प्रातः 7बजे आवे और रात्री के 9/$9\frac{1}{2}$ को जावे-अपनी रोटी भी साथ लावे 7 रु. प्रति माह-किराय मकान एक कमरा मयटटी 25 पैस (चार आना) प्रति माह—था मैन रोड पर सरकारी जल के नल से यदि 16 घड़े पानी के प्रति दिन लावे एक माह तक लाती रहे, उसे 1 रु. प्रति माह देना पड़ता था। अतः इतनी तनखा होने पर भी केवल सस्ताई के कारण फिर भी मानव प्रसन्न था— तथा जेवर. कपडा व मकान वनवा सकता था—

इती श्री

लेखक
गणेश नारायण खन्ना

अनुक्रम

सन्तों की महिमा

यानि

चमत्कार—कारिश्मे

सन्त वह है जो परमात्मा का अनन्य प्रेमी है, और जो सतत् प्रभु का नाम जप करने वाला है, जो सदा एक रस रहने वाला है—जो संपूर्ण भूतों का हित चिन्तक है—जो सदा ब्रह्म परायण रहता है, और अपने को कर्त्ता नहीं मानता है—जिस का मन नवनीत की भांति नर्म है, तथा सर्व प्राणी मात्र पर निःस्वार्थ भाव से सेवा करता है, एवं बड़े से बड़े अपराधी को भी क्षमा कर देता है—वह सन्त होता है—सन्तों का कहना है व्यवसाय तथा धन्धा करना कोई पाप नहीं है किन्तु व्यवसाय में धन्ध में ईश्वर को भूल जाना पाप है। अस्तु—दूसरा बाबा अवतार सिंह कहते हैं कि "सन्त की प्रशंसा करना प्रभु को मान बड़ाई है.कहें अवतार सत प्रभु में भेद न बिल्कुल भई है॥" अर्थात अवतार सिंह कहते हैं कि परमात्मा को सन्तों से न्यारा कोई नहीं कह सकता है दोनों अभिन्न हैं—जैसे मनुष्य की परछाया मनुष्य से पृथक नहीं रह सकती है-गोसाई तुलसीदासजी ने कहा हैं कि "मेरे मन प्रभु अस विश्वास। राम से अधिक राम कर दासा॥ इसके लिये प्रमाण देते हैं कि राम तो एक सिन्धु के समान हैं परन्तु सन्त तो बादलों के समान हैं—संत तो रश्मि बन कर सागर के गुणों को ग्रहण कर के स्थान-स्थान पर उन गुणों की वर्षा करते फिरते हैं—संत अपनी मन मोहनी

वाणी से स्थान-स्थान पर ईश्वर के प्रेम रस की वर्षा कर रहे हैं-कारण प्रेम ही ईश्वर है-संत पुरुष जन-जन की सेवा करके ईश्वर से मिलान करवा रहे हैं-अतः ऐसे हो राम से अधिक राम कर दासा हैं—दूसरी वात यह है कि ब्रह्म को आप एक चन्दन का वृक्ष की भांति मानो जो मलयानिल पर्वत पर है, इसकी सुगन्ध हमारे किस काम की है, जब तक उस सुगन्ध को हमारे पास न लाया जावे—तब तक हमें उस सुगन्ध का आनन्द एवं ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है-तीसरी बात यह है कि सागर को ब्रह्म मानों जिसका जल खारा होता है, परन्तु सन्त रूप बादल जिसमें सागर का जल है जब अपनी अमृत वाणी की वर्षा करता है तो वह कितना मीठा एवं स्वास्थ-वर्धक होता है—सन्त ही नीरस निराकार को सरस करके, संसार में प्रकट करता है—इस लिये गोसांई जी कहते हैं कि

"निर्मल निराकार निर्मोही नित्य निरजंन सुख संदोही ॥" अर्थात निराकार परमात्मा निर्मल है—निर्मोहि है, एवं अनादि है, तथा अनन्त है, साथ ही साथ सुखों का समुद्र भी है-संत इस का अन्तिम स्वरूप तक ही आश्रय ग्रहण करता है, और स्वयं सुख के सागर में रहते हैं, तथा ससंर में भी इसे फैलाते हैं—इसी कारण से इस जगत में संत मिलने के समान और काई लाभ नहीं हैं—संत का मिलना तो प्रभु की अहेतुकी कृपा द्वारा होता है—संत का मिलना मानों परमेश्वर की कृपा से हुआ है—अतः तुलसीदास जी कहते है कि "संत समागम. हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोया। सुत, दारा, गृह लक्ष्मी पापी के भी होय ॥" तात्पर्य संत समागम, व हरि कथा अत्यन्त दुर्भल है—संत की कृपा से मानव सदा सर्वदा सन्तुष्ट

रहता है. एवं सुखी रहता है—उसका भय मिट जाता है, उस की कामना मिट जाती है–इसलिये कहा गया है कि

चाह मिटी चिन्तामिटी मनवा बे परवाह।
जा को कुछ चाह नहीं सोही सच्चा शाह"॥

सन्तों का कहना है कि परमात्मा की भक्ति से यानि नाम जप से जन्म जन्मानतरों के पाप कर्म फल भी यानि प्रारब्धियिक कर्मों के भावी कर्म फल भी गौण हो जाते हैं—जैसे कहा है कि

"सब कर फल हरि भक्ति सुहाई।
सो बिनु सन्त न काहू पाई"॥

दूसारा संत जगत में अपने लिये नहीं जीते है, उन का जीवन परोपकार के लिये होता है—अर्थात लिखा है "परोपकार संता विभूतय:"–जैसे नदी का जल और वृक्ष, अपनें फलों का सेवन नहीं करते हैं, वरन परोपकारार्थ दूसरों की सेवा करते हैं, ऐसे संत भी दूसरों की निःस्वार्थ सेवा करते हैं–संत तुलसीदास जी ने यह अनुभव करके कहा है कि

"तुलसी या संसार में झर-झर पौन अंगार।
संत न होते जगत में डूब मरता संसार॥

पुनः गोसाई जी कहते हैं कि

"सन्त सह हिं दुःख पर हित लागी।
पर दुःख हेतु असन्त अभागी"॥

सन्त का स्वभाव होता है कि वे दीनों व अनाथों पर दया करते हैं—राम चरित्र मानस में कहा हैं कि

कोमल चित दीनन पर दाया।
संत सहंज स्वभाव खगराया"॥

अतः सन्त कबीर जी कहते हैं कि ऐ मानव। मन इच्छाओं का भण्डार है, इस के अनुसार करते जाओं, करते जाओ यह शान्त नहीं होगा इसकी इच्छाएं सुरसा के मुख की भांति बढ़ती ही जाती हैं, जिस से असीम कष्ट भोगना पड़ता है—भौतिक लिप्सों में लीन व्यक्ति कभी भी सन्तोष नहीं कर पाता है, मन व मति, यानि बुद्धि के अधीन हो कर कर्म करने वाला इसी प्रकार दुःख भोगता है-इस असीम कष्ट से छूटने के लिये केवल सन्त पुरूषों की संगति एवं परमात्मा की भक्ति, तथा आत्म तत्व का ज्ञान ही एक मात्र साधन है—वैसे पुरुष को वासनाओं को सीमित करके प्रत्येक के साथ प्रेम करना एवं सह-योग करना चाहिये-अतः जोकर्म करो अनासक्त होकर पूर्ण करो इसलिये सन्तों का कहना है कि

"सनमुख हो हि जीव जब ही।
कोटि जन्म अघनास हु ं तब ही" ॥

शास्त्रों का कहना है कि "भग सकल ऐश्वर्य सेवनम् वा विधते तस्य सः भगवान्" अर्थात् जो परमात्मा है उसे तत्व से जान ले ने के बाद यदि उपासना की जाये तो इस जीवात्मा को इस लोक का सुख भोग करने के पश्चात परलोक का भी सुख मिलता है परमात्मा में मिल जाता है—इस जीव को उसी क्षण ज्ञान हो जाता है और वह अपने अ ंशी परमात्मा से मिल-कर मोक्ष पद को पाता है—इस लिये गोसाई जो कहते है कि

"राम कथा सुन्दर कर ताही।
संशय विहग उड़ावन हारी ॥

महर्षि वेदव्यास जी कहते हैं कि
"परोपकार पुण्याय, पापाय पर पीड़नम् ॥

अतः ऐसे सच्चे सन्त वन्दनीय हैं—ऐसे सन्तों को श्लाघा शारदा-शेष भी करने में असमर्थ हैं—स्वयं भगवान कहते हैं कि मैं भी ऐसे संतों के वश में हू तथा सन्त मेरे नाम का जप करता है मैं ऐसे भक्त का नाम जपता हूं अतः सन्तों की महिमा अपरम्पार है—संतों की संगति से राग-द्वेष, स्वार्थ एवं घृणा के दोष मिट जाते हैं-और परमात्मा की भक्ति प्राप्त होती है, एवं गुरु-माता-पिता की निःस्वार्थ सेवा करने की रूचि उत्पन्न होती है-सन्त परमात्मा पर अटल विश्वास द्वारा अन्तिम श्वास तक प्रभु पर अपना आसरा छोड़ता हैं-सन्त को किसी वेश भूषा का नाम नहीं है-बिना सदगुरु की कृपा से सुख-सुविधा प्राप्त नहीं होती है अतः पहले सदगुरु को धारण करे पीछे ज्ञान, कर्म व भक्ति करो, जैसे कोई फैक्ट्री के कर्मचारी पहले जब तक फैक्ट्री के रजिस्टर में अपना नाम अंकित नहीं करता है, वह यदि कड़ा परिश्रम भी करे उसे पूरी मजदूरी नहीं मिलेगी-यदि वह अपना नाम रजिस्टर में अंकित करा कर के कड़ा परिश्रम करेगा या कम परिश्रम करेगा उसे सुख-सुविधा पूर्व काल से अच्छी मिलेगी यह नियम है—ऐसे ही गुरू को रजिस्टर समझो पुनः ईश्वर का ज्ञान, कर्म, एवं उपासना परिश्रम साथ करो तब लाभ होगा—सन्त के लिये न कोई सगा न कोई बेगाना है, वह सब के साथ एक जैसा प्रेम करते हैं—अतः तुलसीदास कहते हैं —"जिन हर भक्ति हृदय नहीं आनि जीवत शव समान ते प्राणी ॥" गुरु नानक जी का वचन है कि

"अति सुन्दुर, कलीन, चतुर मुख ज्ञानी धनवन्त।
मृतक कहिये नानक सो प्रीति नहीं भगवन्त !!"

संत कबीर जी कहते हैं, कि

जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत विन प्राण" ॥

अर्थात परोपकार करना पुण्य है और किसी को पीड़ा देना पाप है—वास्तव में मानवता का अस्तित्व ही परोपकार की आधार शिला पर ही टिका हुआ है—आज तक संसार में जो भी मानव अमर हुआ है, वह परोपकार के कारण से ही हुआ है—संत के हृदय में जात-पात का विचार नहीं होता है-सन्त कहते हैं कि

"जात-पात पूछे न कोये।
हर को भजे सो हर का होए"॥

दूसरा कहते हैं कि

"ईश्वर, अल्लाह, गाड, वाहेगूरु इकही है सारे नाम।
किसी का दिल न कभी दुखाना हर दिल में रहता है राम"॥
सतगुरु के चरणों में देखो प्रेम का सागर है बहता।
नर पूजा नारायण पूजा मेरा सत्गुरु है कहता॥

गोसाई तुलसीदास कहते हैं कि

"जाने हु सन्त अवन्त समाना।
हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।
वहु प्रकार गावहि श्रुति सन्ता"॥

दूसरा संत सदा नम्रता में रहते हैं जैसे पहाड़ पर चढ़ने वाला झुक कर चलता है, परन्तु जब वह उतरता है तो शरीर अकड़ा कर उतरता है—इस का भाव यह है कि जब कोई झुकता है तो समझना चाहिये कि वह ऊंचाई की ओर जा रहा है, और जो अकड़ रहा है उस के लिये यही समझना चाहिये कि वह नीचे गिर रहा है—अतः ऐसे सन्त अकड़ते नहीं है-सदा नम्र रहते हैं—इसलिये सन्त कहते हैं कि

"सब का भला करो भगवान।
सब का सब विधि हो कल्याण"॥

दूसरा एक सन्त ने कहा है कि

"मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे।
किदाना खाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है"॥

अन्य सन्त पुरुषों का कहना है कि

"तेरा साई तुझ में है, ज्यों पत्थर में आग।
जो चाहे दीदार तो चकमक होकर लाग"॥

पुन: एक सन्त ने कहा कि

"तेरा साई तुझ में ज्यों पुहुन में बास।
कस्तुरी का मृग ज्यों फिर-फिर ढ़ूढ़े घास"॥

सन्त दादू दयाल कहते हैं कि

"दादू इस संसार में, दो रतन अमोल।
एक साईं, एक संतजन, इन का मोल न तोल"॥

स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती कहते हैं कि संसार में तीन वस्तुयें मिलनी अति दुर्लभ हैं, एक मानवि देह, दूसरी मुमुक्षुत्व यानि मोक्ष की प्राप्ति, तीसरा ब्रह्म निष्ठ सन्त अब अन्त में लिखते हैं कि भगवान कृष्ण स्वयं सन्तों के विषय में क्या कहते हैं—श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध, अध्याय 84 श्लोक 11/12 में भगवान कृष्ण श्री वासुदेव के यज्ञ में अपने वचनों द्वारा कहते हैं "केवल जलमय तीर्थ नहीं कहलाते और और केवल मिट्टी या पत्थर की प्रतिमायें ही देवता नहीं होती, संत पुरुष ही वास्तव में तीर्थ और देवता हैं, क्योंकि उनका बहुत समय तक सेवन किया जाये तब वे पवित्र करते हैं

परन्तु सन्त पुरुष तो दर्शनमात्र से ही कृतार्थ कर देते हैं—अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, वाणी और मन के अधिष्ठान देवता उपासना करने पर भी पाप का पूरा-पूरा नाश नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी उपासना से भेद बुद्धि का नाश नहीं होता, वह और भी बढ़ता है, परन्तु घड़ी दो घड़ी भी ज्ञानी संत की सेवा की जाये तो वे सारे पाप-ताप नाश कर देते हैं—क्योंकि वे भेद बुद्धि का ही नाश कर देते हैं—पुनः पुरुष को परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है—अतः संतों का जीवन त्यागमय है—वे अपने लिए तो कुछ नहीं चाहते हैं और न किसी से कुछ मांगते है—सदा लोक कल्याण की भावना से पूर्ण रहते हैं। उन्हें कभी कोई कुछ देता है तो वह उसे अभाव ग्रहस्थ प्राणियों को दे देते हैं। अतः यह है संत के लक्षण इसलिए संत तुलसीदास ने कहा है कि "एक घड़ी यानि 24 मिनट, आधी घड़ी-12 मिनट, आधी से पुनी आध-6 मिनट, तुलसी संगत साधु की कटे कोटि यानि एक करोड़ अपराध। दूसरा इस संतों की महिमा में आपको एक से एक बढ़कर चमत्कार पढ़ने को मिलेंगे। अतः इन शब्दों के साथ मैं इसे यहां विश्राम देता हूँ।

दूसरा सन्त कहता है कि पृथ्वी का देवता गणेश है—गणेश की उपासना से विघ्न नाश होते हैं—जल का देवता शिव है—शिव की उपासना से ज्ञान मिलता है—तेज तत्व का देवता सूर्य है—सूर्य की उपासना से निरोगी काया होती है—वायु तत्व का देवता माता जगदम्बा है—जगदम्बा की उपासन से धन मिलता है—आकाश तत्त्व का देवता विष्णु है विष्णु की उपासना से प्रेम बढ़ता है—

दूसरा महामना पंडित रामचंद ड़ोगरे जी का कहना है कि सन्त वह है जो शाप के बदले वरदान दे-सहन शीलता का निर्वाह ही साधुता है–अतः सहन करने वाले को सन्त कहते हैं।

सन्त सुन्दरदास जी कहते हैं कि

प्रेम लग्यो परमेश्वर सों, तब भूलि गयो सिगरो बारा।
ज्यों उन्मत्त फिरं जित हीतित, नेक रही न शरीर सँभारा॥

अब एक कथा डोगरे महाराज की लिखता हूँ—

सन्त जनों के लिये डोगरे महाराज जी का उपदेश के रूप में एक कथा

सत्य देव एक राजा था-एक दिन प्रातः काल जब सत्य-देव जागा तो उसने अपने घर से एक सुंदरी को बाहर जाते हुए देखा-राजा को आश्चर्य हुआ उसने पूछा कि वह कौन है-उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम लक्ष्मी है, मैं अब आप के घर से जा रही हूं-राजा ने मान लिया-कुछ देर बाद एक सुदंर पुरुष घर से बाहर निकला-राजा ने कहा कि यह कौन हैं-उसने कहा कि मैं दान हूं-जब लक्ष्मी यहां से चली गयी है तो आप दान कैसे कर सकोगे ? अतः मैं भी जा रहा हूं-राजा ने जाने दिया-फिर एक तीसरा पुरुष बाहर जाने लगा-राजा ने कहा कि यह कौन है-उसने कहा कि मैं सदाचार हूं-जब लक्ष्मी, दान ही न रहे तो मैं रह कर क्या करूंगा, अतः मैं भी जा रहा हूँ राजा ने अपनी अनुमति दे दी-पुनः एक सुंदर पुरुष बाहर गया तब राजा ने कहा कि यह कौन है-उसने कहा कि मैं यश हूं-जब लक्ष्मी-दान-सदाचार भी चला गया तो फिर मैं कैसे रह सकता हूं-राजा ने उसे भी जाने दिया-कुछ समय बाद एक सुंदर युवक घर से बाहर जाने लगा तब राजा ने कहा कि यह कौन है उसने कहा कि मैं सत्य हूँ यानि परमात्मा-जब लक्ष्मी-दान-सदाचार और यश नहीं रहा तो फिर मैं कैसे रह सकता हू-"राजा ने कहा कि मैंने तो आप को कभी नहीं छोड़ा सर्वदा मैं आपका स्मरण करता रहता हूं फिर आप मझे क्यों छोड़ कर जा रहे हैं-आप को अपने पास रखने

के लिये ही मैंने लक्ष्मी-दान-सदाचार एवं यश का त्याग कर दिया है, परन्तु आप को नहीं जाने दूंगा-अतः आप मुझ छोड़ कर नहीं जायेंगे वरना मेरा सर्वस्व लुट जायेगा-राजा की इस प्रकार की प्रार्थना पर सत्य नहीं गया-जब राजा के पास सत्य है—तो लक्ष्मी-दान-सदाचार तथा यश सब राजा के पास वापस लौट आये—इस कथा का तात्पर्य यह है कि जहां सत्य होगा वहां लक्ष्मी-यशादि सर्व स्थिर रहेंगे यह नीयम है-अब प्रश्न यह है कि सत्य क्या है-सत्य केवल आत्मा हैं—ब्रह्म है—परमात्मा है—नारायणहै, भगवान है-अतः इस लिये मैं ने भी लिखा कि सत्य की खोज करो जिसने सत्य को जान लिया वह ब्रह्म में सलग्न हो गया-पुनः नर यानि जीव और नारायण (ब्रह्म) में सम्मिलित हो गया। ऐसा पुरुष जीवन मरन से मुक्त हो जाता है। अतः संत को चाहिये सत्य का परित्याग न करे। यह श्री डोगरे जी का संत के लिये उपदेश है—

॥ इति श्री ॥

ा नारायण खन्ना
जयपुर-4

संत ज्ञानेश्वर

संत ज्ञानेश्वर का नाम ज्ञान देव था—आपके पिता का नाम विट्ठल पंत था जो कुलकर्णी ब्राह्मण था—और आप आये-गांव हैदराबाद के थे-आप की माता का नाम रूक्मणी बाई था-संवत् 1329 में रूक्मणी के एक पुत्र हुआ जिस का नाम निवृत्तिनाथ था—पुनःसंवत् 1331 में दूसरा पुत्र हुआ जिस का नाम ज्ञानोबा था तथा दो वर्ष बाद उनकी बहन मुक्ता बाई का जन्म हुआ था—निवृत्तिनाथ के गुरु गहिनी नाथ था—संत ज्ञानेश्वर ने अपने बड़े भ्राता को अपना गुरु बनाया और गुरु मंत्र लिया—संत ज्ञानेश्वर ने छोटी आयु में जो सर्व प्रथम चमत्कार दिखाया वह इस भाँति था—एक बार छोटी बहन मुक्ता बाई ने कहा कि आज मेरा दिल परांठे खाने को हो रहा है. संत ज्ञानेश्वर ने कहा कि मैं कुम्हार से मिट्टी का तवा ले आता हूं फिर परांठे बनाना-जब वह कुम्हार से बरतन लेने गया तो कुम्हार ने बरतन देने से इन्कार कर दिया, कारण वहां के ब्राह्मणों ने यह कह रखा था कि जो कोई इन भ्रष्ट लड़को की मदद करेगा तो उस का समाज बहिष्कार कर देगी, इसलिये कुम्हार ने बरतन नहीं दिये-जब ज्ञानेश्वर को बरतन न मिले तो बहन मुक्ता बाई ने कहा कि जाने दो भैया हमारे भाग्य में परांठे खाना लिखा ही नहीं है-तब ज्ञानेश्वर ने कहा कि आप मेरी पीठ पर ही परांठे बनाओ-पुनः ज्ञानेश्वर ने प्राणायाम के बल से पीठ को खूब गर्म कर लिया बहन को कहा कि आप परांठे बनालो तब बहन ने परांठे बनाये थे—यह है प्राणायाम का चमत्कार जो आज का विज्ञान नहीं जानता

है—इस सारी बात को एक विसोबा नाम का ब्राह्मन देख रहा था—सन्त ज्ञानेश्वर का यह चमत्कार देख कर अवाक रह गया और सन्त ज्ञानेश्वर के चरणों में पड़ गया—जब वहां के ब्राह्मणों को इस चमत्कार का ज्ञान हुआ तो बहुत ब्राह्मण उनके भक्त बन गये थे—हमारे शास्त्रों के अनुसार यह मर्यादा है कि जो एक बार सन्यासी बन जावे वह यदि कुछ समय बाद पुनः गृहस्थी बन जाता है तो उसका एवं सन्तान का समाज परित्याग कर देती है—एंसे उनको अछूत माना जाता है—इन तीनों बालकों के पिता ने सन्यास लेकर पुनः गृहस्थी बन गया था, इस लिये ब्राह्मनणों ने यह निर्णय लिया था कि कोई इन लड़कों की मदद न करे—ज्ञानेश्वर का चमत्कार देख कर पैठण के ब्राह्मण ने एक सभा करके इन की शुद्धि का प्रस्ताव रखा परन्तु कुछ ब्रह्मणों ने इन की और परिक्षा करने को कहा-पुनः एक ब्राह्मण ने कहा कि मैं एक भैंसे को पीटता हूं—आप कहते हो कि सब जीवओं में एक ही आत्मा (परमात्मा) है और एक प्राणी को दुःख देने से दूसरे को भी दुःख होता है और हम सभी उस ईश्वर के अंग हैं–यदि उस भैंसे के पीटने से तुम्हारे शरीर पर उस के निशान दिखाई देंगे तो पुनः हम आप को शुद्ध करेगें—ज्ञानेश्वर ने कहा कि "क्यों नहीं जरूर दिखाई देगें—पुनः एक भैंसे पर जोर-जोर से कोड़े लगाये—जब ज्ञानेश्वर कि पीठ देखी कोड़े के निशान बिल्कुल साफ दिखाई दे रहे थे–यह चमत्कार देख कर बहुत से ब्राह्मण तो मान गये परन्तु एक ब्राह्मण ने कहा कि यह तो जादू-टोनों से हो सकता हैं—यदि आप में सामर्थ्य है तो भैंसे से वेद मंत्र बुलवाओ-ज्ञानेश्वर ने भैंसें के सिर पर अपना हाथ रखा और बोले, बेटा, इन ब्राह्मणों को वेद मंत्र सुनाओं- भैंसे ने यह मंत्र बोला

यज्जाग्रतोदूर मुदैति दैवन्तदुसुप्तस्य तथै वैति।
दूरङ्गमञ्जयोतिषाञ्जयोतिरेकन्तन्नमे मन ÷ शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

यह अदभुत चमत्कार देख कर सब ब्राह्मण मान गये कि यह चमत्कारी पुरुष हैं अतः यह हैं संतो के चमत्कार जो आज का विज्ञान समझ भी नहीं सकता है—तब बड़ी खुशी के साथ उनको शुद्ध कर लिया गया-परन्तु साथ ही एक शर्त रखी गई कि यह विवाह नहीं करेंगे ताकि अपने वंश को न बढ़ा सकें, कारण कोई भी भविष्य में सन्यास लेने के बाद गृहस्थी न बने और नहीं ऐसी परिपाटी चलसके-अतः यह शर्त तीनों ने मान ली थी—अब संत ज्ञानेश्वर 16 वर्ष के थे जब उन्होंने श्री मद् भगवद गीता का मराठा में भाषय किया था-जो बाद में हिन्दी भाषा में अनुवाद हुआ था-दूसरा चाँगदेव नाथ का एक योगी जो चौदहसौ वर्ष का था गोदावरी नदी के किनारे रहता था-यह भी चमत्कारी महान् तपस्वी था-इसने जब ज्ञानेश्वर की कीर्ति सुनी तो बड़े अचंम्भे में पड़ गया उन्होंने सोचा कि ज्ञानेश्वर को मिलना चाहिये साथ ही यह भी विचार हुआ कि हमें भी अपने योग की झलक दिखानी चाहिये अतः वह एक बड़े भयावने शेर पर सवार हो गये और एक काले सांप को चाबुक बना कर बड़ी शान के साथ उनको मिलने गये—उस समय ज्ञानेश्वर संत अपने भाई व बहन के साथ एक खँण्डित दीवार पर बैठे थे जब उन्होंने चांगदेव को आते देखा तो उन की आगवानी करने के लिये उन्होंनें उस दीवार को कहा कि चलो हम सब को इसी तरह लेकर आगे बढ़ो-पुनः सचमुच वह दीवार चलने लगी-चांगदेव यह चमत्कार देख कर बड़े हैरान रह गये कि कि इन्होंने तो जड़ को भी चला दिया

यह था एक ऐसा चमत्कार जो आज वैज्ञानिक स्वीकार करने में हिचकिचा रहे हैं—यह देख कर चाँगदेव ने ज्ञानेश्वर के पैर पकड़ कर क्षमा मांगी और वापस चला गया—ज्ञानेश्वर संत ने कहा कि अब हम जल सामधि लेंगें अतः गोदावरी नदी में डूबकी लगाकर वह गुम हो गये थे यह संत ज्ञानेश्वर का विलक्षण चमत्कार-था इति श्री—

तिरुवल्लुवर

तिरुवल्लुवर का जन्म स्थान मद्रास मैलाजुर में
ाप भी निम्न वर्गीय कुल के जुलाहे थे कपड़े बुन
ा चलाया करते थे, परन्तु साधना और तपस्या में
ालों से भी कम श्रेष्ट नहीं थे आप सहन शील व
े उन्होंने तमिल साहित्य में बड़ा नाम पाया था
ाप साड़ियां बुन रहे थे तभी कुछ दुष्ट लड़के उस
जा रहे थे एक लड़के ने कहा कि इस सन्त को क्रोध
नहीं आता है दूसरे दुष्ट लड़के ने कहा कि मैं आज
त करता हूँ पहले लड़के ने पुनः कहा कि जब इन्हें
ा ही नहीं फिर आप कैसे इन्हें क्रोधित करेंगे दूसरे
क बुनी हुई साड़ी को उठाकर कहा इस साड़ी का
है सन्त ने कहा 'दो रूपये' उस दुष्ट ने उस साड़ी
ें से चीर दिया और पूछा इस एक टुकड़े का क्या
संत ने कहा 'एक रुपया' लड़के ने उस टुकड़े को
दिया और पूछा इस का क्या मूल्य है ? संत ने कहा
ाने' इस प्रकार वह लड़का साड़ी को फाड़ता गया
साड़ी का मुल्य घटता ही गया अंत में जब साड़ी
तार-तार हो गई और संत को क्रोध नहीं आया तो
र सर्व लड़के आश्चर्य चकित हो गये-संत के मुख पर
व क्रोध का भाव तक नहीं था अब यह दुष्ट लड़का
ाजय मान रहा था और लज्जित भी हो गया था
रूपये संत को देते हुये कहा 'लीजिये आप की साड़ी
परन्तु सन्त ने रूपये नहीं लिये और कहा कि मुझे

जो दो रूपये दे रहे हो लेकिन यह बताओ कि बदले में आप को क्या प्राप्त हुआ ? घर पर जब पिताजी पूछेंगे कि दो के बदले में क्या लाये हो तब आप क्या जवाब देंगे ? लड़के ने कहा कि मैंने आपकी साड़ी फाड़ दी है, आप को भी तो हानि हुई है- संत ने कहा कि मुझे सहनशीलता और क्षमाशीलता के गुण को और पक्का होने का अवसर मिला है पुनःलड़के ने क्षमा माँगते हुये कहा कि आप से अधिक मुझे लाभ हुआ है मैंने भी सहन शीलता का गुण ग्रहण कर लिया है यह संत का चमत्कार जो उसने क्रोध को जीत लिया था जो आज ऐसा पुरुष दुर्लभ ही मिलेगा अब संत तिरूवल्लुवर का एक और चमत्कार दर्शाते हैं संत ने एक ग्रंथ तमिल भाषा में 'कुरेल' नाम का लिखा था जिसे वहां के निवासी इसे वेदों के बराबर मानते हैं जब सन्त ने अपना यह ग्रंथ विद्वान ब्राह्मणों की सभा में रखा तब ब्राह्मणों ने इसे मान्यता देने से इन्कार कर दिया उन का कहना था कि यह ग्रंथ एक शूद्र संत की रचना है अतः हम इस को एक दिव्य रचना नहीं मान सकते हैं अतः यह समाज को स्वीकार नहीं है सन्त ने कहा कि आप सर्व पहले मेरे ग्रंथ को सुन लें बाद में निश्चिय करें परन्तु किसी ने यह बात स्वीकार नहीं की अब सन्त ने अपने ग्रंथ 'कुरेल' को एक नाव के एक छोर पर रख दिया था दूसरे छोर पर इन विद्वान ब्राह्मणों को बैठा दिया अभी संत उसी स्थान पर आये ही नहीं थे कि एक दम एक अनोखी घटना घटित हुई नाव धीरे-धीरे पानी में बैठने लगी नाव का वह भाग जिस पर यह ब्राह्मण बैठे थे, पानी में डूब गया और वह भाग जिसे पर 'कुरेल' ग्रंथ पड़ा था उस को पानी छू तक भी नहीं सका यह चमत्कार देख कर करतल ध्वनी हुई इतने में संत जी भी वहाँ पहुंच गये थे, उन्होंने भी इस घटना को अपनी आँखों से देखा तब पण्डित

ने कुरेल' को सुना था सर्व ने एक स्वर माना कि संत ने तो परमात्मा की प्रकृति को भी वश में कर लिया है जो आज का वैज्ञानिक ऐसे विज्ञान को नहीं जान सकता है 'कुरेल' ग्रंथ को सुन कर ब्राह्मणों ने कहा कि आप एक अछूत वर्ग के हैं इस लिये स्वीकृति नहीं दी थी परन्तु आप का ज्ञान और आत्म-चिन्तन सर्व श्रेष्ट हैं अतः सर्व ने कहा कि हम इस ग्रंथ को एक मत होकर स्वीकार करते हैं संत ने पूछा कि आप का स्वीकार करने का क्या आधार है ? पण्डितों ने उत्तर दिया कि यह ध्रुव सत्य है कि मनुष्य की तो जाति होती है उस के स्वभाव और कर्म पर वंश जाति से नहीं होती है अतः ज्ञान की तो कोई जाति नहीं होती है, इसी आधार पर सर्व नें स्वीकृति दी है तब संत शान्त हो गये–

"इति श्री'—

संत राका

सन्त राका कुम्हार था यह भी शूद्र था यानि अछूत था यह पंढरपुर में रहता था उस की धर्म पत्नी का नाम बंका था, और उन की कन्या का नाम बांका था यह सर्व परमात्मा के भक्त थे राका संत मिट्टी के बरतन बना कर अपनी तथा परिवार की जीवनी का निर्वाह करते थे सारा परिवार परमात्मा का भक्त था एक दिन संत की कन्या बांका चन्द्रभागा नदी पर स्नान करने गई-उसी घाट पर संत नाम देव की लड़की 'लिबा' बाई कपड़े धो रही थीं बाँका स्नान करने के बाद घाट पर आई, जहां लिबा बाई कपड़े धो रही थी, उस के छीटे बांका पर आने लगे तब बांका ने कहा कि बाई जी मैं स्नान कर के आई हूं, अब पूजा करने बैठूँगी तुमने मेरे ऊपर छीटे डाल दिये हैं उसी समय लिबाबाई ने अभिमान के साथ कहा कि तुम्हारे जैसे कुम्हार को ऐसा अभिमान नहीं करना चाहिये बाँका ने कहा, तेरे पिता तो साकाम भक्त हैं ऐसा एक ताना मारा-उस ने तो भगवान को जबरन भोजन खिलाया था मेरे पिता तो निष्काम भक्त हैं-लिबा बाई ने घर जाकर अपने पिता को सारा हाल सुना दिया नाम देव जी को इस में बड़ा अपमान प्रतीत हुआ उन्होंने तुरन्त मंदिर में जाकर भगवान श्री विठ्ठल नाथ जी से पूछा कि हे भगवान ! आप का भक्त जो राका कुम्हार है वह साकाम भक्त है या कि निष्काम भक्त है ? भगवान विट्ठलनाथ जी ने कहा कि इस समय उस जैसा और निष्काम भक्त कोई नहीं है नाम देव सन्त ने कहा कि मैं उस की परीक्षा लेना चाहता हूं दूसरे दिन प्रातः काल सन्त

नाम देव की प्रार्थना पर श्री भगवान विट्ठल नाथ व माता रूक्मणी जी के साथ निकल पड़े जहाँ राका, बंका उन की स्त्री व बाँका उन की कन्या सूखी लकड़ियाँ एकत्र कर रहे थे नाम देव ने भगवान विट्ठलनाथ जी को कहा, आप कुछ चमत्कार दिखाइये पुनः माता रूक्मणी जी ने अपने हाथ का एक रत्न जड़ित कंगन उस स्थान पर रख कर उस पर कुछ लकड़ियां रख दी सन्त राका ने जब लकड़ियाँ उठाई तो नीचे से एक रत्न जड़ित कंगन देखा उस ने सोचा पीछे मेरी स्त्री आ रही है वह कदाचित उठा न ले उन्होंने उस पर लकड़ियां डाल दीः पत्नी ने जब देखा कि यहां मेरे पति खड़े थे इस भावना से उसने लकड़ियां को हटा कर देखा तो उसमें एक रत्न जड़ित कगंन को देखा उसने सोचा कि यह तो अनर्थ की जड़ है, पीछे मेरी लड़की आ रही है, कदाचित वह न उठाले, ऐसा विचार कर उस ने भी कगंन पर मिट्टी डाल दी जब लड़की भी वहाँ पर आई उसने भी मिट्टी को हटा कर एक अद्भुत चमतकारी कगंन को देखा तब लड़की ने कहा कि हे ! प्रभु ऐसे अज्ञानी माता पिता के घर में क्यों जन्म हुआ जिन के मन से अब तक भी स्वर्ण और मिट्टी का भेद भाव नहीं मिट सका , ऐसा कह कर कन्या ने उस कंगन को हाथ तक नहीं लगाया कि मेरे लिये तो दोनों एक समान हैं वह सवर्ण और मिट्टी में भेद भाव नहीं रखती थी अब नामदेव को ऐसा दृढ़ निश्चय हो गया कि यह परिवार तो अत्यन्त वैरागी और ज्ञानी है अतः मैं इन को परम वैष्णव मानता हूं पुनः नाम देव जी ने संत राका जो शूद्र वर्ण का था उसे अपने हृदय से लगाया यह था एक संत का चमत्कार जिसे नाम देव जैसे संत भी मान गये थे—

सन्त भक्त पोतना

सन्त पोतना आंध्र प्रदेश के वासी थे—आप जब पांच वर्ष के थे तब उनको भक्तों व सन्तों से मिलने का प्रेम था—एक दिन आप चौदह वर्ष के थे तब आप एक बड़े मचान पर खड़े गुलेल चला रहे थे और गान भी कर रहे थे—उस समय एक योगी अपने शिष्यों के साथ वहां आये और कहने लगे कि हे बेटा! क्या यहां प्यासे को पानी मिल सकता है? हमें बड़ी प्यास लगी है, और हमें अभी बहुत दूर जाना है—तब वह लड़का मचान से नीचे आकर बोला कि आप मेरे साथ चलो—इस खेत में एक कुंड है, उसका पानी बहुत मीठा है, आप जी भरकर पी लीजिए—अब वह लड़का खेत में से कुछ ककड़ियां ले आया योगी व शिष्यों को खाने को दी—सबने प्रसन्न होकर खाईं—पुनः योगी महाराज ने कहा कि हे बेटा! तुम्हारा नाम क्या है, कहां रहते हो और तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? तब लड़के ने कहा कि मेरा नाम पोतना है, मेरे पिता का नाम केसना है, और मेरी माता का नाम लक्कमांबा है, और मेरे गांव का नाम एकशिला है—पुनः योगी ने कहा कि हम तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं तुम जो चाहो वर मांग लो—लड़के ने खुश होकर कहा कि मुझे तो परमात्मा की कृपा चाहिए—भक्ति का वर मांगने पर योगी उस लड़के पर प्रसन्न हुये, और कहा कि तुम क्या कुछ पढ़े हो? लड़के ने कहा कि मैं पढ़ा हूं—मैंने महाभारतादि पढ़ लिए हैं—फिर योगी ने पूछा क्या तुम कविता भी करते हो? लड़के ने कहा कि

जी हां, थोड़ी-थोडी कविता करता हूं—योगी बोले ठीक है वह हमें सुनाओ—तब उसने अपनी कविता जो मराठी भाषा में थी सुनाई, जिसका तात्पर्य था कि "हाथ थक जाने तक जो भगवान शिव की पूजा नहीं करता, और कंठ सूख जाने तक जो भगवान हरि का कीर्तन नहीं करता, एवं जो दयावान नहीं, तथा जो सर्वदा सत्य नहीं बोलता, ऐसे मूर्ख को प्रभु जन्म क्यों देता है"-योगी ने देखा कि किया इस छोटी आयु में लड़के में परमात्मा की अत्यन्त भक्ति है—तब योगी महाराज ने अति प्रसन्न होकर एक मन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर चले गये—पोतना जब बीस-बाईस वर्ष का हो गया घर पर तमाम कर्म करने के पश्चात वह कंधे पर हल लेकर खेत में चला जाता था—माता-पिता यह देख कर दुःखी होते थे कि पोतना सर्वदा क्यों परेशान रहता है-उन्होंने विचार किया कि इसका विवाह कर दिया जाये तो शायद उसका दिल खुश रहे-दूसरे वहां के राजा के दरबार में बड़े-बड़े कवि रहते थे और अपनी कविता द्वारा राजा को प्रसन्न करके जमीन, भेंट में लेते थे—इन कवियों में एक श्रीनाथ नाम का एक कवि अति रसिक था—श्री नाथ जानते थे कि पोतना भी एक रसिक कवि है—अतः उन्होंने अपनी बहन लक्ष्मी की शादी उनके साथ करनी चाही—पोतना के माता-पिता ने उसे स्वीकृति दे दी—पुनः इसका विवाह हो गया—लक्ष्मी भी पति के काम-काज में हाथ बंटाती थी और सदा खुश रहती थी—अब पोतना के दो संतानें हुईं—एक लड़का जिसका नाम गल्लना था और एक लड़की जिसका नाम शारदा था—

पोतना दानी पुरुष थे, जो कुछ मिलता उसी में अपने परिवार का काम चलाते थे—वह अतिथि सेवा भी

खूब करते थे एवं कविता भी करते थे—गांव के निवासी उनकी कविताओं को सुनकर मुग्ध हो जाते थेअतः धीरे-धीरे उनकी कीर्ति चारों तरफ फैलने लगी—उन्होंने अपनी गरीबी की हालत होने पर भी किसी राजा के दरबारी नहीं बने थे—वह तो परमात्मा के सच्चे भक्त थे—वह बहुधा यही चिन्तन करते थे कि क्या मनुष्य का जीवन पुनरंपी जन्मम्, पुनरंपी मग्नम्, पुनरंपी जननी जष्ठड्रेश्यनम् है—नहीं, मनुष्य जीवन अति दुर्लभ है उसका उद्देश्य तो जीवन-मृत्यु से छूटकर परमात्मा में संलग्न होना है—एक दिन पोतना और मल्लना अपने खेत में हल जोतने गये—उस समय किसी बैलों की घंटियां बज रहीं थीं जो उन दोनों को सुनाई दी तथा उसी समय कहारों के गीतों की आवाजें सुनाई दीं—मल्लना ने देखा कि अति सुन्दर रेशमी धागों और रंग-बिरंगी फूलों से सजाई हुई पालकी आ रही है-उस पालकी को चार कहार आगे और चार कहार पीछे, उठाकर ला रहे हैं—उस पालकी में दरबार के बड़े कवि श्री नाथ बैठ हैं—जो मल्लना के मामा थे-श्री नाथ ने पालकी में से अपने बहनोई पोतना को देखा-तब श्री नाथ ने विचार किया कि यह अच्छा अवसर है अपना चमत्कार दिखाने का—उसने हँस कर आगे के कहारों को पालकी छोड़ने को कहा—अतः चार कहारों ने पालकी को छोड़ दिया-पालकी बिना आगे के चार कहारों के पहले की भांति पालकी चलती रही—यह चमत्कार देखकर मल्लाना हैरान रह गया—वह चिल्लाया पिताजी क्या आपने मामाजी का चमत्कार देखा है ? पोतना ने अपने लड़के से कहा, देखते क्या हो, तुम भी हल के एक बैल को छोड़ दो—मल्लाना ने वैसा ही किया-तब हल पहले की ही भांति चलता रहा-श्री नाथ जी

ने अब पीछे वाले चारों कहारों को कहा कि आप भी पालकी को छोड़ दो—अतः पालकी अब विना कहारों के पहले की ही तरह उतनी ऊँचाई पर स्वयं चलती रही–यह चमत्कार देख कर पोतना ने अपने लड़के से कहा कि तुम भी दूसरे बैल को छोड़ दो–अब हल भी पहले की तरह उतनी ही ऊँचाई पर स्वयं चलने लगा था-पोतना का यह चमत्कार देखकर श्री नाथ को बड़ा ताज्जुब हुआ–पुनः पोतना अपने लड़के के साथ श्री नाथ जी का स्वागत करने के लिए पालकी के पास आया–जब पोतना पालकी के पास आया श्री नाथ ने कहा कहिये किसानों का क्या हाल है? पोतना ने यह व्यंग्य भरे स्वर सुन कर एक कविता द्वारा मुंह-तोड़ उत्तर दिया जिसका अर्थ था कि "छोटे ग्राम के वृक्ष की कोपलों के समान कोमल काव्य रूपी कन्या को दुष्टों के हाथ सौंप कर उनके दिये टुकड़ों पर जीवन निर्वाह की अपेक्षा अच्छे कवि किसान हों तो क्या? खेती करके कंद, मूल, फल से जीवन निर्वाह एवं घर वालों का पालन-पोषण करना लाख गुणा अच्छा है–यह ताना सुनकर श्री नाथ जी बहुत लज्जित हुए-पोतना किसी भी हालत में अपनी कविता बेचकर भोजन नहीं करता था–उनको तो अपनी कविता द्वारा जनता-जनार्दन की सेवा करना था–यह कैसा चमत्कार था–सच्चे सन्त तो प्रकृति पर भी राज्य करते हैं–

एक दिन चन्द्र ग्रहण के अवसर पर प्रजा गोदावरी में स्नान कर रही थी–मेला लग रहा था–ब्राह्मण वेद मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे–उस समय पोतना सन्त दूर एक रेतीले मैदान में प्रभु के ध्यान में समाधित थे-अतः उन्होंने देखा कि स्वयं भगवान श्री रघुनाथ जी सम्मुख खड़े हैं और आदेश दे रहे हैं

कि आप भगवान के स्वर सुनाओ, मैं तन्त्री बजाता हूँ-तुम श्री भागवत लिखो मैं लिख वाऊँगा--इससे तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा-यह कहकर श्री रामजी अन्तर्ध्यान हो गये-अब परमात्मा की आज्ञा मानकर उन्होंने भागवत की रचना करना आरम्भ कर दी-सन्त जी बोलते गये और उनकी बेटी शारदा ताल पत्तों पर लिखती गई-इस भगवान के भक्त ने तीस सहस्र पद्य लिखवाये-एक दिन सन्त पोतना के घर अपने परिवार के साथ श्री निवासा आये-पोतना ने उनका स्वागत किया-खाने के समय होने पर उनकी पत्नी लक्ष्मी जब घर की रसोई में गई तो देखा कि घर में तो खाने-पीने का कोई सामान नहीं था-न चावल, न दाल, न चीनी, इतने मेहमानों को क्या खिलाया जाये ? बड़ी मुश्किल आ गयी-अब क्या किया जाये ? घर में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो गिरवी रखकर सामान लाया जा सके-पोतना के भी पैर कांपने लगे, क्योंकि घर की लाज का प्रश्न था-पोतना को कुछ नहीं सूझ रहा था-आखिर वह हाथ जोड़कर परमात्मा से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान ! अब तो आपका ही सहारा है, आप ही हमारी लाज रखो-भगवान ने भक्त की पुकार सुनी-वह तुरन्त उसके लड़के मल्लाना से सिर पर दो भाई भोजन की सामग्री उठाये पूछ रहे हैं, क्यों भाई कवि पोताना का घर कहां है-हमें यह सामान पहुँचाना है-मल्लाना ने कहा चलिये मेरे साथ-मैं उन्हीं का ही लड़का हूँ-जब उन्होंने घर में जाकर सामान रखा और चल दिये-उन्होंने अपने लड़के से पूछा, यह सामान कौन ले आया हैं? मल्लना ने सारी बात बता दी-पोतना ने सोचा कि मल्लना तुम अति भाग्यवान हो वे और कोई नहीं हो सकते वह तो दोनों श्री रामजी, व लक्ष्मण जो ही थे--वह तो मेरी लाज रखने के लिये स्वयं पधारे थे-

अब यथा शीघ्र खाना बन गया—पोतना ने मेहमानों को खूब भोजन खिलाया—सब ने पोतना की प्रशंसा की कि भोजन बड़ा स्वादिष्ट था—पुनः श्री नाथ ने पोतना से कहा कि हमने तुम्हारी भागवत की बड़ी प्रशंसा सुनी हैं हमें भी सुनाओ—तब पोतना ने अपनी लड़की को आदेश दिया कि इनको भागवत सुनाओं-शारदा ने भगवत सुनाई, पुनः पोतना संत ने श्री नाथ जी से कहा कि आप की क्या राय है? क्या यह ठीक है? तब श्री नाथ जी ने कहा कि गजेन्द्र मोक्ष में आपने लिखा है कि भगवान विष्णु लक्ष्मी जी को सूचना दिये विना दौड़ पड़े थे—उनके साथ और कोई न था—न गरुड़, न शंख, न चक्र, न गदा, न पद्यम्—श्री नाथ जी का कहना था कि यदि विष्णु अपने साथ चक्र भी नहीं ले गये थे तो ग्रह को किस से मारते ?— क्या गज और ग्रह का तमाशा देखने गये थे—पोतना ने इस आक्षेप का उस समय उत्तर नहीं दिया—शाम हुई श्री नाथ जी जल पान करने बैठे—उन की बहन लक्ष्मी जी उनके पास बैठी थी—उन का पाँच वर्ष का बच्चा घर के बाहर खेल रहा था—पोतना ने लड़के को कहीं छिपा दिया था पुनः एक बड़ा पत्थर को कुएँ में डाल दिया कि हाय—हाय आपका बच्चा कुएँ में गिर गया—श्री नाथ जी का लड़का कुएँ में गिर गया जोर-जोर से पुकारने लगा—श्री नाथ के सुनते ही होश उड़ गये—उन्होंने जल पान छोड़ कर एक दम शीघ्र कुएँ की तरफ दौड़ पड़े—कुएँ के पास जा कर जब कूदने वाले ही थे कि पोतना ने हंस कर कहा श्री नाथ जी। यह क्या पुत्र की रक्षा के लिये न रस्सी लाय न सीढ़ी क्या कुएं को प्रद-क्षिणा करने आये हो—पोतना का ताना सुन कर कवि जी महाराज समझे कि यह मेरे आक्षेप का ही उत्तर है—पुनः पोतना ने कहा कि जैसे आप पुत्र प्रेम में अति विहाल हो गये

हो ऐसे ही भगवान विष्णु भी भक्त की पुकार सुन कर अति व्याकुल हो गय थे–अब आप बताओ कि मेरी भागवत में आप की औचित्य का भंग कहां और कैसे ठीक है?–यह सुन कर श्री नाथ जी चुप रह गय थे–रात्री के समय श्री नाथ जी और उन की बहन लक्ष्मी आपस में बात कर रहे थ–बातों-बातों में में लक्ष्मी ने कहा कि हमारे घर में तो आज खाने को है तो कल का कोई सामान नहीं ऐसी हालत है, अब शारदा भी सयानी हो गई, उसके विवाह भी करना है–परन्तु आप के बहनोई को किञ्चित मात्र भी चिन्ता नहीं है। मेरी समझ में नही आता कि कैसे हमारा काम चलेगा-आप ही समझाओ श्री नाथ ने मन में विचार किया कि यदि पोतना अपनी भागवत राजा को समर्पित कर दे तो माला-माल हो सकता है–पोतना सत रात्रि को घर के बाहर बैठ थ उस समय श्री नाथ जी भी उनके पास आकर बैठ गए–श्री नाथ ने कहा कि भाई जी आप क्यों गरीबी का दुःख भोग रहे हो–खेती-बाड़ी से तो घर के सर्व कार्य तो पूरे नहीं होंगे आप क्यों नहीं राजा को अपनी कविता में लिखी भागवत यदि उनको समर्पित कर दो तो आप माला-माल हो जाओगे—राजा कविता का प्रेमी है, इसे देखकर वह आपको खूब धन देगा–जब वह वार्तालाप हो रहा था तब उसी समय पोतना सन्त को किसी के रोने की आवाज आई–जब उसने उस आवाज की तरफ देखा तो एक स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए थे और वह रो रही थी-आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी-उसका मुख कुम्हलाया हुआ था–पोतना सन्त के आगे घुटने टेक कर बैठ गई–पोतना सन्त ने पूछा "माँ तुम कौन हो, और क्यों रो रही हो?" उस स्त्री ने कहा कि "मैं तुम्हारी वजह से रो रही हूँ"–यह सुनकर पोतना को बड़ा अचरज हुआ–पोतना ने कहा "माँ, यह क्या

कह रही हो ? मैंने ऐसा क्या किया है जिससे आप रो रही हो"–उसने उत्तर दिया कि "मैं सुन रही हूँ कि तुम्हारे मन में मुझे राजा के हाथ बेचने की बात उठ रही है–क्या आप भगवान श्री रामचन्द्र जी की बात को भूल गए हो ?" पोतना यह सुनकर रो पड़ा और बोला नहीं माँ, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा–जब तक शरीर में प्राण हैं, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करूँगा–मुझे क्षमा करो माँ, मैंने आपको कष्ट दिया–पोतना को इतना कहने पर वह अन्तरध्यान हो गई–

प्रातः को जब श्री नाथ जी जाने लगे तो पुनः पोतना को कहा क्या आप मेरी राय मानोगे, पोतना सन्त ने कहा कि नहीं, मैं श्री रामचन्द्र जी को ही समर्पित करूँगा–मुझे धन-धान्य नहीं चाहिए....तब श्री नाथ जी चले गए· पोतना भागवत को सिर पर रखकर भगवान श्री रामचन्द्र जी के मन्दिर में चला–गाँव के लोग फूलमालायें हाथ में लेकर एक जुलूस की शक्ल में साथ-साथ चल रहे थे–उस उत्सव में श्री नाथ व राजा दोनों शामिल हो रहे थे–पुनः पोतना ने भागवत ग्रन्थ श्री रामचन्द्र जी की मूर्ति के हाथ पर रख दी थी–तब सब गद्‌गद् होकर प्रसन्न हो रहे थे–

एक दिन की बात जब मल्लना उनका पुत्र हल लिए खेत पर जा रहा था, तब पोतना ने कहा कि अब मेरा आखिरी समय आ गया है, तुम घर की देख-भाल करना–यह सुनकर सर्व रोने लगे कि इतने में प्राण छोड़ दिए–यह है एक सच्चे सन्त का चमत्कार, जिसने कुदरत को भी वश में कर लिया था–ऐसे सन्त को लेखक का बार-बार नमस्कार होवे।

॥ इतिश्री ॥

संत जयदेव

सन्त जयदेव के पिता का नाम भोजराज था और माता का नाम राधा देवी था—आप कुन्दुली गाँव के निवासी थे—आप भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त थे—आपने राधा-कृष्ण की लीला का गान कविता में किया था—आपके ग्रन्थ का नाम "गीत-गोविन्द" था—आप स्वभाव के अति नम्र, उदार और क्षमाशील थे—उनके पिता व माता की मृत्यु उनकी बाल्यावस्था में हो गयी थी—उनके पिता ने निरंजन नामक ब्राह्मण से कर्ज ले रखा था—उनकी मृत्यु के पश्चात एक दिन अपने कर्ज की रकम माँगने आये—जयदेव के पास तो कुछ भी नहीं था और न ही उनके पिता कुछ कह गए थे—उसको मालूम भी न था कि इनकी कितनी रकम है-जब सन्त जयदेव ने कहा कि मेरे पास तो अभी नहीं हैं तब निरंजन ने कहा कि ठीक है आप मुझे लिखकर दे दो रकम पीछे दे देना—उसने कपट से रकम कई गुणा अधिक लिखवाकर उसके हस्ताक्षरों द्वारा लेकर चला गया—उस समय उसकी लड़की दौड़ती आई और कहा पिताजी शीघ्र चलो घर में आग लग गई है—निरंजन घबराता हुआ घर की ओर भागा—जयदेव सन्त ने सोचा कि ब्राह्मण के घर आग लग गई है-मुझे भी इस कष्ट में हाथ बंटाना चाहिए—निरंजन आग भी शांत कर रहा था और रो भी रहा था—अन्य लोग भी आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे, जयदेव भी एक कम्बल ओढ़ कर आग में प्रवेश कर आग बझाने लगा—परमात्मा की करनी से जयदेव

जहां-जहां आग बुझाने गया वहां-वहां आग बुझती गई—इस प्रकार जयदेव ने पूरे घर में घूमकर आग बुझाई और घर को आग से बचा लिया था—निरंजन भी सन्त का चमत्कार देखकर दंग रह गया, और विचार करने लगा कि ऐसे कृष्ण भक्त के साथ धोखा करने का परिणाम यह हुआ है—बुराई करने वाले का स्वयं का बुरा होता है-निरंजन ने तत्क्षण जेब से वह पर्चा निकाल कर टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया और जयदेव को कहा कि अब आपका और मेरा हिसाब चुकता हो गया है—अतः मेरा कोई कर्ज आपकी ओर नहीं है—सन्त जयदेव ने कहा कि भाई यह तो कर्त्तव्य पालन का प्रश्न है, यह तो व्यवहार की बात है, आप ऐसा क्यों कर रहे हो— निरंजन ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा वह ठीक है—

उनके ग्रन्थ के गीत अनेक स्थानों और मन्दिरों में गाये जाने लगे और बड़ी प्रशंसा होने लगी थी—उनके एक धनी शिष्य ने कहा कि आप मेरे गांव चलें—जयदेव और उनकी पत्नी पदमावती दोनों उसके साथ गये—शिष्य ने उनका खूब स्वागत किया और कहा कि क्या मैं अपनी गुरुमाता (पद्मावती) को कुछ भेंट दे सकता हूँ ? सन्त जयदेव ने अपनी स्वीकृति दे दी थी—पुनः शिष्य ने काफी धन देकर उन्हें विदा किया—आप दोनों दम्पत्ति एक बैलगाड़ी पर जा रहे थे कि रास्ते में उनका सारा धन चोरों ने ले लिया औरहाथ-पैर काट कर कुएँ में डाल दिया, कुएं में ही सन्त श्री कृष्ण के गीत गा रहे थे—उधर जाते हुये राजा लक्ष्मणसेन ने उनकी आवाज सुनी तो उन्होंने अपने अनुचरों को कहा कि इन्हें बाहर निकालो—पुनः राजा उन्हें अपने साथ अपनी राजधानी में ले गये थे—राजा लक्ष्मणसेन ने उनका उपचार करवाया और

उन्हें दरबार में ही रहने के लिये कहा—आप यहां ही सन्त समागम किया करें—सन्त जयदेव ने यह बात स्वीकार कर ली थी—उनकी पत्नी पद्मावती भी वहां रहती थी—एक दिन राजा ने सभी साधु-सन्तों का ब्रह्मभोज किया और जयदेव को इसकी व्यवस्था का कार्य सौंपा था—इस भोज में साधु के वेश में वे चोर भी आये थे जिन्होंने सन्त जयदेव के हाथ-पैर काट कर कुएँ में फेंका था—सन्त ने उन्हें पहचान लिया था—पुनः वे चोर डर गये थे—अब यह राजा को कहकर अवश्य हमें घोर दण्ड दिलवा देगा—जयदेव ने उलटा निष्कपट भाव से उनकी आव-भगत की थी—यह देखकर चोर बहुत हैरान हुए-जयदेव ने उन्हें अधिक धन दिया था—सिपाहियों ने पूछा कि सन्त जयदेव ने आपका सत्कार तो खूब किया है, इसका क्या कारण है ? उन चोरों ने कहा कि सन्त जयदेव ने एक भारी अपराध किया था—राजा ने उन्हें दण्ड दिया था, लेकिन हमने बचा दिया था—इसी कारण सन्त जयदेव हमारे आभारी हैं, अतः इतना स्नेह दिखाया है—उनका इतना कहना था कि पृथ्वी फटी और चोर उसमें समा गये थे—यह सन्त की शक्ति का चमत्कार था—

सन्त तो सन्त होते ही हैं परन्तु सन्तों की पत्नियां भी पति संगति के कारण चमत्कारिक बन जाती हैं—ऐसे ही सन्त जयदेव की पत्नी भी चमत्कारिक थी—जयदेव की पत्नी रानियों के साथ रहती थी—पद्मावती रानियों को भगवान श्री राधा-कृष्ण की लीलाओं की कथायें सुनाया करती थीं—एक दिन सती प्रसंग चल रहा था—पद्मावती ने कहा कि पति की मृत्यु हो जाने के पश्चात जो पत्नी चिता जला कर स्वयं को जलाने वाली सती नहीं कहलाती है—वास्तविक में सती तो

वह है जो पति की मृत्यु की सूचना सुनते ही अपने प्राण त्याग दे—रानियों को यह बात सुनकर दुःख भी हुआ और स्वीकार करने को भी तैयार नहीं थीं—उन्होंने विचार किया कि पहले इसकी परीक्षा ली जावे-एक दिन पूर्व की भांति पद्मावती रानियों के साथ बैठी थी कि एक दासी जिसको पहले समझा दिया था, वह वहां आई और जोर-जोर से रोने लगी—तब उसने कहा कि तू क्यों रो रही है? तब दासी नाटक का अभिनय करती हुई बोली कि क्या कहूँ, अभी-अभी सन्त जय-देव की मृत्यु हो गई है—पद्मावती ने जब यह समाचार सुना तो तत्काल अपने प्राण त्याग दिये थे—पद्मावती की मृत्यु से सब कांपने लगी, कारण उनके षड़यन्त्र से उसकी मृत्यु हुई थी—जब मृत्यु का समाचार राजा लक्ष्मणसेन और सन्त जयदेव को मिला तो वह दोनों वहां आ गये-सन्त जयदेव को तो कोई शोक नहीं था वह तो, अपनी लिखी पुस्तक 'राधा विनोद' का पाठ करने बैठ गये—रानियां भी अब मन ही मन में परमात्मा से प्रार्थना करने लगीं कि हे प्रभु! किसी प्रकार पद्मावती के प्राण लौटा दें—सबकी प्रार्थना एवं सन्त के चम-त्कार से पद्मावती जीवित हो गई, और अपने पति के चरणों में पड़ गई-पुनः रानियों ने भी पद्मावती के चरणों की धूली को अपने मस्तक पर लगायी—यह था सन्त जयदेव का चम-त्कार जो मृत्य प्राणी को भी जीवित कर दिया था—

॥ इतिश्री ॥

चैतन्य महाप्रभु

चैतन्य महाप्रभु के पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र था और और माता का नाम शचोदेवो था—आप का जन्म नवद्वीप नगर जो बंगाल में है संवत् 1542 में फाल्गुनो पूर्णिमा के दिन हुआ था—पंडित जगन्नाथ मिश्र के यहां आठ कन्याओं का जन्म एक के बाद एक होता रहा था—पुनः एक बालक हुआ था जिस का नाम उन्होंने विश्वरूप रखा था—पुनः दस वर्ष बाद एक और लड़का हुआ जिसका नाम उन्होंने विश्वम्भर रखा था—यह विश्वम्भर माता के पेट में तेरहां महीने रहा था—ज्योतिषों ने कहा कि यह बालक महा पुरुष होगा—यही बाद में चैतन्य महा प्रभु के नाम से सिद्ध हुआ था – परन्तु माता पिता इसे निमाई नाम से पुकारते थे – जो कई बच्चों के मरने के बाद हो उसे मराठा में निमाई कहते हैं – एक दिन पिता ने बालक की रूचि जांचने के लिये उसके सामने कुछ रूपये, खिलौने और एक पुस्तक भगवत गीता की रख कर निमाई को कहा कि बेटा इन में से जिस वस्तु में तेरी अधिक रूचि हो वह वस्तु उठाले – तब बालक ने श्री भगवत गीता की पुस्तक ही उठा ली थी – पिता ने विचार किया कि यह अवश्य ही परमात्मा का भक्त होगा—पिता का इस लड़के में बड़ा मोह था अतः इसे गहनों और सुन्दर वस्त्रों में रखता था – एक दिन अवसर पा कर चोर बच्चे को उठा ले गये, कारण उन के मन में गहनों का लालच था – चोर ने विचार किया कि इस के गहने ले कर इसे मार डालेंगे – परन्तु भगवत प्रेरणा से चोर

के मन में ममता उमड़ आई तब उसने अपना यह इरादा छोड़ दिया - चोर पुनः उसे घर पर आकर छोड़ गया था—एक दिन निमाई काले नाग से खेल रहा था-यह देख कर माता पिता बहुत घबरा गये थे, परन्तु जब निमाई ने माता-पिता को घबराया हुआ देखा वह झट-पट दौड़कर उनके पास आ गया था-ऐसा दृश्य देख कर उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया था कि यह बालक कोई साधारण नहीं, वरन् एक महानात्मा है-उस समय वैष्णव और ब्राह्मण अपने हाथ से भोजन बनाते थे तब खाते थे, किसी के हाथ का बना भोजन नहीं खाते थे, और न ही किसी को भोजन छूने देते थे-एक दिन पिता जगन्नाथ मिश्र ने एक ब्राह्मण को भोजन का निमन्त्रण दिया था-जब वह आये तो उन्हें सीदा दे दिया-ब्राह्मण ने भोजन अपने हाथों बनाया-ब्राह्मण खाने से पूर्व जब भगवान विष्णु का ध्यान लगाकर भोग लगाने लगे-उस समय निमाई ने आकर वहां पर पड़े उस खाने को खाने लगा-यह देख कर ब्राह्मण ने वह भोजन छोड़ दिया-तब पति-पत्नि ने पुनः सीदा दिया और उन्होंने पुनः अपने हाथों से भोजन बनाया-माता पिता ने निमाई को रस्सी से बांध दिया था-निमाई रस्सी खोलकर थाली में से चावल लेकर खाने लगा-माता-पिता निमाई को मारने लगे, परन्तु ब्राह्मण ने छुड़वा दिया था-माता-पिता ने पुनः सीदा दिया और भोजन बनाने का आग्रह किया, परन्तु ब्राह्मण ने कहा कि आज भाग्य में भोजन नहीं हैं मैं चने खाकर ही सन्तोष कर लूंगा-माता-पिता की घोर प्रार्थना करने पर पुनः ब्राह्मण ने भोजन बनाया-निमाई को माता-पिता ने पकड़ रखा था-ब्राह्मण ने जब आँखें बन्द कर भगवान विष्णु को भोग लगाया तो भगवान ध्यान में आकर बोले कि मैं तो तुम्हारे बलाने पर

बालक के रूप में दो बार आया, लेकिन तुमने नहीं पहचाना-यह बात सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ पुनः वह भोजन खा लिया—उस ब्राह्मण ने मन ही मन निमाई को प्रणाम किया क्योंकि उस समय निमाई घर में सो रहा था–यह सन्त का बाल-अवस्था का चमत्कार था–सन्त चैतन्य महाप्रभु जब ग्यारह वर्ष के थे कि उन्होंने सारी पढ़ाई पढ़ ली थी–जब पिता जगन्नाथ जी को ज्वर हुआ और वह चल बसे—घर का सारा बोझ निमाई पर आ गया था–निमाई के एक मित्र पण्डित रघुनाथ जी थे—वह किसी विषय पर पुस्तक लिख रहे थे और विचार कर रहे थे कि इस विषय का उनसे बड़ा विद्वान और कोई नहीं होगा–परन्तु जब उन्हें यह ज्ञान हुआ कि पण्डित निमाई (सन्त चैतन्य महाप्रभु) भी इस विषय पर पुस्तक लिख रहे हैं–वह भी मानते थे कि निमाई भी बड़े विद्वान हैं–एक दिन पण्डित रघुनाथ जी ने पण्डित निमाई के पास आकर कहा कि क्या आप न्याय पर कोई पुस्तक लिख रहे हो ? निमाई ने कहा कि पण्डित जी मैं क्या न्याय जैसे कठिन विषय पर लिख सकता हूँ-केवल मन खुश करने के लिए कुछ लिख रहा हूँ–यह सुनकर पण्डित रघुनाथ ने कहा कि मित्र, मैं सुनना चाहता हूँ–निमाई ने जब पुस्तक पढ़ना शुरू की तो थोड़ी देर बाद रघुनाथ जी रोने लग गये–निमाई ने पूछा क्यों भाई क्यों रो रहे हो ? रघुनाथ ने कहा कि मैं समझता था कि मैंने जो पुस्तक इस विषय पर लिखी है, इससे कोई भी विद्वान अच्छी नहीं लिख सकेगा, परन्तु तुम्हारी पुस्तक के सामने तो मेरी पुस्तक कुछ भी नहीं है, इसलिए रो रहा हूँ—मेरी वर्षों की मेहनत बेकार हो गई, यह कह कर वह ठण्डी सांस लेने लगा था–मित्र की बात सुनकर निमाई ने

अपनी पुस्तक गंगा में फेंक कर कहा कि अब तो मित्र प्रसन्न हो-न यह पुस्तक होगी न आपकी पुस्तक का मान घटेगा- यह था सन्त के त्याग का चमत्कार-

अब माता ने निमाई का पण्डित वल्लभाचार्य की पुत्री लक्ष्मी देवी से विवाह कर दिया था-निमाई जब पूर्वी बंगाल की यात्रा पर गये थे पीछे से लक्ष्मी देवी का देहान्त हो गया था-माता ने आपका दूसरा विवाह पण्डित सनातन मिश्र की कन्या विष्णुप्रिया के साथ करवा दिया था-निमाई ने संन्यासी ईश्वरपुरी से संन्यास की दीक्षा ली थी-पुनः आप भगवान श्री कृष्ण का गीत 'हरि बोल-हरि बोल' गाते हुए वृन्दावन चले गये थे-जब निमाई वापिस अपने घर नवद्वीप आये तब आप भगवान श्री कृष्ण के गीत 'हरि बोल-हरि बोल' में संलग्न हो गये-गाते-गाते आप जोर-जोर से रोने लग जाते थे-उनके साथ इस गीत में और भी बहुत से लोग लग गये थे-निमाई की कृष्ण भक्ति की चर्चा फैलने लगी और लोग उन्हें भगवान कृष्ण का अवतार मानने लग गये थे-यह रूप देखकर उनकी माता और पत्नी को बड़ा दुःख होता था-बंगाल में काली माँ की पूजा का अधिक प्रचार था और पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी-आपने इस बलि का विरोध किया था-निमाई के विरोधियों से इसका प्रशंसा से विरोध हो गया था-उन्होंने काज़ी से जाकर इसकी शिकायत की थी-काज़ी इसका मामा था-वह मुसलमान हो गया था-उन्होंने काज़ी को कहा कि हम दुकानदार इसके शोर से तंग आ गये हैं तथा हमारा काम-काज ठप्प होता जा रहा है-निमाई ने कई-एक मुसलमानों को भी कृष्ण भक्त बना लिया है-इस बात से

काज़ी को बहुत क्रोध आया–उसने आज्ञा दी कि कोई कीर्तन नहीं कर सकता है–इस आज्ञा को निमाई ने स्वीकार नहीं किया था–अपने साथी भक्तों को कहा कि आज हम काज़ी के मकान के सामने हरि कीर्तन करेंगे-निमाई ने अपने भक्तों के साथ जब काज़ी की आज्ञा का खूब विरोध कर रहे थे तो कुछ लोग नारे लगा रहे थे कि काज़ी को मार दो, और इसके मकान को जला दो–निमाई ने सबसे कहा कि ऐसा काम न करो, काज़ी का बुरा करने वाला मेरा बुरा करेगा–तब लोग शान्त हो गए–निमाई ने काज़ी के नौकरों को कहा कि उन्हें जाकर कहो कि आपका भांजा आपसे मिलने आया है–आप छुप कर क्यों बैठे हो–कोई भी आपका बाल भी बांका नहीं कर सकता–आप घर से बाहर आओ–जब काज़ी ने आपका रस भरा कीर्तन देखा तो मन में कहा कि क्या नारायण का ही रूप है–यह विचार आते ही काज़ी भी कीर्तन में मिल गया था–इस घटना से निमाई का यश हर तरफ फैल गया था–

अब आप माता और पत्नी से आज्ञा लेकर संन्यासी हो गए थे–सन्त चैतन्य महाप्रभु जब शान्तिपुर से नीला चले जाने लगे, सब कोई रो-रोकर उनको विदा करने लगे-परन्तु उनका महान भक्त अद्वैताचार्य नहीं रो रहा था और उनके पीछे-पीछे चल रहा था–पुनः महाप्रभु ने कहा कि आचार्य अब आप भी वापस चले जाइए–आचार्य ने कहा कि प्रभु मैं आपके साथ चलने के लिए नहीं आ रहा हूँ, केवल यही कहता हूँ कि सब रो रहे हैं मैं ही एक नीच प्राणी हूं जो नहीं रो रहा हूं, अतः मेरे जैसा पत्थर हृदय वाला और कौन होगा–

सन्त महाप्रभु ने हंस कर कहा कि मैंने ही आपके प्रेम को रोक रखा है—सन्त महाप्रभु ने अपने कौपीन में एक गांठ बांध रखी थी, उसको खोल देने पर आचार्य खूब रोने लगा था—वह सन्त का अद्भुत चमत्कार था—अपने मन को तो योगी वश में कर लेते हैं, परन्तु यह तो दूसरे के मन को भी वश में कर लेते थे—यह उनका चमत्कार था— ॥ इतिश्री ॥

रामकृष्ण परमहंस

सन्त रामकृष्ण परमहंस के पिता का नाम खुदीराम चट्टोपाध्याय था और माता का नाम चन्द्रमणी देवी था—आपका जन्म बंगाल में जिला हुगली में गांव कामार पुकुर में हुआ था—उनका नाम गदाधर था—आपका जन्म 17 फरवरी, 1836 को हुआ था—खुदीराम चट्टोपाध्याय के दो पुत्र और एक कन्या भी थी—बड़े लड़के का नाम रामकुमार था, दूसरे का नाम रामेश्वर था, लड़की का नाम कात्यायनी था-गदाधर का नाम बाद में रामकृष्ण पड़ा था—यह सात वर्ष के थे कि आपके पिता खुदीराम की मृत्यु हो गयी थी—घर परिवार का बोझ बड़े लड़के रामकुमार पर आ पड़ा था—रामकुमार ने कलकत्ता में आकर एक पाठशाला खोली ताकि घर का खर्चा चल सके—रामकुमार अपने रामकृष्ण को भी कलकत्ता ले गया था—रामकृष्ण का मन पढ़ाई में नहीं लगता था—वह कीर्तन, भजन, पूजा-पाठ में लगा रहता था—भ्राता रामकुमार

माँ काली देवी के मन्दिर में पुजारी का कार्य भी करते थे—रामकृष्ण जब सतरह वर्ष के थे कि रामकुमार का देहान्त हो गया था, तब रामकृष्ण को मन्दिर का पुजारी बनाया गया था—परन्तु इन्हें पूजा-पाठ के नियम नहीं आते थे-आप भजन गाते रहते थे और प्रेम के अश्रु धारा बहाते रहते थे--रामकृष्ण भोग लगाते समय यही कहते थे, "ले माँ तू खा" कह कर भोग आप खा जाते थे—यह समझ कर एक शिशु अपनी मां से रोटी लेकर खा रहा है-माँ और बेटे का आत्मा अभिन्न हैं-आप वेदान्त के महावाक्य "सोऽहं" तत्त्व को खूब जानते थे-परन्तु लोग उसे पागल जानते थे-आप जब देवी माँ की आरती करते थे तो इतने मग्न हो जाते थे-सर्व लोग गाने-बजाने वाले चले जाते थे आप बेसुध होकर घण्टों आरती करते जाते थे-इस कारण इन्हें लोग रामकृष्ण को पागल कहते थे-इस प्रकार कभी माँ-माँ कहकर हंसते थे, कभी हाहाकार रोते थे-यह कहते थे कि माँ मुझे दर्शन दे—उनकी यह हार्दिक प्रार्थना सफल हुई और अन्त में माँ देवी ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया—रामकृष्ण ने एक बार नहीं बार-बार माँ के दर्शन किये थे-

अब वह माँ की पत्थर की मूर्ति चिन्मय रूप में प्रकट होकर बात करती थी—माँ काली देवी ने प्रकट होकर सन्त रामकृष्ण को यह उपदेश दिया था—देवी ने कहा कि हे सन्त! तू ही स्वयं परमात्मा का रूप है—आपमें और परमात्मा में कोई भिन्नता नहीं है—प्रत्येक प्राणी में आत्मा है और यह आत्मा परमात्मा का ही अभिन्न रूप है—यह माँ काली का मन्दिर राममणि एक महिला ने बनवाया था—उसने रामकृष्ण को मन्दिर का पुजारी तब बनाया जब उसके जेष्ठ भ्राता रामकुमार मर गया था— लोगों ने स्त्री राममणि को जाकर

सन्त रामकृष्ण की बहुत शिकायतें की थीं—एक बार रानी राममणि स्वयं यह देखने आई तो वह देखकर दंग रह गई कि सन्त रामकृष्ण के साथ देवी मां आप खिलवाड़ कर रही है—यह दृश्य देखकर उन्होंने अपने को बड़ी भाग्यशालिन माना कि मुझे एक महापुरुष मन्दिर का पुजारी मिल गया है—पुनः वह भक्त को प्रणाम करके वापिस चली गई थी—

जब यह सूचना रामकृष्ण की माता को मिली कि वह तो पागल हो गया है तब मां ने उसे कामारपुकुर में बुला लिया था—माता ने देखा कि रामकृष्ण परमात्मा की भक्ति में सारा दिन लगा रहता है, अतः कहीं यह संन्यासी न बन जाये—इसका ध्यान दूसरी तरफ आकर्षित करने के लिए इसका विवाह कर दिया जावे ताकि यह गृहस्थी बन जावे—माता ने रामचन्द्र की बेटी शारदा जो केवल पांच वर्ष की थी और रामकृष्ण बाईस वर्ष के थे विवाह करवा दिया था—शारदा को माता का नाम श्यामा देवी था—विवाह के बाद भी सन्त रामकृष्ण परमात्मा की भक्ति में लगे रहते थे-उन्होंने एक योगश्वरी नामक महिला से, और महात्मा तोतापुरी से परमात्मा की अनुभूति के तान्त्रिक साधन सीखे थे—ऐसी तान्त्रिक साधना बहुत कठिन थी—सन्त ने इस साधना में सिद्धि तो प्राप्त कर ली थी, लेकिन बहुत कमजोर हो गये थे—एक दिन शारदा देवी ने पूछा कि आप मुझे किस रूप में देखते हैं—आपने कहा कि मैं आपको माँ काली देवी के रूप में देखता हूँ - तब शारदा देवी भी उनकी भांति विधिवत् पूजा करने में लगी रहती थी—

दूसरा बंगाल में एक माई जो विधवा थी-नर भगवान गोपाल में उसका वात्सल्य प्रेम हो गया था—उसने गोपाल को

पुत्र मानकर तीस वर्ष तक उपासना की थी–प्रतिदिन गोपाल को भावना से भोजन कराया करती थी–एक दिन गोपाल सचमुच आकर भोजन खाने लगे थे, लेकिन आधा भोजन खाकर भाग गये थे–वह गोपाल के प्रेम में पगली हो गयी थी–अब वह गोपाल, गोपाल पुकारती मारी-मारी घूमती रहती थी–उन्हीं दिनों सन्त रामकृष्ण परमहंस कलकत्ता में आये–लोग उनके दर्शन करने जा रहे थे–एक मनुष्य ने इस पागल महिला को कहा कि चल, बुढ़िया माई तू मेरे साथ चल, तुझको वहां गोपाल मिलेंगे–वह पागल तो थी फिर भी उसने थोड़े चावल और नमक की पोठ बांध ली कि गोपाल मिलेगा तो खिचड़ी खिलाऊँगी–सन्त रामकृष्ण परमहंस का प्रवचन होना था, लोग फल, मिष्ठान व अनेक प्रकार के उपहार साथ ला रहे थे–सन्त को देने के लिए–बुढ़िया ने आते ही जब सन्त को देखा तो वह शान्त हो गई–तत्काल सन्त परमहंस ने उपदेश बन्द कर बोले मैया मैं तो खिचड़ी खाऊँगा–अब बुढ़िया को होश आ गया था–उसने मन में सोचा कि मैं तो पागल हो गई थी, मैं सन्त के चमत्कार से अच्छी हो गई हूँ–लोगों ने कहा कि मैया सन्त जी खिचड़ी खाना चाहते हैं–पुनः सन्त जी सभा मण्डप से भागकर मैया के पास आ गये और कहा कि मैया ! खिचड़ी खिला भूख लगी है–बुढ़िया ने खिचड़ी बनाई और सन्त को परोस दी–पुनः परोसते ही सन्त रामकृष्ण गोपाल के रूप में बदल गये थे–बुढ़िया फिर गोपाल प्यारा गोपाल कह कर चिल्लाने लगी–सन्त रामकृष्ण का यह चमत्कार देखकर बुढ़िया बहुत प्रसन्न हो गई–अतः इससे सिद्ध होता है कि सन्त और भगवान दोनों अभिन्न रूप हैं–

सन्त रामकृष्ण परमहंस जब कलकत्ता में थे उस समय नरेन्द्रनाथ जो विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए उनके शिष्य बन गये थे-उन्होंने आपसे दीक्षा ली थी-सन्त रामकृष्ण परमहंस ने 11 अगस्त, 1876 में समाधि लगा ली थी समाधि में प्राण वायु को भृकुटी में लाकर पुनः ब्रह्मान्ध्र द्वार से प्राण विसृजन कर दिये थे-ब्रह्मान्ध्र से प्राणों का त्याग एक महान से महान योगी ही कर सकते हैं-ऐसे आप शरीर छोड़कर चल दिये थे-

॥ इतिश्री ॥

सन्त स्वामी विवेकानन्द

सन्त स्वामी विवेकानन्द के पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था और माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था-आपका जन्म 12 जनवरी, 1863 में बंगाल में हुआ था—पहले इनका नाम वीरेश्वरी था, परन्तु घर वाले बिलु कहकर पुकारते थे—स्कूल में इनका नाम नरेन्द्रनाथ था—आपके पिता कलकत्ता में हाई कोर्ट के वकील थे-विश्वनाथ की पहले दो लड़कियां थीं-नरेन्द्रनाथ लड़कपन में शरारती थे—जब ये शरारत करते थे तो घर वाले इसके सिर हाथ रखकर जय शिव-शिव कहते थे, तब वह शान्त हो जाते थे—एक बार आप अपनी माता के साथ वहां गये जहां रामायण की कथा हो रही थी-नरेन्द्र नाथ बालक ने कथा वाचक से पूछा कि आप कहते हैं कि हनुमान जो अमर हैं ? कथा वाचक ने कहा हां, यह ठीक है केले के बगीचे में मिल जायेंगे—एक दिन आधी रात को सन्त

विवेकानन्द चुपचाप उठकर बगीचे में केले के वृक्ष के पास बैठ कर हनुमान को देखने लगे—जब माता की नींद खुली तो देखा कि बच्चा नरेन्द्र नहीं सो रहा है न जाने कहां चला गया—सर्व इधर-उधर देख रहे थे कि एक नौकर को केले के पेड़ के नीचे बैठा मिला है—मां ने पूछा, बेटा ! इतनी रात गये तू कहां चला गया था ? तब नरेन्द्रनाथ ने कहा कि मैं हनुमान जी को देखने गया था, लेकिन वह मिले नहीं—मां ने ऐसे बेटे को सन्तुष्ट करने के लिए कह दिया कि बेटा रामजी ने उसे किसी काम भेज दिया होगा अतः किसी और दिन मिलेंगे—

सन् 1881 में सन्त रामकृष्ण परमहंस के साथ विवेकानन्द का मिलन हुआ था - एक दिन विवेकानन्द जो सत्तरह वर्ष के थे जब आप दक्षिणेश्वर काली मां के मन्दिर में गये, जहां सन्त रामकृष्ण रहते थे—विवेकानन्द ने सन्त से पूछा कि क्या आपने ईश्वर को देखा है ? सन्त ने उत्तर दिया, जरूर, मैं तो ईश्वर के साथ रहता हूं और उनके साथ ऐसे बातें करता हूं जैसे तेरे साथ कर रहा हूं-परन्तु सन्त विवेकानन्द को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था—कारण बिना प्रमाण के वह कैसे मान सकते थे—अब विवेकानन्द सन्त की तरफ आकृष्ट होने लगे—सन्त ने उन्हें समाधि लगाने की विधि सिखाई—वह पहले वेदों के सिद्धान्तों को नहीं मानते थे, और कहते थे कि क्या यह बरतन, बकरी, घोड़े, मक्खियां सर्व ईश्वर हैं ? परन्तु जब सन्त ने समाधि लगाना सिखाया और ध्यान में जब परमात्मा की उपलब्धि हुई तब आप उन विचारों से बदल गये थे-पुनः आपके पिता की मृत्यु हो गई थी, और घर का बोझ आप पर पड़ गया था, कारण आप ही बड़े लड़के थे-घर का खर्चा पूरा नहीं होता था-

विवेकानन्द ने कहा कि मैं विना ईश्वर को प्राप्त किये और कुछ नहीं करूंगा—गुरु परमहंस संत ने अपने शिष्य विवेकानन्द को कहा कि ठीक है तेरे को भगवान के दर्शन मिल जायेगें—कहते है कि गुरु ने उन्हें एक दिन मां काली के साक्षात दर्शन करवाये थे—अब नरेन्द्र सन्यासी बन गये थे—उन्होंने भारत वर्ष की यात्रा पैदल की थी—आप एक बार घूमते-घूमते वृन्दावन गये थे—जब यमुना में स्नान कर रहे थे तब उनका एक वस्त्र जो किनारे पर पड़ा था उसे एक बन्दर उठा कर ले गया था—आप खाली लंगोट बांध कर नहा रहे थे-विना कपड़े आप कहां जावें-आप जंगल की और चल दिये—वहां पर अकस्मात् कोई अनजान आदमी ने आकर उन्हे एक धोती व भोजन दे गया था—लेखक कि मान्यता है कि स्वयं भगवान कृष्ण इस रूप में आकर दे गया था—एक बार आप हाथरस स्टेशन पर भूख से परेशान हो कर स्टेशन पर बैठे थे कि वहां के स्टेशन मास्टर शरतचन्द्र गुप्त ने आकर पूछा कि यहां सन्यासी जी क्यों बैठे हो ? उन्होंने कहा कि हम भूखे हैं तब वह अपने घर ले गया और भोजन कराया संत विवेकानन्द के उपदेशों से वह इतना प्रभावित हुआ कि वह नौकरी छोड़ कर सन्यासी बन गया—वह आपका शिष्य बन गया था—बाद में उसका नाम उन्होंने स्वामी सदानन्द रखा था—अब स्वामी विवेकानन्द ने स्वामी रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी—संत स्वामी विवेकानन्द एक बार अलवर गये—वहां के दीवान आपके भक्त थे—उन्होंने महाराजा अलवर को भी उनका परिचय दिया कि आप बड़े ज्ञानी हैं—महाराज ने उन्हें दरबार में आने का अनुरोध किया—जब स्वामी जी दरबार में आये तो महाराजा ने कहा कि आप तो बड़े विद्वान हैं फिर

कुछ काम न करके भीख क्यों मांगते फिरते हो ? स्वामी ने कहा कि देश में इतना काम पड़ा है फिर आप अंग्रेजी के आगे-पीछे घूमकर क्यों समय नष्ट कर रहे हो ? महाराजा ने नाराज होकर उत्तर दिया कि मुझे तो अंग्रेजों के साथ घूमने से आनन्द मिलता है—स्वामी जी ने कहा मुझे भी भीख मांगने में आनन्द मिलता है–पुनः महाराजा ने कहा कि हिन्दू तैतीस करोड़ देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाकर क्यों पूजते हैं ? मिट्टी के पुतले पूजने से क्या ईश्वर मिलता है ? पुनः संत स्वामी जी ने दीवान जी से पूछा कि यह दीवार पर टंगी तस्वीर किसकी है ? दीवान जी ने कहा यह तस्वीर महाराजा की है-संत जी ने कहा कि क्या यह आप थोड़ी देर के लिए मुझे दे सकते हैं ? उन्होंने तस्वीर उतार कर आपको दे दी–तस्वीर को जमीन पर रखकर दीवान जी को कहा कि आप इस पर थूक दीजिए-दीवान ने घबड़ा कर कहा कि यह आप क्या कह रहे हैं—यह तो महाराजा का चित्र है–स्वामी जी ने कहा मैं जानता हूं कि यह महाराजा का चित्र है–यदि आप नहीं थूक सकते तो क्या कोई और थूक सकता है ? तब महाराजा व सर्व परेशान हो गये–स्वामी जी ने कहा कि आप में से किसी की इस पर थूकने की हिम्मत या इच्छा नहीं है ? यह तो केवल कागज है, इस पर थूकने से क्या होगा ? अब इसका अर्थ सबकी समझ में आ गया–महाराजा भी समझ गया कि लोग मिट्टी की बनी मूर्तियां क्यों इतनी श्रद्धा से पूजते हैं—महाराजा का अभिमान चूर हो गया–महाराजा ने स्वामी जी से क्षमा मांगी वाद में आप स्वामी जी के शिष्य बन गये–

मद्रास में उन्हें मालूम पड़ा कि शिकागो में सर्व धर्म सम्मेलन हो रहा है—सर्व धर्म के विद्वानों को निमन्त्रण गये परन्तु हिन्दू धर्म के किसी भी विद्वान को निमन्त्रण नहीं मिला

था—स्वामी जी भी सम्मेलन में जाने के लिए तैयार थे, परन्तु खर्च का प्रश्न था—स्वामी जी की स्वीकृति पाकर मैसूर और रामनाद के राजाओं ने खर्च का प्रबन्ध कर दिया—खेतड़ी के राजा मंगलसिंह के मन्त्री जगमोहन ने आपका जहाज में प्रथम श्रेणी के केबिन का प्रबन्ध कर दिया था-कपड़े पहनने के लिए गैरुये रंग के बनवा दिये थे—स्वामी 31 मई, सन् 1893 में आप जहाज द्वारा अमेरिका को रवाना हो गये थे-अमेरिका में आपका कोई जान-पहचान वाला नहीं था—सम्मेलन होने में अभी तीन महीने बाकी थे और हिसाब से उनके पास पैसे कम बचे थे—दूसरा सम्मेलन में भाषण देने के लिए निमन्त्रण-पत्र का होना जरूरी था, वह भी उनके पास नहीं था—आप एक दिन बाग में बैठे थे कि एक वृद्ध महिला ने आपका वेश देखकर पूछा कि आप कहां से आये हो, और क्या करने आये हो ? क्या आपका कोई जान-पहचान वाला है ? आप रात को कहां जाओगे—सन्त स्वामी जी ने कहा कि आप मुझे अपने घर ले जाकर रख सकते हो ? उस महिला ने कहा कि हां, आप मेरे घर चल सकते हैं—अतः वह उसके घर चले गये—वहां श्री जे. एच. राइट के साथ उनका परिचय हुआ, उन्होंने एक पत्र दिया जिसके सहारे वह सम्मेलन में भाषण करने की आज्ञा पा सकते थे—11 सितम्बर, सन् 1893 को शिकागो में सम्मेलन आरम्भ हुआ—सम्मेलन सर्वधर्मों के विद्वानों से भर गया था—परन्तु अध्यक्ष महोदय ने स्वामी जी को भाषण करने की आज्ञा नहीं दी—तब स्वामी ने कहा कि मैं केवल दो-तीन मिनट का भाषण दूंगा, पुनः अध्यक्ष ने दो तीन मिनट की आज्ञा दे दी—आपने खड़े होकर अंग्रेजी में केवल इतना ही कहा था कि मेरे अमेरिका निवासी पिता,

माता, भाई और बहिनों-यह कहकर आप चुप करके अपने स्थान पर बैठ गये-तब अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आपने हमें माई फादर, मदर, ब्रादर्स एण्ड सिस्टर क्यों कहा-प्रूफ करो कि हम आपके कैसे रिश्तेदार हैं-तब पुनः स्वामी जी ने वेद-मन्त्र बोलकर सिद्ध किया कि हम सर्व एक ही पिता की सन्तान हैं ऐसे आप और हम एक हैं-फिर चुपकर बैठ गये-पुनः अध्यक्ष ने कहा कि इसको और स्पष्ट करो और भाषण करते रहो जब तक आपको भाषण बन्द करने के आदेश न मिले-सम्मेलन तीन दिन चला, तीन ही दिन तक स्वामी जी का भाषण होता रहा पुनः अध्यक्ष ने सम्मेलन खत्म होने की घण्टी बजा दी थी-

यह था भारत के सन्त का चमत्कार जो महान व्यक्ति थे-स्वामी जी ने भारत के कोने-कोने में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी-पुनः आपका देहान्त सन् 1902 में हो गया था-

॥ इतिश्री ॥

सन्त ऋषिबन्धु

अब एक सन्त ऋषि बन्धु का चमत्कार लिखते हैं-यह ऋग्वेद 1-10-8 का है-पुस्तक वेदोपदेश चन्द्रिका की है-सन्तों का परोपकार-व्रत तीनों काल और सभी अवस्थाओं में अखण्ड बना रहता है-जैसे एक सन्त ऋषि बन्धु प्राचीन काल में देव वन गया था-वहां पर किसी ऋषि की गाय मर गयी-माता के मर जाने से उसका नन्हा बछड़ा व्याकुल हो

उठा–ऋषि ने लाख प्रयत्न किया, परन्तु बछड़ा प्रकृतिस्थ ही नहीं हो रहा था–माता के शोक में दाना-पानी भी छोड़ दिया–ऋषि उसकी यह अवस्था देख अत्यन्त खिन्न थे–इस तरह एक दिन बीता और तीसरे दिन तक बछड़े ने पानी तक नहीं पिया–ऋषि ने सोचा यदि बछड़ा मर गया तो उसे न बचा सकने का पाप मेरे सिर चढ़ेगा–उन्होंने बछड़े का वर्णन ऋषिबन्धु से किया–ऋषिबन्धु तो सच्चे संत थे–आप किसी भी अवस्था में उपकार व्रत न त्यागने वाले थे तुरन्त अपनी शिल्पकला से वैसी ही एक गाय बनायी और उसमें प्राणाधान कर बछड़े को माता से मिला दिया—बछड़ा माता को पाकर मरते-मरते बच गया था–यह था उस परोपकारी संत का चमत्कार जो उसने एक नयी गाय बना दी और उस गाय को बछड़े से मिला दिया था–ऐसा विज्ञान आज के वैज्ञानिक नहीं जानते हैं– ॥ इतिश्री ॥

संत तुकाराम

संत तुकाराम के पिता का नाम बोल्होबा था और माता नाम कनकाई था–महाराष्ट्र के पूना से पंद्रह मील दूर इन्द्रायणी नदी के किनारे देहू गांव में अंबिले नाम के एक ऊंचे घराने में संत तुकाराम का जन्म हुआ था=आपका जन्म सन् 1608 में हुआ था—संत तुकाराम की पहली स्त्री रखभाई थी, जो दमे के कारण मर गई थी—उन का दूसरा विवाह पुना के एक धनी की लड़की जिजाबाई के साथ हुआ था—आप के तीन लड़के व तीन लड़कियां थी—आप महाजनी और दुकानदारी का कार्य करते थे–आप पैसा गरीबों की मदद में खर्च कर देते

थे जिस के कारण नुकसान हो गया और दिवाला हो गया था–एक बार अपना माल बेचकर आ रहे थे कि रास्ते में एक गरीब ने आप के पांव पकड़ कर मदद मांगी—उसका लड़का मर गया था और उस की जमीन (खेत) साहूकार के कब्जे में चली गई थी–संत तुकाराम ने उसे पचास रूपये जो उनके पास थे दे कर कहा कि यह लो इससे अपना खेत छुड़वालो—ऐसे आप गरीबों की सेवा करते थे—उनकी पहली स्त्री सन् 1630 में मर गयी थी–बाद में बड़ा लड़का मर गया था–ऐसी आपत्तियों से तंग आकर आप घर से निकलकर एक पहाड़ की गुफा में ईश्वर का ध्यान करने लगे थे —आपने बिना खाये-पिये पंद्रह दिन की समाधि लीथी—संत की प्रशंसा से कुछ मूर्ख ब्राह्मण उन्हें तरह-तरह से सताने लगे–एक बार उन्होंने एक बदचलन औरत को आपके पास अकेले भिजवा दिया—संत तुकाराम ने उसे मां पुकार कर कहा कि हम भगवान विष्णु के दास ऐसे वदकार नहीं हैं, अतः चली जा—यदि तेरे को शौहर चाहिये तो संसार में मर्दों की कमी नहीं हैं–यह सुन कर वह मारे शर्म से जमीन में गड़गई, और उनकी भक्त बन गई थी—विवेकहीन ब्राह्मणों ने आप की लिखी पुस्तकों को एक दिन नदी में डाल दी थीं–संत तुकाराम भूखे-प्यासे सत्रह दिन तक नदी के किनारे बैठे रहे थे—अठारहवें दिन भगवान बालक के रूप में आ कर संत को पोंथियाँ निकाल कर दी थी–इस चमत्कार से संत का यश चारों ओर फैल गया था–उनके विरोधी भी उनके भक्त बन गये थे–एक बार छत्रपति शिवाजी ने संत तुकाराम की परीक्षा ली थी—उन्हें सैकड़ों सोने की मोहरें, पालकी, छत्र भेजा था, परन्तु संत ने यह कह कर वापस लौटा दिया कि इनसे कोई भलाई नहीं होगी–एक बार छत्रपति संत तुकाराम के दर्शन करने

आये थे—उस समय मुसलमानों ने उन्हें घेर लिया था—संत यह हालत देखकर ईश्वर को पुकारने लगे कि यह मुझ से नहीं देखा जाता है—संत के चमत्कार से उन मुसलमानों को प्रत्येक कीर्तन सुनने वाला आदमी शिवा जी महाराज जैसा दिखाई देने लगा—वह चक्कर में पड़ गये तब शिवाजी महाराज वहां से निकल गये—सन् 1649 में संत तुकाराम जी जब श्री विटठल भगवान का कीर्तन करते-करते जा रहे थे आप अचानक अदृश्य हो गये थे—संत तुकाराम साशरीर बैंकुढ चले गये थे, यह था उनका अन्तिम चमत्कार—आज इस विज्ञान को जानने वाला कोई नहीं है— ॥ इति श्री ॥

संत भक्त कालीचरन

भक्त कालीचरन जो ब्राह्मण था, उसके सब परिवार वाले एक ही वर्ष में एक-एक कर के मर गये थ—वह अकेला बच गया था–उसने श्राद्ध आदि करने के लिये अपना मकान गिरवी रखकर ऋण लिया था–पुनः आठ-दस रूपये महीने की नौकरी कर ली, इससे पांच रूपये बचा कर वह किस्त का रूपया भरता जाता था—अपना खर्चा कम करके श्री बिहारी जी के मन्दिर में भजन करता रहता था—यह नियम था कि तमस्सुक की पृष्ठ पर किस्त का रूपया लिख दिया जाता था पर दुर्गादास महाजन के मन में बेईमानी थी, वह मकान हड़पना चाहता था, इसलिये तुमस्सुक के पीछे चढाता नहीं था—जब दस रूपये बाकी बचे थे, तब उसने पूरे रूपयों को सूद लगाकर नालिश कर दी थी—पुनः ब्राह्मण कालीचरन का अदालत से सम्मन आ गया वह विहारी जी के मन्दिर में बैठे थे, उन्हें

मिला—यह देखकर वह बहुत दुखी हुग्रा—उसने चपरासी को कहा कि मैंने केवल दस रुपये बाकी देने हैं—चपरासी ब्राह्मण की व्याकुलता देखकर बोला क्या कोई गवाह है ? पहले तो ब्राह्मण काली चरन बोला, गवाह कोई नहीं, परन्तु फिर उसने कहा कि हां एक गवाह बिहारी जी हैं—चपरासी ने समझा ठीक है—बिहारी जी उस गवाह का नाम होगा—उस चपरासी ने जाकर मुन्सिफ से कह दिया कि हजूर, ब्राह्मण ईमानदार है—महाजन दुर्गादास बेईमान है—उस ब्राह्मण का गवाह बिहारी जी हैं—अतः उसके नाम सम्मन निकाल दें—मुन्सिफ भी भला आदमी था—उसने सम्मन निकाल दिया—वह चपरासी पुनः आया ब्राह्मग वहां बैठा था—चपरासी ने कहा कि बिहारी जी का सम्मन है दिलवा दो—ब्राह्मण बोला यहीं कहीं होगा, आप छोड़कर चले जाओ—भगवान की लीला थी—उसने समझा, क्या हर्ज है, अतः वह लगाकर चला गया था—जब तारीख आई, उस के पहले दिन ब्राह्मण ने पुजारी से रात भर मन्दिर में रहने की आज्ञा मांगी, पर पुजारी को जब सारी बात का ज्ञान हुआ वह हँस रहे थे—ब्राह्मण के रोने पर बहुत आग्रह करने पर सोने को आज्ञा दे दी थी—ब्राह्मण रात भर रोता रहा कि अब तारीख पर क्या होगा ? प्रातः समय उसे नींद आ गई—नींद में देखता है कि बिहारी जी आकर कह रहे हैं कि रोता क्यों हैं, तुम्हारी गवाही मैं अवश्य दूंगा—नींद जब खुली तो बड़ा प्रसन्न था, कारण उसे किञ्चित मात्र भी सन्देह नहीं था—उसे पूरा विश्वास हो गया था कि मेरी गवाई जरूर देगें—जब लोगों को पता चला तो हल चल मच गई और देखते हैं कैसे श्री बांके बिहारी जी ब्राह्मण काली चरन को गवाही देने आते

हैं—कोर्ट में यह मामला मुन्सिफ के सामने आया मुन्सिफ ने ब्राह्मण से पूछा क्या गवाह आ गया है ? ब्राह्मण बोला—जी हां हुजूर आया हैं—फिर चपरासी ने आवाज लगाई—बिहारी गवाह हाजिर हो ? पहली बार कोई जवाब नहीं था, दूसरी बार भी कोई जवाब नहीं था, तीसरी बार जवाब आया—हाजिर है—पुन: लोगों ने देखा एक व्यक्ति अपने शरीर को काले कम्बल से ढके हुऐ आया और गवाह के कटघरे में जा कर खड़ा हो गया—उस ने थोड़ा सा मुंह पर से कम्बल हटाकर मुन्सिफ को देखा—उस वक्त मुन्सिफ की कलम हाथ से गिर गई और वह कई मिनटों तक उसकी ओर देखता रहा था—कुछ देर बाद मुन्सिफ बोला आप गवाह हैं, वह बोला, जी हां—आप का नाम बिहारी है ? जी हां उत्तर दिया—क्या आपको मालूम हैं इसने रुपये दिये हैं—बिहारी गवाह ने कहा कि मैं सारे वाक्यात कहता हूं—उसने कहा कि अमुक तारीख को इतने रुपये, और अमुक तारीख को इतने रुपये, तारीखवार सर्व कुछ कहता गया—पुन: मुद्दई का वकील ने कहा, हजूर यह आदमी है कि लायब्रेरी कभी आदमी को इतनी तारीखें याद रह सकती हैं ? बिहारी गवाह बोला, हजूर। मुझे ठीक-ठाक याद है, जब वह रुपये देने जाता था तब मैं साथ रहता था—मुन्सिफ न कहा क्या रुपये बही में जमा हैं—बिहारी गवाह ने कहा, जी हां सब जमा हुये हैं, पर नाम नहीं हैं—रोकड़—बही में अमुक-अमुक तारीखों में जमा हुई हैं परन्तु इसका नाम नहीं हैं—दूसरे झूठे नाम से जमा हैं—मुन्सिफ ने कहा, क्या तुम बही खाता पहचान सकते हो ? बिहारी ने कहा हां पहचान सकता हूं—मुन्सिफ ने कोर्ट बरखास्त किया और चार चपरासियों के साथ गवाह को दुर्गादास महाजन के

घर भेजा गया–घर जा कर बिहारी ने वह आलमारी बता दी और बही का इशारा कर दिया वह बही मुन्सिफ को मिल गयी थी। मुन्सिफ ने देखा—गवाह ने जो-जो तारीखें बताई थीं, उन्हीं में उतना-उतना रुपया दूसरे नाम से जमा था—मुन्सिफ को बही देखने में देरी हो गयी थी, पर सर्व ठीक था—इतने में लोगों ने देखा बिहारी गवाह का पता नहीं—कहां गया कुछ पता नहीं लगा था—दूसरे दिन मुन्सिफ ने कोर्ट में आकर मुकद्मे को डिसमिस कर दिया और स्वयं त्यागपत्र लिखकर साधु हो गया—कारण उसे पता लगा कि गवाह स्वयं भगवान श्री बांके बिहारी जी स्वयं थे—यह संत कालीचरन ब्राह्मण का चमत्कार था जिसने मूर्ति से भगवान को गवाह बना दिया था। ॥ इति श्री ॥

आचार्य रामानुज

आचार्य रामानुज के पिता का नाम केशव भट्ट था, और माता का नाम कान्तिमयी था—आपका जन्म तिरूकुदूर में में संवत् 1094 को हुआ था—जब आप विद्याध्ययन के लिये पाठशाला में थे, तो गुरू यादव प्रकाश उनकी निर्मल बुद्धि और प्रतिभा देखकर उन्हें सभी विद्यार्थियों से अलग बैठाकर विशेष ध्यान देते थे—विद्याध्ययन कराते समय अनेक बार गुरू से भी आगे निकल जाते थे—अपने शिष्य को अपने से भी श्रेष्ठ पाकर गुरू यादव प्रकाश को अपनी प्रतिष्ठा के लिये भय उत्पन्न हो गया था—एक दो बार तो शिष्य रामानुज ने गुरू की व्याख्या में दोष ही निकाल दिया था— इससे गुरू इतने चिढ़ गये कि उनको मारने का षड़यन्त्र रचने लगे—

उन्होंने रामानुज के साथी शिष्य गोविन्द को गुप्त रूप से समझा दिया था कि तू रामानुज को तीर्थ यात्रा के बहाने अपने साथ ले जाकर मार्ग में किसी जंगल में ले जाकर इसको मार देना—रामानुज तीर्थ यात्रा जाने लगा तो गोविन्द भी उनके साथ चल पड़ा यात्रा में किसी प्रकार रामानुज को इस षड़यन्त्र का पता चल गया पुनः यात्रा में संत रामानुज भगवान विष्णु को स्मरण करता चल रहा था—यात्रा के एक पड़ाव में जब संत रामानुज सो रहा था तब भगवान स्वयं मानव के रूप में आकर इसे अगले पड़ाव तक पहुँचा आये—संत रामानुज यह चमत्कार देखकर संन्यासी बन गये थे—संत रामानुज गुरू से दीक्षा लेने का विचार करते थे—उन्होंने संत पेरियनीम्ब को गुरू बना कर उनसे दीक्षा ली थी—गुरू ने कान में मंत्र देने से पूर्व कहा कि इस गुरू मंत्र को सतत् जप करना इससे तुम्हारा सदा कल्याण होगा—यह मंत्र संसार में बड़ा कल्याणकारी है, अतः इसके बराबर और कोई मंत्र नहीं है—परन्तु सावधान, और किसी को भूल कर भी नहीं कहना—यदि बता दिया तो नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा संत रामानुज ने यह शर्त्त मान ली थी—गुरू मंत्र था "ॐ नमो नारायणाय" यही सब कल्याणों का एक मात्र साधन है—इसके जप से कोई बाधा नहीं आयगी और वैभव लक्ष्मी द्वार पर खड़ी रहेगी—परन्तु ध्यान रखना किसी को कहना नहीं—गुरू मत्र जपते रहे—एक दिन आपके मन में आया कि जब यह मत्र इतना प्रभावी और शक्तिशाली है कि सब पाप कट जाते हैं, और सर्व का कल्याण हो सकता है तो ऐसे मंत्र को किसी को न बताना यह तो बड़ा पाप है—यह मंत्र तो प्रत्येक को कह देना चाहिये ताकि सर्व का कल्याण हो—मैं केवल

अपने ही कल्याण की बात सोचता रहूँ तो मुझ सा अधम और स्वार्थी और कौन होगा ? संन्यासी होकर भी यदि मैंने लोगों को कल्याण का मार्ग नहीं बताया तो मैं कैसा सन्यासी हुआ ? संन्यासी संत तो स्वभाव से विनम्र और कृपालु होते हैं, उनकी यह विनम्रता तो प्राणी मात्र के लिये होती है—एक संत के कारण तो मुझे यह मंत्र प्रत्येक को कह देना चाहिये—अतः संत रामानुज ने प्रत्येक दुखी और पीड़ित लोगों को जाकर मंत्र बता दिया और जाप करने को कहा—यह सूचना जब गुरू पेरियनीम्ब को मिला तो वे आप से बहुत ही नाराज हो गये=उन्होंने संत रामानुज को बुलाकर कहा कि मैंने तो मंत्र किसी को न कहने का आदेश दिया था—फिर तूने मेरी आज्ञा का उल्लंघन क्यों किया है—आप प्रत्येक को कह रहे हो तूझे नरक की यातना भोगनी पड़ेगी—संत रामानुज ने नत मस्तक होकर कहा कि हे श्री गुरूदेव ! यदि मुझे लोगों के सुख कल्याण के लिये मुझे जन्म-जन्मान्त्रों तक भी नरक की यातना भोगनी पड़े तो मैं सहन कर लूँगा पर मुझ से लोगों की पोड़ा देखी नहीं जाती है। यदि मेरे को दुख भोगना पड़ता है, और प्रत्येक का भला होता है, तो यह संत का स्वाभाविक कार्य है—यह समझकर मैंने कार्य किया है—गुरू पेरियनीम्ब ने संत रामानुज की कल्याणकारी भावना का यह रूप देखा तो उन्हें गले लगा लिया था-संत को इस चमत्कार कार्य से सर्व का लाभ होने लगा था—पेरियनीम्ब के गुरू का नाम संत आलवन्दार था—उन्होंने संत रामानुज की लोक कल्याणकारी भावना को जानकर बड़े प्रसन्न हुय थे, और संत रामानुज की बहुत प्रशंसा करते रहते थे—गुरू पेरियनीम्ब जब स्वर्गवास होने वाले थे तो अपने मन की बात

कहने के लिये किसी योग्य पात्र को खोजने लगे--अन्त में उन्होंने संत रामानुज को ही कहने का विचार किया था, परन्तु उस समय संत रामानुज भ्रमण के लिये कहीं गये हुये थे थे-संत रामानुज को जब अपने गुरू का सन्देश मिला तब आप गुरू के पास उस समय पहुंचे जब गुरूजी प्राण त्याग चुके थे— लोगों ने कहा कि आपको कोई मन में गुप्त बात कहना चाहते थे-पुनः सन्त रामानुज ने देखा कि गुरूदेव की तीन उंगुलियां मुड़ी हुई हैं – सन्तजी समझ गये कि गुरू की तीन इच्छायें अपूर्ण रह गई हैं-अब सन्त रामानुज शिष्य का यह चमत्कार देखकर सब चकित रह गये थे-सन्त रामानुज ने अपने गुरू की आत्मा से सम्पर्क करके उससे तीन अपूर्ण इच्छाओं की जानकारी मालूम कर ली थी-सन्त ने कहा कि मैं उनकी तीन इच्छाओं को अवश्य पूर्ण करूंगा यह सन्त ने प्रण किया था-मैं ब्रह्म सूत्र, विष्णु सहस्त्रनाम और "दिव्य प्रबन्धम" जो गुरू पेरियनिम्ब स्वयं लिखा था, इसकी टीका लिखूंगा-सन्त रामानुज के इतना कहते ही गुरू की तीनों उंगलियां सीधी हो गईं थी – यह सन्त रामानुज का चमत्कार देखकर सर्व गद्-गद् हो गये थे-सन्त रामानुज एक सौ बीस वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गये थे। ॥ इति श्री ॥

संत नरसी महेता

संत नरसी महेता के पिता का नाम कृष्ण दामोदर था और माता का नाम लक्ष्मी गौरी था—उनका जन्म सौराष्ट्र के तलाजा नामक गांव के वड़नगरा नागर घराने में हुआ था, बाद में आप जूनागढ़ में आकर रहने लगे थे—संत नरसी

महेता का विवाह नौ वर्ष में माणिक नाम की स्त्री के साथ हो गया था—घर गृहस्थी का बोझ बड़े भाई पर था—संत नरसी महेता एक दिन भजन-कीर्तन में इतने व्यस्त हुये कि उनको रात में देर से घर आये तो भाभी ने बहुत जली-कटी सुनाई परन्तु आपने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया था—संत की भार्या माणिक को भी भाभी बहुत उल्हाने देती थी, एक बार संत नरसी महेता साधु-संतों के भजन-कीर्तन में इतने रम गये थे, कि घर आधी रात को आये तब भाभी ने इतनी खरी-खोटी सुनाई कि संत नरसी को बहुत चोट पहुंची संत ने रात को भोजन भी न खाकर सो गये थे, परन्तु उनकी स्त्री बहुत दुखी हुई—दूसरे दिन जब सब सो रहे थे, संतजी घर छोड़ कर एक घनघोर जंगल में चले गये थे—इतने में उन्हें एक मन्दिर दिखाई दिया—उस मन्दिर में एक शिवलिंग था, जिसकी कई वर्षों से पूजा नहीं हुई थी—संत नरसी ने उसकी पूजा की और बड़े प्रसन्न हुये—इसकी पूजा से प्रसन्न होकर शिवजी ने संत को दर्शन दिये, और कहा कि मनचाहा वर मांग लो—संत ने कहा कि भगवान जो आपको अधिक प्रिय हो वही वर दें—शिवजी ने 'तथास्तु' कहकर उन्हें अपने साथ ले गये थे—संत नरसी महेता जब अपने घर जूनागढ़ आये तब उनका लड़का हुआ उसका नाम शामल रखा, और एक लड़की हुई जिसका नाम कुंवरबाई रखा था—एक बार आपने पिता का श्राद्ध किया, परन्तु घर में घी न होने के कारण आप घी लेने बाजार गये—वहां संत के कीर्तन की बात चल रही थी बस आप वहीं जम गये, घर का ख्याल भूल गये थे—पुनः सन्त का चमत्कार हुआ कि भगवान कृष्ण सन्त नरसी महेता का रूप धारण करके उनके घर गये और श्राद्ध का कार्य पूरा

कर दिया सन्त नरसी जब घर आये तब सब ब्राह्मण खा पीकर जा चुके थे—यह था सन्त नरसी का चमत्कार—उनके युवा पुत्र श्यामलदास का विवाह एक धनी मदन महेता की पुत्री से होना निश्चित हुआ था—तब मदन महेता के एक सम्बन्धी सारंग धर महेता ने उन्हें पत्र लिखा कि आपने पुत्री का विवाह तो एक कंगाल से करने का निश्चय कर लिया है जो अति ही निर्धन व्यक्ति है—इस पर मदन महेता ने सन्त नरसी को पत्र लिखा, यदि बारात धूम-धाम से नहीं लाओगे तो पुत्री का विवाह नहीं करूँगा—निश्चित समय पर बड़नगर से बारात कुछ सम्बन्धी और कुछ पड़ोस के लोग लेकर बिना बाजे-गाजे के चल पड़ी थी—सन्त को तो परमात्मा पर पूर्ण भरोसा था कि भगवान कृष्ण स्वयं कृपा करेगें—सन्त नरसी तो भक्ति से कीर्तन करता हुआ चल रहा था, परन्तु सर्व लोग मन ही मन में यह दशा देखकर विचार मग्न थे कि कहीं मदन महेता पुत्री का विवाह करने से मना न कर दे—बारात जब बड़नगर के समीप पहुँची तो संत के चमत्कार को देखकर लोग दंग रह गये कि आनन-फानन में न जाने कि बारात में हाथी-घोड़े, बाजे-गाजे अपने आप कैसे आ गये—यह देखकर बराती खूब प्रसन्न हुये—मदन महेता ने कहा कि मैंने तो सन्त नरसी के विषय में और कुछ सुना था, परन्तु देखता हूँ कि वह बात नहीं है—सन्त नरसी तो धन, सम्पन्न हैं—जब सन्त नरसी को पता चला कि मदन महेता धनी हैं तब उन्होंने भी मदन महेता को कहा कि मैं धन सम्पन्न हूँ—मेरा धन तो कृष्ण नाम की माला है—मुझे तो भगवान का भरोसा है वही मेरी लाज रखता है—एक बार जेष्ठ भ्राता बंशीधर महेता ने सन्त नरसी दास को कहा कि तुम पिता

का श्राद्ध स्वयं करो, कारण काम तो करते नहीं हो सारा दिन भजन-कीर्तन में मस्त रहते हो, अतः अपना खर्च आप करो—पुनः सन्त ने पिता के श्राद्ध में सात सौ नागर ब्राह्मणों को न्योता दिया—भोजन बनाने में घी कम पड़ गया था—आप मोदी की दुकान पर गये घी लेने वहां पर आप भजन-कीर्तन में इतने मग्न हो गये कि घर घी ले जाने का ध्यान तक नहीं रहा था—इधर ब्राह्मणों के आने का समय समीप था—अब सन्त नरसी महेता का ऐसा चमत्कार हुआ—एक व्यक्ति सन्त नरसी के रूप में आकर घी दे गया—भोजन बना और सभी ब्राह्मणों को अच्छी प्रकार से भोजन कराया गया था जब सब खा-पीकर चले गये तब सन्तजी घी लेकर घर आये—स्त्री ने कहा कि घी तो आप ले आये थे फिर क्यों ले आये हो—सन्त ने कहा कि मैं तो नहीं आया था—उनकी स्त्री अपने पति का चमत्कार देखकर दंग रह गयी—एक बार सारंगधर महेता ने सन्त को नीचा दिखाने के लिये एक वेश्या को सिखाकर सन्त नरसी के पास रात्री को भेजा—उस कुलटा ने आकर सन्त को कहा कि मैं तीर्थ-यात्रा पर जा रही हूँ, परन्तु अब रात पड़ गयी है और मैं अकेली हूँ अतः मुझे भय लगता है—क्या आप मुझे केवल रात भर के लिए ठहरने की आज्ञा दे सकते हैं ? सन्त नरसी को तो सब भगवान के रूप दिखते थे, उन्होंने उसे आज्ञा दे दी—अर्द्ध रात्री को वह वेश्या सन्त के साथ छेड़-जाड़ करने लगी—सन्त ने कहा कि मां, तुम तो साक्षात देवी का रूप हो, तुम छेड़-छाड़ छोड़ दो और अपने मूल रूप को पहचानो, तुम्हें यह शोभा नहीं देता है—सन्त के चमत्कार से वह उनके चरणों में गिरी और क्षमा मांगी और चली गयी थी—दूसरे दिन सारंगधर यह जानने के लिये वेश्या

के घर जा रहा था कि मार्ग में उसे सांप ने काट लिया था–लोग उसे सन्त नरसी के पास ले आये थे–सन्त ने अपने चमत्कार से सारंगधर को चंगा कर दिया था–परन्तु वह दुष्ट अपनी दुष्टता से नहीं गया था–उसने राजा राव मांडलिक से जाकर कहा कि सन्त नरसी कपटी है, कल रात वेश्या के घर गया था–सन्त ने कहा कि यह बात झूठ हैं कि मैं वेश्या के घर गया–राजा ने उनकी बात को न मान कर कैद कर दिया, और आदेश दिया कि यदि तुम सच्चे सन्त हो तो भगवान के गले की माला कल प्रातः तुम्हारे गले में आ जानी चाहिये, यदि ऐसा नहीं हुआ तो तुम दोषी माने जाओगे–सन्त रात भर भगवान कृष्ण के कीर्तन में मुग्ध रहा था–पुनः सन्त नरसी के चमत्कार से मन्दिर के द्वार खुले और भगवान के गले की माला सन्त के गले में आ गयी थी–यह अद्‌भुत चमत्कार देख कर राजा ने उन्हें मुक्त कर दिया और क्षमा मांगी थी–सन्त नरसी महेता छूत-छात के खिलाफ थे – सन्त अछूतों को अपने भजनों में हरिजन कहते थे–एक बार किसी वैष्णव ने आप से पूछा कि क्या अछूतों को यहां जाना ठीक है ? तब सन्त ने कहा कि "वैष्णव तो वही नर जानो जो पीर पराई जाने रे"–सब एक ही पिता के पुत्र हैं–सन्त तुलसीदास, सन्त नरसी महेता के समय जब मीराबाई घर वालों से तंग आ गई थी और घर छोड़ कर वृन्दावन जाने के विचार करने लगीं तो उन्होंने एक पत्र सन्त तुलसीदास को और एक पत्र नरसी को लिखकर पूछा कि मुझे क्या वृन्दावन चला जाना ठीक है ?–दोनों सन्तों का एक ही उत्तर था कि जो नारायण का भजन–कीर्तन में रोके उसका त्याग कर देना चाहिये – जैसे व्रज में गोपियां सब कुछ छोड़ कर भगवान के साथ वन में

चली गई थीं-इस उत्तर से मीराबाई वृंदावन चली गई थी-एक बार कुछ साधु-संत जूनागढ़ यात्रा करते हुये आये थे, और उनको द्वारिका जाना था-उनके पास कुछ रकम थी-वह रकम मार्ग के भय के कारण अपने पास रखना नहीं चाहते थे-वह किसी साहुकार के पास रखकर हुंडी ले जाना चाहते थे-किसी व्यक्ति ने उन्हें मजाक में कह दिया कि जूनागढ़ में नरसी महेता बड़ा सेठ हैं वहां चले जाओ—वह संत नरसी महेता के पास गये और हुंडी के लिए प्रार्थना की-पहले तो संत ने कहा कि मैं कोई साहूकार नहीं हूँ जो आपकी हुंडी दे सकूं-साधु-महात्मा समझे कि यह हम को टाल रहा है-परन्तु जब उन्होंने हठ किया कि आप ही हम को हुंडी दो तब लाचार हो कर उन्होंने भगवान कृष्ण गिरधारी के नाम हुंडी लिख दी-इधर संत नरसी भक्त यह गीत गाने लगे कि "मारी हुंडी सिकारो महाराजरे, शामला गिरधरी"—यात्री द्वारका पहुँच कर शामला गिरधारी की दुकान ढुंढने लगे पर इस नाम की उन्हें कोई दुकान न मिली-यात्री लाचार हो कर संत नरसी महेता को गाली देने लगे कि इतने में उन्हें शामला गिरधारी सेठ ने आकर कहा कि कहाँ हैं मेरी हुंडी-उन्होंने हुंडी देकर रकम पा कर प्रसन्न हुये—यह था संत नरसी महेता का अदभुत चमत्कार-जब लोगों ने संत का यह चमत्कार देखा तो बहुत लोग उनके शिष्य बन गये थे-संत नरसी महेता ऐसे भजन करते-करते भगवान के रूप में मिल गये थे- ॥ इति श्री ॥

संतनी दक्षिण की मीरा आण्डाल

संतनी आण्डाल के धर्म पिता का नाम पेरियालवार था-यह पिता उनके जन्म प्रदाता पिता नहीं थे--आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में विल्लीपुत्तूर नाम का एक गाँव था-वहां के आदिवासियों के घर एक महिला का नाम मल्लि था जिस के कारण उस गांव का नाम मल्लिनाडु कहलाता था-मल्लि के लड़के का नाम विल्ली था—वह बड़ा प्रभावी था-गांव के चारों तरफ जंगल ही जंगल था-वह जंगल को साफ किया करता था जंगलों को साफ करते करते नीचे से एक विष्णु भगवान का मंदिर निकला था-उसने इस मन्दिर के आस-पास एक गांव बसाया था, अतः इसी के नाम पर इस का नाम श्री विल्लीपुत्तूर कहलाता था-इसी विल्लीपुत्तूर गांव में एक आलवार नाम का ईश्वर भक्त रहता था-उसका वासत्विक नाम विष्णु चित्त था, किन्तु लोग उसे परियालवार कहते थे-आलवार दक्षिण में वैष्णव भक्त को कहते हैं-आण्डाल उस की पालित कन्या थी-परियालवार बड़े ज्ञानी थे और परमात्मा के भक्त थे-वह अपने बाग से प्रति दिवस रंग-बिरंगे फूल चुन-कर अपने हाथों से भगवान के लिये फूल माला बना कर उन्हें पहनाते थे-एक दिन जब आप फूलों की माला बना रहे थे उस समय ठंडी वायु और फूलों की मधुर सुगंध चल रही थी तब आप भगवान की महिमा के गीत गा रहे थे कि एक दम उन्होंने तुलसी के पेड़ के नीचे किसी वस्तु को हिलते व डुलते देखा-जब वहां जाकर देखा तो एक छोटी बच्ची पड़ी थी-

पेरियालवार ने उसे उठा कर मन्दिर में भगवान की मूर्ति के आगे रख दी और कहाकि यह एक फूल आपके लिय लाया हूँ-उसी समय एक आवाज आई कि इस का नाम गोदा रखना तमिल में गोदा का अर्थ है-"फूलों की माला की भांति सुन्दर" पेरियालवर ही इसका पिता था और गुरु भी था-गोदा बड़ो हो कर पिता के साथ परमात्मा के भजन गाती थी और पिता के लिये फुल माला गूंथना और पूजा की सामग्री जुटाने में हिस्सा लेती थी-एक दिन मन्दिर के पुजारी ने पेरियालवार से कहा कि आपकी माला भगवान के योग्य नहीं हैं-कारण किसी ने इसे पहन कर अपवित्र कर दी है-पुजारी ने माला भगवान को नहीं पहनाई थी-उस को इस से बड़ा दुःख हुआ-दूसरे दिन भी जो वह फूलों की माला लाया तो पुजारी न पुनः यहा कहा कि यह माला भी भगवान को नही पहनाई जायेगी, कारण यह भी किसी ने अपने गले मे पहन कर इसे अपवित्र कर दी हैं-पुजारी ने तुरन्त माला में से एक सरका बाल निकाल कर उसे दिखा दिया था--पेरियालवार यह देख कर चिन्ता में पड़ गया और सोचने लगा कि कौन भगवान की माला को पहन कर अपवित्र कर देता होगा-माला तो पुत्री गोदा हो बनाती है-क्या वह पहन लेती होगी-परन्तु उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था-तीसरे दिन जब पेरियालवर मन्दिर जाने के लिये बहुत पहले ही उठ कर मन्दिर के लिये तैयार हो गया था-गोदा कुटिया के अन्दर माला गूंथ रही था--पेरियालवर यह देख कर स्तब्ध रह गया कि गोदा फूलों की माला गूंथकर एक शीशे में वह यह देखती थी कि कैसा शोभायमान है-वह माला की शोभा निहारती थी और कहती कि बेशक माला अति सुन्दर हैं-पुनः पिता को लौटा देती थी-पिता यह देख कर

कहा कि अरी नासमझ लड़की यह क्या कर रही हैं-पिता की आवाज सुन कर वह डर गई-पुनः सम्भल कर पिता को कहा देखिये आज मैंने कितनी सुन्दर माला बनाई हैं-पिता ने नाराज़ हो कर कहा कि तूने तो सत्यानाश कर दिया है जो भगवान की माला पहनकर अपवित्र कर दी हैं-ऐसी मूर्खता तूने क्यों की-किस ने तुझे ऐसा करने के लिये कहा था-तेरी नादानी के कारण मेरी पूजा नष्ट हो गई अब में क्या मुंह लेकर मन्दिर में भगवान के सामने जाऊंगा-गोदा तो भोली थी वह पिता को कहने लगी कि आज आप इतना क्रोध क्यों कर रहे हो मैं तो रोज माला गूंथने के बाद पहले पहन कर देख लेती हूँ कि क्या यह अच्छी बनी हैं या नहीं-जो माला मुझे न पसन्द आवे वह माला मैं कैसे भगवान के लिये दे सकती हूँ-मुझे पसन्द आती है तब ही तो देती हूँ-गोदा का पिता यह उत्तर सुनकर बहुत ही क्षुब्ध हुआ-अब भगवान मुझे कभी भी क्षमा नहीं करेगें-हाय मैं महिनों से अपवित्र माला चढ़ाता रहा हूँ-इस में दोष तो मेरा है कि मुझे तो स्वयं फूल माला गूंथना था-तब उन्होंने अपने हाथों से फूल माला गूंथकर शीघ्र मन्दिर चले गये-

पिता की नाराजगी से गोदा घबड़ा गयी थी-उस के हाथ से वह माला छूट कर नीचे गिर गयी थी-वह मन ही मन खुश हो रही थी कि इतनी सुन्दर माला आज मैंने भगवान के लिये बनायी हैं—परन्तु गोदा उदास हो कर रोने लगी थी और उस दिन गोदा ने भी भोजन नहीं खाया था—पिता रात को बड़ी देर तक जागते रहे, और सोचते रहे कि मेरे से बड़ा अपराध हो गया है—जो अपवित्र माला चढ़ाता रहा जब पिता को

थोड़ी नींद आई तो उन्होंने स्वप्न देखा कि शेषशायी भगवान रंगनाथ कह रहे हैं कि ऐ भक्तराज ! तू क्यों दुःखी होता है-तेरा कोई अपराध नहीं है-मुझे तो गोदा की प्रेम से गूंथी माला बहुत प्रिय है-आप हमेशा भविष्य में मुझे उसी की माला पहनाना-यह देख कर पिता बहुत गद्‌गद् हो गये-इधर गोधा पिता की नाराजगी और अपवित्र माला भगवान को अर्पित करने से सारी रात रोती रह गयी थी-प्रातः पेरियालवार ने देखा कि गोदा अब भी रो रही है-गोदा का मुख बहुत उदास था कारण उसने दिन भर अन्न-जल नहीं लिया था-अब पिता अपने आंसू को बरसाते हुये बोले पुत्री तू तो धन्य हैं कि आज तेरे कारण मैं भी धन्य हो गया-अभी भगवान रंगनाथ जी ने दर्शन दिया है, और कहा है कि भविष्य में मुझे गोदा के हाथ की माला पहनाना-मैं जान गया हूँ कि तूने प्रेम से भगवान को भी वश में कर लिया हैं-

अब मैं तुझे गोदा न कह कर आण्डाल कहूँगा-आण्डाल शब्द का अर्थ है "अपने प्रेम से दूसरे को वश में करने वाली"-उधर भगवान ने पुजारी को भी स्वप्न में आकर आदेश दिया कि मुझे तो वह गोदा को पहनी हुई माला को लेने से मना ही न किया कर-यह दक्षिण की मीरा जिस का नाम अब आण्डाल था यह चमत्कार देख कर सब लोग बड़े प्रसन्न हो रहे थे-अब आण्डाल बड़ी हो गयी थी, भगवान के प्रति उसका प्रेम और भी दृढ़ हो गया था-वह मन में कल्पना करने लगी कि प्रभु मेरा व्याह तो श्रीकृष्ण रंगनाथ जी से ही हो ठीक है-यह सोच कर वह भगवान का भजन-कीर्तन करने लगी एक रात आण्डाल को स्वप्ना आया और देखा कि भगवान के साथ मेरा विवाह

हो रहा है, और मण्डप सजाया जा रहा है, और धूमधाम के साथ तैयारियां हो रही हैं–पेरियालवार को अब आण्डाल के विवाह की चिंता होने लगी थी–एक रात भगवान रंगनाथ ने स्वप्न में उन्हें कहा कि आप आण्डाल को मन्दिर में ले आओ, मैं उसका पाणिग्रहण करूँगा–पिता ने सोचा कि आण्डाल पुत्री भगवान ने मुझे दी है अतः ठीक है मैं यह भगवान की अमानत भगवान को ही दूँगा—मदुरै में पांडय राजा राज करते थे—भगवान ने राजा को भी स्वप्न में आदेश दिया कि आप विवाह का व्यय सहन करो–श्री विल्लीपुत्तूर में बड़ी धूम के साथ आण्डाल की डोली राजसी ठाठ के साथ चल पड़ी थी—पेरियालवार हाथी पर बैठ कर भगवान की महिमा गाते जा रहे थे–पीछे घोड़े-रथ और पैदल सैनिक चल रहे थे–रास्ते में फूलों की वर्षा हो रही थी–कावेरी नदी श्री रंगनाथ के मन्दिर में आण्डाल डोली से उतरी–आण्डाल भगवान के चरणों में बैठ गई–पुनः वह एक दम अन्तरधान हो गई थी–वह भगवान की मूर्ति में समा गयी थी–दक्षिण की आण्डाल का यह चमत्कार देख कर सब दंग रह गये थे–परन्तु पेरियालवार पिता पुत्री के मोह के कारण रो रहे थे–पुनः भगवान धरोवर भगवान को सौंप कर आपने संतोष किया था–तब आकाश वाणी हुई कि आण्डाल भू देवी थी जो मुझ में आ मिली अब तुम भी शीघ्र मुझसे आ मिलोगे–यह था संत का चमत्कार जिसे देखकर सब प्रसन्न हो गये थे–

॥ इति श्री ॥

संत नाम देव

संत नामदेव के पिता का नाम दामा सेठ था और माता का नाम गोणाई था-आपका जन्म महाराष्ट्र के जिला सतारा में ब्राह्मणी गांव में संवत 1327 में हुआ था-उनके पिता भगवान की दिन प्रति पूजा करते थे और भगवान को दूध का भोग लगाते थे—एक दिन दामा सेठ को कारण वश बाहर किसी गांव में जाना था-उन्होंने सोचा कि मेरे चले जाने के पर पीछे दूध का भोग कौन लगवाएगा—उन्होंने यह कार्य बालक नाम देव को ही सौंपा था—पिता के जाने के बाद संत नाम देव ने पूजा के उपरान्त दूध का भोग लगवाया था—उन्होंने दूध मूर्ति के सामने रख कर कहा कि भगवान आज पिता जी तो बाहर गये हैं, अतः मैं दूध लाया हूँ, आप पी लो—इतना कह कर वह नेत्र बंद करके बैठ गया—थोड़ी देर बाद जब आंखें खोली तो देखा कि दूध बरतन में वैसे पड़ा है-संत नाम देव ने पुनः आंखें बंद कर के कहा कि भगवान दूध पी लो—कुछ समय बाद जब आंखें खोल कर देखा तो दूध वैसे का का वैसे ही पड़ा था-संत नाम देव ने सोचा कि मेरे से कोई भूल हो गयी तभी भगवान ने दूध नहीं पिया-उस ने बहुत प्रार्थना की और बोला भगवान मैं नादान बालक हूँ, आप मुझे क्षमा करो—मैं उचित रीति से पूजा करने में असमर्थ हूँ आप कृपा दूध पीलो—पुनः आंखें खोल कर देखा दूध पड़ा था—अब संत नाम देव ने कहा कि जब तक आप दूध नहीं पी लोगे तब तक मैं अन्न-जल नहीं

लूंगा-और यहां बैठा रहूंगा-संत नाम देव को दो दिन व्यतीत हो गये बिना खाये-पिये-भगवान बालक का दृढ़निश्चिय और भाव को देख कर प्रकट हो कर दूध पी लिया था—

दामा सेठ जब वापिस आये तो स्वयं अपने नेत्रों से देखा कि संत नाम देव के बुलाने से भगवान प्रकट हो कर दूध पीते हैं—संत नाम देव का यह चमत्कार देख कर सब खुश हुये थे—संत नाम देव जी भूत मात्र में परमात्मा का दर्शन करते थे—संत नाम देव जीव को आत्मा (ब्रह्म) का रूपान्तर जानते थे—वह जानते थे कि जीव ही परमात्मा के ज्ञान से ही आत्मा (ब्रह्म) रूप हो जाता है, अतः सब में परमात्मा का दर्शन करते थे—एक बार संत नाम देव यात्रा पर गये थे—एक दिन आप को जंगल में पड़ाव पड़ा था—संत ने जंगल में लकड़ी चुनकर भोजन बनाया-भोजन बनाने के बाद आपको लघु शंका जाने की इच्छा हुई-जब आप लघु शंका से निपट कर वापिस आये तो देखा रोटियां बिखरी पड़ी हैं और कम भी पड़ी हैं--यह देख कर आप को आश्चर्य हुआ—जब उन्होंन देखा कि एक कुत्ता रोटिया लेकर भाग रहा है, तब उन्होंने एक घी का बरतन उठा कर उस कुत्ते के पीछे भागे-संत नाम देव जो यह बोलते भाग रहे थे कि प्रभु रोटियां सूखी हैं-थोड़ी देर के लिए रूक जाओ, मैं इनको घी तो चुपड़ दूं पुनः खाना—लोगों ने जब संत का यह दृश्य देखा तो सब उसे पागल कहने लगे कि कुत्ते को परमेश्वर मान रहा है—संत नाम देव जी भागते भागते थक गये थे—तब संत नाम देव नें कहा कि प्रभु आप तो पूर्ण शक्तिमान हो और मैं अशक्त हूं-अतः मैं प्रार्थना करता हूं कि आप थोड़ी देर के लिये कृप्या रूक जाओ—मैं घी लगा

हूँ फिर खा लेना—संत नाम देव कुत्ते के रूकने पर कुत्ते के मुंह से रोटियां निकाल कर घी लगाने लगे थे कि इतने में वह कुत्ता अन्तर्ध्यान हो गया—संत नाम देव तो सर्व को आत्मा-स्वरूप जानते थे—कुत्ते के अदृश्य हो जाने पर आनन्द विभोर हो उठे—सब लोग भी सन्त नाम देव का यह चमत्कार देख कर आश्चर्य करने लगे थे—एक बार सन्त राम देव सन्त ज्ञानेश्वर के साथ यात्रा से वापिस आ रहे थे—तेरटो के स्थान पर सन्त गोरा कुम्हार की कुटिया पर ठहर गये थे—सन्त गोरा कुम्हार तो पहुंचे हुये संत थे—उन्होंने सन्त नाम देव को कहा कि आप अभी कच्चे घड़े हो, कारण आपको इतना समय व्यतीत हो गया है और आप ने अभी तक गुरु नहीं किया है—'सन्त नामदेव ने गुरु से दीक्षा नहीं ली थी–सन्त तो अपने पिता के समझाने पर पूजा में लग गये थे, वास्तव में गुरु नहीं किया था—सन्त रामदेव ने पंठरपुर आकर गुरु की खोज करने लगे-बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भगवत इच्छा मानकर उन्होंने बिसोवा खेचर को गुरु धारण किया था—सन्त राम देव जब गुरु की खोज कर रहे थे तब उन्होंने सन्त बिसोवा खेचर को देखा—सन्त बिसोवा खेचर शिव मन्दिर में शिवलिंग पर पैर रख कर बैठे थे-यह देख कर सन्त रामदेव को बहुत बुरा लगा-तब उन्होंने उनसे कहा कि यह क्या आप शिव पिंडी पर पांव रखकर बैठे हो—उस वृद्ध सन्त बिसोवा खेचर ने कहा कि तुम शिव पिण्डी से मेरे पांव को हटा दो—सन्त रामदेव ने उनके पांव को हटाकर दूसरी ओर कर दिये—परन्तु यह देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि जिस ओर उन्होंने सन्त बिसोवा खेचर के पांव किये हैं, शिव पिण्डी भी उसी ओर हो गई है—एक बार पुनः सन्त बिसोवा खेचर के पांव दूसरी ओर किये

चलकर यही बालक तानसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ था—जो बादशाह अकबर के दरबार में नवरत्नों में से एक था—सन्त हरिदास ने बालक की पहचान करके अपना दिग-दर्शन कराया था—

एक बार सन्त हरिदास जो यमुना नदी के किनारे और सन्तों के साथ कृष्ण के गीत गा रहे थे कि एक धनी सेठ भी उस सत्संग में आया हुआ था—सेठ ने सन्त हरिदास को कहा कि मैं आपकी सेवा में अपनी तुच्छ भेंट देना चाहता हूँ उसे आप कृपया स्वीकार करें—सन्त ने कहा कि हमें न तुच्छ, न महान भेंट की जरूरत है, हमें तो कृष्ण की भक्ति ही चाहिए-भक्त ने कहा कि ठीक है, आपको जरूरत नहीं है लेकिन आप मेरे मन की प्रसन्नता के लिए स्वीकार कर लें—पुनः सेठ ने एक पारस मनि अर्पित कर दी—सन्त ने कहा कि यह वस्तु मेरे काम की नहीं है, अतः मैं लेकर क्या करूँ—सन्त हरिदास ने पारस मणि को यमुना नदी में फेंक दी—पुनः भक्त ने उदास होकर कहा कि सन्त जी यह आपने यह क्या किया, न मेरे काम की रखी न अपने काम की रखी—सन्त ने जब सेठ को उदासदेखा तो संत ने कहा कि अच्छा चलो मेरे साथमैं आपको पारस मणि देता हूँ—सन्त हरिदास भक्त को एक जङ्गल में ले गये जहां पर पारस मणियों का ढेर पड़ा था—उन पारस मणियों के चारों तरफ भयानक काले नाग रेंग रहे थे—सन्त ने कहा कि देख काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार रूपी नाग पारस मणियों के चारों ओर रेंग रहे हैं, यदि आपभी इन व्यसनों को धारण करना चाहते हों तो पारस मणि उठा लो—तब सेठ को ज्ञान प्राप्त हुआ कि यह तो दुःख के कारण हैं—पुनः वह सन्त हरिदास का यह चमत्कार देखकर वह भी

राधा-कृष्ण का भक्त बन गया, और सन्त हरिदास का शिष्य बन गया था—यह सन्त हरिदास का चमत्कार देखकर वह हैरान रह गया था—

एक बार बादशाह अकबर ने तानसेन से कहा कि क्या कोई तुम से भी बढ़कर गीत गाने वाला है ? तानसेन ने कहा कि हजूर मेरे गुरु सन्त हरिदास जी हैं—अकबर ने कहा कि उन्हें दरबार में आने का आदेश दो, हम उनका गाना सुनेंगे—तानसेन ने कहा कि वे न किसी के दरबार जाते हैं और न किसी के लिए गाते हैं—सन्त हरिदास जी तो तन्मय होकर राधा-कृष्ण के गीत गाते रहते हैं—बादशाह अकबर ने कहा कि हम कैसे उनका गाना सुन सकते हैं—तानसेन ने कहा कि यदि आप मेरे साथ साधारण वेश में चलें तो सुन सकते हैं—अकबर ने यह बात स्वीकार की, और वह दोनों गाना सुनने के लिए वृन्दावन चल पड़े—वहां पहुंच कर दोनों सन्त हरिदास की कुटिया में बैठ गये—तानसेन ने गुरु को साष्टांग प्रणाम किया, पुनः अपना राग गुरु सन्त हरिदास को सुनाने लगा—तानसेन ने जानकर उस गाने को गलत गाया—तब सन्त ने उसे टोक कर स्वयं उस राग को गाने लगे - यह ऐसे गाया जाता है—सन्त का गाना सुनकर अकबर मन्त्र-मुग्ध हो गया था—और बोल उठा वाह-वाह अफरीन क्या गाना है—तानसेन के साथ आने वाले मनुष्य से यह शब्द सुनकर सन्त हरिदास जान गये यह अकबर बादशाह है—पुनः अकबर ने कहा कि कहो सन्त जी, मैं आपकी सेवा क्या करूं—सन्त हरिदास ने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए लेकिन भविष्य में मेरे पास नहीं आना बस यही चाहिए—सन्त का चमत्कार

ग्राह किसी को पकड़ता है तो छोड़ता नहीं है, परन्तु सन्त का परमात्मा की भक्ति के परभाव का चमत्कार था, जो उसी समय ग्राह पांव छोड़कर चला गया–सन्त शंकर का यह चमत्कार देखकर सब आश्चर्य करने लगे और सन्त शंकर की जय-जयकार करने लगे–अतः आपने गुरु गोविन्द भगवत प्रसाद से दीक्षा ली थी–

सन्त शंकर को बहुत कठिन तपस्या के बाद तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ–सन्त शंकर ने लोगों को कहा कि जगत मिथ्या है ब्रह्म सत्य है–सन्त का एक बार माहिष्मनी नगर में अद्वैतवाद पर मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ हुआ–मण्डन मिश्र प्रकाण्ड पण्डित थे और उनकी पत्नी भारती भी परम विदुषी थी–मण्डन मिश्र ने कहा कि शास्त्रार्थ में मध्यस्थ किसको बनाया जाये–पुनः सन्त शंकर ने कहा मैं चाहता हूं कि आपकी पत्नी को ही मध्यस्थ बनाया जाये–पुनः वही मध्यस्थ बनी–सत्रह दिन शास्त्रार्थ कर मण्डन मिश्र परास्त हुये थे–अब उनकी पत्नी भारती ने कहा कि अब आप मेरे साथ शास्त्रार्थ करो–जब उनका शास्त्रार्थ हो रहा था तब भारती ने एक प्रश्न पुरुष-स्त्री के शारीरिक सम्बन्धी प्रेम के विषय में कर दिया था–सन्त शंकर तो छोटी अवस्था में संन्यासी बन गये थे अतः वे इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके–पुनः सन्त शंकर ने उनसे छः मास की अवधि मांग ली थी जो भारती ने स्वीकार कर ली थी–पुनः सन्त शंकर अमरू राजा जो मरने वाला था (अभी मरा नहीं था) उसके शरीर में प्रवेश कर उसकी रतीज्ञान प्राप्त करके बाद में भारती विदुषी को उत्तर दिया था–तब भारती ने हार मान ली थी–यह सन्त शंकर का विचित्र चमत्कार देखकर सर्व मन्त्र-मुग्ध हो गये थे–

में प्रवेश किया—उस समय पंजाब का राजा पोरस था—बादशाह सिकन्दर ने पंजाब पर आक्रमण कर दिया था—घमासान लड़ाई हो रही थी तब राजा पोरस की पत्नी बादशाह सिकन्दर को भाई बना कर बहन रक्षा सूत्र बांधने गई थी—भारत में यह प्रथा थी कि जो बहन बन कर किसी को भाई बना कर रक्षा सूत्र बांधती है तो वह भाई उस की रक्षा एवं भले का अधिकारी हो जाता है—लड़ाई में ऐसा अवसर आया कि बादशाह सिकन्दर राजा पोरस को अपने भाले से मारने ही वाला था कि उसे वह बहन की रक्षा बंधन का विचार आ गया, तब उस ने राजा को न मारा—अब राजा पोरस ने हार मान ली थी—बादशाह सिकन्दर ने राजा पोरस से पूछा अब मैं आपके साथ क्या सलूक करूं? राजा ने कहा कि जो एक राजा दूसरे राजा के साथ करता हैं, तब राजा को छोड़ दिया—

बादशाह जब भारत की तरफ प्रस्थान करने चला था तो उसने अपने गुरु से कहा कि मैं आपके लिए भारत से क्या वस्तु लाएं—गुरु ने कहा मेरे लिए भारत से एक ब्रह्मज्ञानी सन्त ले आना—यह स्मरण करके बादशाह ने राजा को कहा कि मुझे अपने गुरु के लिए एक ब्रह्मज्ञानी सन्त ले जाना है सो मुझे दिलवा दो—राजा ने कहा कि उनका कोई एक स्थान नहीं है, वह तो घनघोर जंगलों में रहते हैं, अतः वह नहीं मिल सकेंगे—बादशाह ने विचार किया कि मैं स्वयं ऐसे सन्त को ढूंढ लूंगा—वह स्वयं चार घोड़े सवार सैनिक लेकर जंगल की ओर चल पड़ा—घोर जंगल में घूमते-घूमते उसे जंगल में कड़ाके की धूप में गर्म रेत पर नंग बदन ध्यान में एक सन्त सोया पड़ा था—सिकन्दर ने उसे ही ब्रह्मज्ञानी सन्त जानकर कहा कि हे सन्त ! उठ बात सुन—सन्त तो अपने

ध्यान में मस्त पड़ा था, उसने कोई उत्तर न दिया—बादशाह ने पुनः कहा कि महाराज उठो, मैं सिकन्दर बादशाह हूं, मेरी बात सुनो—सन्त ने कोई भी न उत्तर दिया न उठा था—अब सिकन्दर ने क्रोधित होकर कहा कि अरे उठ, मैं सारे जगत का बादशाह हूं, सारा जगत मेरे अधीन है, मेरा सारे जगत पर मेरा अधिकार है-पुनः सन्त ने सोते हुए प्रश्न किया कि क्या काम है और कहां से आया है? बादशाह ने कहा कि सिकन्दर मेरा नाम है और में आपको लेने आया हूं-मैंने सारे विश्व को जीत लिया है-तब ब्रह्मलीन सन्त उठकर बोला कि आपने सारे विश्व को जीत लिया है ? क्या सारा जगत आपकी आज्ञा पालन का करता है? सिकन्दर ने कहा कि हां, सारा जगत मेरी आज्ञा का पालन करता है-पुनः सन्त के पास तीन हाथ की चादर पड़ी थी, सन्त ने कहा कि आप इस चादर को कहो कि यह हमारे दोनों, आपके और मेरे ऊपर ऐसे तन जाये कि हम दोनों पर धूप न आये-बादशाह ने कहा कि यह विना किसी सहारे कैसे तन सकती है—सन्त ने कहा कि अभी तो आप कह रहे थे कि सारा जगत मेरी आज्ञा का पालन करता है फिर यह तीन हाथ की चादर आपकी आज्ञा का पालन क्यों नहीं करती? बादशाह ने कहा कि यह बिना सहारे के नहीं तन सकती है, क्या आप ऐसा कर सकते हैं कि यह विना सहारे तन जावे-सन्त ने कहा कि हां, मेरे कहने पर यह तन सकती है-सिकन्दर ने कहा कि अच्छा आप इसको विना सहारे इसको तना कर दिखाओ-पुनः सन्त ने चादर को उठाकर ऊपर फेंकते हुये कहा कि हे चादर ! तू ऐसी रीति से तन जा कि धूप न मेरे पर पड़े न सिकन्दर पर पड़े—आनन-फानन में उक्त चादर बिना सहारे वैसे की वैसी तन

गई थी—सन्त का विलक्षण चमत्कार देखकर हैरान रह गया—

सिकन्दर ने सोचा कि इस सन्त का तो प्रकृति पर राज्य है, अतः मैं इसे अपने साथ यूनान ले जाऊंगा–तब उसने सन्त से बार-बार प्रार्थना की कि आप मेरे साथ चलो–मेरे गुरु ने कहा था कि ऐसे ब्रह्मज्ञानी सन्त को मेरे लिए ले आना—सन्त ने कहा कि मैं एक बात आपको कहता हूं सो तू अपने गुरु को कह देना, पुनः वह आपको कहेंगे कि ठीक है मैं समझ गया हूं, नहीं आये तो कोई हर्ज नहीं—अतः वह सन्तुष्ट हो जायेंगें–सन्त ने कहा कि उनको कहना कि जिसे तू चाहता है वह स्वयं आत्म-स्वरूप तू स्वयं है, और कोई नहीं है-बस अब बादशाह सिकन्दर वह बात सुनकर और सन्त का चमत्कार देखकर चला गया था–यह था सन्त का चमत्कार जो प्रकृति पर भी शासन करते हैं—यह एक महात्मा ने अपने प्रवचन में सुनाया था सो मैंने लिखा है–

॥ इतिश्री ॥

सन्त ऋषि कुत्स

(गुरु गङ्गेश्वर ग्रन्थ माला)

सन्त ऋषि कुत्स दूसरों का हित करते समय दयालुता-वश कृत्य कार्य व अकृत्य तक का भी विचार नहीं करते थे—सन्त ऋषि यह नहीं देखते थे कि अमुक कार्य करना चाहिए या नहीं, ऐसा कार्य करने पर मैं स्वयं कष्ट में पड़

जाऊंगा—सन्त ऋषि के काल में एक दीर्घजिह्वी नाम की एक राक्षसी अत्यन्त उन्मत्त होकर प्रत्येक ऋषि के यज्ञ में पहुंचती और उसे अपवित्र करने, नष्ट करने की कुचेष्टायें करती रहती थी—आये दिन उसके उत्पातों से ऋषि ऊब गये थे—अन्ततः सभी ऋषियों एवं परिसवर्ती अन्य तपस्वियों ने भी देवराज इन्द्र से एतदर्थ प्रार्थना की—देवराज इन्द्र ने कहा कहा : भाइयो, इसे एक विलक्षण वर प्राप्त है—जिसने कभी किसी को मारना तो क्या, तनिक सी पीड़ा नहीं पहुँचायी हो. जो सबका मित्र हो, वही इसे मार सकता है—बताइये, है कोई आप लोगों में ऐसा ? सभी एक दूसरे की ओर देखने लगे—पुनः इन्द्र ने कहा घबराइये नहीं - मैं ऐसा व्यक्ति जानता हूं और वह है सन्त ऋषि कुत्स—अतः हम सर्व उसी के पास चलें—इन्द्र सहित सभी लोग ऋषि कुत्स के पास पहुंचे—सबने भक्ति भाव से उस सर्व मित्र ऋषि को प्रणाम किया—ऋषि ने देवराज इन्द्र एवं ऋषि प्रभृति समागत अतिथियों का यथा योग्य स्वागत किया—देवराज इन्द्र ने कहा कि ऋषि ! आज आपको समस्त मानवों का संकट दूर करने के लिए एक अकार्य करना पड़ेगा—देवराज इन्द्र ने कहा कि मैं जानता हूं कि आप 'मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि' श्रुति वाक्य पर निष्ठा रखते हैं—आपने शारीरिक ही क्या, वाचक और मानसिक तक हिंसा स्वप्न में भी नहीं की है—किन्तु आज आपको प्रत्यक्ष दीर्घजिह्वा राक्षसी का, और वह भी स्त्री का, वध करना होगा—हम सब एतदर्थ आपसे प्रार्थना करने आये है—इन्द्र को पूर्ण विश्वास था कि ऋषि कुत्स इसे स्वीकार नहीं करेंगे—किन्तु वे तो सन्त थे बड़े नम्र स्वभाव के थे वह किसी उपकार करते समय यह भी नहीं

देखते थे कि इस कार्य से मुझे कितनी हानि उठानी पड़ेगी-सन्त ऋषि कुत्स ने तत्काल कह दिया कि अपना शस्त्र या वज्र दीजिए-अभी काम तमाम किये देता हूं-सन्त की यह दयालुतापूर्वक कार्य पर इन्द्र ने बड़े आदर के साथ वज्र दे दिया--सन्त कुत्स ने तत्काल दीर्घजिह्वा को वज्र के एक ही प्रहार से मार दिया था-सन्त के चमत्कार से देव, ऋषि और जन समुदाय आश्वस्त हो गया था-यह सन्त का चमत्कार था जो बड़े दयालु होते हैं-

इसी बीच आकाशवाणी हुई, हे ऋषि ! तुमने तो यह तो बहुत बुरा किया-तुम तो सबके मित्र माने जाते हो, फिर ऐसा क्रूर कार्य क्यों किया कि एक स्त्री का एक सर्व मित्र सन्त वध करे ? सन्त को यह आकाशवाणी सुनकर दुख हुआ-सन्त ने ऋतम्भरा से अपना ऋचा का दर्शन कर अग्निदेव से पापक्षालनार्थ प्रार्थना की-अग्निदेव आविर्भूत हो गये-उन्होंने सन्त कुत्स का सारा पाप नष्ट कर उन्हें पूर्ववत निष्कलंक सर्व मित्र बना दिया था-कथा के स्रोत-ऋग्वेद (1-97-1)-

॥ इतिश्री ॥

सन्त पीपा भक्त

सन्त पीपा गागरोन में राज्य करते थे-उनकी बारह रानियां थीं-परन्तु आप परमात्मा के अनन्य भक्त थे-आप जगत के सुख एवं रानियों के प्रेम को तुच्छ मानते थे-एक बार उनके राज्य में सन्त मण्डली आई थी-आप तो परमात्मा

के भक्त तो थे ही अतः उन्होंने सब सन्तों का आदर किया, तथा उनके लिए भोजन व निवास करने के लिए उचित प्रबन्ध कर दिया था—परन्तु राजा स्वयं उनके दर्शन करने को नहीं गया था, उसके इस वर्ताव से साधु-सन्त खुश नहीं थे—एक रात को राजा को स्वप्न में गागरोन में जो कुलदेवी का मन्दिर था उसने प्रकट होकर कहा कि तुम काशी में जाकर स्वामी रामानन्द को गुरु धारण कर उनसे दीक्षा लो—पुनः राजा कुलदेवी का आदेश स्वीकार करके काशी में स्वामी रामानन्द के पास पहुंच गये थे—परन्तु स्वामी रामानन्द ने आपको शिष्य नहीं बनाया और न दीक्षा दी—इसका मुख्य कारण यह था कि एक तो उनका जीवन राज कार्य में व्यतीत हुआ था, दूसरा जब स्वामी रामानन्द जी को मिलने गये थे उस समय आपने राजाओं जैसे वस्त्र पहन रखे थे–अतः स्वामी ने मना ही कर दी थी–पुनः राजा ने राजसी वस्त्र उतार कर साधु वेश में जाकर स्वामी जी से दीक्षा की प्रार्थना की—स्वामी जी ने देखा इसका विश्वास दृढ़ है फिर भी ऐसे व्यक्ति की परीक्षा लेना आवश्यक है—पुनः स्वामी जी ने कहा अच्छा ठीक है, आप सामने कुआं है आप उसमें कूद पड़ो – अब सन्त पीपा गुरु के आदेशानुसार कुएं में कूदने के लिए तैयार हो गये थे – पुनः स्वामी जी ने अपने शिष्य द्वारा सन्त पीपा को वापिस बुला लिया था और दीक्षा दी थी–

सन्त स्वामी रामानन्द ने अपने शिष्य सन्त पीपा को कहा कि तुम अपने राज्य गागरोन में जाकर राज्य करो–परन्तु सन्त पीपा ने कहा कि गुरुदेव अब मेरा दिल राजपाट से विरक्त हो गया है—पुनः गुरु जी ने कहा कि पहले आप

वैराग्य दृढ़ करो—समय आने पर सब कुछ हो जायेगा-सन्त पीपा अपने राज्य में चले गये—

एक दिन सन्त पीपा राज्य छोड़कर चल पड़े, तब बारह रानियां भी साथ चलने को तैयार हो गयीं—सन्त पीपा ने केवल छोटी रानी सीता को साथ ले जाना स्वीकार किया-बाकी रानियों को मना कर दी—सन्त पीपा और पत्नी सीता परमेश्वर की भक्ति में लग गये थे-एक बार इन दोनों को सन्त श्रीघर ने अपने घर पर भोजन का निमन्त्रण दिया-पुनः सन्त पीपा और सीता उनके घर भोजन करने के लिए गये—सन्त श्रीघर ने खाने की चार पत्तलें लगायीं-सन्त पीपा तो श्रीधर के पास भोजन निमित्त बैठ गये परन्तु सीता श्रीघर की पत्नी का इन्तजार कर रही थी-कुछ समय बीत जाने पर स्वयं श्रीधर की पत्नी को घर के अन्दर जाकर बुलाने गई—सीता ने पुकारा कि बहन जी आप बाहर आओ आपकी पत्तल लगी पड़ी है—श्रीधर की पत्नी एक कोठरी के अन्दर थी—उसने अन्दर से कहा कि बहन जी आप मेरी प्रतीक्षा न करें, आप भोजन आरम्भ करो—सीता ने कहा यदि आप नहीं खायेंगी तो मैं भी नहीं जाऊंगी-तब अन्दर से श्रीधर की पत्नी ने कहा कि बहन जी हम बड़े कंगाल हैं-मेरे पति ने मेरा घाघरा बेचकर ही अतिथि सेवा की है—इस समय मेरे शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है—नंगी हूं, भला मैं कैसे बाहर आ सकती हूं—सीता नें अपनी आधी साड़ी देकर कहा कि अब आ जाओ—पुनः चारों ने भोजन किया—अब सन्त पीपा व सीता बाहर मार्ग पर आ गये—सीता गाने लगी सन्त पीपा सारंगी बजाने लगे—इस प्रकार दोनों ने गाकर कुछ रकम एकत्रित करके सन्त श्रीधर को देने गये—श्रीधर ने कहा मैं कंगाल हूं परन्तु

भक्तों की मेहनत से कमाये पैसे नहीं ले सकता हूँ–संत पीपा व सीता हठ पूर्वक देकर चले गये–यह है दोनों संतों का चमत्कार–अब संत व सीता घूमते-घुमते एक तालाब पर आये–वहां पर उन्होंने एक झाड़ी के पास बहुत स्वर्ण मुद्रायें पड़ी देखीं–तब दोनों ने कहा कि होंगीं किसीं की, चलो-चलो हमको क्या करना है ? अतः वह छोड़कर चले गये–यह बात उक्त झाड़ी में बैठे चोर सुन रहे थे–चोरों ने वहां जाकर देखा तो मोहरें नहीं पड़ी थीं केवल सांप और बिच्छुओं का ढेर था–चोरों ने सोचा कि इस संत और औरत ने हमको दोखा दिया है, हम इनको इस मजाक का मजा चखायेगें–उन्होंने सांप-बिच्छुओं को मटके में भरकर उनकी कुटियां में छोड़कर चले गये थे–सूर्य अस्त समय जब संत पीपा कुटिया से बाहर आये तो देखा कि वह तालाब के पास वाली मोहरें सब यहां पड़ी हैं–पुनः संत पीपा और सीता ने भगवत इच्छा मानकर वह मोहरें ग्रहण कर लीं–संत पीपा ने इनका उपयोग साधु-संतों की सेवा में खर्च कर दीं–यह संत पीपा का चमत्कार–

इति श्री–

अब हम मुलतान (जो पाकिस्थान में गया) के कई संतों का चमत्कार लिखते हैं–मुलतान लेखक का जन्म स्थान था–मुलतान की चार चीजें प्रसिद्ध थीं–अतः "चार चीज अजतोफा ए-मुलतान ! गर्द (मट्टी) गर्मा (गर्मी) गदा (संत) और गोरस्थान (कबरें)–अस्तु–

संत लूडंण

महाराजा रणजीतसिंह पंजाब के राजा थे–उन्होंने मुलतान नगर का शासन भार अपने सूबेदार दिवान सावनमल कपूर को सौंप रखा था–एक बार मुलतान में बराबर दो वर्ष बरसात नहीं हुई थी–अतः खेती सूख रही थी–अनाज की उपज कम पड़ गई थी—प्रजा में हा-हाकार मच रही थी–पुनः प्रजा ने दिवान सावन मल के दरबार में आकर पुकार की थी–प्रजा ने कहा कि इस वर्ष भी बरसात अभी तक नहीं हुई है–यदि पूरा समय निकल गया तो भीषण अकाल पड़ जायेगा–अतः आप कोई उपाय करें–दिवान जी ने सर्व दरबार पदाधिकारों को बुला कर इस पर विचार विमर्श किया–पुनः उन्होंने कहा कि इसके लिए साधु-संतों की शरण ली जावे ताकि वह अपने तपोबल के आधार पर वर्षा करवा दें–मुलतान में हिन्दू-मुसलमान अनेक संत थे–

इसलिये मुलतान को पीरान-ए-पीर कहा जाता था—पुनः दिवान ने उन्हें दरबार में बुलवा कर कहा कि आप में से कोई वर्षा करवा सकता हैं?-सब ने कहा कि संत लूडंग ही ऐसा है जो वर्षा करवा सकता है—दिवान ने संत लूडंग को बुलवा कर कहा कि आप प्रजा की रक्षा के लिये अपने तपोवल द्वारा वर्षा करवा दें–संत लूडंण ने कहा कि श्रीमान जी मेरे में ऐसी शक्ति नहीं हैं जो मैं बरसात करवा सकूं—दिवान जी ने जव दो-तीन बार निवेदन किया, तव आपने स्वीकार कर लिया था-पुनः एक-दो दिन वाद वर्षा आरम्भ हो गई थी–जब वर्षा

आवश्यकता से अति होने लगी तो तब भी प्रजा दिवान जी के पास आकर कहने लगी कि महाराज वर्षा इतनी अधिक हो रही है कि हमारी फसल नष्ट हो जाने की सम्भावना है-अतः अब यह बन्द होनी चाहिये—पुनः दिवान जी संत लूडंण को बुलवा कर प्रार्थना की, कि अब वर्षा अधिक हो चुकी है, आप अपने चमत्कार से बंद करवा दे—पुनः संत ने परमात्मा से प्रार्थना की हे भगवान ! अब वर्षा बंद हो-तब वर्षा बंद हो गयी थी-यह था संत लूडंण का अद्भुत चमत्कार-जिसे देखकर दिवान जी तथा प्रजा मन्त्र मुग्ध हो गयी थी—

-इति श्री-

संत पालीसाद

संत पालीसाद जाति से कुम्हार थे-आप दरयाशाह (नदी जल) के उपासक थे-आप मुलतान में कुप सब्जी मंडि में एक छोटी सी दुकान में मिट्टी के घड़े तथा बर्तन वेचा करते थे-आप प्रातः पूजा पाठ से निवृत हो कर ग्यारह बजे दुकान पर आते थे और सूर्य अस्त होने से पूर्व चले जाते थे—अतः आप बड़े संतोषी सत थे—संत पालीसाद प्रति दिवस बिना नागा किये चनाव नदी जो शहर से चार-पांच मील दूर थी वहां चले जाते थे-संत पालीसाद मुसलमान होते हुये भी आप हिन्दुओं के संतों की सत्संगति से प्रभावित हो गये थे-नदी के किनारे एक मन्ना भक्त नाम का एक मन्दिर था, वहां जा कर आप वरुणदेव की पूजा करते थे—अतः यह सर्व कृत्य कर्म उनके

जैसे करते थे–संत पालीसाद के पूर्वज हिन्दू थे, वह थोड़े समय पहले मुसलमान हो गये थे–संत पालीसाद चमत्कारी पुरुष थे, उनके कहने से कइयों के कार्य सम्पन्न हो जाने से आपकी बड़ी प्रशंसा होने लगी थी–मुलतान की प्रजा एवं कुछ विद्वान पण्डित आपकी कीर्ति से प्रसन्न थे–परन्तु कुछ पण्डितों को संत की बढ़ती हुई कीर्ति से जलन होने लगी थी–

उन्होंने संत की परीक्षा लेनी चाही और उसे नीचा दिखाने की ठानी—एक दिन शाम को यह ब्राह्मण संत पालीसाद के पास मन्ना भक्त के मन्दिर गये–संत पालीसाद ने उनका आदर पूर्वक सत्कार किया, और पूछा कि आपने आज कैसे कष्ट किया ?–ब्राह्मणों ने आशीर्वाद देने के बाद कहा कि आज हम संत पालीसाद के पास चलकर आम खायेंगे—यह सुनकर संत हैरान हो गया, कारण आमों के आने में तो कई महीनों की देर थी–अभी तो आमों के वृक्षों को बूर तक नहीं लगा, अतः यह वे मौसम फल कहां से आवे ?—संत आंख बन्द कर के अपने इष्टदेव का ध्यान किया और आम आने को प्रार्थना की—पुनः कुछ देर बाद तीन-चार शिकारपुर के सिन्धी जिनकी दुकान श्रीलंका में थी, भारत आने लगे तो तो उन्होंने संत पालीसाद को मिलने के लिए आये और एक टोकड़ी आमों की साथ लाये थे—

श्रीलंका में आम इन दिनों में भी होता है—वे सिन्धी सेठ उसी समय संत के पास पधारे जबकि वे ब्राह्मण संत जी के पास बैठे थे–उन्होंने आ कर संत को प्रणाम किया और बैठ गये—संत पालीसाद ने उन सिन्धी सेठों को कहा कि आप इन ब्राह्मणों को आम खाने के लिये दें यह बहुत देर से आयें

हुये हैं--पुनः उन्होंने आम टोकड़ी से निकाल कर ब्राह्मणों को दिये-अब ब्राह्मग संत का यह अदभुत चमत्कार देख कर प्रसन्न हो रहे थे—इधर सिन्धी भी संत का यह चमत्कार देखकर प्रसन्न हो रहे थे, कि संत पालीसाद को यह कैसे ज्ञात हो गया कि हम आपको भेंट करने को आम लाये हैं—संत का यह चमत्कार जब प्रजा को मालूम हुआ तो प्रजा संत पालीसाद की कौर भी अधिक प्रशंसा करने लगी थी-यह था संत पालीसाद का चमत्कार—

संत-भहावलहक एवं संत शाह शाहबुद्दीन

मुलतान में दिवान सावनमल के किले पर एक खनका (मस्जिद) में सूफी संत भवाउलहक रहते थे-इधर बाबा लालू जसराम के मन्दिर के पास ईदगाह (मस्जिद) में सूफी संत शाह शाबुद्दीन रहते थे एक दिन शाह भवाउलहक अपने मुरशदों (शिष्यों) के साथ एक नदी के पानी पर एक चादर बिछाकर आप व उनके मुरशद तथा गाने वाले चादर पर बैठकर नदी पर जा रहे थे-यह उनका एक अदभूत चमत्कार था कि चादर पानी में नहीं डूब रही थी—इधर शाह शाहबुद्दीन ईदगाह की एक खिड़की (छोटा दरवाजा) में से भवाउलहक का चमत्कार देखकर जलने लगे थे—उन्होंने अपने इष्ट देव से प्रार्थना की कि या खुदा यह चादर शाह भवाउलहक की फट जावें-इतनी प्रार्थना करते हो उनकी चादर फट गयी थी—यह था शाह

शाहबुद्दीन का अजीब चमत्कार अब शाह भवाउलहक एवं सर्व तैर कर किनारे पर आ गये थे—नदी के किनारे पर बैठ कर शाह भवाउलहक ने आंख बन्द करके ध्यान लगा कर देखा कि यह दुःखद कृत्य शाह शाहबुद्दीन का है जो ईदगाह की खिड़की में से देख रहा है-पुनः शाह भवाउलहक ने अपने चमत्कार द्वारा अपने इष्टदेव से प्रार्थना को कि ए या अल्ला! इस शाह शाहबुद्दीन को यहां ही दो बड़े-बड़े सिंग लग जावें अतः तत्काल उसके दो सिंग लग लग गये थे—अब तो शाह शाहबुद्दीन न बाहर आ सकते थे न अन्दर जा सकते थे—वहां पर कैद हो गये थे—पुनः शाहबुद्दीन ने अपने मुरशिद भेजकर क्षमा की प्रार्थना की थी पुनः शाह भवाउलहक ने अपने चमत्कार से उनके सींग हटा दिये थे-यह था उन दो सूफी संत का चमत्कार—

दूसरा एक बार शाह भवाउलहक ने सोचा कि संत लूडंण बड़ा प्रसिद्ध संत है यदि यह किसी तरह मुसलमान हो जावे तो क्या हो अच्छा हो—ऐसा विचार कर उन्होंने अपने लड़के को संत लूडंण के पास भेजा और कहा कि संत लूडंण को जाकर कहना कि मेरे पिताजी कहते हैं कि लूडंण लूड जो (लूड जा अर्थ है कि जैसे एक लोटा चक्कर खा कर लुड जाता है) यानी आप मुसलमान हो जाओ—संत लूडंण यह बात सुन कर बोला कि "लूडंण लूडिया अपनी जा ताला मारीया आप खुदा"-यह कहकर लड़के को अच्छा कह कर वापिस भेज दिया था-पुनः अभी लड़का घर पर भी नहीं पहुंचा था कि शाह भवाउलहक के पेठ में दर्द हो गया था—उसने बहुत उपचार किये परन्तु दर्द नहीं जा रहा था—कुछ दिन वाद शाह भवाउलहक ने अपने

लड़के से पूछा कि संत लूडंण ने क्या उत्तर दिया था—लड़के ने जो संत ने कहा था, वह अपने पिता को सुना दिया-यह सुनते ही तत्काल शाह साहिब ने पुनः लड़के को भेज कर संत लूडंण से क्षमा मांगी थी –तब संत लूडंण ने कहा कि "लूडंण लुडिया अपनी जा ताला मारिया आप खुद चाबी रखी आप खुदा" यह कर कर लड़के को वापिस भेज दिया-लड़के के खनक़ा में आने से पहले शाह साहिब का दर्द दूर हो चुका था—यह था मुलतान के संत का चमत्कार जो आज कोन कर सकता है—

॥इति श्री॥

संत बालकराम

संत बालकराम राजनगर नामक गाँव में रहते थे-आप कान्य कुब्ज ब्राह्मण थे-आपके माता-पिता छोटी आयु में पर-लोक सिधार गये थे-माता-पिता के अभाव में इनका विवाह नहीं हो सका था-संत बालकराम को अपनी विधवा बूआ ने पाला था--संत बालकराम सारी उम्र बाल ब्रह्मचारी रहे थे-संत बालकराम प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर परमात्मा की भक्ति करते थे-पुन: मध्याह्न व सांयकाल भी श्री सीताराम जी के ध्यान में एक बन्द कुटिया में बैठ जाते थे-एक बार आप संध्या से कुछ समय पहले कुटिया से बाहर बैठे हुये श्री राम नाम का जप कर रहे थे तभी एक महिला ने आकर उनके चरणों में प्रणाम किया, और फल-फूल सामने रख कर

कहा कि संत जी महाराज ! मैं अमरपुरी गांव के जमीदार की पुत्र बधू हूँ-मेरे कोई सन्तान नहीं है-मैं ने सुना है कि आप बड़े चमत्कारी संत हैं-अतः मैं आपकी सेवा में आई हूँ-आप आशीर्वाद दें तो मेरी गोद जरूर भर जायेगी-एसा मुझे पूर्ण विश्वास है-संत जी आप तो बड़े कृपालू हैं, मैं आपसे आंचल पसार कर भीख मांगती हूँ-

यह सुनकर संत बालकराम बड़े संकोच में पड़ गये और बोले, बहना तुम्हें अकेले घर से बाहर निकल कर किसी भी अन्य पुरुष के पास इस समय नहीं जाना चाहिये-संत के वश में भी पता नहीं कितने स्वार्थी लोग हैं-फिर मैं तो ऐसा भी नहीं हूँ जो मेरे पास कोई सिद्धि हो या तपोबल हो, जिसमें मैं तुम्हें सन्तान दे सकूँ-मैं तो अकिञ्चन दीन ब्राह्मण हूँ-मैं तो साधू-संतों के चरणों की रज पाने का अधिकारी भी नहीं हूँ-संत बालकराम ने कहा कि भगवान राम से प्रार्थना करो वे जो उचित समझेंगे करेंगे-परमात्मा भली करेंगे इसमें तनिक भी शंका न करो-

संत बालकराम की बात सुन कर वह निराश हो कर वापिस लौट गई-पुनः संत जी ने कहा कि तुम्हारा घर दो कोस दूर है, अंधेरा है, अतः सावधानी से जाना-संत ने कहा रास्ते में संकट आये तो श्री सीताराम-सीताराम कहना-वह पुत्रवधू कुछ दूर गयी थी कि दो-तीन चोरों ने उसके गहने देखकर उसे घेर लिया था-पुनः वह संत वालकराम जी के कथानुसार श्री सीताराम-श्री सीताराम मन ही मन पुकारने लगी थी-इतने में उसने देखा कि संत वालकराम दौड़े आ रहे है उसे बचाने के लिए-इधर उसके घर के कुछ आदमी

भी उसी समय आ गये, कारण वह घर में कह कर आई थी कि यदि देर हो जाये तो आप मुझे लेने के लिए आ जाना-संत बालकराम तथा अन्य को आते देखकर चोर भाग गये थे-पुन: सन्त बालकराम अन्तर्ध्यान हो गये थे-सन्त का यह चमत्कार देखकर सर्व आश्चर्य चकित रह गये थे-पुन: वह सकुशल घर लौट गई थी और जा कर कहा कि आज मैंने संत बालकराम का चमत्कार देखा है—

दूसरा एक बार राम नवमीं पर संत बालकराम ने अयोध्या जाने का विचार किया अयोध्या राजनगर से तीन सौ कोस दूर था, परन्तु रामनवमीं को तीन दिन शेष रह गये थे-संत बालकराम भगवान का मंगल जन्मोत्सव देखने का दृढ़ निश्चय कर चुके थे—संत बालकराम भगवान का भरोसा करके चल पड़े थे—रास्ते में आपने रात्री हो जाने पर एक तालाब के पास विश्राम किया—रात को आप श्रीराम का ध्यान करने बैठे थे कि उनको समाधि लग गई थी-प्रात: काल समाधि टूटी तो देखते हैं कि श्री अयोध्या में सरय नदी के तट पर बैठे हुये हैं—

पुन: सन्त बालकराम ने जन्मोत्सव की झांकी देखी—सन्त बालकराम भगवान के सामने प्रेम में मस्त हो खूब नाचे वे उसी भाव में इतने निमग्न थे कि लोगों ने देखा एकदम उनका ब्रह्मरन्ध्र फटा और राम की ध्वनि हुई और एक तेज प्रकाश निकला पुन: आपका शरीर निर्जीव होकर वहीं गिर पड़ा था-ब्रह्मरन्ध्र से प्राण विसर्जन करना एक बहुत बड़े महान योगि का कार्य है जो आज कोई नहीं कर सकता है—

ऐसा योगी अवश्य ब्रह्म में संलग्न हो जाता है—यह सन्त बालक राम का चमत्कार देखकर लोग जय-जय कार पुकारने लगे—सन्त बालकराम ब्रह्म में समा गये थे—

-इति श्री-

संतनी जस्सो बाई

संतनी जस्सो बाई ओड़ जाति की महिला थी—यह अत्यन्त सुन्दर थी—आपके पति का नाम टीकू था—यह सन् 1974 में मिट्टी ढोने का कार्य करती थीं, एवं अति गरीब थी—यह अन्हिलवाड़ापाटन जो सौराष्ट्र में हैं वहां की रहने वाली थी—आज से प्रायः आठ-नौ सौ वर्ष पहले गुजरात में राजा जयसिंह राज करते थे—जयसिंह जब छोटे थे तब उनका पिता कर्णदेव का देहान्त हो गया था—जयसिंह के रनिवास में बहुत सुन्दर रानियां थीं, परन्तु वह नयी सुन्दरियों की खोज में रहता था—इधर जूनागढ़ का राजा राखेंगार था, उसकी रानी का नाम राणक देवी था—राजा जयसिंह पहले राणक देवी से विवाह करना चाहता था, परन्तु वह राखेंगार राजा से विवाह करना चाहती थी-अतः जूनागढ़ में राजा राखेंगार के साथ हो गया था—

पुनः जयसिंह ने एक बड़ी सेना लेकर जूनागढ़ के राजा राखेंगार पर चढ़ाई करदी—राजा राखेंगार वीरता से जूझता हुआ मारा गया था—अब जयसिंह राणक देवी से मिलने के

लिये किले में पहुंचा तो वहां एक कोने में राणक देवी के जले हुये शरीर की राख पड़ी थी—

दूसरा एक बार राजा जयसिंह ने पाटन में अपने नाम पर एक बहुत बड़ा तालाब खुदवाना आरम्भ किया—हजारों मजदूर-मजदूरनियां मिट्टी खोदने और ढोने के काम में लगाई थीं—राजा बीच-बीच में स्वयं वहां चला जाता था—एक दिन राजा ने देखा कि दो-चार मजदूर स्त्रियां मिट्टी की कठौती लिए हुए चूहल करती जा रहीं हैं, उन मैं से एक अत्यन्त सुन्दरी पर दृष्टि पड़ गई—यद्यपि उनके महल में बहुत सी सुन्दरियां थीं, परन्तु वे सब उस मिट्टी से सने चेहरे के सौन्दर्य और कड़ी मेहनत से सुगंठित सुडौल शरीर वाली गरीब युवती के पासंग में भी ठहरने योग्य नहीं थीं—राजा ने पता लगवाया कि उसका नाम जस्सो है और उसका पति टीकू भी तालाब पर मजदूरी करता है—

दूसरे दिन राजा ने जस्सो के पति टीकू को बुला कर मजदूरों का सरदार (मेठ) बना दिया—मजदूरी दो पैसे प्रति दिन की जगह दस पैसे कर दी—बारह सौ वर्ष पूर्व एक पैसे में पांच सेर अनाज मिलता था—टीकू का काम दूसरे मजदूरों की सम्हाल करना था—रहने के लिए तालाब के पास एक झोंपड़ा भी मिल गया था—एक दिन राजा की दासी ने टीकू से कहा कि राजा के महल में एक दासी की आवश्यकता है—जस्सो को वह काम मिल सकता है—उसे दस पैसे रोजाना और रोटी-कपड़ा भी मिलेगा—टीकू ने इसे स्वीकार कर लिया परन्तु जस्सो के मन में आशङ्का हुई—उसने पति के पास रहकर मिट्टी ढोने का काम करना चाहा—राजा को बड़ा क्रोध हुआ—

उसने दो-तीन दिन बाद सिपाही द्वारा टीकू और जस्सो को महल में बुलवाया—पहले तो हर प्रकार से उन दोनों को अलग-अलग समझाया गया—अनेक प्रकार से प्रलोभन दिए गये, परन्तु जब वे किसी प्रकार राजी न हुये तो राजा नाराज होकर टीकू को जस्सा के सामने खड़ाकर कोड़े मारने की आज्ञा दी-कोड़े मारते-मारते टीकू को लहू-लुहान कर दिया-उस के मुँह से खन जारी हो गया, अन्त में वह मर गया—

जस्सो के मन में आशंका तो पहले भी हुई थी तथा अब भी थी—जब वह घर से चली थी तो एक तेज कटार अपनी चोली में छिपा कर ले आई थी—पति के मरते ही उसने तुरन्त कटार अपनी छाती में भोंकते हुए कहा—रे दुष्ट कामी राजा ! यदि मैं मन, वचन और कर्म से पवित्र हूँ तो तुझे श्राप देती हूँ कि तेरे इस बड़े तालाब में एक घड़ा भी पानी नहीं ठहरेगा, चाहे कितनी ही वर्षा क्यों नहीं हो लोग जब इस सुन्दर और बड़े तालाब को सूखा देखेंगे तो तेरे इस दुष्कर्म का स्मरण कर युग-युग तक तुझे कोसते और श्राप देते रहेंगे-यही नहीं, तेरे इस बड़े राज्य को भोगने वाला वशंधर भी आगे पैंदा नहीं होगा—

अतः सती के चमत्कार से दोनों श्राप सत्य हुए—इधर इस तालाब के चारों ओर दूर-दूर तक कंकरीला मैदान है, इसलिये वर्षा के दिनों में यद्यपि इसमें अथाह पानी आता है, तथापि थोड़ी ही देर में पानी नाम मात्र को भी नहीं रह जाता है—बड़े-बड़े इन्जीनियरों ने इसकी जांच की पेंदे में बहुत सी सीमेंट ढलाई की, मजबत पत्थर जड़े गए, पर सारा श्रम

निष्फल रहा यह एक सच्ची ऐतिहासिक घटना है—अतः यह था उस सन्तनी पतिव्रता जस्सो एक ओड़ जाति, जिसके हाथ का पानी तक सुवर्ण वर्ण वाले नहीं पीते हैं—अतः जस्सो के चमत्कार से दोनों शाप सत्य हुये थे—

स्त्री यदि मन-कर्म-वचन द्वारा पति की निष्फल भाव से सेवा करती है, वह पतिव्रता स्त्री चाहे जिस जाति की हो वर और शाप देने में समर्थ होती है—यह अटल सिद्धांत है—इसमें किञ्चित मात्र भी असत्य नहीं है—

(उधृत कल्याण जुलाई 1975) ॥ इतिश्री ॥

संत गुरु नानक देव

सन्त गुरु नानक देव का जन्म संवत 1526 में बैसाख शुक्ला तृतीया (23 नवम्बर 1469) लाहौर के पास तालवन्डी गांव में हुआ था, जो अब नानकाना कहलाया है—आपके पिता का नाम कालूचन्द और माता का नाम तृप्ता था—आपका जन्म एक खत्री परिवार में हुआ था—आपके पिता पटवारी थे—आप जब नौ वर्ष के हुए तो पंजाबी, संस्कृत, अरबी-फारसी आदि में अच्छे जानकार थे—जब आप सत्तरह वर्ष के हुए तो आप के पिता ने इन्हें बीस रुपये देकर कोई स्थायी धन्धा करने भेजा—पर सन्त नानक ने यह रुपया साधु-सन्तो पर खर्च कर दिया और खाली हाथ घर लौट आये—इस

पर उसके पिता निराश और क्रुद्ध हुये – यह सन्त नानक का चमत्कार था, क्योंकि वे बचपन से विरक्त थे, उनमें एक अनोखी शक्ति थी–

उन्नीस वर्ष की अवस्था में सुलक्षणी देवी जो बटाला के मूलचन्द की पुत्री थी से उनका }विवाह हो गया था—सन्त गुरु नानक के दो पुत्र हुये एक श्रीचन्द्र और लक्ष्मीचन्द्र–विबाह के बाद पिता ने सन्त नानक को तलबण्डी से हटाकर सुल्तान पर भेज दिया था—सन्त नानक का बड़ा पुत्र श्री चन्द्र कालान्तर में एक प्रसिद्ध महात्मा हुए, उन्होंने उदासीन सम्प्रदाय की नींव डाली थी—सन्त गुरु नानक देव एक बार बादशाह कारूँ के राज्य में गये—कारूँ से लोग तंग आ चुके थे, कारण वह लोगों को लूटता भी था बल्कि उन्हें मार भी डालता था– जब संत गुरु नानक वहां थे तब बहुत लोग उनकी शरण में पहुँचे और प्रार्थना की, कहाकि सन्त जी ! हमें बचाओ क्यों कि बादशाह कारूँ को तो खजाना चाहिए क्योंकि प्रजा को लूट रहा है और मार भी डालता है—प्रजा को उन्होंने आश्वासन दिया और सीधे कारूँ के पास जा पहुँचे—

कारु ने सन्त गुरु नानक जी के आने पर उनका अच्छा सम्मान किया और कहा कि आप कैसे पधारे ? आप हुक्म करते तो मैं खुद आपकी खिदमत में आ जाता—सन्त गुरु नानक ने कहा कि काम मेरा था इसलिए मैं स्वयं आया–कारूँ ने कहा "आज्ञा दें क्या काम है ?" सन्त नानक ने कहा कि मेरी यह सुई है–यह कहीं मेरे से गुम (खो) न जाए यह आप मेरी रख लो, मैं यह आपसे अगले जन्म में ले लूँगा—मैं और

आप अगले जन्म में मिलेंगे तब मैं आपसे ले लूँगा—कारूँ ने कहा कि महाराज अगले जन्म कीं कौन कहे इस जन्म का भरोसा नहीं है ? पुन: सन्त गुरु नानक ने कहा कि यदि इस जन्म का भरोसा नहीं हैं, तो गरीबों को लूट कर इतना खजाना किस लिए जमा कर रहे हो ? तब कारूँ संत नानक के संकेत को समझ गया था, और लज्जित होकर बोला, सन्त गुरु नानक जी, मैं आज के बाद किसी को नहीं लूटुगां बल्कि सब को धन वापिस कर दूँगा—यह था सन्त नानक जी का चमत्कार जिससे सर्व को लाभ हो गया—

सन्त गुरु नानक जी जात-पात को नहीं मानते थे—एक बार आप यात्रा करते हुए अमीनाबाद गये, वहां के एक बड़े जमीदार ने आप को भोजन का निमन्त्रण दिया था—उसी समय एक शूद्र बढ़ई ने भी भोजन के लिए कहा था—सन्त गुरु नानक ने बढ़ई के घर का भोजन खा लिया था—यह देखकर ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों में तहलका मच गया कि सन्त नानक ने एक शूद्र का भोजन ऐसे खाया है, जब सन्त को यह बात मालुम हुई तो उन्होंने कहा कि पसीने की कमाई वाले के भोजन में तो दूध है जबकि जुलम ज्यादती करने वाले जमींदार के भोजन में खून है—इसका उन्होंने प्रत्यक्ष प्रमाण दिया था—सन्त नानक ने बढ़ई की रोटी को जब मुट्ठी में दबाया तो उसमें दूध निकला—जब जमींदार की रोटी को दबाया तो उसमें खून निकला था—सन्त नानक का यह चमत्कार देखकर सब हैरान रह गये थे—

इस पर आपत्ति करते हुए कहा, "तुम अल्लाह की तरफ पैर करके क्यों लेटे हो? इस पर सन्त नानक ने कहा—अच्छा भाई, तो तुम मेरे पैर उसी तरफ कर दो, जिधर खुदा नहीं है—पुनः मुल्ला उनके पैर दूसरी तरफ कर दिये थे—तब स्वयं सन्त के चमत्कार से काबे का मुँह भी पैरों की तरफ हो गया था—फिर मुल्ला ने उधर से पैर हटाकर और तरफ कर दिए थे—यह देखकर वह दंग रह गया कि पुनः भी काबे का मुँह उधर हो गया था—तब सन्त नानक ने मुल्ला को कहा कि खुदा तो हर तरफ मौजूद है—पुनः मुल्ला सन्त के चमत्कार से लज्जित हो गया और क्षमा मांगी—यह था सन्त का चमत्कार—

एक बार सन्त गुरु नानक देव ईरान गये थे—वहां के बादशाह ने कहा कि आप हिन्दू और मुसलमान को बराबर मानते हो, तो क्या आप हमारे साथ नमाज पढ़ेंगे—सन्त नानक पहले ही जात-पात को नहीं मानते थे कहा हां-हां क्यों नहीं पढ़ूँगा—पुनः सर्व मुसलमान इकट्ठे होकर बादशाह और सन्त के साथ नमाज पढ़ने लगे—परन्तु सन्त गुरु नानक जी सारे नमाज के समय तक खड़े ही रह गये थे—नमाज खत्म होने पर बादशाह ने कहा कि आपने नमाज कहां पड़ी है—आप तो केवल खड़े ही रह गये थे—पुनः सन्त गुरु नानक जी ने कहा कि बादशाह आपने नमाज कहां पढ़ी है? आप तो काबुल अफगानस्थान में तो घोड़े ही खरीद रहे थे—यह सुनकर बादशाह सन्त के चरणों में पड़ गया था, कारण वास्तव में वह ऊपर से नमाज पढ़ रहा था और मनमें वह काबल में घोड़े खरीद रहा था—यह था सन्त गुरु नानक जी

का चमत्कार जो दूसरे के मन की बात को समझ जाते थे सन्त गुरु नानक जा मूर्ति पूजा को नहीं मानते थे-आप निरंकारी परमात्मा की पूजा करते थे-आपके दो शिष्य मुख्य थे—एक मुसलमान मरदाना दूसरा हिन्दू बाला था-सन्त नानक एक बार भैंस चराते हुये सो गये और पशु एक जाट के खेत में जा घुसे उसने आ कर शिकायत की, पर जब मौके पर शिकायत की पड़ताल की गई तो खेती हरी-भरी लह-लहा रही थी और रत्ती भर भी नुकसान नहीं हुआ था, यह सन्त नानक का चमत्कार था-सन्त ने कहा है कि "जिन चाखिया नाम रस से तृप्त रहे अधाई" अर्थात् जो नामामृत का पान का पान करे वह तृप्त हो जाता है—सन्त गुरु नानक जो 70 वर्ष की आयु में स्वर्ग वास हो गया था-कहते हैं कि जब उनके शव पर चादर डाली दी थी, पुनः जब चादर हटाई तो उनका पार्थिव शरीर न रहकर केवल वहां पर चन्द फूल रह गये थे-यह था सन्त का चमत्कार—

॥ इतिश्री ॥

सन्त कबीर

सन्त कबीर के माता-पिता का कुछ पता नहीं लग रहा है—सन्त कबीर एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र थे—उसने लोक लाज के भय से शिशु को एक तालाव की सीढ़ियों पर काशी में छोड़ दिया था—रात्री को नीमा जो नीरु जुलाहे की स्त्री थी उसने एक बालक को अकेले पड़ा देखा तो उसे उठा कर

अपने घर ले आई—उसने शिशु का पालन पोषण किया–यही बालक आगे चलकर कबीर नाम से जाना गया—सन्त कबीर के जन्म वर्ष का भी पूरा-पूरा ठीक पता नहीं लग रहा है–कोई तो कबीर का जन्म 1594 बताते हैं—कबीर पंथी जन्म वर्ष 1398 कह रहे हैं–कोई तो कहता है कि आप बादशाह अकबर के शासनकाल में हुये थे और कोई कहता है कि आप सिकन्दर लोदी के समकालीन हुये थे—

दूसरा सन्त कबीर सन्त रामानन्द के शिष्य थे–सन्त रामानन्द का जन्म वर्ष तो 1298 है—इस प्रकार के परस्पर विरोधी मत है, अतः पूरा-पूरा पता नहीं है सन्त कबीर के जन्म स्थान के विषय में भी तीन मत हैं–कोई तो मगहर कहता है कोई काशी तथा कोई आजमगढ़ में बेलहारा गांव कहता है—सन्त कबीर के पिता नीरू ने इसका नाम रखने के लिये एक काजी को कहा—काजी ने कुरान शरीफ खोलकर नाम "कबीर" रखा था, परन्तु अरबी भाषा में कबीर शब्द का अर्थ महान है अब नीरू ने राज्य के काजी को नाम के बारे में कहा कि क्या मैं बालक का नाम कबीर रख लूं—काजी ने कहा कि नहीं तुम यह नाम नहीं रख सकते हो—अब राज्य के काजी ने एक विद्वान काजी को बुलाकर कहा कि कुरान शरीफ की रुह से बच्चे का नाम रखो–उसने कुरान खोलकर जिस शब्दों को चुना वही कबीर का नाम बन गया था–राज्य काजी ने कहा पुनः चुनो जब पुनः चुना गया तो तब भी कबीर नाम ही बना था–काजी ने तीसरी बार आदेश दिया कि फिर चुनो-फिर तीसरी बार भी कबीर नाम बना–

तब काजी ने उसका नाम कबीर रखने की आज्ञा दे दी थी-
यह था सन्त कबीर का शिशु काल का चमत्कार—

सन्त कबीर की पत्नी का नाम लोई था और उनका एक लड़का था जिसका नाम कमाल था, एवं लड़की थी जिसका नाम कमाली था-सन्त कबीर की इच्छा थी कि वे सन्त रामानन्द के शिष्य बने, परन्तु आप किसी अछूत को शिष्य नहीं बनाते थे, एक दिन सन्त रामानन्द जी जब गंगा में स्नान करके सीढ़ियां चढ़ने लगे तब उनका पांव कबीर जो सीढ़ियों में जान बूझकर पड़ा था उनका पैर सन्त कबीर के सिर से टकराया गया-पांव छूते ही वे राम-राम कह कर पीछे हट गये—सन्त कबीर ने इसी समय सन्त रामानन्द जी को गुरु मान लिया और उनका बोला शब्द राम को गुरु मन्त्र मान लिया था-ऐसे सन्त कबीर अपने को रामानन्द का शिष्य मान लिया था-यह बात जब सन्त कबीर की माता नीमा ने सुनी तो वह सन्त रामानन्द के पास गई कहा कि कबीर तो अपने आपको आपका शिष्य कहता है-इस पर सन्त रामानन्द ने कहा मैं ने तो कबीर को कभी शिष्य नहीं बनाया है-नीमा ने कहा कि वह तो अपने आपको आपका शिष्य कहता है-पुनः सन्त रामानन्द ने कबीर से पूछा कि मैं ने तुम्हें दीक्षा कब दी है-सन्त कबीर ने गंगा की सीढ़ियों की बात बता दी थी-सन्त कबीर की भक्ति और श्रद्धा देखकर उसे शिष्य स्वीकार कर लिया था—

एक बार कुछ मुसलमान बादशाह सिकन्दर लोदी के के पास गये और जाकर कहा कि कबीर पीरशेख तकी हैं—बादशाह ने जब सन्त कबीर से पूछा क्या आप पीर हैं-तब

कबीर ने कहा कि वह आपने आपको दैवी गुणों से सम्पन्न मानता है–यह बात सुनकर बादशाह ने इसे एक अपराधी माना और उसे मौत की सजा दिये जाने का विधान बताया–जब सिपाही पकड़ कर लाए तब देरी हो गई थी–पुनः कबीर बिना बोले खड़े रहे–काजी ने कहा कि हे काफिर ! तू बादशाह को सलाम क्यों नहीं करता ? कबीर ने उत्तर दिया "जो दूसरों का दुख दर्द जान सकते हैं वे ही पीर होते हैं–बाकी तो सब काफिर हैं—पुनः बादशाह ने कहा कि मैं ने तुम्हें सवेरे आने का हुक्म दिया था तुम इतनी देरी से क्यों आए–सन्त कबीर ने कहा मैं ने एक नजारा देखा, जिससे देरी हो गई है–बादशाह ने पूछा वह क्या नजारा था–सन्त ने कहा कि मैं ने सुई की नोंक से एक कारवां गुजरता हुआ देखा–बादशाह ने कहा कि यह कैसे हो सकता है ? तब सन्त कबीर ने कहा कि स्वर्ग और नर्क के बीच में कितना बड़ा अन्तर ! सूरज और चांद के बीच के अन्तरिक्ष में अनगिनत हाथी और ऊंट समाये हैं और यह सब एक आंख की पुतली जो सुई के छोटे छेद के बराबर है देखे जा सकते हैं—यह उत्तर सुन बादशाह खुश हुआ और उसे छोड़ दिया–यह सन्त कबीर का चमत्कारी रूपी उत्तर था—

दूसरा एक बार विरोधी विचारधारा ब्राह्मणों ने एक बदचलन स्त्री के साथ सन्त कबीर की बात फैला दी—जब सुलतान ने सुना तो सन्त कबीर को प्राण दण्ड दे दिया—अब सन्त कबीर को सांकलों से बांधकर एक नाव पर बैठा दिया और नाव में पत्थर भर दिये–सन्त कबीर के चमत्कार से नाव तो डूब गई पर सन्त कबीर एक चीत्ते की खाल पर बैठे एक

बच्चे के रूप में नदी में से तैरते ऊपर आ गये—यह कबीर पंथीयों को पुस्तक में लिखा है—दूसरा एक बार एक भक्त संत कबीर से मिलने के लिये आया परन्तु सन्त जी घर पर नहीं थे—जब उसने पूछा कि सन्त कबीर कहां गये हैं ? घर वालों ने कहा कि एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई है वहां गए हैं—उसने कहा कि मुझे शीघ्र वापिस जाना है अतः मुझे उनका पूरा-पूरा पता बता दो—घर वालों ने कहा कि सन्त जी शमशान तक जायेंगे अतः थोड़ी देर में आ जायेंगे—भक्त ने कहा कि मैं उनको जानता नहीं अतः आप मुझे उनका हुलिया बता दो मैं देख लूंगा—मुझे जल्दी वापस जाना है—घर वालों ने कहा कि उनके सिर पर राम नाम की कलंगी सदा रहती है-अब भक्त सन्त कबीर को मिलने के लिये चल पड़ा—पर वहां पहुंच कर देखा कि राम नाम की कलंगी सबके सिर पर लगी हुई है—अब सन्त को मालुम करना कठिन हो गया था—जब शमशान पर क्रिया-कर्म करके जब सभी लौटने लगे तो एक-एक व्यक्ति की कलंगी उतरने लगी थी—केवल एक व्यक्ति की कलंगी रह गयी थी—तब भक्त ने उसको कहा जिसकी कलंगी सिर पर थी, क्या आप सन्त कबीर जी हैं ? सन्त ने उत्तर दिया हां मैं कबीर हूं—उस श्रद्धालु भक्त ने प्रणाम किया और पूछा कि यह क्या बात है जब मैं शमशान पर आपसे मिलने आया तो सबके सिर पर राम नाम की कलंगी पड़ी हुई थी—लौटने पर सबकी उतर गई थी केवल आपकी रह गई थी—तब मैं ने आपको पहचान लिया-सन्त कबीर ने कहा कि जब लोग शमशान जाते हैं तो उनके मन में वैराग्य उत्पन्न होता है इस लिये उनके सिर पर कलंगी रहती है परन्तु जब शमशान से

लौटते हैं तो उनका वैराग्य खत्म हो जाता है-इसलिये कलंगी उतर जाती है—यह सन्त का चमत्कार देखकर वह बड़ा हैरान हुआ—सन्त ने कहा मुझे तो हर समय वैराग्य रहता है अतः मेरी कलंगी नहीं उतरी है—सन्त कबीर तो राम नाम की अलख लगाये रहते थे और श्रद्धालु थे—

एक बार उनके पिता नीरु ने उन्हें कपड़ा बेचने के लिये बाजार भेजा तो वे सारा कपड़ा गरीबों को बांट दिया उनका यह चमत्कार देख कर माता पिता ने उन्हें काम बताना छोड़ दिया-

एक बार सन्त कबीर की स्त्री लोई ने कहा कि अब लड़की कमाली विवाह योग्य हो गई है, उसके विवाह की आपको किञ्चित मात्र भी फिकर नहीं है—आपतो राम भक्ति में जम रहे हो घर में कुछ है नहीं कैसे विवाह होगा ? अन्तता पति-पत्नी ने विवाह का दिन निश्चित कर दिया—पुनः ब्राह्मणों व अन्य लोगों को विवाह का निमन्त्रण भो भेज दिया-घर में सामान तो थोड़ा था परन्तु निमन्त्रण अधिक लोगों को दे दिया गया था—जब निश्चित समय पर बारात आ गई तो लोई ने सन्त जी को कहा कि बाजार से घी, चावल चीनीदि ले आओ-सन्त कबीर बाजार में बिना पैसे के जाकर क्या करे वह तो करीब के जंगल में छिप कर राम नाम का भजन करने लग गये थे—इधर बरात को जिमाने का समय हो रहा था परन्तु घर में इतनी तैयारी थी नहीं—अतः लोई बड़ी हैरान खड़ी थी, कि घर की लाज का प्रश्न है—हाय-हाय क्या होगा सन्त कबीर तो आ नहीं रहे हैं—इतने में एक अपरिचित आदमी आया उसने आकर कहा कि सन्त कबीर जी ने मझे कहा कि

यह सारा सामान मेरे घर दे आओ और कहना मैं अभी आ रहा हूं—लोई ने अतिथियों के लिये भोजन बनाकर सबको जिमाना आरम्भ कर दिया था—बराती भोजन खाकर उसी रास्ते से जा रहे थे जहां सन्त कबीर छिपा हुआ था—बराती कह रहे थे कि सन्त कबीर का भोजन बड़ा स्वादिष्ट था—हम बड़े प्रसन्न हैं—यह बात सन्त कबीर ने सुन ली थी—अब वह वहां से निकल कर घर गया—लोई ने कहा कि आपने सामान बहुत अधिक भेजा है—सन्त कबीर ने कहा कि मैं ने तो कुछ भी नहीं भेजा है—लोई ने कहा कि उस आदमी ने आकर कहा था कि सन्त कबीर ने मुझे भेजा कि मेरे घर दे आ—सो अब सर्व लोग खाकर गये हैं—सन्त का यह चमत्कार देख कर सब दंग रह गये थे—सन्त कबीर जातीवाद को नहीं मानते थे—वह गुण और स्वभाव से मानते थे—

एक बार किसी ने पूछा कि आप राजा राम को ईश्वर अवतार मानते हैं ? पुनः सन्त कबीर ने कहा कि "एक राम घट-घट में व्यापे (उनका इशारा जीव पर था कारण प्रत्येक प्राणी में जीव है) एक राम दशरथ का बेटा "(राजाराम) एक राम कण-कण में व्यापे (सर्व व्यापक रम रहा राम यानि परमात्मा) आपने प्रश्न कर्त्ता को कहा कि आप किस राम के लिये कहते हो—यह उत्तर सुनकर वह शान्त हो गया कि सन्त कबीर तो सर्व व्यापक परमात्मा को ही मानते हैं—सन्त का देहान्त गोरखपुर के पास मगहर गांव में हुआ था—उनके शव पर जो चादर पड़ी, जब वह हटाई गई उनका स्थूल शरीर गायब हो गया था—स्थूल शरीर के स्थान पर केवल चन्द फूल मिले थ जो हिन्दू व मुसलमानों ने आधे-आधे बांट लिये थे—कारण

मुसलमान कहते थे कि सन्त कबीर हमारा पीर है, और हिन्दू कहते थे कि हमारा राम भक्त सन्त कबीर हैं—

'साहिब तेरी साहिबी, सब तन रही समाय।
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय॥
सुख के माथे सिल पड़ो, हरि हृदय से जाय।
बलहारी वा दुख की, जो पल पल नाम रटाय॥
श्वास-श्वास में नाम ले, वृथा श्वास मत खोय।
न जाने इस श्वास का, आवन होय न होय॥

॥ इतिश्री ॥

सन्त सूरदास

सन्त सूरदास का जन्म सं० 1535 की वैशाख शुदी पंचमी को देहली के पास एक सीहि गांव में हुआ था—सन्त सूरदास सारस्वत ब्राह्मण थे—इन के माता-पिता का नाम किसी साहित्य में नहीं मिल रहा है—सन्त सूरदास जन्मान्ध थे, अतः माता-पिता का स्नेह इन्हें नहीं मिला था—माता-पिता का व्यवहार इनके प्रति निर्धनता के कारण भार स्वरूप था—सन्त सूरदास बाल्यावस्था में घर छोड़ कर किसी अन्य गांव में एक तालाब के किनारे कुटिया बना कर रहते थे—उनके भविष्य कहते थे, जो बहुत कर भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती थी—अतः उन्हें धन वस्त्र की भेंट भी दी जाते थे—सन्त सूरदास के चमत्कार से उनको सुख-सुविधा की प्राप्ति हुई थी—सन्त

दक्ष हो गये थे—संत सूरदास 18 वर्ष के थे जब वह सीही गांव छोड़कर मथुरा चले गये थे—कुछ समय आप मथुरा में रहे पुनः मथुरा—आगरा के रास्ते में गऊ-घाट पर आकर निवास किया था—वहां पर आप 12 वर्ष रहे थे—वहां पर सन्त सूरदास दीनता और वैराग्य के पद गाया करते थे—और सत्संग से अपना जीवन व्यतीत करते थे—

एक बार महाप्रभु बल्लभाचार्य जी वृन्दावन आये थे—उस समय आचार्य जी अपने नव निर्मित श्री नाथजी के मन्दिर की देख-भाल करने, ब्रज के गोवर्धन स्थान पर जा रहे थे—सन्त सूरदास ने महाप्रभु जी को अपने दीनता और वैराग्य के पद सुनाये—बल्लभाचार्य ने उन्हें कहा कि आप दीनता और वैराग्य के पद छोड़कर भगवान कृष्ण की भक्ति व वात्सल्य के पद बनावें—पुनः सन्त सूरदास ने कृष्ण के बाल्यकाल और गोपी विरह के ऐसे मार्मिक झलकियां प्रस्तुत की जिसे सुनकर लोग मन्त्र मुग्ध हो गये थे—अब बल्लभाचार्य जी सन्त सूरदास को अपने साथ मन्दिर श्रीनाथ जी में ले गये थे—और उनको वहां का कीर्तन कार का पद दे दिया था—

एक बार तानसेन ने बादशाह अकबर को सन्त सूरदास का एक पद सुनाया—पद सुनकर अकबर बड़े आनन्दित हुये और कहा कि ऐसा मधुर पद पहले तो कभी नहीं सुनाया था—पुनः तानसेन ने कहा कि हजूर यह पद मेरा नहीं, यह सन्त सूरदास का है—फिर अकबर ने कहा कि उन्हें दरबार में बुलाओ मैं उनके मुख से सुनना चाहता हूं—तानसेन ने कहा कि सन्त सूरदास ने तो अपने आपको प्रभु के चरणों में समर्पित कर रखा है और उनको धन सम्पत्ति की इच्छा भी नहीं है अतः

वह नहीं आ सकेंगे—बादशाह अकबर ने कहा कोई ऐसा उपाय करो जिससे हम उनके मुख से सुन सकें—तानसेन ने कहा कि आप मथुरा जायें वहां पर सुन सकते हैं—अकबर ने अब मथुरा जाने का कार्यक्रम बना लिया—तानसेन ने कहा कि हो सकता है कि आपकी फरमाइश पर कृष्ण के पद आपको नहीं भी सुना सकें मैं सन्त सूरदास को गवा सकूंगा—जब अकबर और तानसेन श्रीनाथ जी के मन्दिर गये-अब तानसेन ने एक गीत जान-बूझकर गलत गाया—इस पर झट सन्त सूरदास ने कहा कि आपने गीत गलत गाया है—यह इस भांति होता है—यह कहकर उन्होंने स्वयं वह अपनी मधुर वाणी द्वारा गाकर सुनाया—बादशाह गीत सुनकर इतना मुग्ध हो गया कि प्रसन्न होकर सन्त सूरदास को आस-पास के कुछ गांव दे दिये—सन्त सूरदास ने कहा कि सारी भूमि गोपाल की है थोड़ी पर मेरा नाम क्यों लिखवाते हो, अतः मुझे नहीं चाहिये—पुनः सम्राट ने कहा कि मैं आप की क्या सेवा करूं, मैं आपके गाने से अति प्रसन्न हुआ हूं-तब सन्त ने कहा कि आप यदि मुझे कुछ देना चाहते हो तो यह दो कि मुझे यहीं पर रहने दो-बादशाह ने स्वीकार कर लिया और चल दिया-यह था सन्त सूरदास का चमत्कार जो कुछ नहीं चाहते थे-

सन्त सूरदास जो अन्धे थे, परन्तु जब मन्दिर में कीर्तन करने से पूर्व भगवान कृष्ण को जिन वस्त्रों व आभूषणों से अलंकृत किया जाता था, वह उसका सही वर्णन करते थे, यह देख कर लोग कहते थे कि आपको दिव्य दृष्टि है तभी ऐसा सही वर्णन करते हैं-एक बार वल्लभाचार्य के पोते गोस्वामी गिरधर जी ने आपकी परीक्षा लेनी चाही कि क्या आपको दिव्य दृष्टि है ? उन्होंने एक बार कृष्ण की मूर्ति का

शृंगार न करके नग्न ही रहने दिया, केवल मोतियों की माला पहना दी-संत सूरदास को मूर्ति के सामने बैठाकर पद गाने को कहा-उन्होंने यह पद गाया था-

'देखे री हरि नंगम नंगा-जल सुत भूषण अंगा
विराजत वसन ही न छवि उठत तरंगा-
अंग-अंग प्रति अमित माधुरी लजित रति अनंगा-
किलकत दधिसुत मुख ले मन भरि सूर हंसत ब्रज जुवतिन संगा''

सन्त सूरदास का ऐसा सच्चा पद सुनकर स्वामी गिरधर जी सन्त सूरदास के चरणों में पड़ गये थे-स्वामी ने पूछा कि क्या आपकी दिव्य दृष्टि है? सन्त सूरदास ने कहा कि मैं तो जन्मान्ध हूं परन्तु इतना जरूर है कि जब दर्शन करता हूं तो मुझे सही मूर्ति में कृष्ण के दर्शन होते हैं-यह था सन्त सूरदास का अद्भुत चमत्कार-यह चमत्कार देखकर सर्व सन्त की प्रशंसा करने लगे-

-इति श्री-

संत हरिचरण

सन्त हरि चरण का जैसे नाम था, वैसा ही गुण था-वह सदा परमात्मा की भक्ति में मस्त रहता था-उसने जब अपने गुरु से दीक्षा ली, तब उसको गुरु ने दुर्गा-दुर्गा का जप करने का आदेश दिया-गुरु ने कहा कि "चण्डि के! दुर्गा, दुर्गा नाम का जप ही परम मन्त्र है-इस के जप से मोक्ष प्राप्त होता है-

अब सन्त हरि चरण ने दुर्गा, दुर्गा बोलना आरम्भ कर दिया था-सन्त हरिचरण प्रातः काल स्नान करके पूजा करके पुनः दुर्गा-दुर्गा का उच्चारण करता रहता था–सन्त हरिचरण शंख (चूड़ियां) बेचकर जीविका चलाता था–इस प्रकार कुछ लोग हर समय दुर्गा-दुर्गा बोलने पर उसको सामने तो दुर्गादास कहने लग गये परन्तु पीछे उसे दुर्गापागल कहते थे–सन्त हरिचरण उन्हीं की बात न सुनकर अपने रंग में दुर्गा दुर्गा बोलता रहता था–संध्या को घर आकर दुर्गा-दुर्गा बोलता हुआ सो जाता था–धीरे-धीरे उसकी ऐसी अवस्था हो गई थी कि सन्त हरिदास सोते रहने पर भी उसकी जिह्वा दुर्गा-दुर्गा नाम का जप करती रहती थी–अब लड़के दल बांधकर बोलते–

"दुर्गा बले दूगो खेपा शांखा निये जाय।
दुर्गा तार पिछू पिछू धुरिया बेड़ाय ॥

अर्थात् "दुर्गा बोलता हुआ एक पागल शंख (चूड़ियां) लेकर घूमता है और दुर्गा उसके पीछे-पीछे घूमती हैं–जब सन्त हरिचरण पीछे घूमकर देखने लगता तब लड़के हंसकर धूल फेंककर भाग जाते थे—सन्त हरिचरण यह सहन करता हुआ शंख की पोटली कंधे पर रखकर दुर्गा-दुर्गा बोलता चला जाता था–अब लोग उसे दुर्गादास ही कहने लग गये थे–

एक बार सन्त हरिदास तारिजीपुर के पास एक पोखरा से कुछ आगे गये थे कि पीछे से आवाज आयी–उस समय संत हरिचरण ने देखा कि एक स्त्री जल में से निकलकर कह रही है कि ऐ लड़के मुझे शंख देगा ? सन्त ने कहा कि हां मां क्यों

नहीं दूंगा—उस स्त्री ने कहा बेटा ! खूब बढ़िया शंख देना—संत हरिदास (दुर्गादास) उस स्त्री को चूड़ियां पहना रहा था और मुख से दुर्गा-दुर्गा बोलता जा रहा था—उस स्त्री ने पूछा लड़के इस तरह दुर्गा-दुर्गा क्यों कहता है ? ऐसा बोलने से क्या होता है—संत हरिचरण ने कहा कि मुझे गुरु ने दुर्गा-दुर्गा बोलने के लिये कहा है—और कहा है कि दुर्गा-दुर्गा बोलने से मां कृपा करती है—पुनः स्त्री ने कहा कि क्या लड़के तूने मां को देखा है ? सन्त ने कहा, नहीं मां ! मैंने ऐसा कौन सा पुण्य किया है जो मां को देख पाऊं—स्त्री ने कहा क्यों दुर्गा-दुर्गा जपने से क्या नहीं हो सकता सन्त हरिचरण ने कहा, मां ! मैं मूर्ख हूं यदि नाम लेने से मां दुर्गा के दर्शन हो जाते तो मैं अवश्य देख पाता—चूड़ियां पहन कर, स्त्री ने कहा—अरे लड़के ! मेरे पास पैसा तो हैं नहीं तुम्हें दाम कैसे दूं ? अपनी चूड़ियां खोल ले—संत हरिचरण ने कहा नहीं रहने दे मां, मुझे दाम की आवश्यकता नहीं, ऐसा कह कर पोटली बांधकर चलने लगा उस स्त्री ने कहा, अच्छा ऐसा काम करो गांव में जाकर एक उमापद भट्टाचार्य नाम का व्यक्ति है, उसे जाकर कहो कि आपकी लड़की ने शंख पहना है सो दाम दीजिये—वह यदि कहे कि मेरी तो लड़की है ही नहीं—तो तुम उसकी बात को मत मानना कि अभी-अभी तो मैं चूड़ियां पहना कर आया हूं आप कैसे कह रहे हैं—पुनः संत हरिचरण जी ने कहा कि उसने कहा है मेरे पिता को कहना कि घर में जो दुर्गा मां की मूर्ति है उसके नीचे एक अठन्नी पड़ी है वह दे दें—उमापद ने जाकर देखा कि दुर्गा के सिंहोरे में एक अठन्नी पड़ी है—उसने अठन्नी उठा ली—फिर देखा कि एक अठन्नी पड़ी हुई थी—उसने

वार-वार देखा और वार-बार अठन्नी पाई—संत हरिचरण का चमत्कार था जो मां दुर्गा ने ऐसा दृश्य दिखाया-अब संत हरिचरण जी भी समझ गये कि वह स्त्री तो साक्षात मां दुर्गा थी जो मुझे दर्शन दे गई है-यह था सन्त हरिचरण का अद्भुत चमत्कार—

॥ इति श्री ॥

सन्तनी मीराबाई

संतनी मीराबाई के पिता का नाम राव रत्नसिंह था—राव रत्नसिंह, राव दूदाजी के पुत्र थे--यह रुड़की में रहते थे-सन्तनी मीरां बाई का जन्म संवत् 1560 में हुआ था-मीरा के माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण राव दूदाजी के पास रहती थी-किसी ने जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी की प्रपोत्री लिखी है—सन्तनी मीरा के पिता रत्नसिंह महाराणा सांगा जो बाबर की लड़ाई में मारा गया था—सन्तनी मीरा को बचपन से ही कृष्ण नाम रट लग गई थी—दूसरा हिन्दी साहित्य में स्त्री-कवियित्रियों में इनका नाम सर्वश्रेष्ठ था—मीरा बाई कृष्ण भक्ति की अक्षुण्ण धारा थीं—उनका सारा जीवन और चिन्तन ही कृष्णमय था—सन्तनी मीरा के बाल्यावस्था में उनके घर एक साधु आया, उसके पास एक कृष्ण की मूर्ति थी—मीरा ने उस साधु को कहा कि बाबा, यह मूर्ति आप मुझे दे दोगे ? साधु ने कहा कि तू अभी छोटी है, तू इस

मूर्ति का क्या करेगी ? साधु मूर्ति दिये बिना चला गया था-संतनी मीरा बाई उदास हो गई थी, और कृष्ण की मूर्ति का चिन्तन करती रहती थी—दो दिन बाद साधु को स्वप्न में भगवान कृष्ण ने कहा कि तुम मूर्ति उस संतनी मीरा को दे आओ-प्रातः काल साधु ने आकर मूर्ति मीरा को दे दी, और कहा कि भगवान कृष्ण ने मुझे स्वप्न में आदेश दिया है कि मूर्ति उसको देआ-यह था संतनी मीराबाई का बालावस्था का अद्‌भुत चमत्कार-

एक दिन एक बारात जा रही थी—दूल्हा घोड़े पर सवार था-मीराबाई भी दूल्हे को देख रही थी-मीरा ने अपनी मां से पूछा कि मां, मेरा दूल्हा कौन होगा ?-मां के हाथ में उस समय कृष्ण की मूर्ति थी-मां ने असन्तोष से कहा कि यह कृष्ण ही तेरा दूल्हा होगा-अब सन्तनी मीरा ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मेरा दूल्हा श्रीकृष्ण ही होगा-संतनी मीरा के चमत्कार से भविष्य में मीरा ने कृष्ण को ही अपना पति माना था-राव दूदाजी सं. 1572 में मर गये थे-उनके पुत्र वीरमदेव मेड़ता के अधिकारी हुये-इन्होंने सं. 1573 में मीरा बाई का विवाह राणा सांगा के पारवीकुमार भोजराज के साथ कर दिया था-विवाह काल में मीरा ने कृष्ण की मूर्ति लेकर फेरे लिये थे-विवाह के बाद भी मीराबाई कृष्ण की भक्ति के पदों की रचना करती रही-अब मीराबाई के भावपूर्ण भजनों की ख्याति बहुत फैल गयी थी-इसी कारण साधु-संत उसे मिलने आते थे-इन बातों से ससुराल वाले मीराबाई से अप्रसन्न रहते थे-एक बार उन्होंने संतनी मीरा को मरवाने के

लिये विष भेजा था–संतनी मीराबाई उस विष को भगवान कृष्ण का चरणामृत समझकर पी गई थी, अतः प्रयत्न असफल गया–यह संतनी का विलक्षण चमत्कार था–

दूसरा एक दिन उनकी ननद ऊदाबाई ने मन्दिर के वन्द कपाटों से सुना कि मीराबाई किसी पुरुष से बात कर रही है–यह तो कुल को लजाने वाली बात थी–वे तुरन्त दौड़ कर अपने भाई भोजराज के पास गई और बोली–भैया देखो तो मीराबाई मन्दिर के कपाट बन्द करके किसी पुरुष से बातें कर रही है ? राजा भोजराज को पूर्ण विश्वास था कि मीरा कृष्ण की भक्ति करती है, परन्तु परपुरुष के साथ कभी भी सम्बन्ध नहीं रख सकती है–भाई ने बहन को कहा कि तुम्हें वैसे ही सन्देह हो गया है–ऊदाबाई ने कहा क्या में झूंठ बोल रही हूं ? यदि मेरी बात पर विश्वास नहीं तो आप स्वयं चलकर देख लो और सुन लो–अब ऊदाबाई और राजा भोजराज ने कृष्ण मन्दिर जाकर देखा कि कपाट बंद हैं परन्तु अन्दर मीरा किसी से बात कर रही है–अब राजा भोजराज ने म्यान से तलवार निकाल ली और मन्दिर के भीतर प्रवेश किया–पर वहां तो कोई भी न था–उन्होंने मीरा से पूछा तुम किससे बात कर रही थी-मीरा ने उत्तर दिया कि यहां पर मेरे और कृष्ण के सिवाय और है भी कौन ? मैं उसके सिवाय और किससे बातें कर सकती हूं पुनः भोजराज ने मन्दिर का कोना-कोना छान मारा, वहां कोई होता तो मिलता–वहां पर किसी पर पुरुष को न पाकर दोनों वहन-भाई लज्जित हुये–यह था संतनी मीरा बाई का अनोखा चमत्कार जो कृष्ण भगवान को प्रत्यक्ष रूप में देखती थी–

ऐसी घटना को देखकर पुनः राजा भोजराज ने एक भव्य मन्दिर रणछोड़ जी का बनवा दिया था—राणा वीरम देवजी मेड़ता की गद्दी पर थे, उन्होंने एक बार संतनी मीरा बाई को पुनः समाप्त करने का निश्चय कर लिया था—उन्होंने एक पिटारे में जहरीला काला नाग रखकर मीरा के पास भेजा और कहलवाया कि कृष्ण की अत्यन्त ही सुन्दर मूर्ति हैं—संतनी मीराबाई ने कृष्ण की मूर्ति की बात सुनकर बड़ी प्रसन्नता से पिटारा खोलकर देखा तो सचमुच ही कृष्ण की सुन्दर मूर्ति ही निकली थी—संतनी मीराबाई का यह चमत्कार जब राणा ने सुना तो स्तब्ध रह गया था—

एक बार पुनः राणा ने मीरा को मरवाने का यत्न किया—एक बार राणा ने एक सेज ऐसी बनवाई, जिसके नीचे बड़ी तेज धार वाले शूल यानि लोहे के कील लगवा दिये थे जो दिखने में नहीं आते थे—कारण उसके ऊपर एक रूई का गद्दा बिछा दिया था और ऊपर से गुलाब के फूल चुन दिये थे—ऐसी सेज राणा ने भेजी और कहलवाया कि आपके सोने के के लिए है—अब सांझ समय जब संतनी मीराबाई अपने इष्ट देव गिरधर गोपाल का नाम उच्चारण करते-करते सोने लगी तो मीरा के चमत्कार से वह सेज फूलों भरी हो गई थी—अतः लोहे के शूल फूल बन गये थे—यह था मीरा का चमत्कार दूसरा एक बार एक दुष्ट साधु, साधु के वेष में आकर संतनी मीराबाई की कठिन परीक्षा लेने लगा—उस समय साधु-संत भी बैठे थे, भजनों का गान हो रहा था—उस साधु ने आकर कहा कि मुझे श्री गिरिधर गोपाल जी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है—अतः आप मुझे रतिदान दीजिये ऐसा कहा है—संतनी मीराबाई ने साधु-समाज के बीच

पलंग बिछवाकर उसे कहा कि आइये–तब वह साधु लज्जित हो कर पैरों में पड़ गया—ऐसा मीरा ने अपना चमत्कार दिखाया था—

दूसरा एक बार संतनी मीरा के पुरोहित रामदास जी जो महाप्रभु बल्लभाचार्य को ठाकुर जी मानकर वंदना के पद गा रहे थे—मीराबाई बल्लभाचार्य को ठाकुर जी नहीं मानती थी—जब रामदास जी पद गा चुके तब संतनी मीराबाई ने कहा कि अब एक पद ठाकुर जी का दूसरा गाइये—यह बात सुनते ही महाप्रभु के भक्त बिगड़ पड़े और बोले, अरी दारी रांड़, यह कौन सा पद है–यह क्या तेरे खसम को मुड़ है जा: आज से तेरा मुहं ड़ौ कबहूं न देखूगां—ऐसा कहकर वह उठ पड़े और संतनी मीरा की पुरोहिती भी छोड़ दी—पुनः संतनी मीरा बाई ने बहुत मनाया और क्षमा मांगी किन्तु वह नहीं माने–संतनी मीरबाई केवल श्री गिरिधर गोपाल जी को ही अर्चना करती थी और उनके बराबर और किसी को नहीं मानतीं थी—अतः ऐसा उसका चमत्कारी ज्ञान था–

दूसरा एक बार बादशाह अकबर ने संतनी मीराबाई के भजन तानसेन से सुना था जो उसे बहुत पसन्द आया–उसने तानसेन से कहा कि क्या मैं किसी प्रकार संतनी मीरा के भजन गान कीर्तन सुन सकता हूं—तानसेन ने कहा मीरा रात्री को साधु-संतों की मण्डली में नाच व गान करती हैं वहां जहांपना यदि आप साधु रूप में जायें तो सुन सकते हैं—बादशाह ने यह बात स्वीकार कर ली–एक रात को अकबर और तानसेन साधु के रूप में भजन गीत सुनने के लिये उस साधु मण्डली में जाकर बैठ गये—बादशाह अकबर उसके भजन में इतने मस्त

हो गये थे कि उन्हें समय का कुछ भी ख्याल न रहा—अब तानसेन ने देखा कि रात्री खत्म होने वाली है बादशाह उठने का नाम नहीं ले रहे तब तानसेन न इशारे से कहा चलो प्रातः होने को है—तब अकबर उठ और संतनी मीराबाई जो ठाकुर जी के भजनों में मद-मस्त हो रही थी, उसने एक अंगूठी खुश होकर देकर चले गये—संतनी ने बिना देखे कि कैसी अंगूठी है वह देखी तो हैरान रह गये, कारण उस अंगूठी पर "अकबर" लिखा हुआ था—अब लोगों को संशय हुआ कि मीरा तो बादशाह अकबर से प्रेम करती है—संतनी मीराबाई को तो पता ही नहीं था किस ने अंगूठी दी है उसने तो बिना देखे, समझे ठाकुर जी को अर्पण कर दी थी—अतः निर्दोष थी—जब लोगों के संदेह की चर्चा देहली में बादशाह अकबर ने सुनी तो उसने ऐलान (घोषणा) की कि मीरा निर्दोष है, मैं रात्री को साधु वेश में जाकर भजन सुने और प्रसन्न होकर मीरा को दे दी थी जो उसने बिना देखे ठाकुर जी को पहना दी थी—अब सब लोगों को विश्वास हो गया कि सन्तनी मीरा निर्दोग है—यह सन्तनी मीरा बाई के गान का चमत्कार था—

एक बार काशी से चित्तौड़ राज्य में एक ज्योतिषि आया था—उन्होंने राजा भोजराज की जन्म कुंडली देखकर कहा कि भविष्य में इनके जीवन का भय है—अतः कुछ वर्ष बाद युवावस्था में उनका देहान्त हो गया था—कुछ समय बाद मीरा वृन्दावन चली गयी थी—सन्तनी मीराबाई के गुरु सन्त रैदास थे—उनके प्रसिद्ध पद 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई' के तीन पाठ मिलते हैं—'जिनमें एक पंक्ति इस प्रकार है—"गुरु म्हारे रैदास सरनन चित्त सोई" दूसरा है "खोजत

फिरीं भेद व घर को कोई न करत लखानी। रैदास सन्त मिले मोहि सतगुरु दीन्ह सुरत सहदानी ॥ कोई कहते हैं कि मीरा के गुरु गोस्वामी श्री रघुनाथ जी थे—सन्तनी मीरा बाई तीर्थ यात्रा करते हुये द्वारिकापुरी चली गयी थी—राणा वीरमदेव ने द्वारिका पुरी में एक ब्राह्मण को भेजा था कि जाकर संतनी मीरा को ले आओ—जब उसने जाकर राणा का संदेश दिया तब संतती मीरा बाई ने भजन करते-करते इस स्थूल देह को श्री रण छोड़ जी के विग्रह में समा गई थी केवल उनका थोड़ा सा पल्ला कपड़े का बाहर रह गया था—जो आज भी मूर्ति में दर्शाया जाता है—यह था अन्तिम सन्तनी मीरा बाई का चमत्कार जो वह श्री रण छोड़ जी की मूर्ति में लीन हो गई थी—

—इति श्री—

संत गोस्वामी तुलसीदास

सन्त तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसो था—आपका जन्म सम्वत 1589 भाद्र पद शुक्ला **11**, मंगलवार को जमुना के किनारे राजापुर में (जो उत्तर प्रदेश में हैं) हुआ था—जनश्रुति है कि संत तुलसीदास पांच वर्ष के बालक के रूप में उत्पन्न हुए थे और जन्म से ही इन्होंने राम नाम का उच्चारण कया था—अतः

इनका नाम राम बोला पड़ गया था—उसके पश्चात् इनका नाम प्रसिद्ध नाम तुलसीदास हो गया था—तुलसीदास की माता इनके जन्मते ही मर गयी थी और पिता थोड़े समय बाद मर गए थे—सन्त तुलसीदास का जन्म सन 1554 में हुआ और सन् 1680 में इनका जन्म निधन हुआ अतः सन्त तुलसीदास का 126 वर्ष की आयु में देहांत हो गया था—संत तुलसीदास के पिता राजापुर के राजगुरु थे, आप जाति के ब्राह्मण थे—सन्त तुलसीदास के जन्म से ही बत्तीसों दांत थे—माता-पिता के मरने के पश्चात इनकी रक्षा का भार एक दासी चुनियां को सौंप दिया गया था—

पुनः आपकी नानी अपने ससुराल हरिपुर ले गयी थी कुछ काल बाद आपकी नानी सांप के काट लेने से मर गयी थी—पुनः नरहरि इन्हें काशी ले आये और शेषसनातन के पास पढ़ने के लिए रखा—उन्होंने तुलसीदास को इतिहास, वेद पुराण और काव्यकला सभी कुछ पढ़ा दिया था—सन् 1574 में तारपिता गांव के एक ब्राह्मण ने सन्त तुलसीदास का विवाह अपनी पुत्री रत्नावली से कर दिया था—सन्त तुलसीदास को माता-पिता का प्यार नहीं मिला था—दूसरा विवाह भी पूर्ण युवावस्था (यानि 20 वर्ष) में होने के कारण उन्हें अपनी पत्नी से ही प्यार मिला था—इसी कारण वह अपनी पत्नि को तनिक भी अपने से दूर नहीं करते थे—

एक वार सन्त तुलसीदास किसी कार्यवश घर से वाहर गये थे—रत्नावली का भाई घर आकर अपनी वहन को अपने घर के लिए साथ ले गया था—जब सन्त जी ने घर आकर

देखा कि रत्नावली घर पर नहीं है—बड़े दुखी हुए अब रात का समय हो चुका था–घनघोर वर्षा हो रही थी—उनकी पत्नी का मायका यमुना नदी के उस पार था—परन्तु आप अपनी पत्नी के मोह में चल पड़े—रात्रि के समय था आपने एक मुर्दे का सहारा लेकर यमुना नदी पार की थी—ससुराल गये तो सब सो गए थे—खिड़की पर एक सांप लटक रहा था—उसको रस्सी समझ कर ऊपर जा पहुंचे और पत्नी को जगाया—रत्नावली उन्हें देखकर आश्चर्य चकित रह गयी—रत्नावली के पूछने पर कि आप ऊपर कैसे आये तब उन्होंने कहा कि आपने जो रस्सी लटका रखी थी उसी के सहारे ऊपर आ गया हूं—जब पत्नी ने रस्सी जाकर देखी तो वह एक लम्बा सांप था—पुनः पत्नी ने पुछा कि यमुना पार कैसे की तो उन्होंने कहा कि एक लकड़ो का तखता आ रहा था उसके सहारे मैंने यमुना पार की है—जब रत्नावली वह तखता देखने गयी तो वह एक मुर्दा था–अब रत्नावली को पति की ऐसी आसक्ति देखकर बड़ी ग्लानि हुई—रत्नावली ने अपनी कविता में सन्त तुलसीदास को कहा कि :—

"अस्थि चर्म मय देह तासे ऐसी प्रीत।
तैसो जो राम मंह होति न तो भव भीति॥"

पत्नी का ताना सुन सन्त तुलसीदास की चेतना में कम्पन उत्पन्न हो गया—वे उल्टे पांव लौट गए उन्होंने संन्यास लेने का निश्चय कर लिया—अब रत्नावली पछताई और संन्यास न लेने के लिए कहा परन्तु तुलसीदास नहीं माने और कहा कि :—

"कटे एक रघुनाथ संग बोधि जटा सिर केस।
हम तो चाखा प्रेम रस पत्नी के उपदेश ॥"

सन्त तुलसीदास संन्यासी बनकर तीर्थ यात्रा पर चल पड़े—जगन्नाथ, रामेश्वरम, द्वारका और बद्री नारायण की यात्रा करते हुए आप काशी आये-परमात्मा की आराधना में मस्त हो गये और वहां पर राम-कथा सुनी थी-कथा सुनने के पश्चात उन्हें भगवान राम को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई—परन्तु अभी तक उन्हें कोई ऐसा गुरु नहीं मिला था जो भगवान राम के दर्शन के लिए कोई सुलभ उपाय बताये - सन्त तुलसीदास नित्य प्रातःकाल गंगा के उस पार शौचादि के लिये जाया करते थे—अब उनके वापिस आने पर उनके लोटे में जो जल बाकी रह जाता था वह एक पीपल के वृक्ष में डाल देते थे—उस पीपल के वृक्ष पर एक प्रेतात्मा रहती थी-वह जल से तृप्त होकर एक दिन सन्त तुलसीदास को कहा मैं प्रसन्न हूँ अतः आप मेरे से एक वर मांग लो—सन्त तुलसीदास को तो भगवान राम से मिलने की प्रबल इच्छा थी, तो उन्होंने कहा कि आप मुझे भगवान राम से मिला दें प्रेत ने कहा कि यह काम मैं नहीं कर सकता हूँ, परन्तु मैं तुम्हें उपाय बता सकता हूँ—प्रेत ने कहा कि राम मन्दिर में नित्य राम-कथा होती है—वहां पर नित्य हनुमान जी आते हैं. अतः आप उनसे कहो. वे राम के दर्शन करा सकते हैं—सन्त तुलसीदास ने कहा मैं हनुमान जी को कैसे पहचान सकूंगा ? प्रेत ने उत्तर दिया कि हनुमान जी एक ब्राह्मण के वेश में आते हैं-वह राम-कथा में सबसे पहले आते हैं और सबसे बाद में जाते हैं-वही हनुमान हैं-

सन्त तुलसीदास मन्दिर में सबसे पहले पहुँच गये थे—उन्होंने तत्काल एक ब्राह्मण को आया देखा और उस ब्राह्मण को जब सबके चले जाने के बाद देखा तो कहा कि ये ही श्री हनुमान जी हैं ! मुझे भगवान राम के दर्शन करा दो मुझे तीव्र इच्छा है— हनुमान जी सन्त की भक्ति को देखकर कहा कि यहां तो भगवान राम के दर्शन नहीं होंगे, वे तो चित्रकूट जाने पर हो सकते हैं–सन्त तुलसीदास चित्रकूट पहुँचकर एक घाट पर यात्रियों के तिलक लगाने लग गये थे–अब भगवान के दर्शन करने की प्रतीक्षा करने लगे–एक दिन दो सुकुमार बालक उनके पास आकर तिलक लगवाने लगे–उस समय हनुमान जी वृक्ष में अदृश्य रूप में थे उन्होंने कहा और तुलसीदास ने सुना—

"चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक करे रघुवीर॥"

सन्त तुलसीदास तुरन्त समझ गये कि वे दो बालक राम और लक्ष्मण हैं—पुनः सन्त जी उनके चरणों में लेट गये थे—श्री भगवान राम ने उन्हें अपना प्रकट रूप में दर्शन दिया–इसके पश्चात हनुमान जी से उन्हें रामचरित मानस लिखने की प्रेरणा मिली थी, सो आरम्भ कर दी थी—तुलसीदास के द्वारा रचित "रामचरित मानस" इस युग का एक महाकाव्य प्रसिद्ध हुआ है–काव्य रामचरित मानस लिखने के बाद सन्त तुलसीदास की ख्याति चारों ओर व्याप्त हो गई थी—सन्त तुलसीदास के रामचरित मानस से भारतवासियों के मन में शांति उत्पन्न हुई और राम भक्ति का लाभ हुआ—

एक बार एक व्यक्ति सन्त जी के पास आया और कहा मेरे पास, धन नहीं है, और मेरी कन्या विवाह योग्य हो गई है, परन्तु वह सन्त तुलसीदास से धन मांगने आया था—सन्त के पास धन तो था नहीं, परन्तु वे जानते थे कि सन्त रहीम जो बादशाह अकबर के दरबार में कविता करते हैं वह महा दानी हैं—सन्त तुलसीदास ने उसे एक कागज पर निम्न शब्द लिख कर सन्त रहीम के पास भेजा—"सुरतिय नरतिय नागतिय चाहति है सब कोय" । अर्थात् देवताओं को पत्नी, मानव की पत्नी, और नाग की पत्नी सभी इसे चाहती हैं—अतः ऐसी वस्तु इस पत्र वाहक को भी (धन) चाहिये—पुनः सन्त रहीम ने पत्र का विषय समझ कर उस निर्धन को बहुत धन दिया—सन्त तुलसीदास ने कविता में पत्र लिखा था, अतः कवि रहिम ने भी उत्तर कविता में लिखकर भेजा था—

"गोद लिये हुलसी फिरें तुलसी सों सुत होय ।।

अर्थात् देवता की पत्नी, मनुष्य की पत्नी और नाग की पत्नी ऐसा पुत्र चाहती हैं, जैसे तुलसीदास एवं कालान्तर में दोनों सन्तों की भेंट वृन्दावन में श्रीनाथ जी के मन्दिर में हुई थी, सो वह आगे लिखेंगे—सन्त तुलसीदास के रामचरित मानस काव्य की महिमा सर्वत फैलने लगी और लोग उसे एक दिव्य ग्रन्थ मानने लगे तब काशी के कुछ ब्राह्मण इसे क्योंकि हिन्दी भाषा में लिखा हुआ था इसलिये इसे दिव्य ग्रन्थ मानने से इन्कार कर दिया—उन्हों का कहना था कि यह ग्रन्थ देव भाषा संस्कृत में होता तो हम इसे दिव्य ग्रन्थ मान सकते थे—पुनः ब्राह्मणों ने कहा कि हम इस ग्रन्थ को भगवान काशी

विश्वनाथ, महादेवजी के मन्दिर में रखकर उसके ऊपर वेद-उप-निषद शास्त्रादि कुछ ग्रन्थ रखेंगे पुनः रात्री को ताला लगा कर चाबी हम अपने पास रखेंगे—दूसरे दिन प्रातः ताला खोल कर देखेंगे, यदि सन्त का रामचरित मानस ग्रन्थ सन्त के चमत्कार से यह सबके ऊपर आ जायेगा तो हम इसे दिव्य ग्रन्थ मान लेंगे—जब दूसरे दिन प्रातः द्वार खोलकर देखा गया तो सन्त का रामचरित मानस ग्रन्थ सबके ऊपर ही पड़ा था—अतः ऐसा सन्त का चमत्कार देखकर सबने उसे एक दिव्य ग्रन्थ स्वीकार कर लिया था—

दूसरा एक बार कुछ दुष्ट व्यक्ति जो सन्त तुलसीदास की कीर्ति को सहन नहीं करते थे, उन्होंने एक षडयन्त्र किया—एक आदमी को कहा कि हम आपको धन देंगे यदि आप सन्त तुलसीदास की कुटिया में रात्री को घुसकर हमें वह ग्रन्थ राम चरित मानस चोरी करके ला दोगे—धन के लालच से वह चोर जब रात्री को कुटिया पर गया तो देखा कि दो युवक धनुष-बाण लिए कुटिया का पहरा दे रहे हैं—वह डर कर वापिस भाग गया था—जब उन दुष्टों ने यह बात सुनी सन्त तुलसीदास के इस अद्भुत चमत्कार को देखकर उनके शिष्य बन गये थे—

दूसरा एक बार बादशाह अकबर ने सन्त तुलसीदास को कहा कि मैं ने सुना है कि आप एक चमत्कारी सन्त हैं, सो मैं भी आपका चमत्कार देखना चाहता हूं—सन्त तुलसीदास ने कहा कि मैं कोई चमत्कारी सन्त नहीं हूं, अतः मैं कुछ भी नहीं दिखा सकता हूं—संत तुलसीदास के इन्कार करने पर

अकबर ने उन्हें बन्दिग्रह में डाल दिया था—संत तुलसीदास जब तक बन्दिग्रह में कैद रहे तब तक उन्होंने वहां पर हनुमान चालीसा का निर्माण किया था—संत का एक ऐसा अनोखा चमत्कार हुआ कि जिस दिन वह हनुमान चालीसा लिख चुके, उस दिन अकबर के महल पर बेअन्त बन्दर आ गये थे, और तोड़ फोड़ कर नुकसान करने लगे, जब बहुत ही यत्न करने पर भी बन्दर सेना को हटा न सके तो संत रहिम ने कहा कि यदि आप सन्त तुलसीदास को बन्दी से मुक्त कर दोगे तो यह बन्दर स्वयं शान्त हो जायेगें—पुन: अकबर ने उन्हें कैद से मुक्त कर दिया था—उसी समय बन्दर सेना एक दम भाग गई थी, यह था संत तुलसीदास का चमत्कार जिसे अकबर देखकर दंग रह गया—

दूसरा एक बार संत तुलसीदास वृन्दावन गये, वहां पर उस समय संत रहीम जो भगवान कृष्ण के पूर्ण भक्त थे उपस्थित थे तथा जब संत तुलसीदास श्री नाथ जी के मन्दिर में प्रवेश करने लगे तो झट रहिम ने इस कविता में यह ताना दिया "अपने-अपने इष्ट को सब कोई नवाय माथ"—तब तत्काल संत तुलसीदास ने कहा "तुलसी मस्तक तब नवाये जब धनुष-वाण हो हाथ" – पुन: संत तुलसीदास के इस अलौकिक चमत्कार से भगवान कृष्ण की मूर्ति में वंशी न होकर उनके हाथ हाथ धनुष-वाण धारण कर लिया था—दसरा एक बार संत तुलसीदास और संत रहीम दोनों घमते हुये जंगल की ओर जा रहे थे तो एक गज ने मिट्टी को सूंड में भरकर अपने शरीर पर डाली थी—इस पर संत तुलसीदास ने एक कविता में पूछा कि 'गज मस्तक धूली धरें कहो रहीम क्या काज" पुन- संत

रहिम ने भी उत्तर कविता में दिया कि "जिस रज में अहिल्या तरी सो रज ढूढंत गज राज" यह था दोनों सन्तों का प्रेम-मिलाप—

दूसरा काशी नगरी में एक ईश्वर का भक्त जो छोटी सी दुकानदारी करता था रहता था—उसका नियम था कि वह जिस सन्यासी संत को देखता था उसे उत्तर कर उनके चरणों में नत मस्तक नमस्कार करता था—दैव योग से उसकी पत्नी ने भी अपना यह कर्त्तव्य मान रखा था कि वह भी जहां किसी संत को देखती थी तो वह भी उनके चरणों में नत मस्तक नमस्कार किया करती थी—एक बार संत तुलसीदास ने एक अनुष्ठान चालीस दिन का किया था—आप गंगा के किनारे हनुमान घाट पर बैठकर अपना अनुष्ठान करते थे—एक दिन ईश्वर भक्त उक्त दुकानदार को ज्वर हुआ—बहुत उपचार करने पर भी उसे आराम न हुआ—अन्तता वह मर गया था—अब जब उसकी अर्थी जा रही थी तो उसकी पत्नी भी अर्थी के आगे-आगे शोक करती हुई चली जा रही थी—इधर उसी दिन संत तुलसीदास का चालीस दिन का अनुष्ठान समाप्त हुआ था—संत गंगाजल का लोटा हाथ में लेकर उसी मार्ग में से आये जिधर से उस भक्त का शव आ रहा था—भक्त की पत्नी जब एक संत को दूर से आता देखा तो वह घोर विचारों में डूब गई—कारण एक तो उसका दृढ़ नियम था कि वह जहां पर किसी सन्त को देखती थी तो उनके चरणों में नत मस्तक प्रणाम करती थी, इधर वह अपने पति के शव के साथ आने के कारण लोक लाज के भय से विचार कर रही थी कि क्या मैं इस अवसर पर संत के चरणो में नमस्कार करू

कि नहीं आखिर वह शव से निकलकर संत तुलसीदास के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया—सन्त तुलसीदास ने भक्त मानकर तत्काल उसको आशोर्वाद दिया कि "सौभाग्य वति भव" अर्थात् तेरा पति यानि सौभाग्य जोता रहे—यह सुनकर वह स्त्री रोने लगी—जब सन्त ने रोने का कारण पूछा तो उसने कहा कि मेरा सौभाग्य तो मिट गया है पोछे उसका शव आ रहा है, इसलिये मैं रो रही हूं—सन्त तुलसीदास यह सुनकर स्तब्ध रह गये और कहा कि मैंने कुछ नहीं कहा कि मुझसे तो मेरे इष्टदेव राम ने कहलवाया है—अच्छा शव को यहां ले आओ—पुन: शव के सर्व बन्धन छुड़वा दिये, और गंगा जल के छींटा देकर कहा कि उठ भक्त बहुत सो लिया—तब वह भक्त उठकर बैठ गया था—सन्त तुलसीदास का ऐसा चमत्कार देख कर सब लोग मन्त्र मुग्ध हो गये थे—यह सन्त का चमत्कार था जो मृतक को जीवन दान दिया—

दूसरा जनश्रुति है कि एक बार सन्त तुलसीदास ने एक स्त्री को पुरुष बना दिया था—एक अन्य जनश्रुति है कि आपने एक पत्थर के नन्दी (बैल) को उसके हत्यारे के हाथ से घास खिलवा दिया था-तथा अकबर की मृत्यु के पश्चात् सलीम जहांगीर के नाम से सिंहासनारुढ हुआ-उस समय सन्त तुलसी दास जी थे—

ब्रह्म ज्ञान जाने नहीं, कर्म दिये छिटकाय ।
तुलसी ऐसी आत्मा, सहज नरक महं जाय ॥

अर्थात मन से विषयों में रमण करते रहना और ऊपर से स्वांग बना लेना तो मिथ्याचार है, दम्भ है—

॥ इतिश्री ॥

सन्तनी राबिया

भगवान अपने सन्तों व सन्तनियों की परीक्षा लेता है–सन्तनी राबिया एक निर्धन के यहां पैदा हुई थी—मुस्लिम सन्तों के इतिहास में राबिया का अस्तित्व अद्वितीय था–यह स्त्री सन्तों में अग्रणी थी–उसके समकालीन ऊंचे-ऊंचे सन्त मन से उसका आदर करते थे और उसके सत्संग से लाभान्वित होते थे–सन्तनी राबिया के पिता इतने गरीब थे कि उनके पास रात्रि को दिया जलाने के लिए तेल तक नहीं था—एक बार सन्तनी राबिया के पिता को स्वप्न में परमात्मा ने कहा कि आप चिन्ता न करो, आपकी यह लड़की राबिया परमात्मा की बहुत बड़ी भक्त होगी—यह एक चमत्कारी जीव है—परन्तु तुम रात्रि को एक हजार बार परमात्मा का नाम उच्चारण किया करो—उसने इस आदेश को स्वीकार कर लिया—इधर एक मानव एक कागज पर लिखा हुआ अमीर बसरा के पास ले आया कि आप सन्तनी राबिया के पिता को चार सौ दीनार दे आओ—सन्तनी राबिया ने फकीरों को कुछ बांट दिए थे–सन्तनी राबिया जब बड़ी हुई तो माता-पिता का देहांत हो गया था और उन्हीं दिनों एक भयंकर अकाल पड़ा तब सन्तनी राबिया बे सहारा हो गई–सन्तनी राबिया को किसी ने दासी बनाकर बेच दिया–उसका मालिक बड़ा जालिम था–सन्तनी राबिया से सख्त मेहनत लेता था–इतना कष्ट देता था कि सन्तनी रात्रि में अकेले बैठकर रो-रोकर परमात्मा की याद करती थी–

एक रात्रि को वह सिसक-सिसक कर परमात्मा की प्रार्थना करने लगी कि मुझे तेरी भक्ति करने का अवसर तक नहीं मिलता—यदि मैं स्वतन्त्र होती तो तेरी भक्ति भी करती—दैव योग से मालिक की आंख खुली—उसने रोने की आवाज सुनी और ध्यान देकर सुना कि सन्तनी राबिया परमात्मा की भक्ति भी कर रही है और रो भी रही है और उसके सिर पर एक दैवी ज्योति चमक रही है—सन्तनी का यह अजीब चमत्कार देखकर प्रातः ही उसने सन्तनी राबिया को गुलामी से मुक्त कर दिया और हाथ जोड़कर उससे क्षमा मांगी—अब सन्तनी राबिया एकान्त में जाकर भगवान की आराधना में लीन हो गई थी—यह उसका प्रथम चमत्कार था—

अब वह एक हजार नमाज रोज पढती थी—उस जंगल में हसन बसरी नाम के एक प्रतिष्ठित सन्त भी वहां रहते थे—सन्तनी राबिया उनके उपदेश सुनने भी जाती थी—सन्तनी राबिया एक बार मक्का मदीना की यात्रा को गई—फरीदुद्दीन ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि जब सन्तनी राबिया काबा के लिए गई तो काबा स्वयं उनके स्वागत के लिए आया था—इसलिए दूसरे यात्रियों का वह अपने स्थान पर नहीं दिखायी दिया—यह सन्तनी राबिया का दूसरा चमत्कार था—

उस समय एक ऐसी घटना घटित हुई कि एक सन्त इब्राहीम-बिन-उदहम अपनी चौदह वर्ष की यात्रा समाप्त करके मक्का पहुंचा—वह हर कदम पर रकअत (एक विशेष प्रकार की नमाज) पढ़ते पहुंचा, परन्तु उस के आने पर काबा के दर्शन नहीं हुए—अब सन्त इब्राहीम ने एक बुढ़िया सन्तनी राबिया को देखा तो कहा कि यह क्या कारण है कि तेरे लिए

तो काबा स्वयं चल कर आया और मुझे तो दर्शन तक नहीं हुए–सन्तनी राबिया ने कहा कि तुझे अपने तप कर्म का घमण्ड था और मैं विनम्रता और दीनता से अपने घमण्ड को नष्ट करके आत्म-समर्पित होकर आयी थी इसलिए काबा द्वारा सन्तनी राबिया का स्वागत हुआ–यह था सन्तनी का तीसरा चमत्कार–

एक बार सन्तनी राबिया हज को गई तो उस समय उनके पास एक बहुत ही दुर्बल गधा था–उस पर वह अपना सामान लाद कर अन्य यात्रियों के साथ गई–मार्ग में गधा मर गया–लोगों ने कहा कि आपका सामान हम ले चलेंगे–परन्तु उसने कहा कि आप जाओ मैं आ जाऊंगी–पुनः उसने परमात्मा को याद किया और उसके चमत्कार से गधा जिन्दा हो उठा था–यह सन्तनी राबिया का चौथा चमत्कार था–

एक बार दो सन्त मिलने आये–वह भूखे थे–सन्तनी राबिया के पास दो रोटियां थीं वह उसने उन्हें खाने को दे दी थीं–कुछ देर बाद बहुत सन्त आ गये थ जो भूखे थे–सन्तनी राबिया के पास एक दासी आयी उसने 18 रोटियां दीं-परन्तु सन्त 20 थे–अब सन्तनी राबिया ने परमात्मा से प्रार्थना की कि आपने कुरान में कहा कि जो मुझे एक देता है मैं उसे दस देता हूँ–यह कह कर उसने 18 रोटियां वापिस कर दीं—पुनः दासी तत्क्षण 20 रोटियां लकर आयी जो उसने सबको बांट दी थीं—यह था उस सन्तनी राबिया का पांचवां चमत्कार—

उद्धृत पुस्तक 'सूफी सन्त'–

॥ इतिश्री ॥

संत स्वामी राम तीर्थ

संत स्वामी राम गौंसाई ब्राह्मण थे-संत राम सन् 1873 में मुरारी वाला ग्राम में पैदा हुये थे, जो पंजाब के गुजरावाला जिले में हैं—संत राम तीर्थ की माता थोड़े दिनों बाद स्वर्गवासी हो गई थी-उनके पिता का नाम गोस्वामी हीरानन्द था-पुनः बड़े भ्राता गोस्वामी गुरुदास और उनकी चाची ने उनका लालन-पालन किया था-सन्त राम को बचपन से शंखध्वनि से बड़ा अनुराग था, और एकान्त वास से बड़ा प्रेम था—दूसरा आपका जन्म सन् 1873 में हुआ, सन् 1901 में सन्त हुये, 1902 में उन्होंने जापान और अमरीका के लिए प्रस्थान किया, 1904 में वहां से लौटे और 1906 में तेंतीस वर्ष की अलपायु में ही संसार से विदा ले गये थे-संत राम अति गरीब घर में पैदा हुये थे--एक बार विद्यार्थी काल में देखा कि मेरे पास केवल 90/91 पैसे हैं-मुझे और रकम एक महीने बाद आनी हैं-संत स्वामी रामतीर्थ जी बड़े सन्तोषी थे-आप कहते थे कि परमेश्वर मेरी प्रतीक्षा ले रहा है-अब सन्त राम एक नानबाई से जाकर प्रातः का भोजन दो पैसे तथा सांयकाल का भोजन एक पैसे का प्रतिदिन खाते थे-ऐसी दरिद्रता में सन्त राम ने अपना अध्ययन कार्य पूरा किया था-यह सन्त राम का सन्तोषी चमत्कार था-

सन्त राम का विवाह छोटी अवस्था में विरोके ग्राम में हुआ था-सन्त राम लाहौर में सन्त धन्ना भक्त के उपदेश

सुनते थे और समय पर उनसे कुछ रकम बतौर कर्ज के भी लेते थे–सन्तराम एक दफे हरिद्वार में डाक्टर खुदादाद जो पंजाब विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट थे के पास गये–सन्त राम ने कहा कि खुदा का अर्थ तो ईश्वर है, दाद क्यों रखा है–डाक्टर ने कहा कि जिनकी आंखे है उनके लिये खुदा और जिनकी आंखें नहीं है उनके लिये दाद है–इस उत्तर से सन्तराम बहुत प्रसन्न हुये—ऐसे ही हिन्दू समाज में नाम हैं, रामदास, गोपाल दास, देवीदासादि–आंख वाले यानि ज्ञानी पुरुषों के लिये राम, गोपाल, तथा देवी ईश्वर के नाम हैं और अज्ञानी पुरुषों के लिये दास होता है–लाहोर में जब सन्तराम प्रोफेसर थे, तो प्राय: अपनी घड़ी से खेला करते थे–चाहे प्रातः काल हो या मध्यान्ह, एवं सांयकाल हो, तथा अर्द्धरात्री हो यदि कोई उनसे पूछता कि इस समय क्या बजा है ? तो सन्त राम बड़े धैर्य से अपनी घड़ी निकालते और ध्यान से देखकर पुनः पूछने वाले के चेहरे की तरफ ताकते–सहसा उनके मुंह से निकलता प्यारे इस समय ठीक एक बजा है, और उसे दिखाने लगते थे—जिन्होंने भिन्न-भिन्न अवसरों पर उनसे समय पूछा था—तो आप एक बजा है कहते थे–गोस्वामी सन्तराम जी, आपकी घड़ी बड़ी विचित्र है—जब ही हम आपसे समय पूछते हैं, तब आप एक ही बतलाते हैं—सन्त राम ने उत्तर दिया, प्यारे सन्त राम की घड़ी ही ऐसी है उसमें सदा एक ही बजता है—कारण परमात्मा भी तो एक है यह आप हंसकर कह देते हैं, जिसे सुनकर सर्वखुश हो गये—यह उनका एक चमत्कारी उत्तर था–सन्त राम तीर्थ आत्मानन्द की लहर में पागल हो उठते थे—दिन के बाद दिन बीतते चले जाते वे उसी में डूबे रहते थे—

एक बार सन्त राम ने उच्च गणित के बहुत कठिन और जटिल प्रश्न का हल सूर्योदय से पूर्व हल करने की सौगन्ध खाई, और कहा कि यदि हल न कर सका तो सर तन से जुदा कर दूंगा इस अभिप्राय से एक तेज धार वाला खंजर भी अपने पास रख लिया था-अब चार प्रश्नों में से तीन तो अर्ध रात्री तक हल हो गये, किन्तु चौथा हल न हो सका-- उषा काल की रश्मियां वातायन में झांकने लगी—इधर सन्त राम ने अपने प्रणानुसार खंजर ले कर छत पर गये—जब संत राम ने खंजर की नोक गर्दन पर रखी तब तत्काल सन्त राम के अपूर्व चमत्कार से आकाश में सुनहरी अक्षरों में प्रश्न का हल लिखा हुआ देखा पुनः अपनी कलम द्वारा कागज पर लिख लिया,था-वह सन्त राम का विद्यार्थी जीवन का चमत्कार था-

दूसरा एक बार पंजाब में गुरु गोविन्द सिंह की जयन्ती पर सन्त स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त पर व्याख्यान दिया था-उसी अवसर पर सन्तराम छोटी अवस्था में जब कि आप पंजाव की विश्वविद्यालय की इनटर परीक्षा के लिये कालेज में पढ़ रहे थे उन्होंने भी वेदान्त पर अपने विचार रखे थे जिसे सुनकर लोग चकित रह गये थे-यह संत राम का छोटी अवस्था का चमत्कार था—

संत स्वामी विवेकानन्द के साथ संत राम की भेंट का यह परिणाम निकला कि सन्त को भी सन्यासी बनने की लालसा प्रबल हो उठी थी—सन्त राम-2 दिसम्बर 1890 में कालेज गये थे-एक बार सन्त ने गणित में 150 नम्बर में से 148 नम्बर प्राप्त किये थे-पुनः उन्हें एक छोटा सा वजीफा

मिला था—यानि प्रथम मास में 35 रुपये और दूसरे मास में 25 रुपये, कुल 60 रुपये मिले सन्त राम विद्यार्थी काल में प्राय: भक्त धन्ना के उपदेश सुना करते थे—

दूसरा सन्त राम सन् 1893 में बी. ए. की परीक्षा में पंजाब भर में प्रथम आए थे—एक बार मुसलमान होस्टल के सुपरिटेंडेण्ट ने होस्टल में गोमांस पकवाया था, जिस पर हिन्दू विद्यार्थी बहुत नाराज हुय थे—पुन: उसे अलग कर सन्त राम को सुपरिटेंडण्ट नियुक्त किया गया था—सन्त राम ने लाहौर में "अलिफ" नाम का एक सामयिक पत्र निकाला था उसके मस्ती भरे लेखों में फारसी, हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी और संस्कृत के चुने हुये मोती जैसे उद्धरणों का अपूर्व संग्रह होता था-संत राम जुलाई सन् 1900 में हिमालय के आररायों में चले गये थे—जब सन्त राम ने सन्यास लिया था, तो आपको पत्नी ने भी सन्यास लेने का विचार किया था—पहले तो इन्कार कर दिया था और कहा कि सन्यास का धर्म निभाना बड़ा कठिन है—

दूसरा आपको अपने इकलौते पुत्र को अलग करना पड़ जायेगा—पत्नी ने कहा कि मैं सर्व कुछ करुंगी—तब सन्त राम ने कहा कि ठीक है—प्रथम इसे गंगाजी के मेल में जाकर छोड़ आ—उसने ऐसा ही किया था—दूसरा सन्त राम ने कहा कि अपने पास कुछ न रखना केवल ब्रह्म परायण रहना सो भी उसने स्वीकार कर लिया था—अब प्रात: शाम उसको कोई न कोई भोजन दे जाता था—एक बार दो दिन बीत गये कहीं से भी भोजन न मिला था—दोनों जब चिन्ता करने लगे तो उस समय

पत्नी ने कहा कि यह मेरी सोने की अंगूठी है इसे बेचकर सौदा-पानी ले आवें—यह बात देखकर सन्त राम ने अपनी पत्नी को बहुत फटकारा कि इसी कारण हम दो दिन से भूखे रहे—कारण तुझे अंगूठी पर विश्वास था, परमात्मा पर विश्वास नहीं था—पुनः वह अंगूठी उन्होंने एक अति निर्धन को दे दी थी—केवल ब्रह्म परायण रहे थे—यह सन्यास काल का प्रथम चमत्कार था—

दूसरा सन्त राम हिमालय पर्वत पर नित्य सांयकाल को बहुत लोगों को उपदेश दिया करते थे—एक बार एक भयानक शेर कथा में आ गया था—सब लोग भय के मारे भागने लगे थे-सन्त राम ने लोगों को कहा कि आप सर्व बैठे रहें अतः यह शेर किसी को दुख नहीं देगा—पुनः उन्होंने प्रार्थना की ऐ मेरे राम ! आज आप सिंह रूप में दर्शन दिया है—मैं आपको कोटीशा नमस्कार करता हूं-पुनः वह शेर लोगों से 20 कदम की दूरी पर चुप-चाप बैठ गया था-अब वह शेर नित्य समय पर आ कर दूर बैठ जाता था—और उपदेश खत्म होने पर चल देता था-यह था उनका चमत्कार जो एक हिंसक जन्तु को भी वश में कर लिया था—

एक बार टेहरी के राजा ने सन्त राम को कहा कि जापान में एक विश्व धर्म सम्मेलन हो रहा है-यदि आप जाना चाहें तो व्यय में कर दूंगा-सन्त राम तैयार हो गये थे-आप सप्ताह बाद जहाज से वहां पहुंचे थे-वहां सन्त राम इराडो-जापानी कल्ब में ठहरे थे-उनके साथ उनका शिष्य सन्त नारायण भी था-एक बार जापान में सन्त राम को एक पुस्तक की मन में इच्छा

हुई-पुनः सन्त राम के चमत्कार से तत्काल एक पुरुष ने उक्त पुस्तक को उनकी मेज पर रख दी थी-वह पुस्तक थी विश्वधर्म सम्मेलन का कार्य विवरण एवं पूर्व के भाषावादि-दूसरा जापान में संत राम का व्याख्यान 'सफलता का रहस्य' पर हुआ था- संत राम ने जापान में 6 व्याख्यान दिये और 15 दिन बाद आप अमेरिका चले गये थे—संत राम जब सन फ्रांसिस्को बंदर पर पहुंचे, तब जहाज के डेक से लोग बारी-बारी उत्तर गये थे—संत राम मस्ती में ऐसे बैठे रहे जैसे आपने डेक पर ही निवास करना हो-एक अमेरिकन ने संत राम को विचित्र मस्ती में देखकर पूछा, अन्य सर्व उत्तर गये हैं, आप क्यों नहीं उत्तर रहे हैं?—संत राम ने कहाकि मुझे जल्दी नहीं है—पुनः उसने कहा कि आपका सामान कहां हैं ? संत ने कहा जो कुछ मेरे शरीर पर हैं—अतः और कोई सामान नहीं है-फिर उसने कहा कि आपका रूपया-पैसा कहां है? सन्त ने उत्तर दिया मैं अपने पास रूपया-पैसा कुछ नहीं रखता हूं-उसने कहा कि आप का जीवन कैसे चलता है ? सन्त राम ने कहा मैं सबसे प्रेम करके ही जीवित रहता हूं-जब प्यास होती है तब कोई न कोई पानी पिला देता है और जब भूखा होता हूं तब तव कोई न कोई रोटी भी खिला देता है-पुनः उसने कहाकि अमेरिका में आप का कोई मित्र है? सन्त राम ने कहा हां, है क्यों नहीं, मैं केवल एक अमेरीकन को जानता हूं और वह हो तुम—यह सुन कर उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कोई भूला हुआ मित्र मिल गया हो—वह अमेरिकन अब सन्त राम का अनन्य भक्त बन गया था-यह था सन्त राम का चमत्कार जो एक अनभिज्ञ को वश में कर लिया था—

अमेरिका में एक बार बहुत धनवान महिला सन्त राम के पास आई—सन्त राम उसे गंगा कहने लगे—उसने अपना सब कुछ जेवर, जमीन, घर सन्त राम को भेट करना चाहा—परन्तु सन्त राम ने लेनें से अस्वीकार कर दिया था—सन्त राम के त्याग से वह महिला बड़ी प्रसन्न हुई—एक बार एक अभिनेत्री सन्त राम के पास आई—वह मोतियों और आभूषणों से लदी हुई थी—वह इतना इत्र लगाये हुई थी, मानो सुगंध की पुतली हो—उसने आकर सन्त राम को कहा मैं अति दुखी हूं—यह कह कर वह रोने लगी थी—और कहाकि आप मुझे सुख दीजिये—मेरा सम्पूर्ण हृदय घृणा से रो रहा है—सन्त राम ने उसे सांतवना दी—उस अभिनेत्री ने अपना पाप-पुण्य का सारा ब्यौरा सुना दिया था—सन्त राम को ऐसा लगा जैसे पाश्चात्य सभ्यता ही इसके द्वारा प्रकट हो रही है—

एक बार दूसरी महिला आई जो बहुत कातिर थी—उस का बच्चा मर गया था—वह सन्त राम के पास सुख और शांति की प्रार्थना करने आई थी—सन्त राम ने कहा कि इस के लिये कुछ मूल्य देना पड़ता है—उसने कहा हां, मैं दूंगी—सन्त राम ने कहा द्रव्य नहीं देना है—उस स्त्री ने कहा फिर मैं क्या करूं—सन्त राम ने कहा एक—नीग्रो जाति के बच्चे को प्यार करो—बस यही मूल्य चुकाना होगा—वह स्त्रीं कहने लगी ओह, यह करना कठिन कार्य है मैं नहीं कर सकूंगी—सन्त राम ने कहा तब तो सुख आनन्द पाना भी दुस्तर है—पुनः उसने स्वीकार कर लिया—तब वह सुख-आनन्द में रहने लग गई थी—यह उन का चमत्कार था—

दूसरा एक बार सन्त राम का व्याख्यान हो रहा था, जो केवल महिलाओं के लिये थे—उस सभा में बड़ी-2 विद्वान महि-

लायें आई थी–कोई वकील थी, कोई प्रिंसीपल, कोई प्रोफेसर, कोई जज, कोई इन्जिनीयर अतः बड़ी बुद्धिवान महिलायें आई थीं—उस व्याख्यान में जब राम ने भगवान कृष्ण की रास-लीला का वर्णन किया–तब सब महिलाओं ने कहाकि यह क्या आप कह रहे हो–कृष्ण तो एक व्यभाचारी कामी पुरुष था–यह कर सब ने कहाकि इस प्रसंग को बन्द करो–तब सन्त राम ने कहाकि अच्छा इसका उत्तर कल दूंगा–कुछ दिन बाद जब पुनः महिलाओं की सभा हुई तो उस में सन्त राम ने अपना प्रवचन प्रेम पर दिया था–सन्त राम ने कहा था–कि परमात्मा कृष्ण को भक्ति रूप में डूबे हुये मानव को व्यक्तिगत स्वार्थ की इच्छायें और कामना नहीं सता सकती है–ऐसे प्रेम की महिमा कहते कहते आप मंच से उत्तर कर एक दम दूर भाग गये थे—अब महिलायें जो प्रेम के व्याख्यान सुनकर मस्त हो रही थीं–वह भी सन्त राम के पीछे दौड़ पड़ी थीं–सन्त राम एक वृक्ष के नीचे जाकर खड़े हो गये थे–जब महिलायें आई तब सन्त राम ने कहाकि आप बड़े निर्लज हो, क्यों एक पर पुरुष के पीछे-2 आ रही हो—तब उन्होंने कहाकि हम कोई कामवश नहीं आ रही है हमें तो वह प्रेम की बात कहो कि आगे क्या हुआ–तब सन्त राम ने कहा कि कृष्ण और गोपियों में कामवासना नहीं थी केवल प्रेम वश आती थी–यह चमत्कारी उत्तर सुनकर वे सर्व प्रसन्न होकर चली गई–सन्त राम ने अन्त में जल समाधि ली थी–सन्त राम गंगा नदी में नहाते-नहाते अदृश्य हो गये थे–बहुत ढूढने पर भी उनका शरीर नहीं मिला था—यह उनका अन्तिम चमत्कार था– ॥इति श्री॥

संत तुकाराम

संत तुकाराम के पिता का नाम वोलोवाजी और माता का नाम कनकाबाई था—संत तुकाराम का जन्म सन् 1680 में (संवत 1737) में हुआ था—आपकी जन्म भूमि पुणे के पास भीमा और नीरा नदियों के बीच के प्रदेश में थी–ग्राम का नाम देहू था–संत के दो भ्राता और दो बहनें थी–संत तुकाराम तेरह वर्ष के थे जब उनका सुखमई से विवाह हो गया था—सुखमई को दमें की बीमारी थी—अतः माता-पिता ने दूसरा विवाह जीजाबाई से करा दिया था—सन्त तुकाराम सत्तरह वर्ष के थे कि उनके माता पिता का देहान्त हो गया था—संत तुकाराम पंडरपुर के विठोबा के भक्त थे–रात दिन सत्संग को लगे रहते थे—उनके ग्राम में एक दफे भयकर सूखा पड़ा था–जिसमें आपकी पत्नी और बड़ा बटा सन्तु तथा उनके मवेशी भूख के कारण स्वर्गवासी हो गये थे—अन्य परिवार को अपने श्वसुर को सौंप कर आप सन्यासी बन गये थे—संत तुकाराम भामनाथ की पहाड़ियों पर स्थित शान्ति स्थान की ओर चल दिये जहां चैन मिलने की सम्भावना थी—

संत तुकाराम ने सन् 1740 में बाबाजी चैतन्य सम्प्रदाय से दीक्षा ली थी–संत तुकाराम भक्ति के गीतों की रचना करते थे—इन्हें मराठी भाषा में अभंग कहते हैं–उनकी ख्याति और प्रसिद्धी चारों ओर व्याप्त होने लगी—परन्तु गांव में एक पण्डित रामेश्वर भट्ट उनकी ख्याति सहन नहीं कर सका था–

रामेश्वर भट्ट का कहना था कि मराठी भाषा में अभंग रचने से देववाणी और भगवान का अपमान होता है—एक बार पण्डित रामेश्वर भट्ट ने देहू के राजा से जाकर कहा, आप संत तुकाराम को देहू से निकाल बाहर कीजिए—कारण एक शूद्र के अभंगों को चारों वर्ण के लोग गाते फिरते हैं - यह अच्छी बात नहीं है—देहू के राजा स्वयं संत तुकराम को बहुत मानते थे-उन्होंने ऐसा नहीं किया -

जब सन्त तुकाराम को इस बात का पता लगा तब वे रामेश्वर भट्ट के पास गये—सन्त तुकाराम ने अत्यन्त विनम्र भाव से कहा कि यदि मेरे अभंगों की रचना से आप दुखी होते हैं तो मैं भविष्य में रचना नहीं करुंगा—पर अब तक जो अभंग मैं ने रच दिये हैं उनका क्या होगा ? रामेश्वर भट्ट ने कहा इन सबको आप इन्द्रायणी नदी में बहा दो—यदि तेरह दिन बीत जाने पर वे पानी पर तैरते हुये दिखाई दिये तो मैं हार जाऊंगा—और इन्हें मान्यता दूंगा—सन्त तुकराम ने ऐसा ही किया सारे अभंग नदी में डाल दिये थे—पुनः सन्त तुकाराम एक मन्दिर में बैठकर भगवान के गीत गाने लगे थे—तेरह दिन बाद संत तुकाराम के अभंग पानी पर तैर रहे थे -जब रामेश्वर भट्ट ने सन्त तुकाराम का यह चमत्कार देखा तो उनके चरणों में आ गिरा और उन्हें अपना गुरु मान लिया यह घटना सन् 1725 में हुई जब सन्त तुकाराम 45 वर्ष के थे—

एक बार लोह गांव की एक कंगन बेचने वाली स्त्री जो बहुत गरीब थी उसके मन में संत तुकाराम के कीर्तन सुनने

तीव्र इच्छा हुई–उसका छोटा बच्चा था जिसे वह घर में अकेला नहीं छोड़ सकती थी—अतः उसने उसे अफीम कुछ ज्यादा मात्रा में चटा दी जिससे कि वह रात में जगकर घर के अन्य लोगों की नींद खराब न कर दे—पर अफीम की वह मात्रा भारी पड़ गयी और बच्चा चल बसा—घर के लोग क्रुद्ध होकर उसकी लाश कीर्तन के स्थान पर ले आये—सन्त तुकाराम ने उसमें प्राण फूंक दिये और मां को विठल भक्ति की महिमा प्रमाणित कर दी—यह था सन्त तुकाराम का चमत्कार जो एक मृत बच्चे को जीवित कर दिया था—

एक बार एक खेत के स्वामी ने संत तुकाराम को खेत की रखवाली करने और गोफनी से पंछियों को दूर रखने का काम सौंप दिया—बदले में आधा मन ज्वार देने का वचन दिया—अब सन्त तुकाराम ने मनमें सोचा कि पंछी भी परमात्मा के निर्मित प्राणी हैं—भगवान विट्ठल की सन्तान हैं—अतः उन्होंने पंछियों को पूरा खेत चुगने दिया—संत तुकाराम ने कहा, पंछियों को फसल का हिस्सा क्यों न मिले ? मैं क्यों इन्हें दूर हटा दूं ? भू स्वामी को जब पता लगा कि खेत में तो कुछ भी नहीं बचा है—उसने संत तुकाराम से क्षति पूर्ति के रूप में चालीस मन औसत फसल की मांग की—पंचायत के सामने मामला आ गया और उतने ही उसके दूसरे खेत में फसल काटने गयेउसके तो सैकड़ों मन की पैदाइश देखकर स्वामी एव सब दंग रह गये-सन्त का यह चमत्कार देखकर स्वामी एवं सब मंत्र-मुग्ध हो गये—

एक बार सन्त तुकाराम किसी ग्राम में कीर्तन-भजन करने के लिए गये—वहां किसी भक्त ने उन्हें ढेर सारे गन्ने दिये और कहा कि ये गन्ने आप घर पर ले जाइये, परिवार

में सभी खा लेंगे—संत तुकाराम गन्ने लाद कर गांव को चले—राह में कुछ अन्य भक्त मिले—उनमें से एक ने कहा कि संत जी कीर्तन करके लौट रहे प्रसाद तो दीजिये—संत ने एक-एक गन्ना प्रत्येक को दे दिया—वे कुछ आग गये तो और गांव वाले मिले—उन्हें भी एक-एक गन्ना सर्व को दिया—पुनः उन्होंने गाड़ी वान को कुछ गन्ने दिये—लो भाई तुम भी परिवार के लिए ले जावो संत तुकाराम जब घर पहुंचे तो उनकी पत्नी बाहर बैठो हुई उनकी प्रतीक्षा कर रही थी—गाड़ीवान ने उनकी पत्नी को कहा संत जी'ने ढेर सारे गन्ने रास्ते में बांट दिये हैं—पत्नी ने बांटने को बात सुनी तो जल–भुन कर रह गई—संत तुकाराम के पास केवल एक गन्ना अपने लिये बचा था—संत तुकाराम ने पत्नी को कहा, लो एक गन्ना आप खा लो—पत्नी ने क्रोध में गन्ना उनकी पीठ पर दे मारा—गन्ने के दो टुकड़े हो गये थे—संत तुकाराम ने हंसते हुये कहा कि अच्छा हुआ तुमने दो हिस्से कर दिये—अब एक हिस्सा मेरा है और एक हिस्सा तुम्हारा है—यह था संत तुकाराम के त्याग का चमत्कार—

एक बार गांव के कुछ लोग तीर्थ-यात्रा के लिए तैयार हुये—वे संत तुकाराम के पास भी आये और बोले, महाराज, हम सब तीर्थ-यात्रा के लिए जा रहे हैं, आप भी हमारे साथ चलें—इस पर संत तुकाराम ने कहा कि मैं इस समय तीर्थ-यात्रा पर नहीं चल सकूंगा—संत तुकाराम ने कहा कि आप मेरी इस लौकी को ल जाइये—इसे प्रत्येक स्थानों पर स्नान करा दीजिये—मैं समझूंगा कि मैं ने स्नान कर लिया है—लोगों ने संत तुकाराम की लौकी ले ली थी—कुछ समय बाद जब गांव के लोग तीर्थ-यात्रा से लौटे तो वह लौकी सन्त तुकाराम

को दे दी और कहा, कि हम आपकी लौकी को हर तीर्थ पर स्नान करवा लाये हैं--सन्त तुकाराम ने सभी को धन्यवाद दिया- संत तुकाराम ने तीर्थ यात्रियों को सामूहिक भोज दिया--सभी तीर्थ-यात्री भोज में सम्मिलित हुये--उस भोज में संत तुकाराम ने उसी लौकी की भाजी बनवाई--भोजन में प्रत्येक को लौकी खाने को दी--लौकी खाते ही सर्व ने थू-थू कर दी ~ यह देखकर संत ने कहा कि यह आप लोगों ने क्या कर दिया--सब ने कहा कि लौकी कड़वी है--इस पर संत तुकाराम ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता--सबने कहा, संत जी यह कड़वी है--पुनः सन्त तुकाराम ने कहा यह कड़वी हो ही नहीं सकती है--कारण यह सर्व तीर्थों का स्नान कर आई है एक यात्री ने कहा कि यदि हम पर विश्वास न हो तो खुद खा कर देख लें--संत तुकाराम ने जब खाई तो उनका मुंह भी कड़वा हो गया था--पुनः सन्त तुकाराम ने कहा कि मैं ने आप लोगों से कहा था कि आप इसे भी तीर्थ स्नान करवा देना, आप तो कहते हैं कि हमने इसे तीर्थ पर स्नान कराया है-- लेकिन लगता है कि इसे स्नान नहीं करवाया गया है--सभी ने कहा कि हमने इसे स्नान कराया है-इस पर सन्त तुकाराम ने कहा, आश्चर्य है कि तीर्थों में स्नान करने के बाद भी यदि इसमें कड़वापन बाकी है--तीर्थ स्नान करके लौकी जैसी बेजान वस्तु का कड़वापन नहीं जा सकता तो क्या जानदार वस्तुओं का कड़वापन जा सकता है ? यह उत्तर सुनकर सन्त के उपदेश का चमत्कार जान गये थे--

सन् 1750 में सन्त तुकाराम के लिए भगवान विट्ठल नाथ के पार्षदों द्वारा एक रथ आया जो सन्त तुकाराम को

स्थूल शरीर सहित ले गया था—यह था उनका अन्ति चमत्कार जो आप विष्णु लोक में जीवित चले गये थे—

-इति श्री-

संत महर्षि रमरण

सन्त महर्षि रमण के पिता का नाम सुन्दर अय्यर था और माता का नाम अषगम्माल था—सन्त रमण तमिलनाडू के के मदुरा नगर के समीप तिरुचिवि गांव के एक साधारण ब्राह्मण जाति में सम्वत 1936 में पैदा हुए थे—आपका पूरा नाम वेंकट रमण था—एक बार सन्त रमण के पूर्वज के घर एक साधु भिक्षा मांगने आया था—परन्तु उन्हें भिक्षा नहीं मिली थी तब उसने शाप दिया कि आपकी सन्तान की हर पीढ़ी में से एक व्यक्ति साधु बनेगा और उसे भी भिक्षा मांगनी पड़ेगी—अतः इसी शापानुसार सुन्दर अय्यर के घर यह सन्त रमण उत्पन्न हुआ था—जो साधु बना और भिक्षा भी मांगी थी—बालक सन्त रमण की शिक्षा के लिए मदुरा ले आये थे—उसका भ्राता नागस्वामी दो वर्ष बड़े थे—उनके 6 वर्ष बाद तीसरा पुत्र नाग सुन्दरम और पुनः दो वर्ष बाद पुत्री अलामेलु का जन्म हुआ था—सन्त वेंकट रमण 12 वर्ष के थे जब उनके पिता सुन्दरम् अय्यर का देहान्त हो गया था—परिवार वाले मदुरा में चाचा सुब्वियर के पास चले गये थे—सन्त रमण को पहले स्काटस मिडिल स्कूल में और बाद में अमेरीकन मिशन

स्कूल में भेजा गया—सन्त रमण की स्मरण शक्ति तेज थी, जिसे एक बार सुन लेता था उसे कण्ठस्थ हो जाता था—सन्त रमण को अगाढ निद्रा आती थी-

एक बार वेंकट रमण घर छोड़कर कहीं चले गये थे—उसकी मां जो इस समय मान मदुरा में थी, अपने देवरों सुब्बियर और नेल्लियाम्पयर के साथ सन्त रमण की तलाश करने गई—उन्हें ज्ञात हुआ कि सन्त रमण एक नाटक कम्पनी में शामिल हो गया है—जो त्रिवेन्द्रम में धार्मिक नाटक दिखा रही है—जब नेल्लियाप्पियर वहां गये और नाटक कम्पिनियों से पूछ-ताछ की, तो परिणाम कुछ न निकला—दूसरी बार जब त्रिवेन्द्रम गये तो उन्होंने सन्त रमण की आयु और कद जैसा बालों वाले एक युवक को देखा, जो इन्हें देखते ही मुंह मोड़कर दूर चला गया था-इन्हें पूरा विश्वास हो गया कि यह ही सन्त रमण था—अतः वे निराश हो कर घर वापस आ गए थे-सन्त रमण के चाचा सुब्बियर का अगस्त 1898 में देहान्त हो गया था—जब नेल्लिमाप्पयर उनके मृत्यु संस्कार में सम्मिलित होने मदुरा आये तो एक व्यक्ति ने उन्हें बताया कि सन्त रमण एक मठ में हैं—और अब उसका नाम तिरूचूज स्वामी है-ऐसे आप सन्यासी बन गये थे—जब आप वहां गये तो संत रमण आमों के बगीचे में मौन धारण किये बैठे थे—उन्हें घर लौटने के लिए कहा तो उन्होंने अस्वीकार कर दिया था—तब आप हार मानकर मान मदुरा वापस आ गये थे—आप भिक्षा मांगकर जीवन निर्वाह करने लगे—वहां से चल कर संत रमण अरुणाचल की पूर्वी पर्वतमाला पर स्थित पवलकुन्नरू गये वहां एक मन्दिर में ठहर गये-

एक बार महात्मा गांधी ने बाबू राजेन्द्र प्रसाद को संत वेंकट रमण के पास भेजा–राजेन्द्र बाबू ने सन्त रमण को कहा कि मुझे महात्मा गांधी ने आपके पास भेजा है, कृपया उनके लिए कोई सन्देश दीजिए–सन्त रमण जी ने कहा कि मैं उन्हें क्या सन्देश दे सकता हूँ ? हम दोनों में अन्तर ही कहां है ? मेरे साथ जो शक्ति काम कर रही है वही शक्ति उनके साथ भी काम कर रही है यानि यौन वृति–हम किसी भी दिशा में भिन्न तो है ही नही–हम दोनों एक ही शक्ति के दो रूप है जो केवल भिन्न दिखाई देते हैं–सन्त रमण की बात सुनकर राजेन्द्र बाबू पूर्णतया सन्तुष्ट हो गये—

कुछ समय पश्चात एक मुस्लिम सांस्कृतिक दल उनसे मिलने आया– उनके नेता ने सन्त रमण के पास बैठकर बहुत कुछ पूछा और सन्तुष्ट हुये–सन्त रमण के आस-पास के वातावरण में एक अनोखी बात उठ खड़ी हुई—मुस्लिम दल का वहां आना और सन्त रमण का सभी का स्वागत करना उस दिन एक अनोखी सी बात थी–पुनः दल के नेता एक प्रश्न पूछा, कि आखिर मनुष्य जीवन का ध्येय क्या है ? सन्त रमण ने दल के नेता की ओर देखा और स्वभाव को आत्म सात करने वाले ने उत्तर दिया 'जीवन का ध्येय इस्लाम' है–दल के सभी मुसलमान यह उत्तर सुनकर चौंक पड़े उन्हें आशा थी कि सन्त रमण कोई वेद, पुराण, उपनिषद की कोई बात कहेंगे—उन्होंने आश्चर्य से पूछा, जी, क्या कहा आपने ? सन्त रमण ने उसी शांत भाव से कहा, हम अपने ईस को सलाम करते हैं–अर्थात, अपने प्रभु के आगे झुके रहने से ही भलाई है– ईश-सलाम मन को शांति

प्रदान करते हैं—मुस्लिम दल ने आज जीवन में पहली बार इस्लाम को इतने व्यापक अर्थों में सुना और जाना था—सन्त रमण ने कहा कि ईश-सलाम ही मनुष्य के जीवन का ध्येय होना चाहिए—ईश-सलाम से मन अहंकार से रहित होता है—जब मन अहंकार से रहित होता है तो सभी के प्रति प्रेम-भाव बना रहता है—मनुष्य जीव-मात्र से प्रेम करता है उस पर दया करता है—अतः ईश-सलाम मन को शांति प्रदान करता है - ईश-सलाम ही मनुष्य के जीवन का ध्येय होना चाहिए—यह सुन सर्व प्रसन्न होकर विदा हुए—

सन्त रमण ने जब पवजहाककनरू में एक मन्दिर में आश्रय लिया यहां उन्हें अपनी माता मिली थी—उन्होंने घर वापस चलने के लिए बहुत आग्रह किया परन्तु आपने अस्वीकार कर दिया था—सन्त रमण विरुपाक्ष कन्दरा में मौन रहते थे—एक बार एक पाश्चात्य वृद्ध स्त्री आपके दर्शन के लिए आश्रम में आई—जब वह पहाड़ी पर घूमने निकली तो अपना मार्ग भूल गई—धूप और थकान जब सहन नहीं कर सकी और अत्यन्त बुरी हालत हो गई—इतने में सन्त रमण वहां प्रकट हुए और उन्होने आश्रम का रास्ता बताया—जब यह बात आश्रम वासियों ने सुनी तो वे अत्यन्त विस्मित हुये क्योंकि सन्त रमण उस कन्दरा से कभी भी बाहर नहीं गए थे—सन्त रमण का यह चमत्कार देखकर हैरान हुए थे—

एक बार गणपति शास्त्री ने सन्त रमण से प्रश्न किया कि यदि किसी व्यक्ति को विशेष सत्य की खोज में ज्ञान लाभ हो जाये तो क्या उसकी इच्छाएं पूर्ण हो जायेंगी ? सन्त रमण

ने उत्तर दिया कि यदि योगी को अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए, साधन करते हुए, ज्ञान प्राप्त हो जाये, तो वह अनुचित रूप से हर्षित नहीं होगा, भले ही उसकी इच्छाओं की पूर्ति हो जाये श्रेष्ठ है—

सन्त रमण ने दक्षिण के अरूणाचल में अपने आश्रम की स्थापना की-स्वयं सन्त रमण सदा मौन ही रहते थे-आश्रम की व्यवस्था भक्त लोग करते थे—सन्त रमण वहां पर पूर्णतया त्याग मय जीवन व्यतीत कर रहे थे-एक समय की बात है कि उनके पास पहिनने के लिये केवल एक ही लंगोटी थी—नहाने के बाद बदलने के लिये दूसरी लंगोटी नहीं थी—सन्त रमण त्याग की मूर्ति थे—अतः एक से ही काम चलाते रहे-धीरे-धीरे वह लंगोटी फट गई काम नहीं चल सकता था—अतः वे चुप-चाप एक दिन जंगल में चले गये-अब सन्त रमण ने एक झाडी में से दो कांटे लिये और अपनी लंगोटी में से एक लम्बा धागा निकाला—पुनः उन दोनों कांटों के द्वारा सीना आरम्भ किया बहुत कठिन परिश्रम करके बहुत समय लगाकर जैसे-कैसे करके सन्त ने फटे हुये हिस्से को ढक दिया—यह उनका त्याग का चमत्कार था—

एक बार कहीं से एक कौआ उड़ता हुआ आया और आश्रम में आकर गिर गया—वह घायल था—पुनः सन्त रमण ने उसे अपने हाथों में उठा लिया-सन्त रमण ने उसके जख्मों को धोया-उस पर मरहम पट्टी लगाई और एक सुरक्षित स्थान में रख दिया—धीरे-धीरे कौवे के जख्म ठीक होने लगे, परन्तु तीसरे दिन कौवे की हालत पुनः खराब होने लगी-उसने गर्दन लटका दी-और उसके प्राण पखेरू उड़ गये-सन्त ने अपनी एक

दिव्य दृष्टि कौवे पर डाली और उसकी अन्त्येष्टि क्रिया कर दी गई—सन्त रमण ने उस कौवे की समाधि बनवा दी थी—सन्त रमण अति करूणामयी थे—सन्त रमण को एक बार गठिया का रोग हो गया था—रसोली भी निकाली गई थी, अतः बीमारी में आपका देहान्त हो गया था—

॥ इतिश्री ॥

संत पुरंदरदास

संत पुरंदरदास के पिता का नाम वरदप्पनायक था—नायक शब्द कारोबार का द्योतक है—जौहरी और महाजन को नायक कहते हैं—पिता ने इनका नाम श्री निवास नायक रखा था—सन्त पुरंदरदास का जिस गांव में जन्म हुआ था, उसका नाम पुरंदर था—उसी पर से उनका नाम पुरंदर दास पड़ा था—सन्त पुरंदरदास स्वभाव से कंजूस थे—उनकी पत्नी सरस्वती बाई को यह कंजूसी खटकती थी—

एक बार कोई ब्राह्मण अपने बेटे के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए सहायता की याचना करने आया—नायक ने कई बार आने पर भी कुछ नहीं दिया था—वह बूढ़ा ब्राह्मण न टला तब उसे एक खोटा पैसा दे दिया था—उस बूढ़े ब्राह्मण को उससे बड़ा दुःख हुआ—उसने पटेल के घर जाकर नायक की शिकायत की कि यह ऐसा कंजूस है—यह बात नायक की पत्नी सरस्वती ने भी सुनी थी—पुनः उस ब्राह्मण ने नायक

की पत्नी के पास जाकर कहा कि आप मुझे दान दें कारण मैं ने बेटे का यज्ञोपवीत संस्कार करना है—उसकी पत्नी शील और औदार्य सम्पन्न थी—वह सब कुछ सुन व देख चुकी थी-उसने उस ब्राह्मण को एक नथ जो उसके पिता ने उसे दी हुई थी, वह नैहरवाली नथ उस ब्राह्मण को यह समझकर दे दी थी कि यह किसी को पता नहीं लगने देगी-परन्तु देव योग से वह ब्राह्मण उसे बेचने के लिए उसके पति नायक की दुकान पर चला गया था—नायक ने उस नथ को देखते ही पहचान लिया था, कि यह नथ उसकी पत्नी की है—नायक को बड़ा क्रोध आया-उसने ब्राह्मण से नथ ले कर अपनी तिजौरी में रख दी और ब्राह्मण से कहा कल आकर दाम ले जाना-नायक ने घर आकर पत्नी से कहा कि तेरी नथ कहां हैं ? पत्नी ने कहा जी, अभी लाती हूं—इतना कहकर वह कांपती हुई अन्दर गई - और उसने विष का प्याला लेकर इस भावना से पीने लगी कि सदा के लिए अपमान से बच जाऊंगी पत्नी जब पीने लगी तो देखा कि नथ प्याले में पड़ी है—नथ लेकर बाहर आ कर अपने पति को दे दी—यह देखकर नायक को बड़ा आश्चर्य हुआ—पुनः दुकान पर जाकर तिजौरी में देखा नथ नहीं थी-अब नायक संत पुरन्दर के विचारों ने इस चमत्कार से पलटा खाया—

पुनः सन्त पुरन्दर की अपनी पत्नी पर अपार श्रद्धा बढ़ गयी थी—सन्त पुरन्दर अब सर्वस्व त्याग कर पत्नी के साथ विजय नगर गये, वहां माधव मठ के व्यास राज स्वामी हरिदास से दीक्षा ली-श्री निवास नायक अब संत हरिदास बन गये थे-उनकी पत्नी ने ही हरिदास (संत पुरन्दर) का वृथाभिमान

दूर किया था–वैष्णव दीक्षा ले कर, संत हरिदास बनने के बाद दासो चित रूप में अपना जीवन बिताने लगे थे–उनके गुरु भी कहते थे कि दासों में दास तो पुरन्दरदास है–सन्त पुरन्दर की चारित्रिक गुणों के कारण उनकी ख्याति फैलने लगी थी सन्त पुरन्दर केवल परमात्मा के भक्त ही नहीं थे वरन् संगीत शास्त्र एवं साहित्य के भी आचार्य थे–सन्त पुरन्दर दास के गुरु श्रीपाद राज का जन्म 1471 में चन्नपट्टन ताल्लुके के अब्बूर नामक गांव में हुआ था–उनके पिता का नाम शेष गिरि अम्पा था–श्री पादराज सन् 1486 में नरसिंह तीर्थ में स्वर्गवास हो गये थे–सन्त कनकदास और सन्त पुरन्दरदास मित्र थे, दोनों ने साथ-साथ दीक्षा ली थी–सन्त पुरन्दरदास ने सन्त कनकदास की महिमा का बखान किया था–

सन्त पुरन्दर ने एक बार उनको ऊंचा स्थान दिया–इससे विद्वान ब्राह्मण असन्तुष्ट हुये–पुनः सन्त कनक की योग्यता दिखाने के लिए प्रत्येक विद्वान ब्राह्मणों को एक-एक केला दिया और कहा कि वहां जाकर खाओ जहां कोई भी न देखता हो सब ने निगाह बचाकर एकान्त स्थान में खा लिया परन्तु सन्त कनक ने न खा कर आये और कहा कि मुझे ऐसा कोई स्थान न दिखा जहां कोई न हो, कारण परमात्मा तो सर्वव्यापी है–यह देखकर सर्व विद्वान ब्राह्मण शान्त हो गये–

सन्त पुरन्दर जब घुंघरू बांध कर तंबूरे के तार छेड़ते हुये गली-गली में घूमते थे तब उनके चार पुत्र भी ताल देते हुये उनके साथ निकला करते थे–सन्त पुरन्दर ने दक्षिण भारत के सभी तीर्थों की यात्रा की–उत्तर में केदारनाथ गये–पुनः पंड-

रपुर, मलखेड़, तिरुपति और हंपी गये–संतपु रन्दर ने चार लाख पच्चीस हजार पदो की रचना की थी–सन्त पुरन्दर का इतना विपुल साहित्य न जाने कहां और कैसे लुप्त हुआ–एक बार भोजन के बाद व्यास तीर्थ शिष्यों के बीच विराजमान थे–शास्त्र, ग्रन्थ सम्मुख धरे हुए थे—तब सन्त पुरन्दर वहां आये, और गुरुजी को प्रणाम करके अपने ग्रन्थ को उनके सम्मुख रखा—पुनः सन्त पुरन्दर जी के चमत्कार से सन्त पुरन्दर का ग्रन्थ स्वयं उड़कर उन शास्त्र ग्रन्थों के ऊपर जा बैठा था–पुनः एक शिष्य ने सन्त पुरन्दर के ग्रन्थ को उठाकर नीचे फेंक दिया—ऐसा दो बार करने पर भी वह ग्रन्थ उड़कर ऊपर आ गया था—

लोग सन्त पुरन्दर के ग्रन्थ को उपनिषद कहना युक्त समझते थे–सन्त पुरन्दरदास की रचना की शैली सरल और सीधी होती थी—परन्तु भाव बड़े गम्भीर होते थे—उनके पद कन्नड़ भाषा में थे—शास्त्रीय संगीत के ऐसे मर्मज्ञ सन्त पुरन्दर ने विपुल मात्रा में संगीत साहित्य का निर्माण किया था सन्त पुरन्दर के चार पुत्रों का नाम इस प्रकार था—वरदप्प-गुरुराय अप्परण–मध्वपति था—सन्त पूरन्दर का समय 1484 से 1564 तक माना गया है—सन्त पुंरन्दर 80 वर्ष बाद स्वर्गवास हो गये थे—

॥ इतिश्री ॥

संत गुरु गोविन्द सिंह

सन्त गुरु गोविन्द सिंह के पिता का नाम गुरु तेग बहादुर था और माता का नाम गुजरी था–उन का जन्म स्थान पटना था–सिख सम्प्रदाय में दस गुरु हुये थे–गुरु नानक, गुरु अगंद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदास, गुरु हरिगोविन्द, गुरु हरिराय, गुरु हरिकृष्ण, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्द सिंह ऐसे दस गुरु हुये थे—सन्त गुरु गोविन्द सिंह का सम्पूर्ण जीवन विधिवता और विशालता से भरा हुआ था–सन्त गुरु गोविन्द सिंह का जन्म सम्वत् 1723 पौष शुदि सप्तमी 1666 में हुआ था—सन्त गुरु गोविन्द सिंह का जब जन्म हुआ था तब आपके पिता असम में थे, वहां उनके पुत्र-प्राप्ति का शुभ समाचार प्राप्त हुआ था–गुरु तेग बहादुर मुंगेर में जब गये थे तब उनके साथ एक राजा था—वह राजा कौन था इस गुत्थी को अभी तक इतिहास कार नहीं सुलझा सके हैं—उन दिनों पूर्वी भारत में सभी ओर समृद्ध सिख संगतों और मठों का जाल-सा फैला हुआ था—इन संगतों में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त पंजाब और सिंध के सिख व्यापारियों की एक अच्छी संख्या सदैव उपस्थित रहती थी—गुरु तेग बहादुर के चमत्कार से असम के राजा को पुत्र प्राप्त हुआ था—सन्त गुरु गोविन्द नौ वर्ष के थे जब देहली में आपके पिता का बलिदान हुआ था–उनके बाद सन्त गुरु गोविन्द सिंह ने गुरु गद्दी का गुरुतर भार सम्भाला था—उस समय पंजाब में मुसलमानी शासन अत्यन्त दृढता के

साथ जमा हुआ था—शासक हिन्दू मन्दिरों को गिरा रहे थे—हिन्दू पाठशालाओं तथा विद्यालयों की जगह मस्जिदें खड़ी कर रहे थे—दूसरा हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का चक्र बड़े वेग से चल रहा था—उन दिनों मुसलमानों में दो प्रकार के लोग थे एक प्रकार के थे जो सूफी सन्त कहलवाते थे—इनमें धार्मिक कट्टरता नहीं थी—यह हिन्दुओं से उनके सम्बन्ध निकटतर थे—इस वर्ग में रसखान, आलम, जमाल, रासलीन कादिर, मुबारक, रहीम, शेख फरीद, मियांमीर और पीर बुद्धादि थे—

दूसरे प्रकार के लोग कट्टर पन्थि थे, तअस्सुब को ही वास्तविक धर्म मानते थे—मौलवियों और काजियों से प्रभावित हिन्दूओं के बड़े दुश्मन थे – इन्हीं मुसलमानों ने भारत में गो-वध शुरू करवाई थी—इनमें औरंगजेब ने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी—जिसकी मिसाल संसार के इतिहास में ढूंढने से नहीं मिलती है—उस समय हिन्दुओं का सामाजिक जीवन छोटी-छोटी जातियों में बुरी तरह बंटा हुआ था-हिन्दू जनता में आपसी द्वेष इतना अधिक बढ़ गया था कि एक-दूसरी जाति के शत्रु बन रहे थे—अतः हिन्दू समाज जात-पांत के भेद-भाव से दुर्बल हो गया था—ऐसे अवसर पर सन्त गुरु गोविन्दसिंह ने एक शान्ति पूर्ण धार्मिक सम्प्रदाय को सैनिक शक्ति में परिवर्तित कर दिया था—

एक बार कश्मीर के सूबेदार शेर अफगान के अत्याचारों से पीड़ित होकर कश्मीरी ब्राह्मणों का एक समूह आनन्दपुर में गुरु तेगबहादुर के पास आया और अत्याचारों का

हाल सुनाया—इस पर गुरु तेगबहादुर ने कहा कि यह दुख तब खत्म हो सकता यदि कोई बड़ा धर्मात्मा पुरुष अपना बलिदान दे—पास बैठे गुरु गोविन्द जो केवल नौ वर्ष के बालक थे, बोले पिताजी आप से बढ़कर और कौन बड़ा धर्मात्मा पुरुष होगा—यह सन्त गुरु गोविन्द के चमत्कारी वचन थे—पुनः गुरु तेग बहादुर ने कहाकि जाओ औरंगजब से कहो कि पहले उन्हें मुसलमान बनालो फिर हम सब ब्राह्मण मुसलमान हो जायेंगे—औरगजब ने पुनः गुरु तेगबहादुर को इतनी यातनायें दी कि आखिर उनका बलिदान हो गया था, गुरु के बलिदान से जन साधारण में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी—सन्त गुरु गोविन्द सिंह पिता की मृत्यु के पश्चात् आठ वर्ष तक आनन्दपुर में रहे थे—इस समय सन्त ने शास्त्र और शस्त्रों की शिक्षा प्राप्त की थी—पुनः सन्त गुरु गोविन्द सिंह ने सिख-समुदाय को हुकम नामे भेजकर धन और अस्त्र-शस्त्र का संग्रह किया—एक छोटी सी सेना एकत्र की और युद्ध-नीति में कुशल बनाया गया था—आठ वर्ष बाद सन्त गुरु गोविन्दसिंह एक पहाड़ी राज्य सिरमौर में यमुना किनारे पांवटा में तीन वर्ष तक रहे—सन्त गुरु गोविन्दसिंह को सन् 1686 में अपने जीवन का प्रथम युद्ध लड़ना पड़ा था—इस युद्ध के खत्म होने पर संत गुरु गोविन्दसिंह सिढोरा आ गये थे—यहां पर सूफी सन्त सैयद बुद्धशाह ने सन्त गुरु गोविन्दसिंह को सहायता दी थी—

एक बार सन्त गुरु गोविन्दसिंह का पहाड़ी राजा हरी चन्द्र से युद्ध हुआ था—इसमें राजा हरी चन्द्र मारा गया था और उसकी सेना मैदान छोड़कर भाग गई थी—पुनः सन्त कहिलूः आनन्दपुर में वापिस आ गये थे—सन्त गुरु गोविन्दसिंह के

सेना में जाट राजपूतों की भरती थी—कुछ राजाओं ने सन्त गुरु गोविन्द सिंह के साथ संधि कर ली थी—उन्होंने गुरु के आक्रमण में गुरु का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी—उन्होंने सम्राट की सेवा में अपना वार्षिक कर देना भी बन्द कर दिया था—पुनः सम्राट ने मियांखान और अलिफखां और जुलफिकार खां को कर वसूल करने के लिए भेजा था—नादौन के निकट एक घोर संग्राम हुआ जिसमें सन्त गुरु गोविन्द भी साथ थे मुगल सेना हार कर भाग गई थी—अब सम्राट ने लाहौर के सूबेदार दिलाबर खां के पुत्र रुस्तम खां को गुरु पर आक्रमण करने के लिये भेजा—युद्ध के नगाड़े बजने लगे ठीक उसी समय गुरु गोविन्द के चमत्कार से नदी में भयंकर बाढ़ आ गई तब मुगल सेना उसकी लपेट में आ गयी, परिणाम स्वरूप सारी सेना बिना युद्ध किये ही भाग खड़ी हुई थी—

पुनः रुस्तम खां की सेना भाग जाने पर हुसैन खां ने आक्रमण किया इसको कुछ राजाओं ने लगान दे दिया था परन्तु एक राजा गोपाल ने युद्ध किया था—सन्त गुरु गोविन्द सिंह से सहायता मांगी थी—सन्त गुरु ने अपना सेनापति संगतिया सिंह को सहायता के लिये भेजा था—इस युद्ध में हुसैन हार गया था परन्तु गुरु का सेनापति संगतियासिंह मारा गया था—एक बार बैसाखी के अवसर पर सहस्रों शिष्यों के समुदाय सम्मुख हाथ में नंगी तलवार लेकर संत गुरु गोविन्दसिंह ने प्रश्न किया, कि है कोई ऐसा जो धर्म के लिए अपने प्राण दे सके ? यह वाक्य सुनते ही सभा में सन्नाटा छा गया—उन्होंने अपनी बात दुबारा कही, सन्नाटा गहराता गया—

जब तीसरी बार कहा तब लाहौर के एक दयाराम खत्री ने खड़े होकर कहा कि मैं तैयार हूं-सन्त गुरु गोविन्द सिंह उसे साथ लेकर खेमे में गये-खेमे के अन्दर पहले से कुछ बकरे बांध रखे थे-दयाराम को वहां बैठाया गया और उन्होंने एक बकरे का सिर काट दिया खून से टपकती हुई तलवार को लेकर वे बाहर आये और गम्भीरता से बोले, है कोई और शिष्य जो अपने आपको बलिदान के लिए प्रस्तुत करें ? इस पर देहली का एक जाट धर्मदास सामने आ गया-सन्त गुरु गोबिन्दसिंह उसे भी खेमे में ले गये थे-दूसरे बकरे का वध कर पुनः बाहर आ गये थे-इसी प्रकार तीन और व्यक्तियों ने अपने आपको बलिदान के लिए प्रस्तुत किया था-एक द्वारिका का मोहक चन्द धोबी था-दूसरा जगन्नाथपुरी का हिम्मतमल रसोइया था-तीसरा बीदर का नाई साहब चन्द्र था-सन्त गुरु गोविन्द ने इन्हें पंच प्यारे कहकर सम्बोधित किया-पुनः संत गुरु गोविन्दसिंह इन पांच सिखों को यानि शिष्यों को जीता-जागता खेमे से बाहर निकालकर सभा में ले आये थे-संत गुरु गोविन्दसिंह का यह चमत्कार देखकर सब बड़े आश्चर्य चकित हुये-

सन्त गुरु गोविन्दसिंह ने इन्हें दीक्षित किया पुनः अपने आपको इन्हों से दीक्षित कराया-उन्होंने एक नया पंथ रचा जिसका नाम खालसा था-पन्द्रह दिन के अन्दर ही आनन्दपुर में लगभग अस्सी हजार लोग एकत्र हुये जिन्होंने इस नये मार्ग पर दीक्षा ली थी-इन को आदेश दिया गया था कि अपने नाम के साथ केवल सिंह शब्द का प्रयोग करें-यह सन्त गुरु गोविन्दसिंह का चमत्कार था-

दूसरा कनव जात आन्दोलन के हाथी शाही सेना की सेना बार-बार पराजय से मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा नष्ट हो रही थी—यह सन्त गुरु गोविन्दसिंह की अलौकिक चमत्कारक शक्ति के कारण हो रही थी—एक बार औरंगजेब ने एक विशाल सेना भेजी—इसमें 22 पहाड़ी राजाओं ने भी अपनी-2 सेना औरंगजेब की सेना की सहायता करने के लिए भेजी थी—इस बहुत बड़ी सेना ने आनन्दपुर के चारों ओर घेरा डाल दिया था—इतना घेरा दृढ़ता से डाला गया कि आनन्दपुर की आवागमन पूर्णतया बन्द हो गया—अब यहां अनाज एक रुपये सेर हो गया था-जब की विकट समस्या उत्पन्न हो गयी थी—, संत गुरु गोविन्दसिंह ने एक समय अपने चार सेना के आदमी को घेरा तोड़कर बाहर निकल जाने का आदेश दिया था कि जाकर जल ले आओ—इनमें से दो तो मर जाते थे; दो किसी प्रकार कुछ जल लेकर अन्दर आ जाते थे, और अनाज के लिए कोई प्रबल टुकड़ी सैनिक रात को अंधेरे में शत्रु के अनाज भंडार पर छापा मारती और जितना अनाज हाथ लगे ले आते थे—आनन्दपुर का यह घेरा आठ महीने रहा पुनः संत गुरु गोविन्दसिंह अपने परिवार के साथ किले से बाहर निकल गये थे-यह संत का चमत्कार था जो एक विशाल सेना कुछ भी न कर सकी—

संत गुरु गोविन्दसिंह चालीस सैनिकों और दो पुत्रों अजीतसिंह (19 वर्ष) तथा जुझारसिंह (14 वर्ष) के साथ चमकौर की गढ़ी में पहुंच गये थे—उनके दो पुत्र यानि एक जोरावरसिंह (9 वर्ष) और फतहसिंह (7 वर्ष) को अपनी दादी माता गजरी सहित अपने रसोइये गंगाराम के साथ गांव

चले गये थे—गंगाराम ने धन के लोभ में सरहिंद के सूबेदार को दोनों बच्चे सौंप दिये थे—दिनांक 27 दिसम्बर 1704 को को उन्हें जीवत दीवार में चुनवा दिया गया था—

एक दन्त कथा है कि संत गुरु गोविन्दसिंह ने पूर्व जन्म में माता दुर्गा शक्ति के पूर्ण भक्ति की थी-उन्हें माता का प्रत्यक्ष दर्शन हुये थे—माता ने उन्हें आदेश दिया था कि तुम इस चोले को छोड़कर भारत में पुनः जन्म ले कर हिन्दू धर्म की रक्षा करो—पुनः कच्छ काल उपरांत जब उनका देहान्त हुआ तो वह गुरु तेगबहादुर के नौवे गुरु के घर सन्त गुरु गोविन्द नाम से प्रकट हो कर धर्म की रक्षा करी थी—सन्त गुरु गोविन्दसिंह ने अपने कर कमलों से दशम ग्रन्थ को ब्रज भाषा में लिखा उस ग्रन्थ में भगवान राम, कृष्ण, चौबीस अवतारों की कथा त्रिया चरित्र, भगवती चण्डी की महिमा आदि थी—बावन विद्वान कवियों द्वारा हिन्दू साहित्य और इतिहास का अनुलेख कराया था—उस ग्रन्थ का नाम विद्यासागर था—यह ग्रन्थ घल्लूघारे के समय नदी की भेट हो गया था—इस ग्रन्थ का वजन एक मन था—यह था सन्त गुरु का चमत्कार जो आज लोप हो गया है—सन्त गुरु गोविन्द सिंह जब 7 अक्टूबर सन् 1708 में नान्देड़ पहुंचे वहां उनका 42 वर्ष में स्वर्गवास हो गया था—

—इति श्री—

सन्त महात्मा बुद्ध

सन्त महात्मा बुद्ध के पिता का शुद्धोदन था, और माता का नाम महामाया था—हिमालय की तलहटी के पास चम्पारण्य के उत्तर में नेपाल की तराई के बीच एक कपिल वस्तु नाम का नगर था—उसके राजा का नाम शुद्धोदन था और उसकी दो रानियां थी—एक महामाया दूसरी महाप्रजापति यह दोनों आपस में बहनें थी—राजा शुद्धोदन और रानी महामाया कहीं जा रहे थे—मार्ग में लुम्बिनी नामक वन में शाल वृक्ष के नीचे रानी ने एक बच्चे को जन्म दिया था—उसका नाम सिद्धार्थ था-पुत्र के जन्म के सात दिन बाद माता महामाया परलोक वासिनी हो गयी थी-पुत्र का लालन-पालन का भार दूसरी रानी महाप्रजापति पर आ पड़ा था-

राजा शुद्धोदन शाक्य वंशी था, और दोनों रानियां गोतम वंश की थीं—इसी कारण सन्त महात्मा बुद्ध शाक्य और गौतम मुनि के नाम से प्रद्धिद्व हैं—सन्त बुद्ध का विवाह यशोधरा से हुआ था और इसके पुत्र का नाम राहुल था-पिता ने सन्त बुद्ध के लिए युवावस्था में सर्दी, गर्मी और वर्षा के लिए तीन अलग-अलग महल बनवा दिये थे-सन्त गोतम जवानी में अपना सारा दिन स्त्रियों के गाने वजानें में व्यतीत करता था-परन्तु वचपन से ही विचारशील और एकाग्रचित्त वाला था-एक दिन संत गौतम बुद्ध ने एक शव को देखा—पुनः आपने साथ वाले नौकरों से पूछा यह क्या है ? उन्होंने कहा एक वृद्ध

मनुष्य की मृत्यु हो गई है अतः यह उसका शव है—उस संत ने कहा कि मुझे भी मरना पड़ेगा—नौकरों ने कहा कि प्रत्येक की मृत्यु अवश्यम भावी है-यह सुनकर उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया था—

एक रात संत महात्मा बुद्ध अपनी पत्नी और पुत्र को सोते छोड़कर संसार के कल्याण के लिये गृह त्याग कर निकल गया था-संत सिद्धार्थ ने यह सोचकर सन्यास-धर्म स्वीकार किया था कि संसार में दुख निवारण का कोई उपाय है या नहीं, इसका पता लगाना आवश्यक है-अतः वह गृह त्याग कर सन्यासी वन गया था—अब संत सिद्धार्थ गुरु को खोजने लगा—पहले संत गोतम कालाम,नामक एक ऐसे योगी का शिष्य बना था—कालाम योगी ने संत बुद्ध को समाधि मार्ग सिखाया—इस मार्ग की सात मूमिकायें थीं जो संत ने सिद्ध कर ली थी-संत सिद्धार्थ ने कहा कि इसके आगे क्या है ? इस पर कालाम ने कहा कि मैं इतना ही जानता हूं—इससे संत बुद्ध को संतोष नहीं हुआ था-

सन्त गोतम उरुवेला गांव गया-वहां पर तप द्वारा संत ने शरीर-दमन का पूरा अनुभव किया था-सन्त सिद्धार्थ की गृह छोड़े छः वर्ष बाद बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान का बोध हुआ था-वैशाख शुदि पूनम के दिन उन्हें पहली बार सत्य की खोज का ज्ञान प्राप्त हुआ था-इसी कारण वह दिन बुद्ध जयन्ती का दिन माना जाता है-संत बुद्ध अपने सिद्धांत का प्रचार करने लगे-संत महात्मा बुद्ध का उपदेश सुनकर अनेक पुरुष भिक्षु-संघ में सम्मिलित हुये तथा स्त्रियां भी भिक्षुणी बनी थी-कालान्तर में बौद्ध धर्म को राजा-महाराजा और सम्राटों ने

स्वीकार कर लिया था–श्री लंका, चीन और जापान तथा सुदूर विदेशों में आज भी यह धर्म विद्यमान है–संत महात्मा बुद्ध को जात-पात का विचार नहीं था–सब जाति के लोग उनके धर्म के अनुयाई बन गये थे–संत बुद्ध पुर्नजन्म में विश्वास रखते थे–

संत महात्मा बुद्ध के उपदेश से भिक्षुओं को सत्य का प्रकाश प्राप्त हो गया था–उनके हृदय में वैराग्य हो गया था–एक बार संत बुद्ध ने पूर्ण नामक भिक्षु से पूछा पूर्ण अब तू किस प्रदेश में जायेगा ? पूर्ण ने कहा भगवान मैं सुनापरन्त प्रान्त में जाऊंगा–वहां के लोग तो बहुत कठोर हैं–वे जब तुझे गालियां देगें, तेरी निन्दा करेग, तब तुझे कैसा लगेगा ? पूर्ण ने कहा उस समय मैं यह मानूंगा कि वे लोग बहुत अच्छे हैं, क्योंकि उन्होंने मेरे पर हाथ नहीं चलाये–संत बुद्ध ने कहा यदि वे तुझ पर हाथ चलायें तो ? पूर्ण ने कहा मैं यही समझूंगा कि उन्होंने मुझे पत्थर से नहीं मारा–पुनः बुद्ध ने कहा यदि वे पत्थरों से मारे तो ? पूर्ण ने कहा कि मैं यह समझूंगा कि उन्होने मुझे डडों से नहीं पीटा–संत बुद्ध ने कहा यदि वे डंडों से पीटे तो ? पूर्ण ने कहा कि मैं यह समझूंगा कि शस्त्र प्रहार तो नहीं किया–संत बुद्ध ने कहा कि यदि वे शस्त्र प्रहार करें तो ? पूर्ण ने कहा कि मैं यह समझूंगा कि उन्होंने मुझे जान से तो नहीं मारा–संत बुद्ध ने कहा कि यदि वे तुझे जान से मार डालें तो ? पूर्ण ने कहा कि कुछ भिक्षु शरीर से तंग आकर आत्म हत्या करते हैं–यदि वे सुनापरन्त के निवासी ऐसे शरीर का नाश कर देंगे तो मैं मानूंगा कि उन्होंने मुझ पर उपकार किया है अतः वे लोग बहुत भले हैं–सन्त बुद्ध ने भिक्षु पूर्ण को

शावाशी दी थी, तब उसे जाने की आज्ञा दे दी थी–यह था संत महात्मा बुद्ध के उपदेश का चमत्कार—

एक बार कौशाम्बी के राजा की रानी जब कुमारी थी, तभी उसके पिता ने संत बुद्ध से कहा कि आप उसका पाणि–ग्रहण करें—संत बुद्ध ने यह बात अस्वीकार कर दी थी—कुमारी ने अपमान का अनुभव किया और मन में बदला लेने का संकल्प किया—पुनः एक बार जब संत बुद्ध कौशाम्बी आये तो रानी ने नगर के बदमाशों को रुपये देकर सिखाया कि आप इस संत बुद्ध को जाकर खूब गालियां दो—बदमाशों ने बहुत गन्दी गालियां दी—पुनः एक भिक्षु ने कहा यह नगर छोड़ दो–सन्त बुद्ध ने कहा कि यदि और कहीं भी चले जायें वहां पर भी यदि गंदीं गालियां सुननी पड़ गई, इससे तो यह ठीक है कि इन्हें सहन करें, पांच सात दिन बाद अपने आप शान्त हो जायेगें–अतः सन्त बुद्ध के चमत्कार से पांच-छह दिन बाद वे अपने आप शान्त हो गये थे—

एक बार उनका शिष्य जिसका नाम देवदत्त था-उसने सन्त बुद्ध की प्रशंसा से क्षुब्द होकर संत बुद्ध को मारने की कोशिश की थी–एक बार सन्त बुद्ध पर्वत की छाया में घूम रहे थे उस समय देवदत्त ने एक बड़ी शिला को उन पर ढकेल दिया था–सन्त बुद्ध के चमत्कार से उन्हें कुछ भी नहीं हुआ था–पुनः दुष्ट देवदत्त ने जब सन्त बुद्ध एक गली में भिक्षा लेने पहुंचे तो उसने राजा के एक मस्त हाथी को उन पर छुड़वा दिया था—सन्त महात्मा बुद्ध जैसे चल रहे थे—उसी तरह हल भाव से चलते रहे—सन्त महात्मा बुद्ध के अदभुत चमत्कार से हाथी अपनी सूंड नीचे करके एक पालतू कुत्ते की तरह सन्त

वुद्ध के सामने खड़ा हो गया था—सन्त ने उस पर हाथ फेरा तब वह अपनी गजशाला में चला गया था—

सन्त बुद्ध एक बार जंगल की ओर जा रहे थे-मार्ग में कुछ लोगों ने कहा कि इधर एक अंगुलियार डाकू रहता है-वह दुष्ट और हत्यारा है, जो सामने आता है उंगलियां काट कर अपने गले में माला बनाकर पहन लेता है—सन्त बुद्ध कुछ ही आगे गये कि सामने वह डाकू आ गया—उसने अपनी तलवार निकाली और मारने के लिए आ गया—सन्त बुद्ध ने कहा कि मुझे मारने से पहले मेरी बात सुन लो-डाकू ने कहा, कहो क्या बात कहते हो-सन्त बुद्ध ने कहा सामने वृक्ष है उसका एक पत्ता तोड़कर नीचे रख दो और आप पूर्ण विश्वास करो मैं भागूंगा नहीं-डाकू ने वैसा ही किया—सन्त बुद्ध ने पुनः कहा अब इस पत्ते को वापिस उसी वृक्ष पर जोड़ दो—डाकू ने कहा कि यह कैसे हो सकता है? जो टूट गया अब जुड़ेगा कैसे? सन्त बुद्ध ने कहा जो पत्ता तुम तोड़कर जोड़ नहीं सकते उसे तोड़ने का तुम्हें क्या अधिकार है? अतः तुम लोगों की ऊंगलियों को क्यों काटते हो? डाकू को ज्ञान हुआ वह सन्त के चरणों में पड़ गया—सन्त के इस चमत्कार से एक डाकू भी शिष्य बन गया था—

एक बार गोमती का एक मात्र पुत्र मर गया था—उस स्त्री का विलाप आकाश की छाती को चीरने लगा-उसका रोना-धोना किसी प्रकार भी नहीं थम रहा था—किसी ने उस स्त्री को कहा कि आप सन्त महात्मा बुद्ध के पास जाओ वह बच्चे को जीवित कर देगें--वह बच्चे की लाश लेकर सन्त बुद्ध के पास गई—सन्त के चरणों में सिर रख दिया और विलाप

करते हुए कहा कि आप मेरे बच्चे को जीवित कर दें—सन्त बुद्ध ने गोमती को कहा कि व्यर्थ की बात न कर—मृतक फिर से जीवित नहीं होते हैं-गोमती नहीं मानी और बोली, नहीं मुझे बताया गया है कि सन्त बुद्ध इसे जीवित कर देगें-सन्त बुध्द ने कहा, यदि तू यही चाहती है तो फिर यूं कर किसी के घर से पीली सरसूं ले आ पर यह सरसूं उस घर से लेना जिस घर में कभी कोई मृत्यु न हुई हो-गोमती भागी और घर-2 जाकर पीली सरसों मांगने लगी—लोगों ने कहा कि पीली सरसों जितनी इच्छा हो ले जा सकती हो परन्तु हमारे घर तो मृत्यु हो चुकी है-शाम तक वह थक कर चूर हो गयी और सन्त बुध्द के पास लौट आई-सन्त बुध्द ने कहा कि ऐसा तुझे कोई भी घर नहीं मिला जहां मृत्यु नहीं हुई हो-अब तू स्वयं समझ ले कि मृत्यु तो अनिवार्य है-यह दुख सभी को व्यापता है-आगे भी व्यापेगा—अब तू धीरज से काम ले—अब गोमती के मन में सन्त के चमत्कार से शान्ति उत्पन्न हुई और वह घर चली गयी थी—

इसी प्रकार सन्त महात्मा बुध्द के अनेक चमत्कार हैं जो लेख लम्बा होने की वजह से यहीं बंद कर देते हैं—सन्त महात्मा बुध्द और बौध्द साहित्य भारत का ही नहीं विश्व का धार्मिक और सांस्कृतिक और शैक्षणिक का प्रतीक है-परन्तु मुझे सन्त की जन्म तिथि तथा मरन तिथि नहीं मिली—

॥ इति श्री ॥

सन्त स्वामी दयानन्द

सन्त स्वामी दयानन्द के पितामहा का नाम लाल जी था–लाल जी के दो पुत्र थे–एक भाव जी दूसरा करसन जी–करसन जी के पुत्र का नाम मूल शंकर था–इसको दयाल जी भी कहते थे–कालान्तर में मूल शंकर को शुध्द चैतिन्य कहने लगे थे–तत्पश्चात् इसका नाम दयानन्द पड़ा था–किसी-किसी साहित्यकार ने सन्त स्वामी दयानन्द के पिता का नाम अम्बा शंकर लिखा है–सन्त स्वामी दयानन्द का जन्म सन् 1824 में हुआ था–विक्रम संवत् 1881 था–सन्त दयानन्द का देहान्त सन् 1883 में हुआ था–सन्त स्वामी दयानन्द का 59 वर्ष में ही स्वर्गवास हो गया था–संत स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओं के रूढ़िवाद को खत्म करने के लियें सन्यास ग्रहण किया था–

आप एक धनाढ्य पिता के पुत्र थे–जब आप घर से निकल पड़े थे, उस समय सन्त दयानन्द के तन पर मूल्यवान वस्त्र तथा आभूषण थे–मार्ग में उन्हें कुछ वैरागी साधू मिले–उन्होंने सन्त स्वामी दयानन्द को कहा कि एक सन्यासी को ऐसे वस्त्र व आभूषणों को नहीं धारण करना चाहिए–पुनः सन्त स्वामी दयानन्द ने मूल्यवान वस्त्रों व आभूषणों का त्याग कर दिया था–आपका जन्म गुजरात के मोर्वी राज्य में हुआ था–टंकारा गांव में संत दयानन्द का जन्म हुआ था–वस्त्र व गहने आपने सायला ग्राम में त्याग कर एक भक्त लाल से योग साधना सीखी थी–योग साधना के वाद सन्त कोट कांगड़ा

गये वहां पर ब्रह्मचार्य की दीक्षा ली और पीले वस्त्र पहन लिये थे-अब उनका नाम शुध्द चैतिन्य था-

एक बार एक वैरागी ने सन्त दयानन्द के पिता करसन जी को लिखा कि आपका पुत्र मूल शंकर योगी बनकर कांगड़ा में नीलकण्ठ के मन्दिर में हैं-यह समाचार पाकर करसन कुछ सिपाहियों को लेकर वहां पहुंच गये थे-पिता नें क्रुध्द भाव से सन्त स्वामी दयानन्द को डांटा और घर चलने को कहा-सिपाहियों के कड़े घेरे में जाते हुये भी सन्त स्वामी दयानन्द पुनः भाग जाने का विचार करता जाता था-कारण संत ने समाज के रूढ़िवाद को खत्म करने का संकल्प कर लिया था-रात्री के तीन बजे पहरेदार को शौच के लिए जाना पड़ा, अत: वह सन्त स्वामी दयानन्द को नींद में सोता समझ कर चला गया था-वास्तव में सन्त को नींद नहीं थी-सन्त भी अवसर पाकर जल का पात्र लेकर शौच के बहाने भाग खड़ा हुआ-प्रातः काल तक सन्त जी एक संघन डाली में छिपा पड़ा था पुनः निकल कर वृक्ष से उतर कर विपरीत दिशा में भाग गया था-अब पिता करसन व सिपाही निराश होकर घर वापिस चले गये थे-यह सन्त दयानन्द का चमत्कार था-

कार्तिक 1903 संवत् में सिध्दपुर में आकर स्वामी ब्रह्मानन्द से अद्वैतवाद कि शिक्षा ग्रहण की थी-संवत 1905 में सन्त दयानन्द ने सिनोर में कृष्ण शास्त्री से संस्कृत व्याकरण का अभ्यास किया था-सन्त स्वामी दयानन्द जब बालक थे तब आप ऋषि केश में गुरु विरजानन्द के पास ज्ञान प्राप्ति के लिए गये थे-गुरु विरजानन्द जी नेत्रहीन थे-अतः सन्त दयानन्द ही कुटिया में झाड़ू देना व पानी भरनादि सर्व

कार्य करते थे-एक दिन की बात है कि बालक दयानन्द ने झाड़ू लगाकर कचरा बाहर नहीं फेंका था-गुरु जब गंगा स्नान करके आये तो कचरा गुरु के पांव में लगा—गुरु ने कहा दया- नन्द यह कचरा बाहर क्यों नहीं फेंका-संत दयानन्द ने कहा कि गुरु जी आज उठने में देरी हो गई थी-इसलिये जल्दी में भूल गया-गुरु विरजानन्द क्रोध में आकर कहने लगे कि एक विद्यार्थी को आलस कहां से आ गया—अच्छा मुझे एक छड़ी ला दो—संत दयानन्द ने छड़ी ला दी-गुरु ने छड़ी से सन्त को पीटना शुरू कर दिया—इतना पीटा कि छड़ी टूट गयी और गुरु जी थक गये—सन्त दयानन्द मार खा कर पुनः गुरु के हाथ दबाने लगा और कहने लगा कि आपके हाथ थक गये होगें—यह सन्त दयानन्द का संतोष व गुरु भक्ति का चमत्कार था-अब गुरु विरजानन्द ने सन्त दयानन्द को आशी- र्वाद दिया और कहा कि एक दिन तू महान सन्त बनेगा और तेरे में अहंकार नहीं होगा—

एक बार एक अंग्रेज की कोठी पर कुछ धार्मिक चर्चा में सन्त दयानन्द भी उपस्थित थे—सन्त ने कहा था कि वेदों की शिक्षा महान हैं-विश्व की ऐसी कोई जटिल समस्या नहीं है जिसका वेद भगवान ने सही उत्तर न दिया हो-इस पर कुछ अंग्रेज इसका उपहास करने लगे—सन्त ने पुनः वैदिक धर्म की उपमा की—बात ही बात में एक अंग्रेज ने कहा कि सन्त दयानन्द जी आपका शरीर बहुत गठा हुआ है-आप खूब मोटे ताजे हो- वह अंग्रेज बार-बार आपके शरीर को देख रहा था—वह अंग्रेज कहने लगा कि आप में खूब शक्ति भी है या केवल शरीर ही मोटा है—सन्त दयानन्द ने कहा कि भारतवासी अति शक्ति

शाली होते हैं; अतः मेरा शरीर पोला नहीं है गठा हुआ है—सन्त दयानन्द ने कहा कि आप तो कहते हो कि अमुक में इतने घोड़ों की शक्ति है परन्तु भारत में कहते हैं कि अमुक में इतने हाथियों की शक्ति है—अतः हाथी की शक्ति घोड़े की शक्ति से अधिक होती है—यह उत्तर सुनकर अंग्रेज बहुत प्रसन्न हुआ-पुनः सभा समाप्त कर सब चले गये—

एक बार वह अंग्रेज अपनी घोड़ा गाड़ी में कहीं जा रहा था—एक दम घोड़ा चलने से रुक गया-कोचवान ने घोड़े पर खूब चाबुक मारे, परन्तु घोड़ा तो टिस से मिस नहीं हुआ था—अंग्रेज और कोचवान हैरान हो गये - वह सोचने लगे कि आज घोड़े को क्या हो गया है जो चलता ही नहीं है—अब कोचवान नीचे उतर कर देखने लगा कि कहीं कोई बड़ा पत्थर तो आगे नहीं आ गया—जब कोचवान ने पीछे देखा तो सन्त दयानन्द खड़े थे—कोचवान ने देखा कि इसी सन्त ने घोड़े की पूंछ को एक हाथ से पकड़ रखा है—इसी कारण से घोड़ा आगे नहीं बढ़ रहा है-यह सन्त की शारीरिक शक्ति का चमत्कार देखकर दोनों अंग्रेज और कोचवान दंग रह गये थे-तब सन्त ने कहा कि हम भारतवासी मुंह से न-बोलकर प्रत्यक्ष करके बताते हैं—पुनः उस अंग्रेज ने कहा कि सन्त जी मैं ने जो कुछ भी कहा हो, मुझे आप क्षमा करना—

एक बार एक स्त्री यमुना पर स्नान करने आई और उसने नदी की रेती पर सन्त को ध्यानोपस्थित देखा—भव्य और सौम्य सन्यासी को इस प्रकार समाधिलीन देखकर उसने उनके चरणों में नमस्कार किया—सन्यास मर्यादा का पालन

करते हुये सन्त दयानन्द सदा नारी स्पर्श से बचते रहते थे– इस चरण स्पर्श से स्वामी दयानन्द माता-माता कहते खड़े हो गये थे – तब स्त्री स्पर्श का प्रायश्चित करने के लिए सन्त जी एक निर्जन जंगल में जाकर तीन दिन तक निराहार व्रत रखा तथा ध्यान में लगे रहे थे—लौटने पर गुरु नेत्रहीन विरानन्द ने पूछा कि इतने दिन क्यों नहीं उपस्थित हुये—तब संत जी ने सारो बात बताई – यह सुनकर गुरुजी का मन बहुत प्रसन्न हुआ—यह सन्त का सन्यास धर्म का पालन का चमत्कार था—

अब सन्त ने गुरु से विदा लेने के लिए गुरु दक्षिणा का विचार करने लगा—आपको मालूम था कि गुरु जी को लौंग बहुत प्रिय हैं—सन्त दयानन्द आधा सेर लौंग लेकर गुरु के चरणों में रखकर कहा कि मेरे जैसे भिक्षुक के पास आपको अर्पित करने के लिये तो कुछ नहीं है—आप इन्हें स्वीकार करके मुझे आशीर्वाद दें—गुरु ने कहा कि मैं तो इस दक्षिणा रूप में तेरा जीवन चाहता था—सन्त दयानन्द ने कहा आप आज्ञा करें मेरा जीवन तो आपके लिए अर्पित है– गुरु ने कहा कि मैं चाहता हूं कि तुम देश में साम्प्रदायिक आचार-विचार मूढ धारणाओं तथा अन्धविश्वासों का प्रचार करके उनको समाप्त करो—यह सुनकर सन्त ने गुरु की आज्ञा का पालन किया था–

एक बार सन्त मन्दिर में भगवान शिव का अभिषेक कर रहे थे—एक चूहे ने आकर शिव ज्योति लिङ्ग पर से फूल ले लिये थे—यह देखकर सन्त दयानन्द ने मन में सोचा कि

भगवान शिव के लिङ्ग में कोई शक्ति नहीं हैं अतः मूर्ति का पूजन निर्थक है—तब से आप मूर्ति पूजा के निदिन्त बन गये थे और इसका प्रचार भी करने लगे थे—जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह सन्त दयानन्द को अपना गुरु मानते थे—स्वामी जी को राजमहल में आने-जाने की रोक टोक नहीं थी—एक बार सन्त ने देखा कि महाराजा एक वेश्या के साथ बैठे मदिरा पी रहे थे—संत ने उसी समय कहा कि यह क्या एक शेर एक कुतिया के साथ बैठकर मदिरा पी रहे हैं ? यह बात सुनकर वेश्या ने मन में इस अपमान का बदला लेने का पक्का विचार कर लिया—स्वामी जी का एक नेपाली सेवक था—वेश्या ने धन देकर उसे अपनी ओर मिला लिया था—उसने सेवक को कहा कि तुम सन्त जी को भोजन में विष दे दो-अतः उस नेपाली सेवक ने ऐसा ही किया-सन्त जी को ज्ञात हो गया था कि भोजन में विष था-सन्त दयानन्द ने सेवक को कहा कि मैं तो संसार छोड़कर जा रहा हूं पर तेरा क्या होगा ? सन्त दयानन्द ने कहा कि तू शीघ्र ही नेपाल भाग जा वरना यदि पकड़ा गया तो तुझे फांसी लग जायेगी—वह सेवक भाग गया—इधर संत जी ने भी दौड़ना आरम्भ कर दिया था इतने दौड़े कि खूब पसीना आया और खूब थक गये थे-ऐसा करने से संत अपने चमत्कार से बच गये थे—सन् 1943 में आपकी जीवन लीला समाप्त हुई थी—

नोट :-कुछ अनभिज्ञ पुरुषों ने अधिक समय पूर्व भगवान शिव पिंडी को शिव का लिङ्ग कहने लग गए थे-इसी प्रकार उन्होंने श्लोक बनाकर हमारे साहित्य में दे दिया था—जिसका अर्थ है कि स्त्री को शिव लिङ्ग की पूजा नहीं

करनी चाहिए और न ही इससे स्पृश हुए जल को ग्रहण करना चाहिए-अतः ऐसे विज्ञान ने हिन्दू साहित्य को निकृष्ठ बना दिया था-भारत के प्रसिद्ध महान वेद विद पं. मधुसूदन जी शास्त्री ने इसे ज्योति लिङ्ग माना है-जिसका अर्थ है ध्रूम-ध्रूम जहां होगा उसके नीचे अश्यमेव अग्नि होगी-अतः यह शिव अग्नि की उपसना है न कि शिव के लिङ्ग की उपासना है-अतः इससे स्पृश हुए जल को प्रत्येक ग्रहण कर सकता है-

-इति श्री-

संत महावीर स्वामी

संत महावीर स्वामी के पिता का नाम सिध्दार्थ था और माता का नाम त्रिशला था—सिध्दार्थ क्षत्रिय थे—आप कुंडन पुर जो बिहार राज्य के वैशाली नगर के पास था, वहां के राजा थे-राजा सिध्दार्थ का विवाह वैशाली नगर के राजा चेटक की बहिन त्रिशला से हुआ था—संत महावीर स्वामी का बचपन का नाम वर्ध्दमान था -यह माता की गर्भ में 13 महीने रहा था, यह साढ़ें सात फिट लम्बा था कहते हैं कि वर्ध्दमान जब आठ वर्ष के थे, अपने साथियों के साथ संकुली खेल खेल रहे थे, संकुली खेल में सभी बालक मिलकर एक एक निश्चित पेड़ पर दौड़कर शीघ्रता से चढ़कर पुनः कदकर जो एक निश्चित स्थान पर सर्व प्रथम आयेगा वह विजयी

माना जाता था—इस खेल में सिध्दार्थ बहुधा प्रथम आता था—

इधर एक बार इन्द्र वर्ध्दमान की शक्ति की सराहना कर रहे थे—परन्तु संगम नामक देव को यह बात पसन्द नहीं थी—उसने वर्ध्दमान की शक्ति की परीक्षा लेनी आरम्भ कर दी—एक बार वह देव सांप बनकर वृक्ष पर बैठ गया—और बालक डरकर वृक्ष को छोड़ गये, परन्तु वर्ध्दमान ने सांप को पकड़कर एक झाड़ी में पटक दिया था—यह किञ्चत मात्र भी नहीं डरा था—पुनः उस देव ने बालक का रूप धारण करके खेल में सम्मिलित हो गया था—खेलते-2 उस बालक ने आकार बढ़ाना आरम्भ किया—अब उसका रूप प्रेत जैसा होने लगा—इसके विकराल रूप को देखकर बालक घबरा कर भागने लगे थे—परन्तु वर्ध्दमान बिल्कुल नहीं डरा था—अब वर्ध्दमान ने इस प्रेत को एक ऐसा जोरदार धक्का दिया कि वह प्रेत बहुत दूर तक लुढ़कता हुआ चला गया—अब वह प्रेत जो संगम था पुनः बालक रूप में धक्के के कारण कराहने लगा, अभी वर्ध्दमान और प्रहार करने वाला ही था कि प्रेत बालक अपने वास्तविक रूप संगन देव होकर क्षमा मांगने लगा—बालक वर्ध्दमान का यह चमत्कार देखकर लोग उसे महावीर नाम से पुकारने लगे थे—सन्त महावीर स्वामी आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले हुए थे—

एक बार किसान अपना खेत जोत रहा था खेत जोतते-जोतते उसे घर का कोई काम याद आया—उसने सोचा खेत तो बाद में जोत लूंगा पहले घर का काम कर लूं—परन्तु

प्रश्न यह था कि बैलों को किसको निगरानी में छोड़ूं—किसान ने देखा कि एक साधू ध्यान लगाये बैठा है—किसान अपने बैलों को साधु के पास ले गया और बोला महाराज जरा मेरे बैलों का ध्यान रखना मैं घर से हो आऊं—साधु तो अपने ध्यान में मस्त था, परन्तु किसान ने समझा कि मैं ने साधू को तो कह दिया है यह जानकर दोनों बैलों को वहां छोड़ दिया और घर चला गया–किसान जब वापिस आया तो देखा दोनों बैल वहां नहीं हैं पर साधू ध्यान लगाये बैठा है—उसने पूछा बाबाजी मेरे बैल कहां गये ? साधू तो अपनी समाधि में था उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया—किसान ने जंगल को छान मारा परन्तु बैल नहीं मिले–पुनः घर जा कर देख आया वहां भी नहीं थे–ऐसे चिन्ता में उसकी सारी रात बीत गई–अगले दिन प्रातः काल वह फिर बैलों को ढूंढने लगा—घूमते-घूमते जब अपने खेत पर आया तो क्या देखता है कि साधू तो उसी तरह ध्यान लगाए बैठा है परन्तु दोनों बैल साधू के पास बैठे जुगाली कर रहे हैं—किसान यह देखकर क्रोध में आकर साधू के कान पे लकड़ी ठोकते हुये कहा कि ले यह तू बहरा है न अब इस पाखण्ड का मजा ले—साधू के कान से खून टपकने लगा पर फिर भी साधू ध्यान में मस्त था–जब उनको समाधि टूटी तब भी साधू ने किसान को कुछ भी नहीं कहा—किसान ने साधू की सहन शक्ति का चमत्कार देखकर आश्चर्य चकित रह गया—यह देखकर किसान ने सन्यासी सन्त महावीर से क्षमा मांगी—

वर्द्धमान के माता पिता चाहते थे कि शीघ्र ही संत महावीर स्वामी का विवाह कर दिया जावे ताकि बेटा सन्यासी

न बन जाये-परन्तु संत जी विवाह के बंधन में स्वयं को बांधना नहीं चाहते थे-एक बार कलिंग देश के राजा जित्रशत्रु कुण्ड नाम गांव के पास अपनी सेना द्वारा पड़ाव डाल रखा था—उसमें उनकी बेटी यशोदा भी आई थी-रानी त्रिशला ने जब यशोदा को देखा जो अत्यन्त रूपवती थी तथा उतनी ही बुध्दिमान एवं अच्छे स्वभाव वाली थी-त्रिशला ने मन ही मन में निश्चय किया कि मैं यशोदा को पुत्र-वधू बनाऊंगी—जब अपने पुत्र वर्ध्दमान को उसके साथ विवाह करने के लिए कहा तो उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया था—मां ने कहा विवाह किस कारण नहीं कर रहे हो—सन्त ने कहा कि मैं सन्यासी बनकर लोगों के दुख को दूर करूंगा—इसके लिए मुझे घर बार छोड़ना पड़ेगा, फिर विवाह के झंझटों में क्यों पड़ूं—इस पर माता ने कहा कि तुम संसार के लोगों का तो दुख दूर करना चाहते हो परन्तु मां का दुख दूर करना नहीं चाहते हो—आखिर इस राज्य का क्या होगा ? राजमहल का अंधेरा कैसे दूर होगा ? इस पर सन्त महावीर स्वामी ने कहा कि यह सभी वस्तुयें तो नष्टवान हैं—अतः इनकी चिन्ता करना तो व्यर्थ है—पुनः माता के बहुत आग्रह करने पर मान लिया था—यहां यह जानना आवश्यक है कि दिगम्बर सम्प्रदाय वाले कहते हैं कि सन्त महावीर स्वामी ने विवाह नहीं किया था, परन्तु श्वेताम्बर सम्प्रदाय वाले कहते हैं कि विवाह किया था, और उनकी एक पुत्री भी थी जिसका नाम प्रिय दर्शना था—

सम्भाली थी–30 वर्ष में सन्त महावीर ने सन्यास लिया था–संत महावीर स्वामी ने साढ़े बारह वर्षो तक कठोर तपस्या की–संत जब अस्थि ग्राम में आये वहां एक यक्ष रहता था–वह प्रत्येक साधू-सन्यासी तथा लोगों को बहुत कष्ट देता था–इसका नाम शूलपाणि था–जब संत महावीर स्वामी उस जंगल में जाने लगे तो लोगों ने कहा कि इधर एक शूलपाणि यक्ष रहता है वह सबको कष्ट देता है अतः आप आगे नहीं जावें–संत महावीर तो निर्भय थे–उन्हें किसी से भय होता ही नहीं था–आप निर्भय होकर जा रहे थे–यक्ष ने पहले तो बहुत गर्जना की ताकि संत डर जावे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ–फिर यक्ष शूलपाणि ने अपने नाखूनों और दांतों से सन्त महावीर के शरीर को खरोंचना और काटना शुरू किया, किन्तु सन्त महावीर को कुछ नहीं हुआ–तब यक्ष सांप बनकर सन्त को काटना शुरू किया परन्तु सन्त महावीर अपनी समाधि में लगे रहे–यह देखकर यक्ष शूलपाणि घबरा गया—उसने मनमें विचार किया कि यह कोई महान चमत्कारी पुरुष है—यह सोचकर यक्ष सन्त महावीर स्वामी के चरणों में गिर पड़ा—अब सन्त के चमत्कार से उसने सताना छोड़ दिया था–

एक बार सन्त महावीर स्वामी जंगल में जा रहे थे कि लोगों ने कहा कि आप इधर न जावें, कारण इधर एक भंयविषधर रहता है—वह यात्रियों को डस लेता है—अतः इधर जाने में प्राणों को खतरा है—सन्त ने कहा विषधर मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा—जब सन्त महावीर उस वृक्ष के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक विकराल विषधर फन पटकता और फुंकार मारता आ रहा है, सन्त भी उसकी तरफ बढ़ते

चले जा रहे थे–अब सन्त महावीर स्वामी के अद्‌भुत चमत्कार के कारण विषधर कुछ भी न कर सका–सन्त महावीर ने कहा कि किसी अभिशाप से ग्रसित होकर सांप की योनि भुगत रहे हो, इससे मुक्त होने का प्रयत्न क्यों नहीं करते हो ? तब नाग बोल उठा कि सन्त जी मुझे मुक्ति का मार्ग बताइये—तब संत महावीर स्वामी के चमत्कारी उपदेश से उसने बुरे कर्म करना छोड़ दिया था–

दूसरा एक बार दुष्ट व्यक्ति ने देखा कि सन्त महावीर स्वामी नंग-धड़ंग थे लोग उनको नतमस्तक नमस्कार कर रहे हैं–उसने गद और कचरा सन्त पर फेंक दिया था–सन्त महावीर स्वामी शान्त स्वरूप में ध्यान मस्त हो रहे थे—जब दुष्ट ने देखा कि सन्त ध्यान में मस्त हैं तो उसने एक पत्थर सन्त पर दे मारा—पत्थर सिर में लगा और रक्त बहने लगा—तब भी सन्त शांत बैठे रहे—पुनः दुष्ट ने लकड़ी सन्त जी की आंख में डाल दी—सन्त महावीर स्वामी के मुख से कराह निकली—सन्त की कराह रूपी चमत्कार से दुष्ट के मन पर आघात पहुंचा-सन्त फिर भी अपनी समाधि में लगा रहा—दुष्ट ने सन्त से पूछा कि आप कराह क्यों रहे हैं ? सन्त महावीर ने कहा कि आपने मुझे अकारण पीड़ा दी है, इसका परिणाम जब तुमको भुगतना पड़ेगा तो तुम्हारी क्या स्थिति होगी ? यही बात सोचकर मेरा मन दुखी हो रहा है—इस बात को सुनकर उस दुष्ट को बोध हुआ और वह सन्त के चरणों में गिर कर रोने लगा—तब सन्त ने उसे गले से लगाया—यह था सन्त का चमत्कार—

आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व जब सन्त महावीर स्वामी पावा पूरा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के प्रातः काल में ध्यान लगा कर बैठ गये थे—ध्यानस्थ काल में एक ज्योति प्राणरान्ध्र से निकलकर ब्रह्म में लीन हो गए थे—सन्त महावीर स्वामी ब्रह्म में संलग्न हो गये थे—

॥ इतिश्री ॥

संत समर्थ गुरु रामदास स्वामी

सन्त समर्थ गुरु रामदास के पिता का नाम सूर्या जी पन्त था और माता का नाम रेणुबाई था—सन्त समर्थ गुरु रामदास स्वामी का जन्म संवत् 1665 चैत्र शुक्ला नवमी को हुआ था—उसका नाम नारायण रखा था—पुनः रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुये—उनका पांचवे वर्ष में उपनयन संस्कार हो गया था—सन्त समर्थ गुरु रामदास आठ वर्ष की अवस्था में श्री हनुमान जी को प्रसन्न किया था—जब बारह वर्ष के हुये तब उनके विवाह की तैयारी हुई—परन्तु आप विवाह करना नहीं चाहते थे—विवाह मण्डप में जब ब्राह्मण ने शुभ लग्न में शब्द सावधान कहा तब सन्त रामदास वहां से भाग गये थे—बारह वर्ष तक घर नहीं आये थे—सन्त समर्थ गुरु रामदास नासिक पंचवटी में रहे थे—वहां पर संत रामदास "श्री राम जय राम जय-जय राम" मन्त्र का जप करते रहे थे—

एक बार संत समर्थ गुरु रामदास ब्रह्म यज्ञ कर रहे थे—और उधर से एक विधवा स्त्री ने आकर प्रणाम किया—इस पर सन्त समर्थ गुरु राम ने अष्ट पुत्रा सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया—यह सुनकर उस विधवा ने पूछा, इस जन्म में या दूसरे जन्म में ? तब स्त्री के पति की मृत्यु हो गयी थी और सती होने जा रही थी—जब सन्त समर्थ रामदास को ज्ञात हुआ कि उस स्त्री के पति का शव आ रहा है तब उन्होंने कहा अच्छा, शव को यहां लाओ—पुनः सन्त गुरुदास ने जो उनके पास तीर्थों का जल था छिड़का—तुरन्त वह मृत्यु पति राम-राम का उच्चारण करता हुआ जीवित हो उठा यह था समर्थ गुरु रामदास का चमत्कार—

माता के पास जाकर उनके चरणों में मस्तक रख दिया–24 वर्षों के बाद माता और पुत्र का मिलान हुआ था–सन्त समर्थ रामदास ने माता के नेत्रों पर हाथ फेरा, तो सन्त के चमत्कार से खोयी हुई आंखों की ज्योति फिर से प्राप्त हो गयी थी–पुनः कुछ दिन बाद त्र्यम्बकेश्वर से पन्चवटी नासिक आ गये थे–वहां से सन्त रामदास ने कोल्हापुर के सूबेदार पारा पन्त को दीक्षा दी–

दूसरा सन्त समर्थ रामदास जहां-जहां गए वहां पर मठ स्थापित किया था—ऐसे सन्त ने सात सौ मठों की स्थापना की थी और प्रत्येक पर एक-एक अधिकारी शिष्य की नियुक्ति की थी–दूसरा सन्त की सत्कीर्ति सुनकर शिवा जी मराठा ने मन में उन्हें गुरु धारण कर लिया था—सन्त समर्थ रामदास ने संवत् 1706 में शिवा जी को शिष्य रूप में ग्रहण किया था–छत्रपति शिवाजी महाराष्ट्र में शासन कार्य कर रहे थे—इधर इन्हीं दिनों वाराणसी में हनुमान घाट पर एक सिद्धान्ती नाम का ब्राह्मण जिसको यक्षिणो सिद्ध थी रहता था, अतः उसे वाक्य सिद्धि प्राप्त थी—जब एक दिन सन्त स्वामी रामदास ने अपने शिष्य शिवाजी की परीक्षा लेने के विचार से द्वार पर आकर अलख जगायी—

शिवाजी ने एक कागज पर यह लिखकर कि सम्पूर्ण राज्य श्री गुरु जी के चरणों में समर्पित है उनकी झोली में डाल दिया—यह देखकर सन्त ने यह कहा कि शिवा ! यह क्या है ? एक मुट्ठी अन्न देते तो सन्त खा लेते, इस कागज के टुकड़े से मेरा क्या होगा—शिवाजी ने कहा कि आप इसे पढ़ लें—

कागज के टुकड़े को पढ़कर सन्त समर्थ जी ने कहा कि सर्वस्व त्यागी सन्त को राज्य की भेंट से क्या उद्देश्य ? मैं इसका क्या करूंगा—शिष्य शिवाजी ने कहा कि गुरु देव ! अब तो मैं इसे श्री गुरु के चरणों में समर्पित कर चुका हूं, अतः मुझे इसका क्या करना है ? कैसे करना है ? यह तो आप जानें—सन्त समर्थ अब यह कथन सुनकर उन्हें राज्य लौटा लेने के लिए कहा, परन्तु शिवाजी ने अस्वीकार कर दिया—सन्त ने कहा, अच्छा, जैसी आपकी इच्छा, परन्तु तुम्हें मेरे प्रतिनिधि के रूप में राजकार्य को सम्भाल करनी होगी—शिष्य शिवाजी ने यह बात स्वीकार कर ली—सन्त यह उपदेश देकर चले गये—

शिवाजी के राज्य दान में देने की घटना जब वाराणसी में सिध्दांतों ज्योतिपी ने सुनी, कि सन्त रामदास को राज्य मिला है, तो वह अमर्प से जल उठा—सिध्दान्ती मन में विचार करने लगा कि मुझ जैसे प्रकाण्ड विद्वान अधिकारी को छोड़ कर सन्त रामदास जैसे ढोंगी साधू को सर्वस्व दे डाला ? इस घमण्ड में आकर उसने सन्त गुरु रामदास की परीक्षा निमित एक पत्र मराठी में लिख कर अपने शिष्य को दिया कि महाराष्ट्र जाकर उस सन्त रामदास से उत्तर ले आ पत्र निम्न

अर्थात् कौन कलंकित पात्र रजत वत सुन्दर हो सकता है, अथवा कलंक का पात्र मानव दोष मुक्त हो रजतवत धवल यश का भागी कैसे बन सकता है ? सूर्य के अश्वर तेज (रश्मि समूह) को कौन मनुष्य ढांप सकता है ? मृत्यु के समय यम-राज के दूतों को कौन टाल सकता है, एवं विधाता की रेखा भोग से कौन नर बचा सकता है ?—तब पत्र वाहक करीब दो माह बाद पैदल महाराष्ट्र पहुंचा—जब सन्त के पास आया तो पत्र देकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि मेरे गुरु देव ने इन प्रश्नों का उत्तर मांगा है सन्त समर्थ ने पहले पत्र वाहक को भोजन कराया और आराम करने के लिए कहा–पुनः सन्त ने कहा बेटा ! मैं कोई उच्च कोटी का विद्वान तो नहीं हूं—फिर भी मैं उत्तर दे रहा हूं—सन्त गुरु रामदास ने निम्न प्रकार से पत्र का उत्तर दिया—

कलंका वाचोनि कनक (रजत) प्रतिमा कांति न चढ़ो हिमन्ताच्या योगेक्षण भरि तरी भास्कर डूबे ॥ अर्थात कलंक से मुक्त रहकर भाण्ड (बरतन) पर कलई नहीं चढ़ सकती—भाव यह है कलंक कहते हैं, सुहागे (टंकण) को जिस प्रकार कलंक का स्पर्श कराये बिना बरतन कलई को ग्रहण नहीं कर पाता, उसी प्रकार कलंकित मानव ही पश्चाताप की अग्नि में जलता हुआ उस दिशा में अग्रसर होता है, जहां उसका रूप दिव्य होकर कलई किये हुए भाव (बर्तन) की तरह चमक उठे–दूसरे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–वर्षा ऋतु में आकाश मेघ खण्ड आ जाने पर क्षण भर के लिए ही सही, सूर्य संसार की दृष्टि से ओझल हो जाता है–इतना पत्र का उत्तर लिखकर सन्त समर्थ ने पत्र वाहक को दिया और कहा कि इनका उत्तर

लिख दिया है आको दो प्रश्नों का उतर मैं वाराणसी आकर दूंगा—अतः सन्त ने पत्र वाहक को आशीर्वाद देकर विदा किया—

कोई पांच-छह मास बाद सन्त को याद आया कि अभी दो प्रश्नों का उत्तर सिधायन्ती ज्योतिषी को देना है—अतः वह यात्रा के लिए तैयार हो गये—आपके शिष्यों में एक दस वर्ष का बालक था—उसने कहा महाराज मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं भी काशीं जाऊं—सन्त समर्थ ने कहा कि अभी तू छोटा है यात्रा लम्बी है और कठिन है—फिर तेरे घर वाले भी तुझे काशीं जाने की अनुमति नहीं देगें, अतः तू यहीं रहकर खेल कूद और स्वाध्याय कर—बालक ने खूब आग्रह किया—सन्त ने कहा कि पहले तू अपनी माता-पिता से आज्ञा ले आ—पुनः उस बालक ने अपने माता-पिता से आज्ञा मांगी पहले तो माता-पिता ने मना कर दिया परन्तु बालक अत्यधिक हठ करने लगा—बालक का पक्का हट देखकर माता-पिता उसे संत समर्थ जी के पास छोड़ गये—

कि आगे सिध्दांती ज्योतिषी का घर है वहां से मधुकरी बहुत मिलेगी-वह बालक बताये हुए घर पहुंचा, और मराठी भाषा में कहा-समर्थाचि या सेवक व क्रपहि, असा सर्व भूमण्डली कोण आहे जयाचि लिला वणितो लोक तोनी, नुपेक्षी कदा रामदासाभिमानी !! जय ! जय !! श्री रघुवीर समर्थ—अर्थात् इस इस समग्र भूमण्डल में ऐसा कौन सामर्थ्य शाली व्यक्ति है, जो समर्थ के सेवकों पर वक्र—हष्टि डाल सके ? यह पद पढ़कर मधुकरी के लिए खड़ा था-सिध्दान्ती क्रोध करता हुआ बोला देख लूंगा कितनी शक्ति है तेरे गुरु में सिध्दान्ती ने बालक को शाप दिया कि सूर्योदय के साथ ही तेरा प्राणान्त हो जायेगा—

यह सुनकर वह रोता हुआ घाट पर लौट आया-बालक ने आकर पूरी घटना कही-मार्ग में लोगों ने कहा किसिद्धान्ती की कोई बात मिथ्या नहीं जाती है-यह सुनकर बालक घबरा गया-तब आकर गुरु जी को कहीसन्त जी ने कहा कि तू रो मत कुछनहीं होगा-सन्त समर्थ ने बालक को बहुत धीरज दिया और कहा कि देख बेटा आज रात्रि को तू मेरे पैरों को दबाते रहना—पैर छोड़कर कहीं भी न जाना—कोई कुछ भी कहे परन्तु तू एक क्षण के लिए भी पैर मत छोड़ना अतः पैरों को दबाते रहना—संत ने कहा ऐसा करोगे कि नहीं—बालक ने कहा गुरुदेव में प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आपके पैरों को क्षण भर के लिए नहीं छोड़ूंगा—

जब रात्री को सन्त सो गये और बालक पैर दबाने बैठ गया था—अर्धरात्री को उस लड़के को आवाज आई अरे मेरे

बेटा मैं तेरी मां तेरे वियोग में रो-रो कर बेहाल हो गई हूं— तेरे को देखे बिना नींद नहीं आती अब तू द्वार खोल मैं तुझे मिलूं—बालक ने उत्तर दिया, माता जी कल प्रातः आना मैं संत जी के पैर दबा रहा हूं, अतः गुरुजी का आदेश है कि मैं पैर छोड़कर एक क्षण भर के लिये भी ना उठूं सो मैं नहीं उठ सकता हूं-माता ने कहा कि मैं तुझे देखे बिना मैं मर जाऊंगी तू द्वार खोलकर पुनः पांव दबा लेना-बालक ने कहा कुछ भी हो जाये परन्तु मैं द्वार नहीं खोलूगां-फिर आवाज आई बेटा ! मैं तेरे लिए कपड़े एवं मिठाई लाई हूं अच्छा यह तो तू ले ले—बालक ने कहा कि मैं किसी भी हालत में पैर नहीं छोड़ सकता—

बालक अपनी प्रतिज्ञा से जरा भी नहीं डिगा—पुनः माता ने कहा कि मैं तुझे घर नहीं आने दूंगी दूसरा मैं बहुत थक गई हूं मैं भी थोड़ा आराम करुंगी इस पर बालक ने कहा जो होगा सो होगा पर मैं द्वार नहीं खोलूंगा-तब वह थक कर वापिस चली गयी—बालक ने देखा कि प्रातः काल हो गई है, गुरुजी का पाठ पूजा का समय हो गया है तब उसने गुरु जी

उठे और बालक को कहा कि अब तू तैयार हो जा और जा कर उस सिद्धान्ती ज्योतिषी के घर से मधुकरी मांग आ—बालक ने कहा कि मुझे वहां जाने में डर लगता है—सन्त ने कहा कि तू बे फिकर हो कर जा जब तुम्हें मैं स्वयं कह रहा हूं—गुरु का वचन मानकर सिद्धान्ती के द्वार पर पुनः वैसे ही वचन मराठी में कहे जैसे पहले कहे थे—इधर जो यक्षणी सिद्धान्ती की सुसिद्ध थी ने आकर कहा कि मैं ने अपना पूरा जोर लगा लिया न तो द्वार खुला और वह बालक जो अन्दर बैठा था उसने भी द्वार न खोला—अतः यह कार्य मेरी शक्ति के वश में नहीं हैं—इधर बालक ने द्वार पर अलख लगाई थी"

देखकर सिद्धान्ती ने कहा कि तू अभी जिन्दा है—अच्छा अब मुझे अपने गुरु के पास ले चल—ब्राह्मण सिद्धान्ती आते ही समर्थ के चरणों में पड़ गया—और क्षमा मांगने लगा—संत नें कहा मैंने आपको दो प्रश्नों का उत्तर देना था सो दे दिया-एक था यम के दूत खाली जाते हैं सो देख लिया तेरा उपाय खाली गया है—दूसरा आई मृत्यु किसी की टल नहीं सकती है सो यह भी देख लिया कि सन्त समर्थ के चमत्कार से क्या नहीं हो सकता है—सन्त समर्थ ने मृत्यु पर भी अपने चमत्कार से विजय पायी थी—

एक बार सन्त रामदास अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे—जब वे गन्ने के खेत में से निकले तो एक शिष्य ने बहुत से गन्ने तोड़कर खुद भी खाने लगा और साथियों को भी दिये दिये—सन्त आगे-आगे जा रहे थे उन्हें इस बात का पता भी नहीं था, खेत के मालिक ने जब देखा कि इन साधुओं ने खेत को रोंद डाला है और गन्ने खा रहे हैं तथा साधु मण्डली का

मुखिया आगे-आगे जा रहा है-उसने लाठी लेकर सन्त को मारना आरम्भ कर दिया था-कुछ दिनों बाद यह समाचार जब शिवाजी ने सुना तो कुछ सिपाहियों को भेजकर उस खेत के मालिक को पकड़वा लिया-

पुनः सन्त को कहा कि यह आपका अपराधी है अतः आप ही इसे उचित दण्ड दें-सन्त ने कहा कि इसे शिवा एक बड़ी जागीर दे दें-फिर शिवाजी ने कहा कि गुरू देव। ऐसा क्यों ? संत ने कहा कि इस बेचारे ने धूप, गर्मी और बर्षा में रात दिन एक कर के खेत पकाया है फिर इन साधुओं ने खराब कर दिया है अतः नीति और न्याय के अनुसार देखें तो इसका क्या अपराध है, अतः इसकी हानि हुई है उसे पूरा करने के लिए इसे एक बड़ी जागीर देनी चाहिए-शिवा ने उसे जागीर दी थी-यह था सन्त गुरु रामदास जी का न्याय का चमत्कार-

जव मठ में आई तब उसका मन शुद्ध था आते ही सन्त के चरणों में पड़ गयी थी, और भूल के लिए क्षमा मांगी—सन्त ने कहा माता अब तो आपका मन शुद्ध है प्रकाश ही प्रकाश है, तुम अपनी भूल को भूल जाओ—मैं ने तो आपके क्रोध को ही भिक्षा समझकर ग्रहण किया था—अब गृहिणी का मन शान्त स्वभाव का हो गया था—यह था सन्त का चमत्कार कि एक क्रोधी महिला को भी सन्तनी बना दिया था—

सन्त जब तंजावर गये थे, तब वहां के अन्धे कलाकार को आंखे देकर सन्त ने श्रीराम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान जी चार मूर्तियां बनवाई थीं—वे मूर्तियां संवत् 1738 फाल्गुन कृष्ण पंचमी को सज्जनगढ़ के मन्दिर में रखी गई थी—पुनः माघ कृष्णा नोमी के दिन श्री सन्त रामदास ने महा प्रयाण की तैयारी की थी—भगवान राम की मूर्ति के सामने बैठ कर इक्कीस बार हर-हर शब्द का उच्चारण किया तत्क्षण उनके शरीर के मस्तिक से ज्योति निकली जो ब्रह्म में संलग्न हो गयी थी—

॥ इतिश्री ॥

संत एक नाथ

संत एक नाथ जी के पितामहा का नाम भानुदास था—भानुदास के पुत्र का नाम चक्रपाणि था, चक्रपाणि का पुत्र सूर्य नारायण और सूर्य नारायण का पुत्र एक नाथ था—इनका

जन्म संबत् 1590 के लगभग हुआ था—इनके जन्मते ही इनके पिता का देहान्त हो गया था—कुछ काल बाद माता का भी स्वर्गवास हो गया था—इनका लालन-पालन चक्रपाणि ने किया—संत एक नाथ का छठे वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार हो गया था—पुनः संवत् 1602 में सन्त एक नाथ ने गुरु जनार्दन पंत से देवगढ़ में दीक्षा ली थी-सन्त एक नाथ छः वर्ष तक गुरु की सेवा में रहे थे-

एक बार संत एक नाथ जिसके पास गुरु की आय-व्यय का हिसाब था उसमें एक पाई का फर्क आ रहा था—सन्त एक नाथ तीन पहर रात तक हिसाब देखते रहे अन्त में हिसाब मिल गया—सन्त एक नाथ प्रसन्न हो गये थे—गुरु जनार्दन पंत भी तीसरे पहर रात गये बाद उठकर पूजा करते थे—गुरु ने एक नाथ से पूछा कि इस समय कैसे प्रसन्न हो रहे हो तब संत

रखा था कि सन्त एक नाथ को क्रोध नहीं आता अतः उसने सोचा कि आज मैं इन्हें क्रोधित करके रहूंगा—सन्त एक नाथ जब स्नान करके आ रहे थे तो उसने उन पर थूक दिया—सन्त दूसरी बार स्नान करके आये—जब-2 सन्त एक नाथ स्नान करके आते थे तब-2 वह पठान उन पर थूक देता था, परन्तु सन्त किंचित मात्र क्रोध नहीं करते थे—सन्त यही समझते थे कि गोदावरी मैया की आज बहुत कृपा हो रही है—इसी प्रकार पठान ने सन्त पर 108 बार थूका और सन्त ने 108 बार स्नान किया—अन्त में वह पठान सन्त का धैर्य देख कर बड़ा लज्जित हुआ और क्षमा मांगी—सन्त एक नाथ ने उन्हें क्षमा कर दिया—उसने कह कि आप पूरे सन्त हो ईश्वर हो मैं आपको पहचान न सका—सन्त के इस चमत्कार से उसका जीवन भी बदल गया था—

एक बार सन्त एक नाथ के पिता का श्राद्ध था, ब्राह्मणों के लिये भोजन बनवाया गया था—उस समय चार-पांच महार उनके घर के पास होकर जा रहे थे—भोजन की खुशबू पाकर कहने लगे कैसी बढ़िया सुगन्ध है—एसा भोजन हम लोगों के भाग्य में नहीं हैं—यह सुनकर सन्त एक नाथ ने उन महारों को बुला कर भोजन खिला दिया था-फिर भली-भांति स्थान को धो कर पुनः ब्राह्मणों के लिये दूसरी बार रसोई बनाई थी—जब ब्राह्मणों ने यह बात सुनी तो सन्त एक नाथ को धर्म भ्रष्ट जानकर अंट-शंट फटकार लगाई थी—भोजन खाने भी नहीं आये थे—जब ब्राह्मणों ने इन्कार कर दिया था तब सन्त एक नाथ ने पितरों का ध्यान किया और आवाहन किया—एक नाथ संत के चमत्कार से पितरमूर्तिमान हो कर प्रकट हुए

और श्राद्ध का अन्न ग्रहण करके परितृप्त हो कर आशीर्वाद दिया और अन्तर्ध्यान हो गये थे--जब ब्राह्मणों को इस बात का पता चला तो वह लज्जित हुये एवं सन्त एक नाथ के चमत्कार को देखकर दग रह गये थे--

दूसरा एक बार सन्त एक नाथ कीर्तन कर रहे थे उस में चार चोर आ गए थे--कीर्तन समाप्त हो जाने पर जब सब लोग चले गये और यहां सब सो गये थे--तब रात के सन्नाटे में चोरों ने कपड़े बर्तन इकट्ठे किये--जब दूसरे कमरे में गये तो वहां एक दीपक जल रहा था और सन्त एक नाथ समाधिस्थ थे--जब चारों ने यह देखा तब वे अन्धे हो गये थे--अब बाहर नहीं निकल सके--इसी समय उनके पैर बर्तन पर पड़े तो वह गिर गये और तेज आवाज हुई सन्त को तब समाधि खुली तो उनको आवाज आई--सन्त एक नाथ ने पूछा, कौन है भाई ? चोर रोने और गिड़गड़ाने लगे--महाराज हम लोग बड़े पापी हैं, क्षमा कीजिये--सन्त एक नाथ ने उनके नेत्रों पर हाथ फेरा, सन्त के चमत्कार से उन चोरों को पूर्ववत् दिखने लगा साथ उनकी बुद्धि पलट गई थी--सन्त एक नाथ ने उन्हें कपड़े बर्तन भी दे दिये थे और अपनी अंगूठी भी दे दी थी जो पहनी हुई थी-चोर बड़े लज्जित हुए और उन्होंने सोच लिया था कि अब हम चोरी नहीं करेंगे--यह सन्त एक नाथ का चमत्कार था-

सन्त एक नाथ को क्रोध नहीं आता था--गांव के कुछ दुष्ट लोगों ने सन्त एक नाथ को क्रोधित करने के लिये अनेक उपाय किये परन्तु सन्त एक नाथ किञ्चित मात्र भी क्रोधित नहीं हुये थे--तब हारकर बैठ गये थे--उस समय एक भिखारी

आया और भीख मांगने लगा–उन दुष्टों में से एक ने कहा कि हम आपको खूब भीख देंगें, दक्षिणा भी देंगें और एक महीने का दाल चावल और भी बांध देंगे; परन्तु आप को एक काम करना होगा–भिखारी ने कहा मुझे क्या करना होगा ? दुष्ट व्यक्ति ने कहा मन्दिर में अन्दर सन्त एक नाथ बैठे हैं, उन्हें किसी प्रकार से क्रोध दिलवा दो–कुछ ऐसा काम करो जिससे सन्त को क्रोध आ जाये, बस इतना काम है–भिखारी ने पहले तो सोचा, फिर कहा कि यदि सन्त क्रोधित हो गये तो इतना सामान अवश्य दोगे–दुष्ट ने कहा अवश्य देगें–वह भिखारी मन्दिर में गया तो देखा सन्त एक नाथ अपने ध्यान में मग्न हो कर बैठे हैं–भिखारी को और कोई उपाय तो नहीं सूझा वह सीधा जाकर सन्त के कन्धे पर बैठ गया–सन्त एक नाथ ने चौंक कर देखा कि कोई व्यक्ति मेरे कंधे पर बैठा है–सन्त ने जब आंखें खोलकर देखा और कहा कि वाह-वाह भगवान आज तो भिखारी का रूप बना कर मुझसे ठिठोली करने आ गये हो–

अब भगवान मेरे घर चलो बिना खिलाये नहीं जाने दूंगा–सन्त को क्रोध तो आया नहीं वरन् भिखारी को कंधे पर उठाकर घर ले गये–मन्दिर की आड़ में बैठे दुष्ट यह सब देख रहे थे–जब उन दुष्टों को पूरा पता लगा कि सन्त एक नाथ ने घर जाकर उस भिखारी को भोजन खिलाया और सन्त भिखारी को पंखा कर रहे हैं–तब दुष्टों ने सन्त का लोहा मान लिया और कहने लगे कि शान्त और विनम्र व्यक्ति में क्रोध से अधिक शक्ति होती है–तभी तो सन्त जीत गये हैं–सन्त का यह चमत्कार देखकर सब सन्त के शिष्य बन गये थे–

दूसरा एक बार सन्त एक नाथ प्रयाग से गंगा जल की कांवर लिये रामेश्वर के शिव ज्योतिलगि पर अभिषेक करने जा रहे थे कि मार्ग में रेतीले मैदान में एक गधा प्यास के मारे छटपटा रहा था—सन्त ने तुरन्त अपनी कांवर से जल ले कर गधे के मुंह में डाला—अब गधा चंगा होकर वहां से चल दिया—सन्त के संगी यह बात देखकर बहुत दुखी हुये—सन्त ने कहा आप लोग दुखी क्यों हो रहे हो, परमात्मा तो घट-घट वासी हैं कहते हैं कि जो जल गधे ने पिया था वह सीधा रामेश्वर में शिव लिङ्ग पर चढ़ा था यह सन्त के चमत्कार से हुआ था-

दूसरा पैंठण में एक वैश्या रहती थी, वह कभी-2 सन्त के कीर्तन में जाती थी—एक दिन सन्त ने भागवत की पिङ्ग-लाख्यान कहा-इसे सुनकर उस वेश्या को वैराग्य हो गया था-एक दिन सन्त गोदावरी स्नान करके आ रहे थे वेश्या ने देखा और दौड़कर आकर कहा कि सन्त जी क्या आप मुझ पापन के घर आकर मेरा घर पवित्र करेगें ? सन्त एक नाथ ने कहा

ने कहा कि यह तो बाद में बतलाऊंगा पहले तुम्हें एक रहस्य की बात कहता हूं—सेठ ने कहा, आज्ञा करो—सन्त ने कहा कि आज से सातवें दिन आप मर जायेगें—यह बात सुनकर उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वह प्रणाम करके घर चला गया—घर जाकर जिसको कुछ देना था और जिनसे कुछ लेना था उनकी एक सूची बनाई—जब छः दिन व्यतीत हो गये—सातवें दिन वह बिस्तर पर जा पड़ा और मृत्यु का इन्तजार करने लगा—शाम को सन्त जब उसके घर आये तो कहा कि कहो आपका क्या हाल है ? सेठ बोला कि बस मृत्यु की इन्तजार कर रहा हूं—सन्त एक नाथ ने सेठ से पूछा कि आप यह कहो कि इन सात दिनों में कितने लोगों पर क्रोध किया ? सेठ ने कहा कि क्रोध करने का प्रश्न भी नहीं उठ सकता कारण मौत सामने खड़ी है—सन्त एक नाथ ने कहा कि यही आपके प्रश्न का उत्तर है—सन्त ने कहा कि मैं तो हर घड़ी हर समय मौत को अपने सामने खड़ा देखता हूं, इसलिये क्रोध नहीं कर पाता हूं—सन्त का चमत्कारी उत्तर देखकर सेठ दंग रह गया और सन्त को नत मस्तक नमस्कार किया—अन्त में सवत् 1656 में चैत्र कृष्णा षष्टी को सन्त एक नाथ ने गोदावरी नदी पर शरीर छोड़ दिया था—

-इति श्री-

संतनी सखूबाई

संतनी सखूबाई का विवाह महाराष्ट्र में कृष्णा नदी के तट पर 'करहाड़' गांव में एक ब्राह्मण के साथ हुआ था—उस

घर में उसका पति और पत्नी सखूबाई तथा पति का पिता व माता रहती थी—सखूबाई भगवान की भक्त और विनम्र थी—परन्तु सास और ससुर एवं पति दुष्ट और कुटिल स्वभाव वाले थे—सखूबाई प्रातः से लेकर रात तक बिना विश्राम किये काम करती थी—सास-ससुर उसे पेट भर खाना भी नहीं देते थे—सखूबाई फिर भी भगवान की दया समझकर अपने कर्त्तव्य के अनुसार काम करती रहती थी—उसकी सास इतने पर भी राजी नहीं रहती थी—कभी-2 सन्तनी को लात-घूसों से मार भी देती थी—परन्तु सन्तनी सास के सामने कुछ नहीं बोलती थी—एक बार सन्तनी कृष्णा नदी पर जल भरने गयी थी, उसने देखा कि हजारों लोग पण्डरपुर में भगवान श्री विट्ठल नाथ के दर्शनार्थ जा रहे हैं—सबको जाते देखकर उसके मन में भी वहां जाने की प्रबल इच्छा हुई—उसने सोचा कि सास-ससुर किसी तरह भी आज्ञा नहीं दे सकते, यह सोचकर वह उन लोगों के साथ चल पड़ी—अब उसकी एक पड़ोसिन ने सन्तनी सखूबाई की सास को जा कर यह समाचार दिया—सास क्रोधाग्नि में जलती हुई अपने पुत्र को साथ लेकर वहां गई और सखूबाई को मार-पीटकर घर ले आयी—तीनों सास ससुर एवं पति ने मन्त्रणा की कि इसको बांध दो और खाने-पीने को कुछ न दो—उन्होंने सन्तनी को रस्सी से जोर से खींच कर बांध दिया था—बन्धन में पड़ी सन्तनी सखूबाई भगवान से प्रार्थना करने लगी—हे नाथ ! मेरी यही इच्छा थी कि आपके दर्शन करके तब मरूं—मैं अच्छी या बुरी हूं पर हूं तो आपकी—आप इतनी सी मेरी बात मानोगे—सन्तनी के चमत्कार से स्वयं भगवान वहां स्त्री रूप में आये और कहा बाई जी ! मैं पण्डरपुर पर जा रही हूं, तू वहां चलेगी, संतनी ने कहा मैं जाना तो चाहती हूं,

पर यहां बन्ध रही हूं—मुझ पापिनी के भाग्य में पण्डरपुर की यात्रा कहां लिखी है—यह सुनकर स्त्री वेशधारी भगवान ने कहा, बाई जी ! मैं तेरी सदा सहचरी हूं, उदास मत हो—तेरे बदले मैं यहां बंध जाती हूं—

यह कह कर भगवान ने तुरन्त उसके बन्धन खोल दिये और उसे पण्डरपुर भेज दिया—अब सन्तनी सखूबाई का वेष धारण किये स्वयं नाथ बंधे हैं—संतनी के सास-ससुर आते, और उसे भला-बुरा कहकर चले जाते थे—इस प्रकार बन्धे हुये पूरे पन्द्रह दिन हो गये—सास-ससुर ने खाने को कुछ भी नहीं दिया—सखूबाई के पति ने सोचा यदि वह खाये-पीये बिना मर गई तो हमारी बड़ी फजीहत (बदनामी) होगी—पुनः संत सखूबाई वेषधारी भगवान को खोल दिया और भोजन खाने को दिया—भगवान सिर नीचे किए खड़े रहे—भगवान सखूबाई के आने से पूर्व तक अन्तर्ध्यान नहीं हुये थे, और घर का सर्व कार्य करते रहे—इधर सन्तनी सखूबाई पण्डरपुर पहुंचकर भगवान के दर्शन करके आनन्द में आकर भूल गयी कि कोई दूसरी स्त्री उसकी जगह बन्धी है—सन्तनी सखूबाई ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक शरीर में प्राण हैं मैं यहां से नहीं जाउंगी—सन्तनी सखूबाई जब ध्यान में लग्न होकर समाधि लगाली तब उसके प्राण शरीर से निकल गए अतः उसकी मृत्यु हो गई—यह सखूबाई का चमत्कार था जो भगवान के ध्यान में मृत्यु हो गयी थी—

देवयोग से कहाड़ के निकट किवल नामक ग्राम का एक ब्राह्मण वहां उपस्थित था—उसे पहचाना और उसकी अन्त्येष्टि क्रिया कर दी थी—अब भगवान की पत्नी रुकमणी जी ने देखा

यह तो यहां मर गयी और वहां मेरे पति बहू बने बैठे हैं मैं तो फंस गई---यह विचार कर उन्होंने शमशान में जाकर सन्तनी सखूबाई की अस्थियां चुनकर उसमें प्राणों का संचार कर दिया था अब वह नवीन शरीर में जीवित हो गई थी-सन्तनी सखूबाई को रुकमिणी ने कहा कि तेरी यह प्रतिज्ञा थी न कि तू इस शरीर से पण्डरपुर से बाहर नहीं जाएगी-अब तेरा पहले वाला शरीर जल चुका है अब तू इस शरीर से यात्रियों के साथ घर लौट जा—

सन्तनी यात्रियों के साथ घर लौट आयी—सन्तनी सखूबाई का आना जानकर सन्तनी सखूबाई वेषधारी भगवान मटका लेकर नदी तट पर आ गया—वहां उसको मटका देकर आप अन्तर्ध्यान हो गये—इधर भगवान के हाथ का भोजन खा सबके स्वभाव में परिवर्तन आ गया था—यह देखकर सन्तनी आश्चर्यचकित रह गयी थी—कई दिनों के पश्चात् वह किवल गांव का ब्राह्मण जिसने उसकी अन्त्यष्टि की थी उसकी मृत्यु का समाचार देने आया और उसने उसको घर का काम करते देखकर तब उसके आश्चर्य का पारावार न रहा--उसने सन्तनी के सास-समुर को बुलाकर कहा, आपकी बहू तो पण्डरपुर में मर गयी थी-यह कहीं उसका प्रेत बनकर तो तुम्हारे घर नहीं आ गया ? सन्तनी के सास-ससुर व पति ने कहा कि वो तो पण्डरपुर गयी ही नहीं, तुम ऐसी बात कैसे कह रहे हो-ब्राह्मण ने कहा कि मैंने स्वयं उसकी अन्त्येष्टि क्रिया की है मैं कोई झूठ थोड़ी ही बोल रहा हूं—

पुनः सब ने सन्तनी सखूबाई को बुलाकर सब बातें पूछी-उसने सारा अपना चमत्कार का हाल बता दिया—उसके

चमत्कार का हाल सुनकर सबने कहा कि निश्चय ही यहां पर वंधने वाली स्त्री स्वयं भगवान ही थे--तब वे सब कहने लगे कि हम बड़े नीच हैं हमने इतने दिनों तक उनको बांध रखा और भूखा रखा--अब सन्तनी सखूबाई के चमत्कार से सब के मन शुद्ध हो गये थे--अब वे सब भगवान के भजन में लग गये और सन्तनी सखूबाई का बड़ा ही उपकार मानकर उसका सम्मान करने लगे--इस प्रकार सन्तनी सखूबाई के चमत्कार सब उसके अनुकूल बन गए थे--यह था सन्तनी सखूबाई का चमत्कार--

॥ इतिश्री ॥

संत सदन कसाई

प्राचीन समय में एक संत सदन कसाई था--वह जाति से कसाई था परन्तु परमात्मा का भक्त था-भगवान का जप वह सदा करता था-यद्यपि वह कसाई था परन्तु उसका हृदय दया से पूर्ण था--जीव वद्ध के ही नाम से ही उसे घृणा थी--संत सदन कसाई अपनी जीविका के लिये दूसरों से मांस ला कर बेचा करता था--स्वयं अपने हाथ से पशु वध नहीं करते थे--ऐसे काम में उनका मन लगता भी नहीं था, वे लाचार होकर करते थे-संत रात-दिन हरि-2 कहते थे-सन्त के घर में भगवान शालग्राम रूप से विराजमान थे-सन्त उसे पत्थर का एक बाट समझते थे-उस बाट से सबको मांस तौलकर देते थे-सन्त का यह चमत्कार था कि कोई एक पाव मांस मांगता था तो सन्त

उसी बाट से तौल कर देते थे—कोई एक सेर मांस लेता था तो भी आप उसी बाट से तौलकर देते थे–यदि दो सेर या पांच सेर मांस लेता था तो भी आप उस एक ही बाट से तौलकर देते थे—सन्त का चमत्कार यह था कि किसी को न कम जाता था और न अधिक—एक दिन एक साधु सन्त सदन कसाई की दुकान के सामने से जा रहा था–उसकी दृष्टि पड़ते ही वे शालग्राम को पहचान गये—मांस विक्रेता सन्त सदन कसाई के वहां अपवित्र स्थल में शालग्राम को देख कर साधु को बड़ा दुखः हुआ—सन्त से वे शालग्राम को मांग कर ले गये—सन्त ने प्रसन्नता पूर्वक वह पत्थर साधु को दे दिया—साधु ने विधि पूर्वक शालिग्राम को पूजा की थी—रात्रि में साधु को स्वप्न में परमात्मा ने कहा तुम मुझे यहां क्यों लाये हो ? मुझे सन्त के घर में बड़ा सुख मिलता था—

अतः मुझे सन्त सदन कसाई के घर जाकर दे आओ—पुनः साधु ने वह बाट जो शालग्राम था उस सन्त सदन कसाई को देकर कहा कि यह बाट नहीं यह तो स्वयं भगवान शालग्राम जी हैं– सन्त ने जब यह सुना के यह उनका बटखरा स्वयं भगवान शालग्राम जी हैं तो उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ–सन्त मन में कहने लग मैंने कितना पाप किया—मैंने भगवान जी को निरादर पूर्वक अपवित्र मांस के तराजू में बाट बना रखा है—प्रार्थना करने लगा, प्रभु मुझे क्षमा करो—अब सन्त सदन कसाई श्री शालग्राम को लेकर पुरूषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ पुरी की यात्रा को चल पड़ा—मार्ग में शाम होने पर सन्त सदन एक गांव में एक गृहस्थ के घर ठहरे–उस घर में दो ही व्यक्ति थे—एक पति व एक पत्नी—पत्नी का आचरण श्रेष्ठ नहीं था—उस स्त्री के घर में ठहरे सन्त सदन पर वह

स्त्री उन पर मोहित हो गई थी—रात्री के समय सन्त के पास आकर वह अनेक प्रकार को अशिष्ट चेष्टायें करने लगी-सन्त हाथ जोड़ कर बोले, तुम मेरी माता हो—अपने पुत्र की परिक्षा मत लो मां—मुझ तो आप आशीर्वाद दें—

परन्तु उस स्त्री की बुद्धि काम पिपासा के वश भ्रष्ट हो गई थी-उस कामातुर स्त्री ने समझा कि शायद मेरे पति के भय से ही यह मेरी बात नहीं मान रहा है—अब वह स्त्री गयी और तलवार लेकर अपने पति का सिर काट दिया—कामान्ध ऐसा कौन सा पाप है जो वह नहीं कर सकता अब वह स्त्री कहने लगी, प्यारे अब मत डरो, मैंने अपने पति का सर काट दिया है—हमारे सुख का कण्टक दूर हो गया है, अब तुम मुझे स्वीकार करो—सन्त सदन ने फिर भी जब अस्वीकार कर दिया—स्त्रो ने देखा कि सन्त कतई नहीं मानता तब उसने द्वार पर जाकर छाती पीट 2 कर जोर 2 से रोने लगी-लोग उसका रूदन सुन कर लोग एकत्रित हो गये—उस कुलटा ने कहा कि यह यात्री मेरे पति से आज्ञा लेकर रात को ठहर जाने के लिये यहां ठहर गया था—अब इस यात्री ने मेरे पति को मार डाला है और मेरे साथ बालात्कार करना चाहता है—लोगों ने सन्त सदन को बहुत भला बुरा कहा, और मारा भी था परन्तु सन्त सदन ने कोई अपनी सफाई नहीं दी-मामला न्यायाधीश के पास गया—

सन्त तो अपने प्रभु की लीला देखते हुये अन्त तक चुप ही रहे—अपराध सिद्ध हो गया—न्यायाधीश की आज्ञा से सन्त के दोनों हाथ काट दिये गये—सन्त ने इसे भी प्रभु की कृपा ही मानी—सन्त के मन में परमात्मा के प्रति तनिक

भी रोष नहीं हुआ—सन्त भजन करते हुये जगन्नाथ पुरी को चल पड़े—उधर भगवान ने पुजारी को स्वप्न में आदेश दिया कि मेरा भक्त सन्त सदना को आग्रह पूर्वक बैठा कर ले आओ—पुजारी ने आदेश का पालन किया—जब सन्त सदना ने जैसे ही श्री जगन्नाथ जी को दण्डवत करके भुजायें ऊँची उठाकर कीर्त्तन करने लगा सन्त के चमत्कार से दोनों हाथ पूर्ववत ठीक हो गये थे—परन्तु मन में यह शङ्का थी कि बिना अपराध के हाथ काटे क्यों गये? भगवान के राज्य में कोई निरापराध तो दण्ड पाता नहीं—तब रात्री में भगवान ने सन्त सदन को बताया कि तुम पूर्व जन्म में ब्राह्मण थे—एक एक गाय कसाई के घर से भागी जा रही थी—उस कसाई ने तुम से पूछा कि मेरी गाय भाग गई है क्या तुम ने देखा है किधर गई हैं—तुम ने दोनों हाथों से संकेत दिया था कि अमुक मार्ग में गई है—कसाई ने उसी मार्ग पर जाकर गाय को पकड़ कर मार डाला था—वही गाय इस जन्म में स्त्री बनी हैं और वह कसाई उसका पति बना हैं—पूर्व जन्म का बदला लेने के लिये स्त्री ने पति को मारा है—तुमने दोनों हाथ से ठीक मार्ग बताया था तभी तुम्हारे हाथ कटे है—अतः इस दण्ड से तुम्हारे पाप का नाश हो गया है—अब सन्त सदन इस बात को सुनकर व देख कर भगवत प्रेम में विहाल हो गया—अन्त में श्री जगन्नाथ के चरणों में सिर रखकर देह त्याग दिया था और परमधान पधारें—

॥ इतिश्री ॥

संत साईं बाबा

सन्त साईं बाबा का जन्म अहमद नगर के पास पथरी गांव में एक उच्च ब्राह्मण के घर हुआ था—सन्त साईं बाबा के गुरु का नाम बेंकुसा था—सन्त साईं बाबा ने प्रभु भक्ति की दीक्षा ली थी—सन्त साईं बाबा ने महाराष्ट्र में नासिक के पास शिरडी गांव में अपनी साधना आरम्भ कर दी थी—कहते हैं सन्त साईं बाबा दत्तात्रैय के अवतार थे—सन्त साईं बाबा के कारण इस शिरडी गांव का धार्मिक महत्व बढ़ गया था—सन्त साईं बाबा को भिक्षा में जो कुछ मिलता था दूसरे दीन-दुखियों को बांट देते थे—एक बार आपको तेल की जरूरत पड़ी—रात्री को सन्त साईं बाबा सर्वदा द्वारिका माई के मन्दिर में दिया जलाया करते थे—सन्त साईं बाबा ने गांव वालों से तेल मांगा परन्तु किसी ने नहीं दिया था—सन्त ने द्वारिका माई के मन्दिर में आकर कपड़े की बत्ती बनाई और दिये में पानी डालकर पानी का दिया जलाया था—पानी का दिया रात भर जलता रहा था—

सन्त के इस अद्भुत चमत्कार को गांव के दो आदमियों ने देख लिया था—उन्होंने गांव के सब लोगों को बताया कि सन्त ने क्या चमत्कार किया हैं—इस चमत्कार को सुन कर जब गांव के लोगों ने मन्दिर में जाकर देखा कि पानी का दिया जल रहा है—पहले तो गांव के लोग सन्त को पागल और दिवाना समझते थे परन्तु अब समझने लगे कि यह सन्त तो एक पहुंचा हुआ सिद्ध संत है—अतः गांव वाले नतमस्तक

होकर सन्त से क्षमा मांगने लगे—सन्त ने लोगों से कहा कि आपने तेल नहीं दिया था और आप लोग समझते हैं कि तुम्हारे दिये गये तेल से दिया जलता है, दिया परमात्मा की कृपा से जलता है—तुम लोगों ने तेल नहीं दिया तो भी दिया रात भर जलता रहा—पुनः लोगों ने नत मस्तक होकर क्षमा मांगी थी—सन्त साईं बाबा ने सब को हरि-हरि नाम का जप करने का आदेश दिया—

अब शिरड़ी गाँव में किसी को दुःख होता था तो वह सन्त साईं बाबा के पास जाता था—सन्त अपनी चमत्कारी भभूत देकर उनकी पीड़ा दूर करते थे—अब आस-पास के गाँवों में सन्त की धूम मच गई थी और बहुत दूर-दूर से लोग आने लगे—सन्त भी उनके दुःख को दूर करने के लिए तत्पर तैयार रहते थे—एक बार शिरड़ी गाँव में बहुत भयंकर वर्षा हुई थी गाँव के लोगों में आतंक छा गया था—गाँव में चारों ओर पानी ही पानी भर गया था—पानी लगातार बरस रहा था और बिजली के जोरदार कड़कने की आवाज से सब लोग भयभीत हो रहे थे—फसल के खराब होने का डर हो रहा था—सबने सोचा कि चलो सन्त की शरण में चलें वह कुछ उपाय करेंगे—लोग जब द्वारिका माई के आश्रम में आये तो सन्त चिलम पी रहे थे—जब गाँव के लोग आये तब सन्त को नमस्कार कर कहने लगे कि महाराज क्षमा करो—सन्त ने पूछा क्यों क्या बात है ? लोगों ने कहा कि आप देख रहे हैं कितनी घनघोर वर्षा हो रही है—यदि यह वर्षा न रुकी तो हमारे घरों और मवेशियों का क्या हाल होगा ? सन्त ने कहा कि बरसात तो हमेशा होती है इसमें हैरान होने की क्या बात है ?—दूसरे आदमी ने कहा कि शिरड़ी में एसी बरसात

कभी नहीं हुई न बिजली इतनी भयंकर रूप से कड़कती थी—इस समय गाँव के चारों ओर पानी ही पानी भर गया है-सन्त ने कहा कि परमात्मा की इच्छा से हो रही है—परमात्मा जो कुछ भी करता है अच्छे के लिए करता है—पुनः एक आदमी ने कहा कि सन्तजी आपने आज तक जो कुछ भी किया है हमारे अच्छे के लिए ही किया है, आज भी जो कुछ करेंगे सो भी हमारे अच्छे के लिए करेंगे—किसी तरह बरसात को रोकिये—सन्त ने देखा कि लोग बहुत भयभीत हो रहे हैं—सन्त साईं बाबा चिलम रखकर बाहर आये, जब सन्त ने ऊपर आकाश को देखा तो सन्त के चमत्कार से कुछ ही पलों में बरसात रुक गई थी—सब कुछ शान्त हो गया था—पुनः सब लोग सन्त के चरण छू कर अपने-अपने घर चले गये थे—

सन्त साईं बाबा का एक शिष्य था, उसका नाम उपासनी बाबा था—यह सदा अपने गुरु की सेवा करते थे—उपासनी बाबा बड़े विद्वान थे और पूरे सन्त थे—सन्त साईं बाबा ने अपने शिष्य को बताया था कि सेवा में परमात्मा का वास है—परमात्मा सभी स्थानों पर है, सभी जीवों में है—उसके दर्शन हर जगह और हर समय किये जा सकते हैं-

एक बार शिष्य उपासनी बाबा गुरु का भोजन बनाकर द्वारिका माई के आश्रम में आ रहे थे—मार्ग में उन्हें एक कुत्ता भूख से तड़पता दिखाई दिया-उपासनी बाबा ने सोचा कि पहले गुरु को भोजन करा दूँ बाद में आकर कुत्ते को खिलाऊँगा—यह सोच कर वह शिष्य गुरु के पास चला गया—गुरु के पास जाकर भोजन का थाल उनकी ओर बढ़ा दिया—उस समय सन्त साईं बाबा ने कहा कि मैं तो तुम्हें मार्ग में ही

मिला था, तुम मुझे वहीं पर भोजन खिला सकते थे इतनी दूर आने का व्यर्थ कष्ट किया—यह था सन्त साईं बाबा का चमत्कार जो उन्होंने कहा—उपासनी बाबा को कुत्ते की याद आई—अब उन्हें अपनी भूल पर पश्चाताप होने लगा, कारण गुरु सन्त साईं बाबा ने सदा उनसे यही कहा था कि सभी में ईश्वर का वास है—सभी को सम दृष्टि से देखो—उपासनी बाबा लज्जित होकर चला गया पर मन में सोचता गया कि फिर एसी भूल नहीं करूँगा—

एक बार फिर ऐसा अवसर आया कि उपासनी बाबा गुरु साईं बाबा का भोजन लेकर आ रहा था मार्ग में एक भिखारी भूख से व्याकुल हो रहा था और भोजन की याचना कर रहा था—उपासनी बाबा को कुत्ते वाली बात याद थी—परन्तु अब उपासनी बाबा ने सोचा वह तो कुत्ता था यह तो मनुष्य है यह कुछ समय ठहर भी सकता है—मैं सन्त साईं बाबा को भोजन कराकर अभी इसे वापिस आ कर भोजन दे दूंगा—ऐसा विचार करके उपासनी बाबा द्वारिका माई के आश्रम में आया लेकिन वहां तो कोई भी नहीं था—उपासनी बाबा ने सारा आश्रम छान मारा लेकिन वहाँ कोई नहीं था—उपासनी बाबा हैरान व परेशान होकर आश्रम के द्वार पर आकर बैठ गया था—

कुछ समय बाद जब सन्त साईं बाबा आये तो शिष्य ने कहा कि गुरुदेव आप कहां चले गये थे ? मैं बहुत देर से आप के लिए भोजन लेकर बैठा हूं—सन्त ने कहा कि क्या जरूरत थी इतनी दूर आने की ? मैं तो आपसे मार्ग में भूख से तड़पते हुये ही मिला था तुमसे भोजन भी मांगा था, परन्तु पहले वाली भूल की तरह तुम फिर दुबारा भूल कर गये हो—रख दो

भोजन को एक तरफ-यह सुनकर उपासनी बाबा ने बार-बार क्षमा मांगी, भविष्य में फिर कभी भूल नहीं होगी-यह था सन्त साईं बाबा का चमत्कार जो उन्होंने शिष्य से दो बार परीक्षा ली-सन्त साईं बाबा की चमत्कारी भभूत से सब दुःख दूर होते थे-

- इति श्री -

सन्त मनकोजी बोधला

सन्त मनको जी बोधला पटेल थे—उनकी स्त्री का म मामाताई था—इनके पुत्र का नाम यमाजी और कन्या नाम भागीरथी था—आप बरार में धामन ग्राम के पटेल -सन्त मनकोजी का पूरा परिवार परमात्मा का भक्त था ...ा साधु था-ब्राह्मणों की सेवा करने वाला था-सन्त मनकोजी बोधला एक धनी पुरुष था—उस के अन्नके कोठे भरे पड़े थे तथा गाय, बैल और भैंसे अधिक मात्रा में थी—

सन्त मनको जी सदा अतिथियों की सेवा करते थे—एक बार देश में अकाल पड़ गया—मनुष्य अन्न बिना और पशु, चारे बिना मरने लग गये थे—एक दिन सन्त मनको जी बोधला ने पत्नी से कहा, देखो। हमको परमात्मा की कृपा से सब कुछ मिला है—इस समय भूखों को अन्न, नंगों को कपड़ा एवं रोगियों को औषिधि देना ही भगवान की सच्ची सेवा है पर देखो कहीं दान का अभिमान न आ जाये—

बोलो आपका क्या विचार है ? पत्नी ने कहा कि ठीक है, ऐसे विकट समय में अवश्य सेवा करनी चाहिये—जब उन्हें अन्न-कपड़ा दवाईयां आदि देना आरम्भ किया तब सैकड़ों नहीं सहस्त्रों भुखे कंगाल एवं रोगियों का आना शुरु हो गया था—सन्त मनको जी और मामाताई बड़े प्रेम से सबका सत्कार करते रहे थे—अब सन्त के पास अन्न और वस्त्र समाप्त हो गया था—पशुओं का चारा जो पड़ा था वह भी बांट दिया था—अपने पास चारा न रहने के कारण सन्त ने अपने पशु भी दान कर दिये थे—घर में बरतन, सोना एवं रत्न जो थे बेचकर उस रकम से अन्न वस्त्र लेकर गरीबों को बांट दिया था—अब सन्त मनको जी जो पटेल थे तथा अपनी पत्नी के साथ दूसरों के घर में मजदूरी करने लगे—त्याग के आनन्द से उनका अन्त: करण निर्मल हो गया था—सन्त मनको जी बोधला प्रत्येक एकादशी को पण्डरपुर जाया करते थे—वहां पर ब्राह्मणों व गरीबों को अन्न वस्त्र बांटा करते थे परन्तु अब उनके पास कुछ भी नहीं था—सन्त अपनी पत्नी के साथ जंगल में सूखी लकड़ियां चुनकर ले आये, इन्हें पण्डरपुर में बेचे तो तीन पैसे मिले—सन्त मनको जी चन्द्रभागा नदी में स्नान करके उन पैसों के फूल-पते लेकर श्री पाण्डूर रंग भगवान का पूजन किया और रात्री को जागरण किया—

दूसरे दिन सन्त मनको जी जंगल से लकड़ियां ले आये—उन्हें बेचकर तीन पैसे मिले, उनका आटा लेकर आये—पहले सन्त मनको जी अपने सामने ब्राह्मणों को भोजन कराया करते थे—अब उनके पास केवल आटा था इसे कोई लेने को तैयार नहीं था—सन्त मनको जी दरिद्र के पास चावल,

चीनी, घी व दक्षिणा देने के लिये कुछ नहीं था—यह देखकर सन्त मनको जी के नेत्र भर आये कि आज मेरा नियम भंग हो रहा है—अब एक बहुत भूखा एवं वृद्ध ब्राह्मण के वेष में भगवान आये—वृद्ध ब्राह्मण ने कहा, अरे ओ भगत ! मुझे बड़ी भूख लगी है, तेरे पास कुछ हो तो जल्दी मुझे दे दे—सन्त ने कहा कि महाराज मेरे पास केवल सूखा आटा है, और कुछ भी नहीं है—वृद्ध ब्राह्मण ने कहा कि भाई ! मुझे बड़ी भूख लगी है, अतः आटा ही दे दें, मैं बाटियां बनाकर खा लूंगा—सन्त ने आटा दे दिया—सन्त सर्वदा अपने सामने ब्राह्मणों को भोजन करवाया करते थे, यह उनका नियम था—आटा लेकर वृद्ध ब्राह्मण ने कहा अब खड़ा क्या देखता है—

कुछ कण्डे मांग कर ले आ—मैं यहीं बैठकर बाटियां बनाकर खा लूंगा—सन्त मनका जी कण्डे मांग कर ले आये—श्री पाण्डुरंग हरि ने अपने हाथों से बाटियां तैयार करने लगे—इधर भगवती महालक्ष्मी जी ने एक बुढ़िया ब्राह्मणी का वेष धारण करके सन्त मनका जी पूर्ण त्यागी भक्त का दिया भोजन खाने के लिए आ गई—उस वृद्धा ब्राह्मणी ने आकर कहा कि मैं बहुत भूखी हूं—अतः मुझे भी बाटियां दो—स्वयं जगदम्बा को आया देख कर वृद्ध ब्राह्मण मुसकरा दिया—सन्त मनको जी ने देखा कि आटा तो एक के पेट भरने जितना नहीं है यह दो क्या खायेगें—इतने पर भी वृद्ध ब्राह्मण ने सन्त को भी खाने को कहा—सन्त ने कहा कि आप खाओ मैं तो बचा हुआ झूठन प्रसाद रूप में खा लूंगा—

अब दोनों ने पेट भर खा लिया, और देखते-देखते ही दोनों अदृश्य हो गये थे—यह सन्त का चमत्कार था जो

पाण्डुरंग और माता महालक्ष्मी दोनों आकर सूखा आटा खा गये थे—सन्त मनको जी जब मन्दिर गया तो देखा पाण्डुरंग साक्षात सामने खड़े होकर मुसकरा रहे हैं—सन्त मनको जी ने कहा कि दयामय ! आपकी कृपा से मैं धन्य हो गया—बड़े-बड़े धनियों के नाना प्रकार के भोगों को छोड़कर मुझ कंगाल के सूखे आटे पर रीझ गये—आप ने मुझे कृतार्थ कर दिया है भगवान विठल नाथ ने कहा कि भाई ! मैं तो सब के यहां जाना चाहता हूं, पर वहां मुझ कोई वहां पूछता नहीं—सन्त ने कहा, भगवान यह कैसे हो सकता है ? भगवान ने कहा कि देखो अमुक धनी के यहां मिठाईयाँ बन रही हैं—ब्राह्मणों को निमन्त्रण भेज दिया गया है—अब मैं भी वहां जाऊंगा आप द्वार पर रहना—दूसरे दिन उस सेठ के यहां एक हजार पत्तलें और आसन बिछ गये थे—मुनीम जी निमन्त्रित ब्राह्मणों की सूची में देख-देख कर ब्राह्मणों को बैठा रहे थे—इधर सेठ जी देख रहे थे कि एक भी फालतू आदमी न आ जाये—इतने में एक बुढ़े ब्राह्मण ने आकर कहा कि सेठ जी मैं बहुत भूखा ब्राह्मण हूं—सेठ जी ने मुनीम से पूछा कि सूची देखो आप का नाम है—मुनीम जी ने कहा कि आप को निमन्त्रण नहीं दिया गया है—तब सेठ जी ने कहा कि आप भोजन नहीं कर सकते हैं—बूढ़े ब्राह्मण ने कहा कि आप एक हजार ब्राह्मण जिमा रहे हैं, मैं एक भूखा ब्राह्मण जीम जाऊंगा तो क्या हानि हो जायेगी—

सेठ ने कहा कि हम भिखमंगों को नहीं खिला रहे हैं, अतः आप चले जाओ—ब्राह्मण भी पूरा हठी निकला एक पतल पर बैठते हुये बोला, मैं तो खाकर जाऊंगा—सेठजी ने

कहा कि इस बदमाश को धक्के देकर बाहर निकाल दो—सन्त मनकोजी बोधला यह सब देख रहा था—भगवान ने पास आकर कहा देख लिया है न ? अब सन्त मनको जी ने इस अभिमानी को देखा—सन्त के चमत्कार से ऐसी जोरदार आँधी आई कि सब मिठाइयाँ नष्ट हो गई और सब ब्राह्मण भूखे घर गये—

अब सन्त मनको जी भी भूखे थे—सन्त मनको जी जा रहे थे कि मार्ग में एक बगीचा देखा—सन्त ने सोचा कि बिना पूछे बगीचे में कैसे जाऊँ—इतने में सन्त के चमत्कार से स्वयं माता लक्ष्मी बूढ़ी मालकिन के वेष में आई और कहने लगी कि सन्त जी आप थके जान पड़ते हैं, और पण्ढरपुर के यात्री हैं, आपको बगीचे के मालिक बुला रहे हैं—सन्त मनको जी बगीचे में गये—भगवान जो मालिक के रूप में बैठे थे, खाने के लिए फल-फूल दिये—फलों का स्वाद बहुत ही अच्छा था—खा-पीकर जब सन्त बाहर आये तो सारा बगीचा अदृश्य हो गया था—यह था सन्त मनको जी का चमत्कार—

दूसरा इस वर्ष वर्षा अच्छी हुई सन्त मनको जी के खेत में जुआर खूब हुई थी—तब चिड़ियां खूब आ गई थी—उन्होंने चिड़ियों को जुआर खाने दी रोका नहीं था—अब मामाताई जब खेत पर आई तो खेत खाली हो गया था—उसने सोचा यदि सन्त मनको जी ऐसा करेंगे तो हमारे बच्चे क्या खायेंगे—उसने सन्त को परमात्मा की शपथ दी कि पुनः ऐसा न करना—

एक बार पण्ढरपुर के साधु यात्री आये और दो-चार जुआर के सिट्टे मांगें—सन्त ने कहा मुझे पत्नी ने परमात्मा की

शपथ दे गई है कि किसी को सिट्टे मत देना आप यदि अपने हाथों से तोड़ लो तो कोई मनाही नहीं है-सैंकड़ों साधुओं ने खेत को साफ कर दिया था-सन्त मनको जी भगवान के गुण गाते रहे-स्त्री-पुत्र जब खेत परआये तव खेत की दशा देकखर रो पड़े-परन्तु थे तो वह भी भक्त क्यों की पण्डुरी नाथ के यात्री खा गये हैं, देखकर वे सन्तुष्ट हो गये-अफसर लगान लेने आये तब लोगों ने कहा कि पहले सन्त मनको जी से लगान लो तब हम सब देंग वरना हम नहीं देंगे-अफसर ने हवलदार को संत के घर भेजा कि जाकर लगान ले आओ-संत को गांव के किसी साहुकार ने व्याज पर रुपये देना स्वीकार नहीं किया-सत उधार लेने के लिए रोलरास गांव में गया-इधर दुष्टों ने कहना आरम्भ कर दिया कि संत भाग गया है-अब हवलदार कुर्की लेकर आया-मामाताई को घर से निकाल दिया और गाय वकरियां कुर्क कर ली-अब पण्डुरंग हारि से घामना गांव का एक विठया महार ने आकर लगान की रकम दे दी थी, तब कुर्की खुल गयी थी-उसने रसीद ले ली थी-अब संत मनको जी जिस साहुकार से रुपये लेनेगये थे, उधार लेकर आया और अफसर को देने गया—

अफसर ने कहा कि आपके रुपये तो आ गए हैं, कुर्की भी खुल गयी-संत जी का यह चमत्कार था जो स्वय संत जी देखकर हैरान रह गए थे-अब संत मनको जी जव खेत पर गये तो खेत में संत के चमत्कार से जुवार के वड़े 2 सिट्टे लग रहे थे-यह संत मनको जी वोघला का चमत्कार देखकर सब दंग रह गये थे—

—इति श्री—

संत दादू जी

संत दादू दयाल संबत 1601 को चैत शुक्ला अष्टमी गुरुवार तदाअनुसार सन् 1544 को अहमदाबाद में लोदीराम ब्राह्मण के घर प्रकट हुए थे–एक दिन साबरमती नदी में एक बहता हुआ एक संदूक आ रहा था–लोदीराम संदूक उठाकर घर ले आये, खोलने पर देखा उसमें एक बालक लेटा हुआ हंस रहा है—लोदीराम की कोई संतान नहीं थी–नागर ब्राह्मण लोदाराम की पत्नी का नाम बसी बाई था–लोदीराम ने स्त्री को कहा कि आज भगवान ने प्रसाद रूप में पुत्र रत्न दिया है—भगवत कृपा से माता के स्तनों में दूग्ध भी आ गया—दोनों ने लाड़-प्यार के साथ बालक का लालन पालन किया—संत दादू जी पिंजारा थे. परन्तु विरक्त, ज्ञानी, और भक्त थे—एक बार संत दादू जी सत्संग के लिए घर से निकल पड़े, परन्तु माता–पिता ने पोछा करके उन्हे पकड़ कर घर ले आये–तब माता–पिता बड़नगर में इनका विवाह कर दिया था, संत दादू का मन विरक्त था, आप सांसारिक बन्धनों में रहना नहीं चाहते थे–अत: उन्नीस वर्ष की अवस्था में पुन: घर से निकल पड़े–घूमते–घूमते जयपुर राज्य में सांभर गांव में आकर संत दादू जी रुई पीदने (धुँनियाँ) का कार्य आरम्भ कर दिया था—

संत दादू जी के गुरू का नाम बुढन था—संत दादू जी लययोग एवं परमात्मा की भक्ति रस को दीक्षा ली थी–संत

दादू जी के दो पुत्र थे-एक गरीबदास दूसरा मिस्कीनदास तथा दो लड़कियां थीं, एक नानी बाई दूसरी माताबाई थी, संत दादू जी को वाक्य सिद्धि थी-संत दादू जी ने ब्रह्म-सम्प्रदाय की स्थापना की थी-बाद में इसका नाम दादू पंथ हो गया था-अतः दादू पंथी साधु प्रायः सभी जगह फैले हुए हैं-दादू पंथी नागा जमात वाले साधु जयपुर राज्य में अधिक हैं-एक बार सन्त दादू जी ने कुछ स्त्रियों को कबड़ों की पूजा करते देखा सन्त दादू ने स्त्रियों से पूछा कि आप कबड़ें क्यों पूज रही हो ? तब एक एक स्त्री ने कहा कि अमुक के बच्चा नहीं हो रहा है, अतः इसलिए पूजन कर रहे हैं-तब संत दादू जी ने उन्हें निम्न पद से उपदेश दिया था-"दादू दुनिया वावड़ी, कवड़ां पूजन ऊत। श्रो कर्मा के मारे मर रहे, उनसे मांगन पूत"-सन्त दादू जी के चमत्कारी उपदेश को सुनकर पुनः स्त्रियों ने कबड़ों का पूजना छोड़ दिया था—

संत दादू जी अपने शिष्यों को कहा करते थे कि प्रभू से यही प्रार्थना किया करो कि—

"साईं सत संतोष दे, भाव भगति विसवास।
सिदक सबूरी सांच दे मांगें दादू दास॥

कहते हैं कि एक बार वादशाह इलाउद्दीन खिलजी ने अपने दरबारी ब्राह्मणों से कहा कि श्री भागवत में लिखा है कि भगवान कृष्ण की सहस्त्रों रानीयां थी-यदि यह बात सत्य है तो मुझे इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दो-मैं आपको एक मास की अवधि देता हूं वरना मैं जानूंगा कि आपकी भागवत में गलत लिखा है तथा प्रत्यक्ष प्रमाण न दे सकने पर मैं आपको मृत्य

दण्ड दूंगा—अब जव वे ब्राह्मण घर गए तो बेहोश होकर पड़ गये—उन्होंने बड़े बड़े विद्वानों को कहा कि कोई बादशाह को इस का प्रत्यक्ष प्रमाण दे परन्तु कोई भी न दे सका—देखते-देखते अवधि में तीन-चार दिन रह गए थे—कि वे मौत के भय से किसी घन घोर जंगल में जा छिपे थे—जब एक माह खत्म होने को एक दो दिन रह गये थे. उधर से संत दादू जी अपनी तपस्या करके आ रहे थे—सं त दादू जी ने ब्राह्मणों से पूछा कि आप इस भयानक जंगल में क्या कर रहे हो ? पुनः ब्राह्मणों ने मुसलमान बादशाह की बात सुना दी, और कहा कि एक-दो दिन में वह हमें मार डालेगा इस भय से हम इस जंगल में भाग कर आ गये हैं—संत दादू ने कहा कि यह क्या कोई कठिन प्रश्न है जिसका उत्तर आप नहीं दे सकते ? ब्राह्मणों ने कहा कि हम इसका उत्तर नहीं जानते है—संत ने कहा कि आप सब घर जाओ—जब एक मास बाद बादसाह का दरबार लगे और आपसे प्रत्यक्ष प्रमाण का उत्तर मांगे तब आप कहना कि यह क्या कठिन बात है इसका प्रमाण तो हमारे साधु संत सब दे सकते हैं, और मैं उस समय आगे से निकलूंगा—

आप कह देना कि जहाँ पनाह. आज्ञा दो तो हम इस साधु को कह दें यह भी प्रत्यक्ष प्रमाण दे सकता है—पुनः मैं प्रत्यक्ष प्रमाण दे दूंगा, अतः आपसर्व बच जायेंगे-यह सुनकर वे अति प्रसन्न हुए और घर आ गये—समय पर जब बादशाह का दरबार लगा और उसने प्रत्यक्ष प्रमाण मांगा तो उन्होंने वही कहा जो सन्त दादू जी ने कहा था-बादशाह ने कहा तो बुलाओ उस सन्त को संत को बादशाह ने कहा कि तू प्रत्यक्ष प्रमाण दे सकता है ? उसने कहा जी हाँ—बादशाह ने कहा कैसे देगा-संत दादू जी ने बादशाह से कहा कि आप एक ही कतार में

एक सौ कमरे बना दें. और प्रत्येक कमरे में एक रुई धुमने का धनुष लगा दें और एक लकड़ी का लठा रख दें तथा कुछ रुई भी रख दें पुन: में अमुक दिनों के बाद आकर प्रत्यक्ष प्रमाण दूंगा—बादशाह ने वैसा किया—अब संत दादू जी एक कमरे में बैठ गए और रुई को धुनने लगे—संत दादू जी ने कहा कि आप प्रत्येक कमरे में जाकर देख आवें कि क्या हो रहा है ? जब बादशाह एक एक कमरे में देखने गया तो प्रत्येक कमरे में रुई धुनने का धनुष लगा हुआ है और वही सन्त दादू जी प्रत्येक कमरे में रुई धुन रहे हैं सन्त दादू जी का यह अद्भुत चमत्कार देखकर बादशाह हैरान रह गया और संत दादू जी के चरणों में गिर गया—सन्त दादू जी एक समय में अपने सौ रूप धारण कर सकते थे—अतः सन्त दादू जी ने कहा कि में तो एक तुच्छ सन्त हूं परन्तु भगवान कृष्ण तो योगी राज सन्त थे—वह एक समय में सहस्त्र रूप धारण कर सकते थे—पर यह सर्व विषय भोग के लिए नहीं थीं—उनकी केवल दासियाँ थीं-पटरानियां केवल तीन थी-

यह प्रत्यक्ष प्रमाण देख कर बादशाह मान गया था—यह था सन्त दादू का चमत्कार जिससे सब ब्राह्मण मृत्यु के मुख से बच गये थे—सन्त दादू जी संवत् 1660 तदनुसार सन् 1603 में 59 वर्ष बाद नारायणा गांव में परमपद को प्रमाण किया—सन्त दादू जी ब्रह्म में लीन हो गये. उनकी गद्दी पर गरीबदास जी बैठे थे—

—इति श्री—

संत स्वामी चरण दास

संत स्वामी चरण दास के पिता का नाम मुरलीघर और माता का नाम कुञ्जोदेवी था—आपका जन्म संबत 1760 भाद्रपद शुक्ला तृतीया मंगलवार को अलवर राज्य के अन्तर्गत मेवात प्रान्त के डेहरा ग्राम में एक भागर्व ब्राह्मण के कुल में हुआ था—संत स्वामी चरण दास बचपन से ही विरक्त और एकान्त बास करने में श्रेष्ठ थे—कहते हैं कि पांच वर्ष की आयु में संत स्वामी चरण दास को डेहरा में ग्राम नदी के तट पर एक दिन श्री शुकदेव जी ने दर्शन दिया था—श्री शुकदेव जी ने संत चरण दास को विधिवत दीक्षा देकर अपना शिष्य बना लिया था— उस समय संत की आयु उन्नोस वर्ष की थी—इसके पश्चात संत चरण दास ने देहलो में चौदह वर्ष की समाधि लगाई थी, परन्तु उन्हें इस योग साधना से शान्ति नहीं मिलो थी-संत चरण दास परमात्मा के भक्त थे, अतः उन्हे इन सिद्धियों से कोई विशेष प्रेम नहीं था—तदान्तर संत चरण दास भगवान श्री कृष्ण के दर्शनार्थ श्री वृंदावन में चले गए थे—भक्त वत्सल भगवान कृष्ण ने संत चरण दास को अनन्य प्रेमी तथा निष्काम भक्त को युगल रूप में दर्शन दिया भगवान ने सन्त को हृदय से लगाया और उनके मस्तक पर वरद हस्त रखकर प्रेमाभक्ति के प्रचार की आज्ञा देकर अन्तर्ध्यान हो गए थे—

भगवान के आदेशानुसार संत चरण दास देहली में मैं आकर परमात्मा की भक्ति का प्रचार करने लगे थे-एक बार संत चरण दास ने देहली के बादशाह मुहम्मद को एक पत्र लिखकर भेजा कि छह महीने बाद ईरान का बादशाह राज्य प्राप्ति के लिए तुम पर चढ़ाई करेगा—संत चरण दास के लेखानुसार छह महीने बाद ही नादरशाह ने देहली पर धावा बोल दिया था—अतः युद्ध आरम्भ हो गया था—युद्ध के समय मुहम्मदशाह ने नादरशाह को पत्र लिखकर भेजा कि इस युद्ध की सूचना हमारे यहां के संत चरण दास ने छह महीने पूर्व दे दी थी—मुहम्मदशाह का पत्र पढ़ कर कर नादर शाह को संत स्वामी चरण दास के दर्शन करा दिए थे—संत चरण दास के उपदेश से प्रभावित हो कर नादरशाह युद्ध की इच्छा छोड़ कर अपना डेरा-डंडा उठाकर ईरान वापस लौट गया था—पुनः मुहम्मदशाह ने संत चरण दास को अपना गुरु मानकर उन्हें सैकड़ों गांव भेंट करना चाहे परन्तु सर्वस्व त्यागी सन्त ने इन्हें लेना अस्वीकार कर दिया था-पुनः मुहम्मदशाह ने वे ग्राम उनके शिष्यों को दे दिये थे—उनमें से बहुत से अब तक भी उन्हीं के नाम से चले आ रहे हैं—दूसरा सन्त स्वामी चरण दास ने प्रेमा भक्ति का खूब प्रचार किया—प्रसिद्ध भक्त श्री सहजो बाई और दयाबाई सन्त चरण दास कि शिष्या थीं देहली. चावड़ी बाजार मोहल्ला दसान में इनके समाधि स्थान के समीप इनकी शिष्या सहजो बाई एवं परम शिष्य राम स्वरूप का स्थान है—

इस प्रकार सांसारिक विषयों से असक्त पुरुषों की हित कामना से अस्सी वर्ष तक इस भूतल पर लीला करके श्री संत

स्वामी चरण दास ने संवत् 1839 में स्वेच्छा से प्राण त्याग दिये थे—

—इति श्री—

संत श्री वल्लभाचार्य

सन्त श्री वल्लाभाचार्य के पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट था और माता का नाम इल्लम्यागारू था—आप एक तैलङ्ग ब्राह्मण थे, और काशी जी में रहते थे—एक बार आपने सुना काशी पर यवनों का आक्रमण होने वाला है—अतः आप काशी छोड़कर दक्षिण को चल पड़े थे—मार्ग में चम्पारण्य नामक वन में वैशाख कृष्ण एकादशी संबत् 1535 में महा नदी के तट पर इल्लम्यागारु ने पुत्र-रत्न को जन्म दिया था—सन्त श्री वल्ल-भाचार्य ने पण्डित विष्णु चित्त से तिरुम्मल और माधव यतीन्द्र से शास्त्रों की शिक्षा ली थी—सन्त श्री वल्लभाचार्य तेरहां वर्ष में वेद, वेदांग, पुराण एवं धर्मशास्त्र में पूर्ण निष्णात हो गए थे—28 वर्ष की अवस्था में सन्त श्री वल्लभाचार्य का विवाह महालक्ष्मी के साथ हुआ था—सन्त को काशी के राजा ने जगदगुरू महा प्रभू श्री वल्लभाचार्य की उपाधि से सम्मानित किया था—

सन्त श्री वल्लभाचार्य शुद्धादैत वाद के प्रति पालक थे-दूसरा बहालवन ग्राम में एक ग्वाला गायें चारने जाया करता

था—एक दिन वहां एक शेर आ गया था—तब ग्वाले और गायें सब भाग गए थे—केवल एक गाय वहां रह गई थी—शेर उस गाय के पास आया उस पर वार न करके नमस्कार करके वापस चला गया था— पुनः गांव वालो ने गाय का यह चमत्कार देखकर उस गाय को पूजना आरम्भ कर दिया था—उस गाय के चमत्कार से कई लोगों की मनोतियां पूर्ण हो गई थीं—अतः जब उस चमत्कारी गाय का जीवन समाप्त हुआ तो उसकी स्मृति में एक पत्थर की गाय बनाकर एक मन्दिर में रखवा कर उसकी पूजा आरम्भ हो गई थी, और प्रति वर्ष वहां मेला लगता था—तब एक बार मुसलमान बादशाह ने यह मेला लगना बन्द करवा दिया था और कहा था कि जब यह पत्थर की गाय घास खा लेगी तब मेला लगाने की आज्ञा दी जाएगी—एक बार बहुलवान गांव में सन्त श्री वल्लभाचार्य ब्रज की यात्रा करते हुए वहां आ गये थे—

सब गांव के लोग सन्त श्री वल्लभाचार्य के पास जाकर बादशाह का फरमान सुनाने लगे, कि यदि यह पत्थर की गाय घास खा लेगी तब मेला लगने की आज्ञा दी जाएगी—दूसरे दिन बादशाह को सूचना दी गई कि आज पत्थर की गाय घास खायेगी—बादशाह कुछ सिपाहियों के साथ मन्दिर में आ गया—सन्त श्री वल्लभाचार्य ने गाय की पूजा की और गाय के शरीर पर हाथ फेरा और कहा माता घास खाओ—अब सन्त के चमत्कार से गाय ने घास खाना आरम्भ कर दिया था—मुसलमान बादशाह यह सन्त का चमत्कार देख कर आश्चर्य चकित रह गया था, और संत के चरणों में पड़ गया था, मेले की भी आज्ञा हो गई थी—दूसरा एक बार एक मुसलमान काजी ने मथुरा के विश्रान्त घाट पर एक तावीज लगा रखा

था—अब वहाँ पर कोई हिन्दू नहाने आता तो उसकी चोटी गायब हो जाती थी और दाढ़ी निकल आती थी—

अतः वहाँ कोई हिन्दू नहीं जाता था—एक बार उन्हीं दिनों श्री वल्लभाचार्य व कश्मीर के पण्डित केशव भट्ट के साथ मथुरा पधारे तो पण्डों ने आकर संत जी को कहा कि विश्रान्त घाट पर एक काजी ने एक तावीज लगा रखा है—अतः कोई भी वहाँ नहीं जाता है—दूसरे दिन सन्त गुसाईं श्री वल्लभाचार्य तथा केशव भट्ट तथा कुछ शिष्यों के साथ विश्रान्त घाट पर गये—वे सर्व उस जादूई तावीज के नीचे से गुजर कर गये—घाट पर स्नान किया, पूजा पाठ की पुनः उसी तावीज के नीचे से होकर आये—उन्हें कुछ भी नहीं हुआ था—तब सब लोगों ने कहा कि आप तो समर्थ हैं परन्तु हम लोगों के सिर से हटवाकर आप जायें—सन्त श्री वल्लभाचार्य ने काजी को सन्देश भेजा कि इस तावीज को यहां से हटा दो, परन्तु काजी ने अस्वीकार कर दिया था—

पुनः सन्त जी ने भी एक शक्ति शाली यन्त्र बनाकर पं० केशव भट्ट को कहा कि इसे देहली में दिल्ली दरवाजे पर लगा आओ—इस यन्त्र के चमत्कार से जो उसके नीचे से मुसलमान गुजरता था उसकी दाढ़ी गायब हो जाती थी और चोटी आ जाती थी तथा वह मुसलमान कृष्ण कृष्ण कहने लग जाता था—ऐसे मुसलमान को मुल्ला के पास ले जाते थे तथा सैयद व काजी के पास ले जाते थे—वह कुरान की कितनी ही आयतें पढ़ लेते थे पर वह मुसलमान तो कृष्ण-कृष्ण कहता ही रहता था—उसी समय दिल्ली दरवाजे पर दो पण्डित बैठे थे उन्हें सिपाही पकड़ कर बादशाह के पास ले गये—उन पण्डितों ने बादशाह को मथुरा के काजी के

कहने पर मान गया था–अब छह दिन बीत गए, सन्त विसोबा कहां से प्रबन्ध करें? और उन्हें कौन कर्ज देगा–वे रात्री में भगवान से प्रार्थना करने लगे–हे नाथ! आज तक आपने मेरी एक भी बात खाली नहीं जाने दी–आज मेरी लाज आपके हाथ है–सन्त विसोबा आज मर भी जाय तो भी उसका सत्य बच जायेगा–हे भगवान हरि, मैं आपकी बाट देख रहा हूं–नेत्रों से अखण्ड आँसू की धारा चल रही थी–सन्त विसोबा को अपनी देह का पता ही नहीं–सन्त विसोबा प्रार्थना में तल्लीन हो गए थे–परमात्मा ने सन्त की बात सुन ली थी—

परमात्मा ने सन्त बिसोबा के मुनीम का रूप धारण करके ठीक समय पर पठान के पास पहुंच गये थे—पठान को आश्चर्य हुआ कि ऐसे अकाल के समय इस कंगाल को इतने रुपए कौन देगा–अब रूप धारी मुनीम ने पठान को कहा कि सन्त विसोबा की साख अच्छी है दूसरा सत्य का रूप है, पक्का ईमानदार है किसी ने कर्ज दे दिया होगा–आप रकम मय व्याज ले लो और परनोट पर भर पाई को रसीद मुझे दे दो–पठान ने ऐसा कर दिया था–अब दूसरे दिन सन्त विसोवा पठान के घर गया और क्षमा मांगने लगा कि भाई मुझे माफ करो—मैं आपका रुपया व्याज सहित दे दूंगा–पठान आश्चर्य से बोला कि आप क्या कह रहे हैं–कल तो आपका मुनीम पूरे रुपये मय व्याज और परनोट की पृष्ठ पर रकम भर पाई ले गया–अब सत विसोबा आश्चर्य में पड़ गया–सत घर लोटकर अपने मुनीम से पूछने लगा मुनीम स्वयं यह बात सुनकर है-रान रह गया और कहा कि मैं तो नहीं गया था–अब सन्त विसोबा को निश्चय हो गया कि यह प्रभु की लीला है–सन्त विसोबा को बड़ी गिलानी हुई कि पाण्डरंग को इतना कष्ट

उठाना पड़ा–अब सन्त विसोवा भी श्री ज्ञानेश्वर की मण्डली में सम्मिलित हो गये थे–वहां सन्त विसोबा ने योग का अभ्यास किया और सिद्ध महात्मा माने जाने लगे थे–एक बार सब सन्तो में सन्त गोरा कुम्हार भी सबके पास बैठे थे वहां पर एक थापी पड़ी थी–वहां पर मुक्ता बाई ने पूछा कि यह थापी किसलिए र.ी हैं–

सन्त गोरा ने कहा कि इससे मिट्टी के घड़े ठीक कर देखा जाता है कि कौन घड़ा कच्चा है और कौन पक्का है–तब मुक्ताबाई ने कहा कि हम मनुष्य भी घड़े हैं क्या इससे पता लग जायेगा कि कौन कच्चा है और कौन पक्का है ? संत ने कहा लग जाएगा—यह कह कर सन्त ने प्रत्येक के सिर पर थप-थपा कर देखने लगे–जब सन्त नाम देव पर थापी मारी तो कहा कि यह कच्चा है—यह जब तक अपना गुरु नहीं बनाएगा तब तक यह कच्चा है—पुनः सन्त नाम देव सन्त विसोवा से गुरु दीक्षा लेने के लिए शिव मन्दिर में आए—सन्त नाम देव ने देखा कि संत विसोबा शिव लिङ्ग पर पैर रख कर लेट रहा है यह देखकर वह हैरान रह गया था—संत विसोवा ने सन्त नाम देव को कहा कि मैं वृद्ध हो गया हूँ मुझ से पैर उठते नहीं आप मेरे पैर ऐसे स्थान पर रख दे जहां शिवलिङ्ग न हो—सन्त नाम देव ने सन्त विसोवा के पैर वहां से हटा कर नीचे रखे पर वहाँ भूमि में से दूसरा शिवलिङ्ग प्रकट हो गया था–यह संत का चमत्कार देखकर सन्त नामदेव ने सन्त विसोवा को ही गुरु मानकर दीक्षा ली थी—यह था चमत्कार सन्त विसोबा का कि सन्त नामदेव जैसे भी उनके शिष्य थे—

इति श्री

संत भक्त रैदास

सन्त रैदास के पिता का नाम रघू था और माता का नाम धुरविनिया था—सन्त रैदास का जन्म काशी में हुआ था सन्त रैदास की जन्म तिथि का पता साहित्यकारों को नहीं लग रहा है—सन्त रैदास कबीर के पास जाते, और संत कबीर सन्त रैदास के भी पास आते थे, अतः दोनों का समकालीन समय है—सन्त रैदास जाति के चमार थे—जूते बनाकर अपनी जीविका चलाते थे-सन्त रैदास के लिए कहा जाता है कि आप पूर्व जन्म में ब्राह्मण थे- और स्वामी रामानन्द के श्राप से चमार के घर उत्पन्न हुए थे-

सन्त रैदास समर्पण भावना में मग्न रहते थे-सन्त रैदास जूता बनाते समय अपने पास चतुर्भुज भगवान की मूर्ति अपने पास रखते थे-सन्त रैदास काम भी करते जाते थे, मुख से हरि हरि का नाम भी जपते रहते थे' तथा मूर्ति को भी वार बार निहारते रहते थे-सन्त रैदास नीचे लिखे पद गाते रहते थे-

प्रभू जी ! तुम चन्दन, हम पानी । जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभू जी ! तुम घन, बन, हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ॥
प्रभू जी ! तुम दीपक, हम बाती । जाकी ज्योति बरै दिन राती ॥
प्रभू जी ! तुम मोती, हम धागा । जैसे सोन हिं मिलत सुहागा ॥
प्रभू जी ! तुम स्वामी, हम दासा । ऐसी भगति करै रैदासा ॥

सन्त रैदास जो कमाई करते थे वह साधु सन्त की सेवा में खर्च कर देते थे–इस बात से नाराज होकर पिता ने घर से निकाल दिया और खर्च के लिए एक पैसा भी नहीं दिया था–सन्त रैदास एक झोंपड़ी में रहने लगे–घर में एक सती साध्वी स्त्री रहती थी सन्त रैदास कि आर्थिक दुर्वस्था को देख कर प्रभू को दया आई और उन्होंने एक साधू का रूप धारण कर संत रैदास के पास आये–सन्त रैदास को पारस मणि दी जो लोहे को सोना करती थी–सन्त रैदास ने उस साधु से पत्थर लेना अस्वीकार कर दिया था–

एक बार चित्तौड़ की रानी सन्त मीरा बाई काशी यात्रा के लिए आई थीं, संत रैदास की महिमा सुनकर संत रैदास को अपना गुरु बना लिया था–संत रैदास जाति पांति के विरुद्ध थे–दूसरा एक दिन सत्संग चल रहा था कि एक दिव्य महात्मा वहां आये–सन्त रैदास ने उनकी सेवा की और उनको भोजन भी कराया–उसी दिव्य महात्मा के चल जाने के पश्चात सन्त रैदास के पूजा स्थान पर पांच सोने की मुद्रायें प्राप्त होने लगीं—यह देख कर सन्त रैदास ने दुखी होकर भगवान की मूर्ति के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि भगवान मैं तो आपके नाम का प्यासा हूं, आपकी कृपा और भक्ति का इच्छुक हूं–मुझे धन और माया नहीं चाहिए उस रात भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया, कि तुम्हें नहीं चाहिए फिर भी मैं देना चाहता हूं–यदि तुम को अपने खर्च के लिए नहीं चाहिए तो कोई मन्दिर बनवा देना–सन्त रैदास ने उस रकम से एक मन्दिर ही बनवा दिया था–यह सन्त रैदास के [illegible] काशी में

भगवान कृष्ण का मन्दिर बना था-सब लोगों ने कहा कि भगवान कृष्ण की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा सन्त रैदास से करवानी है, सो सन्त रैदास ने करवा दी थी-कुछ समय बाद जब काशी के पण्डितों को पता चला कि भगवान की मूर्ति को प्राण-प्रतिष्ठा एक चमार सन्त ने करवाई है, वे सर्व बिगड़ गये थे—

सबने काशी के राजा को कहा कि एक चमार सन्त ने भगवान कृष्ण की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करवाई है-कितना अधर्म है-सब ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि इस मूर्ति का पूजन करेंगे और इस मूर्ति का चरणामृत भी पीयेंगे-अतः इस अनर्थ का दण्ड इस सन्त को दिया जावे कि अछूत होकर इसने यह काम क्यों करवाया है-यह कार्य तो ब्राह्मणों का है-काशी के राजा ने सन्त रैदास को बुलवा कर कहा कि यह सर्व पण्डित कहते हैं कि आप एक अछूत चमार हो कर मन्दिर की कृष्ण की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा क्यों करवाई है सब ब्राह्मण क्षत्रीय आदि इस मूर्ति का पूजन करेंगे और इसके चरणों का अमृत जल पीयेंगे यह तो अनर्थ हो गया-

अधर्म हो गया, यह कार्य तो ब्राह्मणों का है, आपने क्यों किया ? अतः आपको दण्ड मिलना चाहिए-सन्त रैदास ने कहा कि ठीक है आप एक काम करो ? राजा ने पूछा क्या काम करें-सन्त रैदास ने कहा कि इस मूर्ति को आप नदी में डाल दें और ब्राह्मणों को कहें कि आप में जितनी शक्ति हो लगाकर इस मूर्ति को यहाँ मन्दिर में अपने आसन पर स्वयं आकर बैठा दें तब मैं दण्ड भुगत लूंगा-पुनः राजा ने ब्राह्मणों को कहा कि अब जो कृष्ण की मूर्ति गंगा में डाली गयी है

आप यह अपने बल से ऐसा करें कि यह मूर्ति स्वयं ही नदी से निकल कर मन्दिर में अपने आसन पर आ जावे तब हम इस सन्त रैदास को दण्ड देगें–ब्राह्मणों ने जब यह शर्त सुनी तो उनके होश उड़ गये–राजा को कहा कि हम ऐसा करने में असमर्थ हैं–दूसरा क्या यह काम सन्त रैदास कर सकता है–राजा ने पुनः सन्त रैदास को कहा कि यह ब्राह्मण तो कार्य को करने में असमर्थ हैं क्या आप कर सकते हो–

सन्त रैदास ने तत्काल अपने चमत्कार से वह मूर्ति नदी से स्वयं निकल कर स्वयं ही मन्दिर में अपने स्थान पर आ गयी थी–सन्त रैदास का यह चमत्कार देख कर राजा एवं सब लोग दंग रह गये थे–तब ब्राह्मणों ने सन्त रैदास से क्षमा माँगी और सन्तुष्ट हो कर चले गये थे–एक दिन संत रैदास का सत्सङ्ग हो रहा था कि उसमें एक धनवान व्यक्ति आ गया था–जब सत्सङ्ग समाप्त हुआ तब सब लोग प्रसाद और चरणामृत ले कर सब जा रहे थे–

अब उस धनी व्यक्ति ने प्रसाद लेकर फेंक दिया था तथा चरणामृत भी चमार के घर का पानी समझ कर एक तरफ फेंक दिया था, परन्तु कुछ जल उसके कपड़ों पर पड़ गया था तब घर पर आ कर सर्व वस्त्र एक गरीब अछूत को दे दिए थे पुनः स्नान किया और कपड़े बदल दिए थे–तब सन्त रैदास के चमत्कार से दूसरे दिन उस व्यक्ति के शरीर में पीड़ा होने लगी थी–दूसरे दिन शरीर में कोढ़ फूटने लगा, और अति दुखी हो गया था–इधर जिस अछूत को उसने कपड़े दिए थे वह भी सन्त रैदास के सत्सङ्ग में आया करता था धनी व्यक्ति यह देख कर हैरान रह गया था कि जिस अछूत को उसने कपड़े

दिये थे-वह दिन प्रति दिन स्वस्थ और आभा से पूर्ण होता जा रहा है और उसके चेहरे पर दिव्य तेज आ रहा है और स्वयं वह व्यक्ति कोढ़ के मारे अति दुखी होता गया था-

अब लोगों ने उसको कहा कि जाकर सन्त रैदास का चरणामृत पीओ फिर ठीक होगा-उसने जा कर चरणामृत पिया तब उसका कोढ मिट गया था यह था सन्त रैदास का चमत्कार-उस धनी व्यक्ति ने संत रैदास से क्षमा मांगी थी-दूसरा एक बार संत कबीर, सन्त रैदास से मिलन गए और कहा कुछ पिलादीजिये-सन्त रैदास ने तुरन्त चमड़ा भिगोने की कुंडी से थोड़ा सा पानी लिया और सन्त कबीर को पिलाना चाहा-तब सन्त ने सोचा यदि मना कर दूंगा तो गुरु भाई का अपमान होगा-अतः पानी पीने को तैय्यार हो गये, लेकिन सभी पानी कुहनियों के सहारे नीचे गिरा दिया, एक बूंद भी मुंह में न जाने दी घर लौट कर संत कबीर ने अंग-रखी खोलकर अपनी पुत्री कमाली को धोने के लिए दी अंग-रखी पर से कुहनियों के दाग नहीं छूट रहे थे-कमाली ने कपड़े को मुंह से चूसकर दाग मिटाने लगी-पानी का अंश मुंह में जाते ही त्रिकालज्ञ हो गयी थी-कमाली के सुसराल जाने के बाद एक दिन सन्त कबीर अपने गुरु सन्त रामानन्द के साथ आकाश मार्ग से कहीं जा रहे थे, बीच में कमाली का ससुराल आया, दोनों उतर कर वहां पहुंचे-यह देखकर दोनों सन्तों को आश्चर्य हुआ कि कमाली ने दोनों के लिए भोजन तैयार कर रखा है, और दो आसन भी लगा दिये हैं-

गुरु सन्त रामानन्द ने सन्त कबीर से पूंछा कि कमाली को यह ज्ञान कैसे हासिल हो गया? संत कबीर ने कमाली से

पूछा तो उसने अंगरखी धोने की सारी घटना बताई–अब तो सन्त कबीर अपनी अल्पज्ञता पर बहुत पछताये घर लौटकर संत कबीर पुनः सन्त रैदास के पास गये और कुछ पिलाने का आग्रह किया—संत तो सब कुछ जान चुके थे, अतः संत रैदास ने कहा कि जब पानी दिया था तब तो पिया नहीं, मन में अभिमान किया—अब पछताये क्या होत है, अब वह पानी तो मुलतान गया—वह पानी तो कमाली के पेट में गया था, वह कमाली अपने ससुराल मुलतान चली गई थी इस लिए संत रैदास ने कहा कि वह पानी तो अब मुलतान गया—

संत रैदास ने कहा कि जो अवसर चूक जाते हैं, सो पाछे पछताते हैं—यह सुनकर सन्त कबीर शान्त हो गए थे–यह सन्त रैदास का आश्चर्य जनक चमत्कार था–दूसरा संत का एक ग्राहक था जो सर्वदा सन्त रैदास से जूते बनबाया करता था–वह ग्राहक भी परमात्मा का भक्त था और सेवा भावी था—उसका नियम था वह नित्य प्रतिदिन गंगा स्नान करने जाया करता था, और संत रैदास को भी कहता था कि आप भी गंगा स्नान करने चला करो—परन्तु सन्त रैदास तो घर में ही सत्सङ्ग व भजन कीर्तन में मस्त रहते थे अतः वह नहीं जा सकते थे—एक बार संत रैदास ने उस ग्राहक को एक पाई दी और कहा कि यह पाई गंगा मैया के हाथ में देना—

अब ग्राहक गंगा स्नान करने के बाद पूजा–पाठ करने के पश्चात उसे याद आई कि सन्त रैदास की पाई गंगा मैया को देनी है–जब ही उस ग्राहक ने वह पाई गंगा में डाली तत्क्षण गंगा माई ने वह पाई अपने हाथ में पकड़ ली थी, और ग्राहकको एक सोने का रत्न जड़ित कंगन सन्तके लिए दिया था–

सन्त रैदास ने वह कंगन राजा को दे दिया था—राजा ने अपनी रानी को दे दिया था—अब रानी राजा से कहने लगी कि मुझे तो एक ऐसा कंगन और दो, राजा ने कहा कि यह तो एक संत दे गया था—अब मैं कहां से दूं—रानी ने जिद्द कर ली कि जैसे भी हो मुझे ऐसा कंगन मंगवा दो—पुनः राजा ने संत रैदास की पाई को जब बात सुनी तो अब राजा ने सन्त रैदास को बहुत ही आग्रह किया कि जैसे-कैसे एक दूसरा कंगन मंगवा दो—तब पुनः सन्त रैदास ने उस ग्राहक को जाकर कहा कि आप गंगा स्नान करने जाना तो गंगा माई को मेरी प्रार्थना करना कि एक कंगन वैसा और दो—तब वह ग्राहक एक दूसरा कंगन ले आया जो राजा को भिजवा दिया था—

यह था सन्त रैदास का अजीब चमत्कार—पूरे 120 वर्ष के हो कर संत रैदास भगवद्धाम को प्राप्त हुए—संत रैदास गंगा में नहाते-नहाते सशरीर गुम हो गये थे—दूसरा एक बार कुछ यात्री गंगा जा रहे थे, तो उन्होंने सन्त रैदास को भी गंगा चलने का आग्रह किया—सन्त रैदास ने कहा कि मैं तो नहीं चल सकता पर आप यह मेरी सुपारी ले जाओ, यह गंगा मैया को दे देना—यात्रियों ने वह सुपारी ले लीं थी, और जब गंगा में स्नान कर पूजा-पाठ कर जब यह सुपारी गंगा में डालीं तो तब सब ने देखा कि गंगा मैया ने स्वयं हाथ बढ़ा कर सुपारी को ग्रहण कर लिया है—

सन्त का यह चमत्कार देखकर सब आश्चर्य चकित रह गये थे—यात्रियों ने लौट कर यह घटना संत रैदास को कही एवं अन्य लोगों को भी कही थी—एक दिन सत्सङ्ग हो रहा था, इस सत्सङ्ग में एक व्यक्ति ने कहा कि हमें तो विश्वास नहीं

होता है कि गंगा मैया ने संत रैदास की सुपारी हाथ में ग्रहण की हो—वहां पर एक दूसरे व्यक्ति ने कहा कि देखने वाली आँख हो, और श्रेष्ठ भावना हो तो कठौती में गंगा दिखाई दे सकती हैं-संत रैदास के चमत्कार से जो चमड़ा भिगोने की कठौती पड़ी थी उसमें गंगा मैया का प्रवेश हो गया था—तब सन्त रैदास ने कहा कि मन चंगा तो कठौती में गंगा—संत के वचन सुन कर सब ने देखा कठौती में गंगा मैया के दर्शन हो रहे हैं-पुनः सभी लोगों न जय-जय गंगा मैया एवं जय-जय सत रैदास की इस लिए कहते हैं मन चगा तो कठौती में गंगा—

राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण ॥
सदा रस पीवे प्रेम सूं, सो अविनासी प्राण ॥
इहि रस मुनि लाग सबै, ब्रह्मा-विशनु-महेस ॥
सुर-नर साधू-संत जन, सोरस पावै सेस ॥
सिध-साधक जोगी जती, सती सबै सुखदेव ॥
पिवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेदा ॥
इहि रस पीते नाम देव, पीपा अरु रैदास ॥
पिवत कबीरा नाथ क्या, अजय प्रेम पियास ॥
यह रस मीठा जिन पिया, सो रस माहि समाई ॥
मीठे-मेठा मिलिर हुया, दादू अनत न जाई ॥

इति श्री

संत धनुर्दास

सन्त धनुर्दास उदयपुर गाँव जो मद्रास के पास त्रिचना-पल्ली के पास है वहां के रहने वाला था—धनुर्दास एक पहल-वान था-यह सन्त धनुर्दास एक हेमाम्बा नामक वेश्या पर आसक्त था-संत धनुर्दास जहाँ जाता था, वहां उसे साथ ले जाता था-मार्ग में भी चलते-चलते उसे देखता जाता था-संत धनुर्दास उसका मुख देखता रहता था, एक क्षण के लिए भी विना देखे नहीं रहता था-इसके इस व्यवहार से स्वयं हेमाम्बा वेश्या भी संतुष्ट नहीं थी—संत धनुर्दास भी निर्लज हो कर वेश्या को देखता रहता था-दक्षिण में श्री रंग क्षेत्र त्रिचनापल्ली के पास था-वहां पर वर्ष में एक बार महोत्सब होता था—

लाखों यात्री आते थे-अबकी बार संत धनुर्दास यह उत्सब देखना चाहता था, अतः वह संत भी अपनी वेश्या के साथ आ गया था-उसी उत्सव में श्री रामानुज जी भी पधारे थे—संत रामानुज जी ने जब संत धनुर्दास का यह व्यवहार देखा तो शिष्यों से पूंछा कि यह निर्लज कौन है ? संत धनुर्दास का पूरा-पूरा परिचय पाकर कहा कि इस पहलवान धनुर्दास को कहो कि आज मुझे तीसरे पहर मठ में मिले-शिष्यों ने जाकर संत रामानन्द का आदेश दे दिया था-जब धनुर्दास ने यह आदेश सुना तो सन्न रह गया था-संत धनुर्दास समझ गया कि स्वामी रामानुज जी अवश्य मेरी निर्लजता पर मुझे बुरा भला कहेंगे-संत रामानुज ने कहा था कि अकेला आना और

अकेले में मिलना–अतः वह अकेला आया था–इधर संत रामानुज ने मन्दिर में जाकर श्री रंग नाथ जी से प्रार्थना की कि हे दयामय स्वामी ! आप एक विमुख जीव को अपना सौन्दर्य से आकर्षित करके श्री चरणों में स्वीकार करें–अब जब संत धनुर्दास मठ में आया तब संत रामानुज ने उसके इस निर्लज व्यवहार का कारण पूछा तो संत धनुर्दास ने कहा कि महाराज में तो केवल इसके सौन्दर्य पर पागल हो गया हूं—

उसे देखे बिना मैं जी नहीं सकता हूं, मुझ में काम वासना नहीं है–मैं उसे देखे बिना बेचैन हो जाता हूं–अब आप मुझे जो आदेश दें वही करूंगा परन्तु इसका रूप देखना मैं नहीं छोड़ सकता–अब सन्त रामानुज ने कहा कि यदि हम इससे बहुत अधिक सुन्दर मुख आप को दिखा दें तो क्या आप पुःन इसका मुख देखना छोड़ सकते हो, परन्तु इस वेश्या को अपनी पत्नी बनाना पड़ेगा–संत धनुर्दास ने स्वीकार कर लिया था—

संत रामानुज ने कहा कि रात्री की आरती में आकर मुझ से मिलना–जब संध्या समय संत धनुर्दास मन्दिर में आया तब सबके चले जाने पर सन्त रामानुज ने भगवान से प्रार्थना की–अब सन्त धनुर्दास को भगवान श्री रंग जी ने अपना सौन्दर्य दिखाया था–जिसे देखकर संत धनुर्दास बेहोश होकर गिर गया—संत धनुर्दास उस सौन्दर्य को देख कर अब उसी भगवान के ध्यान में मुग्ध रहता था—संत रामानुज के आदेश के अनुसार उस वेश्या को स्त्री में धारण कर लिया था अब सारा दिन रात भगवान के सौन्दर्य का ही चिन्तन करता रहता था अतः पूर्ण भगवान का भक्त बन गया था–अतः संत

रामानुज का शिष्य बन गया था–संत रामानुज जब कावेरी नदी पर स्नान करने जाते थे तो ब्राह्मण शिष्यों के कन्धे पर हाथ रखकर जाते थे और जब स्नान करके वापस मठ पर आते थे तो सन्त धनुर्दास के कन्धे पर हाथ रखकर आते थे–यह देखकर ब्राह्मण शिष्य बहुत कुढ़ते थे–एक दिन उन शिष्यों ने कहा कि गुरुदेव आप स्नान करने के बाद क्यों उसे छूते हैं ? तब संत रामानुज ने कहा कि सन्त धनुर्दास का आचरण बहुत उत्तम है–तब सन्त रामानुज ने शिष्यों का गर्व दूर करने के लिए एक रात अपने विश्वस्त शिष्य से कहा कि इन ब्राह्मण शिष्यों के कपड़ो में से एक-एक कपड़े का टुकड़ा फाड़ कर मेरे पास गुप्त रीति से ले आओ–

सवेरे जब कपड़े फटे देखें तो परस्पर एक दूसरे से झगड़ने लगे थे–सन्त रामानुज ने उन्हें नये कपड़े देकर शान्त किया था–फिर एक दिन सन्त रामानुज ने अपने शिष्यों को कहा कि आज सन्त धनुर्दास को यहां सत्सङ्ग में सारी रात रोक रखें और कुछ शिष्य जाकर संत धनुर्दास की पत्नी के हेमाम्बा के गहने चुरा लावे–स्त्री हेमाम्बा ने द्वार तो खुला रखा था कारण सन्त धनुर्दास ने आना था–तब वह शिष्य उस के घर में जाकर चुपके से सोती हुई के गहने उतारने लगे थे–

अब हेमाम्बा भी पूर्ण ईश्वर की भक्त बन गई थी–उसका भी संसार व धन सम्पत्ति से मोह नहीं रहा था–उसने देखा कि इन चोरों को धन चाहिए-इस भावना से एक तरफ के गहने उतर जाने के बाद उसने दूसरी ओर करवट बदल ली थी ताकि गहने उतार लें–परन्तु चोर समझ गये कि यह जाग गई है, अतः संत धनर्दास सत्सङ्ग खत्म होने पर घर गया तो

पीछे से संत रामानुज ने भी अपने शिष्यों को कहा कि चुपके से इसके घर जाकर सुनो कि यह दोनों क्या क्या बात करते हैं–संत धनुर्दास ने घर जाकर जब बात सुनी तो बहुत दुखी हुए–संत धनुर्दास ने पत्नी से कहा कि अभी तक तुम्हारी धन दौलत की लालच गयी नहीं है–तुमने गहनों के लालच में आकर करवट बदल कर चोरों को चौंका दिया है –

तब पत्नी ने कहा कि मुझे धन दौलत का लालच नहीं था–उसने हाथ जोड़ कर कहा कि मेरी भावना थी कि दूसरी तरफ से भी गहने उतार लें,दुर्भाग्य से वे भाग गये थे–भविष्य में मैं ऐसा नहीं करूंगी – यह बात सुनकर शिष्यों ने सन्त रामानुज को आकर सर्व बात कहीं —दूसरे दिन सन्त रामानुज ने वह फटे कपड़े निकाल कर ब्राह्मण शिष्यों को दिखाते हुए कहा कि आप लोगों को तो इतने से कपड़े में भी मोह है—सन्त धनुर्दास व उस की पत्नी तो सच्चे वैष्णव भक्त हैं–उन्हें गहनों तक का भी मोह नहीं है–अतः इसलिए मैं स्नान करने के बाद उस संत धनुर्दास के कन्धे का सहारा लेता हूं –

अब सर्व ब्राह्मण शिष्यों का गर्व चूर चूर हो गया था, संत रामानुज ने सन्त धनुर्दास को बुला कर सर्व गहने दे दिए थे और सारी बात भी समझा दी थी–तब दोनों धनुर्दास और हेमाम्बा सर्वदा के लिए संत रामानुज की सेवा में रह गये थे—

॥ इति श्री ॥

संत दामा जी पंथ

संत दामाजी पंथ के ऊपर गोवल-कुन्डा बेदरशाही राज्य का मंगल बेड़या प्रान्त का शासन भार था-संत दामाजी पंथ वहां का सूबेदार था-महाराष्ट्र का बादशाह मुसलमान था-महाराट्र में एक बार महा भयंकर अकाल पड़ा था-अन्न के अभाव से हजारों मनुष्य तड़प-तड़प कर मर गये थे-इतने तक कि वृक्षों के पत्ते और छाल तक भी समाप्त हो गए थे-कष्ट की कोई सीमा नहीं रही थी-भूखों के आर्त-नाद से दिन-रात हाहाकार हो रहा था-सूबेदार संत दामाजी पंत और उनकी स्त्री दोनों भगवान के अनन्य भक्त थे-पाण्डुरंग के चिन्तन में उनका चित्त लगा रहता था-श्री हरि का स्मरण करते हुए निष्काम भाव से कर्त्तव्य कर्म करते रहते थे-दीन-दुःखियों की हर प्रकार की सेवा सहायता करते रहते थे-संत दामाजी पंत अपनी अकाल पीड़ित प्रजा का करुणा-क्रन्दन सहन न कर सके थे-

अब जो राज्य का अन्न भण्डार भरा पड़ा था उसके ताले खोल दिये गये थे-भूख से व्याकुल हजारों मनुष्य अन्न ले गये थे-पुन; दामाजी पंथ के सहायक नायब सूबेदार ने यह अवसर देखकर एक पत्र बादशाह को लिख दिया कि सूबेदार संत दामाजी पंत ने सारा अन्न लुच्चे-लफंगों को लुटवा दिया है नायब सूबेदार का पत्र पाकर बादशाह क्रोध से आग बबूला हो गया था-

उसने अपने सेनापति को आदेश दिया कि एक हजार सेना ले जाकर सूबेदार संत दामाजी पंत को मंगल बेड़या लगा कर गिरफ्तार करके ले आओ–सेनापति जब वहां गया तो उस समय संत दामाजी पंत श्री पाण्डुरंग की पूजा में लग रहे थे–सेनापति जब संत दामाजी पंत को जोर जोर से पुकारने लगा तब उसकी पत्नी ने बाहर आकर कहा कि संत दामाजी पंत पूजा-पाठ में बैठे हैं और नित्य कर्म कर रहे है–अतः निः-वर्त होने पर बाहर आ जायेगें–संत दामाजी पंत समझ गये कि बादशाह का अन्न भण्डार भूखों को लुटा देने पर से उन्होंने मेरी गिरफ्तारी का आदेश दिया होगा–

संत दामाजी पंत अपनी पूजा पाठ करके बाहर आये तो सेनापति ने कहा कि आपको गिरफ्तार करने के लिए मैं आया हूं–तब सन्त जी ने अपनी पत्नी को कहा कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं है–मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है–बादशाह जो भी कठोर दण्ड देगा सो मैं सहन करने को तैयार हूं–भगवान पाण्डुरंग का प्रत्येक विधान दया से पूर्ण होता है–जीवों के मंगल के लिए ही मैंने अन्न भण्डार लुटवाया है–सन्त दामाजी पंत पत्नी को समझा कर सेनापति के साथ चल पड़े–सेनापति ने सन्त को हथकड़ी डाल दी थी–सन्त दामा जी पंथ पाण्डुरंग विट्ठल जी की भक्ति करते हुए जा रहे थे–गोवल कुण्डा के मार्ग में ही पण्डरपुर पड़ता था–सन्त दामाजी पंत की इच्छा भगवान के दर्शन करने को हुई थी सो सेनापति ने स्वीकृति दे दी थी–

सन्त दामाजी पंत ने मन्दिर में जाकर भगवान के दर्शन किये, भगवान का कीर्तन किया, भगवान की स्तुति करके

बाहर आ गये थे—सेनापति उन्हें हथकड़ी डालकर ले जा रहा था—उधर वेदर का बादशाह संत की प्रतीक्षा कर रहे थे—इतने में एक काले रंग का किशोर अवस्था का एक ग्रामीण पुरुष हाथ में छोटी सी लकड़ी की बनी बंसी लिए, कन्धे पर काला कम्बल डाले निर्भयता पूर्वक दरबार में चला आया-उसने जो आ करके कहा—बादशाह सलामत। यह चाकर मंगल वेड़या से अपने स्वामी सन्त दामाजी पंत के पास से आ रहा है-सन्त दामाजी पंत का नाम सुनते ही बादशाह ने उतेजित हो कर पूछा क्या नाम है तेरा? उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम तो विट्ठू चमार है-बादशाह ने जब विटठू चमार का अदभुत सुन्दर रूप देखा तो मुग्ध हो गया था-उसने ऐसा रूप नहीं देखा था—

बादशाह एक टक उसे देखता ही रहा-विटठू चमार को देखते ही बादशाह का क्रोध दूर हो गया था-बादशाह ने कहा आप यहां क्यों आये हो? उस ग्रामीण विटठू चमार ने कहा कि सरकार! अपराध क्षमा हो-अकाल में आपकी प्यारी प्रजा भूखी मर रही थी-मेरे स्वामी सन्त दामाजी पंत ने आपके कोठार का गल्ला उन्ही को प्राण रक्षा के लिए बाँट दिया है—मैं उस अनाज का मूल्य देने आया हूं—आप कृपा करके पूरा मूल्य ले लीजिए और मुझे रसीद दे दीजिये—बादशाह यह वितान्त सुनकर हेरान रह गया था तथा मन ही मन पश्चाताप करने लगा था—मैंने सन्त दामाजी पंत जैसे सच्चे सेवक पर बिना समझे बेईमानी का दोष लगाया और उसे गिरफ्तार करने के लिए सेनापति के साथ फौज भेज दी—यह मन में सोच ही रहा था परन्तु चाकर विटठ को देखता ही रहा था—

पुनः नौकर विठ्ठू ने एक छोटी सी थैली निकालकर सामने रख दी और बोला सरकार मुझे देर हो रही है आप यह रकम जमा करके रसीद मुझे दे दें—बादशाह की नजर उस विटठू से एक पल के लिए भी नहीं हटी थी, वह तो उसे देखता ही रहा था—पुनःजब खजांची ने थैली से रुपये निकाले वह रुपये निकालता गया परन्तु थैली चूं की तूं भरी रही-यह चमत्कार देखकर वह हैरान रह गया था—

खजांची ने अपनी पूरी रकम लेकर रसीद काट दी—विटठू रसीद लेकर बादशाह के पास आया-बादशाह ने शाही मुहर लगाकर अपने हस्ताक्षर करके रसीद उसे दे दी थी-अब बादशाह ने दीवान को आज्ञा दी कि तुम शीघ्रतापूर्वक जाकर सेनापति को कहो कि सन्त दामाजी पंत को कैदी न मानकर उसे बड़े आदर सम्मान के साथ सवारी पर ले आओ-इधर सन्त श्री पण्ढरपुर से आगे चले आये थे—एक दिन प्रातःकाल जब गीता का अध्यायन करने लगे तो उस में से एक रसीद निकली जिस पर बादशाह के हस्ताक्षर तथा शाही मुहर लगी हुई थी मिली—यह देख कर सन्त दामा पंत जी समझ गये कि यह कार्य भगवान श्री विटल नाथ जी का है-अब सन्त को सवारी पर बैठारकर ले जा रहे थे-इधर बादशाह की विचित्र दशा हो रही थी, वह विटठू के जाते ही उसके दर्शनों के लिए पागल हो रहा था—

उसने हर तरफ घोड़े दौड़ाये कि विट्ठू को रास्ते में से ही पकड़ कर ले आओ—परन्तु वह अन्तरध्यान हो गये थे—वह कहाँ मिलने लगे थे-सब घोड़े सवार निराश होकर आ गये थे-फिर बादशाह की व्याकुलता की सीमा नहीं रही थी-वह

बार बार कह रहा है कहां है विटठू कहां है विटठ् ? अब संत दामा जी पंत के आने पर बादशाह उनके गले से लिपट गया और बड़े कातुर स्वर में कह रहा था—कि संत दामाजो पंत जल्दी बताओं कहां है वह आपका नौकर विटठू—उसके देखे बिना मेरे प्राण निकले जा रहे हैं—ऐ संत दामा जी पन्त ! मैं उस विटठू के देखे बिना मैं अभी मर जाऊंगा देर मत करो शीघ्र बताओ वह कहाँ है ? संत दामाजी पंत बादशाह की दशा देखकर बोला कि हजूर ! कौन विटठू ? बादशाह ने कहा कि आप छिपाओ मत ! हाथ जोड़ता हूँ—अपने उस नौकर चमार को जल्दी दिखादो वही सांवरा सांवरा लंगोटी लगाये हाथ में बंसी लिए तुम्हारे पास से रुपये लेकर आने वाला वह विटठू कहाँ है ? मुझे वह जल्दी दिखाओ—

अब सन्त दामाजी पन्त भी समझ गए थे कि रहस्य क्या है—स्वयं सन्त दामापंत जी रोते रोते बोले कि बादशाह आप धन्य हैं ! आपने उस त्रिभुवन के स्वामी के दर्शन कर लिए हैं—मुझ अभागे के लिए सर्वेश्वर एक दरिद्र चमार बने और एक सामान्य मनुष्य का अभिवादन करने आये—नाथ ! मैंने जिस का अन्न लुटवाया था वह मेरे प्राण लेने के अतिरिक्त और क्या कर सकता था—हे दयामय ! परमात्मा ! आपने इतना कष्ट क्यों किया ? अब सन्त दामाजी पंत उन्मुक्त हो कर पाण्डरंग ! पाण्डुरंग ! पुकारते हुए मूर्छित हो गये थे—भक्त वत्सल भगवान ने प्रकट होकर उन्हें उठाया—संत दामा जी पंत और बादशाह दोनों ने परमेश्वर के दर्शन किये—संत दामाजी पंत के चमत्कार से दोनों ने दर्शन किये और कृतार्थ हो गये थे—धन्य हैं ऐसे संत जो अपने चमत्कार द्वारा दूसरे को भगवान का दर्शन करा सकते हैं—

॥ इति श्री ॥

संत कण्णप्प

संत कण्णप्प के पिता का नाम नाग था और माता का नाम तत्ता था—संत कण्णप्प का पिता एक शिकारी जाति का सरदार था—उसका काम हत्या करना था—नाग पिता धनुष-बाण चलाने में अत्यन्त चतुर था–वह अपने बाणों की नोंक पर विष लगाता था–उसकी पत्नी तभी सिंहनी के समान डरावनी रूप वाली थी, तथा शङ्खों और शेर के दांतो की बनी हुई माला पहनती थी—उसके पुत्र का नाम तिण्ण था—त्रिण्ण का अर्थ झाड़ी है अतः वह झाड़ी था–वैसे उस का नाम कण्णप्प था—जब संत कण्णप्प सोलह वर्ष का हुआ तो वह भी धनुष-बाण, भाला तोमर और अन्य अस्त्र-शस्त्र को चलाने में निपुण हो गया था—

अपने पिता के बाद यही शिकारी जाति का सरदार बना था–एक दिन सन्त कण्णप्प सूअर का शिकार कर आया-दो नौकर उसे उठाकर ले आ रहे थे मार्ग में सन्त कण्णप्प को जोर से भूख लगी–त्रिण्ण (कण्णप्प) ने पूछा–यहां मीठा पानी मिलेगा ? नौकर ने कहा कि उस शाल वृक्ष के पार एक पहाड़ी है. उसके नीचे सुवर्ण नदी बहती है—त्रिण्ण ने कहा चलो वहीं चलें–वहां पहाड़ी के शिखर पर एक भगवान जटाजूट धारी शिव की मूर्ति थी और शिवलिङ्ग भी था–एक सुन्दर मन्दिर भी था–अब त्रिण्ण ने उस मूर्ति को प्रेमालिङ्गन में बांध लिया था—क्यों कि उस मूर्ति को देखते ही वे देव प्रतिमा पर भाव–

भक्ति के साथ सन्त तिणण ने उसे प्रेमालिङ्ग में बांध लिया था तथा मुग्ध हो गये थे। अब उसके आनन्द को सीमा पार कर गई थी। उसकी आंखों से प्रेम की अश्रु धारा बहने लगी थी।

संत त्रिणण कहने लगे प्यारे भगवान ! क्या तुम यहाँ अकेले ही इस घने जंगल में रहते हो ? क्या तुम्हें जंगली जन्तु से डर नहीं लगता ?—मेरे प्यारे भगवान क्या यहाँ पर तुम्हारा कोई मित्र भी नहीं है ? संत त्रिणण का भक्ति से हृदय गद्-गद् हो गया था।

उसकी इस प्रेम की समाधिस्थ अवस्था में धनुष भी गिर गया था, उस ने देखा कि मूर्ति के मस्तिक पर कुछ हरे पत्ते, जंगली फूल और शीतल जल चढ़ा पड़ा है यह देखकर संत त्रिणण बहुत दुःखी हुआ—कहने लगा कि किसी मूर्ख ने मेरे स्वामी के सिर पर यह वस्तु रखी है।

नौकर ने कहा कि एक ब्राह्मण आता है वह यह सर्व वस्तुयें भगवान के सिर पर रखता है।

संत त्रिणण को पूजा करने की प्रबल इच्छा थी, परन्तु पूजा की विधि नहीं जानता था।

संत त्रिणण ने सोचा कि मैं अपने भगवान को जो भूखे है मांस लाकर खिलाऊं। मेरे भगवान को भूख लगी होगी। यह विचार के वह मन्दिर से चल पड़ा।

अब दोनों नौकरों को संत त्रिणण की बात अच्छी नहीं लगी कि भगवान मांस का भोग लगायेगा।

अब संत त्रिण्ण पका हुआ मांस मुख में डालकर देखता था कि ठीक बना है कि नहीं ? वह अपने देवता के लिये अच्छा-अच्छा मांस चखकर एक पत्ते पर रखकर ले चला और अभिषेक के लिये अपने मुख में ताजा जल भर लिया था, क्योंकि उसके पास बरतन नहीं था, और चढ़ाने के लिये अपने बालों में जंगली सुगन्धित फुल ठूंस लेता था—संत त्रिण्ण एक हाथ में मांस और दूसरे हाथ में धनुष-बाण लिये जूते पहने मन्दिर में पहुंच गया—भगवान के सिर पर जो फूल, पत्ते पड़े थे पैरों से हटा दिये थे—अब संत त्रिण्ण ने मांस देवता के आगे रख दिया और अभिषेक के लिये ऊपर से कुल्ला कर दिया और आग्रह करने लगा कि देवता भोग करो।

अब पूजा करते समय जब संत त्रिण्ण को देर हो गई तब उसने सोचा कि मैं भगवान को अकेला कैसे छोड़कर जा सकता हूं।

अतः उसने सारी रात धनुष-बाण लेकर पहरा दिया था—प्रातः होने पर पुनः वह भगवान के भोग के लिये मांस लेने चला।

अब जब ब्राह्मण पुजारी ने आकर देखा कि भगवान के आगे मांस हाड़ादि पड़े हैं। वह देखकर विलाप करने लगा। किसी जंगली शिकारी ने मन्दिर को भ्रष्ट कर दिया है उसने मन्दिर को साफ किया पुनः स्नान करके पूजा करके चला गया।

इधर संत त्रिण्ण ने कई पशु मार कर मांस पकाया और चख-चख कर चुन-चुन कर अच्छा-अच्छा मांस एक पत्ते

पर रखा। आज उसने मांस पर मधु डाल दी थी। मुख में पानी भरकर, बालों में फूल ठोंस कर और धनुष-बाण लेकर मन्दिर में आया। उसने आकर भगवान के मस्तिक पर से फूल-पत्तादि हटाकर मांस भगवान के आगे रखा और कहा कि मेरे देवता आज मैं मधु डालकर ले आया हूं। मुख से पानी डालकर अभिषेक किया। ऐसे वह संत त्रिणण भगवान का प्रेम वश पांच दिन तक करता रहा और रात भर जागकर पहरा देता रहा था।

जब ही त्रिणण चला जाता था तब ही ब्राह्मण पुजारी आकर मन्दिर शुद्ध करता था। पुनः पूजा करके जाता था। एक दिन पुजारी ने भगवान के आगे हार्दिक हृदय से प्रार्थना की कोई मन्दिर को भ्रष्ट कर रहा है।

तब भगवान ने स्वप्न में पुजारी को कहा कि तुम मेरे इस प्रिय शिकारी भक्त को नहीं जानते—वह केवल मेरे में अति प्रेम करता है अतः मुझे प्रसन्न करने के लिये यह सर्व कुछ करता है। संत त्रिणण जो कुछ भी करता है अति भोलेपन में व अति प्रेम वश ही करता है। उसको पूजा की विधि नहीं आती परन्तु मेरा अति प्रेमी भक्त है। अतः तुम उसे जो कुछ करता है करने दो।

यह भगवान का आदेश मानकर पुजारी चुप रह गया था। अब पुजारी छिपकर देखने लगा कि यह संत त्रिणण शिकारी भक्त क्या-क्या करता है।

अब जब संत त्रिणण मन्दिर में आया तो क्या देखता है कि भगवान की दाहिनी आंख से खून की धारा बह रही है।

संत त्रिण्ण यह देखकर रोने लगा कि हाये यह क्या हो गया, आज देवता की आंख से खून बह रहा है।

संत त्रिण्ण ने धनुष-बाण उठाया और देखने लगा कि जिसने ऐसा काम किया हो मैं उसे मार कर दम लूंगा। इधर-उधर देखा वहां तो कोई भी नहीं था।

पुनः संत त्रिण्ण जंगल में जा कर कुछ जड़ी-बूटियां ले आया। उन का स्वरस निकाल कर आंख में डाला परन्तु खून निकलना बन्द नहीं हुआ था। अब उसने सोचा कि मांस का रोग मांस से ही अच्छा होता है। यह विचार करके उसने एक तेज बाण की नोक से अपनी दाहिनी आंख निकाली और भगवान की आंख पर रखकर धीरे-धीरे दबा दी। ऐसा करने पर भगवान की आंख से खून निकलना बन्द हो गया था।

सन्त त्रिण्ण यह देख कर आनन्द से नाच उठा था। खूब प्रसन्न हुआ।

सन्त त्रिण्ण ने इतने में देखा कि भगवान की बांयी आंख से खून बहने लग गया है। यह देखकर उसे फिर घबराहट हुई कि अब क्या किया जाये।

वह इस चिन्ता में था कि उसे एकदम विचार आया कि मेरी भी तो बांयी आंख है। मैं क्यों न अपनी दूसरी आंख निकाल कर भगवान की आंख में डाल दूं। यह विचार कर कि जब मैं अपनी दूसरी आंख भी निकालूंगा तो मैं तो अन्धा हो जाऊंगा, पुनः मैं कैसे भगवान की आंख में मैं अपनी आंख डाल सकूंगा। अब उसने भगवान की बांयी आंख पर अपना

पैर रख दिया ताकि पता लग जावे कि भगवान की आँख यहां है। यहां मुझे अपनी बांयी आंख डालनी है।

यह सोचकर उसने जब बाण की नोक अपनी बाँयी आंख पर लगाई तब संत का यह त्याग देखकर देवता भी फूल बरसाने लगे थे।

अब स्वयं भगवान ने सन्त त्रिणण का हाथ पकड़ कर रोक लिया था।

यह सर्व कुछ पुजारी छिपकर देख रहा था। भगवान ने कहा कि ठहरो मेरे सन्त कण्णप्प—तुम त्याग और प्रेम की मूर्ति हो अतः अब मैं सर्वदा आप के पास रहूंगा।

सन्त कण्णप्प का वह चमत्कार देखकर पुजारी चकित रह गया था। पुजारी समझ गया था कि संत कण्णप्प की सच्ची और सीधी-सादी प्रेम भरी भगवान की भक्ति है। इसीलिये कहा गया है कि

"भोले-भाव मिले रघूराई।"

इति श्री

संत जनाबाई

संत जनाबाई प्रसिद्ध संत नाम देव जी की नौकरानी थी–सन्त नाम देव के घर का काम करती थी–घर में झाड़ु करना–बरतन माँजना–जल भरना–कपड़े धोना एवं सर्व घर के काम करना यही उसका कार्य था–संत जनाबाई घर में, आने वाले अतिथि एवं सर्व भक्तों की सेवा भी करती थी–घर में सत्सङ्ग होता था–उस समय सन्त जनाबाई भी सत्सङ्ग में भगवान का उच्चारण करती रहती थी–

संत जनाबाई का ज्यों ज्यों नाम स्मरण बढ़ता गया त्यों-त्यों उसका अन्त: करण शुद्ध होता गया था–एक बार संत नाम देव के घर भक्तों की मण्डली एकत्रित हुई थी–रात्री का जागरण हो रहा था–नाम कीर्तन और भजन में सभी मस्त हो रहे थे–कोई तो कीर्तन कर रहा था–कोई मृदङ्ग बजा रहा था–कोई कर ताल व झांझ बजा रहा था–किसी को अपने तन मन की सुध नहीं थी–सब मस्त हो रहे थे किसी को यह ज्ञान नहीं कि कितनी रात गई है–संत जनाबाई भी एक तरफ बैठी प्रेम में झूम झूम कर सत्सङ्ग व जागरण का आनन्द में मस्त हो रही थी—

उसे पता नहीं लगा कि रात इतनी जल्दी खत्म हो गई है–अब ऊषाकाल का समय था सब भक्त जन अपने अपने घरों को जाने लगे तब संत जनाबाई को ज्ञान हुआ कि अब तो दिन हो गया है–संत जनाबाई घबराकर अपने घर आई और थोड़ी देर के लिए सो गई–परन्तु सूर्य उदय हो गया है देख कर

वह जल्दी से उठी व घबराई कि मुझे आज मालिक के घर जाने में बहुत देरी हो गयी है-अब मालिक के घर में झाड़ू-बरतन माँझने में बड़ी कठिनाई होगी-अतः वह हाथ-मुंह धो कर मालिक के घर आ गई थी-संत जनाबाई घबरा कर जल्दी जल्दी काम करने लगी थी-परन्तु घबराहट से काम न ठीक होता था न पूरा दूसरा एक काम में विलम्ब हो जाता है तो सारे काम में बिलम्ब हो जाता है-संत जनाबाई कुछ काम कर जल्दी कपड़े लेकर धोने के लिए चन्द्रभागा नदी पर गई—

कपड़े धोने के लिए नदी के तट पर जा रही थी उसे कोई काम याद आ गया था, जो इसी समय न होने पर मालिक संत नाम देव को बड़ा कष्ट होता-अतएव वह नदी से तुरन्त घर आई-रास्ते में अकस्मात एक अपरिचित वृद्ध स्त्री ने प्रेम से पल्ला यों पकड़ कर कहा कि बाई जी घबराई हुई क्यों दौड़ रही हो? ऐसा क्या काम है? जनाबाई ने अपना काम उसे बता दिया-उस वृद्ध स्त्री ने कहा घबराओ नहीं! तुम घर से काम कर आओ, तब तक मैं तुम्हारे कपड़े धो देती हूं-संत जनाबाई ने कहा नहीं माँ! तुम मेरे लिए कष्ट न उठाओ, मैं अभी लौट आती हूं—

वृद्ध स्त्री ने कहा मुझे इसमें कोई भी कष्ट नहीं होगा, मेरे लिए कोई काम करना बहुत आसान है-मैं सदा सभी प्रकार के काम करती रहती हूं, इसमें मुझे अभ्यास है-यदि इस पर भी तुम्हारा मन न माने तो कभी तुम भी मेरे काम में अपना हाथ बंटा देना-संत जनाबाई को घर पहुंचने की जल्दी थी-अतः वह कुछ न बोल कर चली गई थी-उसे क्या

पता था कि यह वृद्ध स्त्री स्वयं भगवान नारायण ही हैं–वृद्ध स्त्रीं ने सर्व कपड़े धोकर साफ कर दिए थे–थोड़ी देर बाद संत जनाबाई लौट कर आई और धुले कपड़े देखकर हृदय में बहुत प्रसन्न हुई–

संत जनाबाई ने कहा कि माता आज तुम्हें बड़ा कष्ट हुआ, तुम सरीखी परोपकारिणी मातायें ईश्वर स्वरूप होती हैं–वृद्ध स्त्री ने मुस्कराते हुए कहा, संत जनाबाई मुझे तो कोई कष्ट नहीं हुआ, काम ही कौन सा बड़ा था–लो अपने कपड़े लो अब मैं जाती हूं–सन्त जनाबाई के मन में आया कि मैंने न तो वृद्ध स्त्री का नाम पूछा है और न कहीं उसका ठिकाना यह सोच कर उसे तलाश करने लगी–

इधर उधर हर तरफ दौड़-दौड़ कर उसे तलाश करने लगी परन्तु वह तो अन्तरध्यान हो गयी थी–अब जब वह वृद्ध स्त्री कहीं नहीं मिली तो निराश हो कर कपड़े उठाकर घर चली गयी थी–अब सत्सङ्ग का समय था–सन्त मण्डली एकत्रित हो रही थी, कि सन्त जनाबाई ने अपने मालिक सन्त नामदेव को नदी की सारी घटना सुनाई–सन्त नामदेव ने सारी बात सुनकर सन्त जनाबाई को कहा कि तुम धन्य हो, तुम बड़ी बड़ भागनी हो, भगवान ने तुझ पर बड़ी कृपा की है–वह कोई साधारण बुढिया नहीं थी मेरे विचार में वह साक्षात नारायण ही थे–

जो तेरे प्रेम वश बिना बुलाये तेरे काम में हाथ बटाने आ गये थे–यह बात सुनते ही सन्त जनाबाई प्रेम से रोने लगी कहने लगी कि मैंने भगवान को कष्ट दिया कह कर अपने

को कोसने लगी–सारा सन्त समाज आनन्द से पुलकित हो गया था–कहा जाता है कि भगवान ने सन्त जनाबाई को कई बार दर्शन दिया था–एक दिन सन्त जनाबाई चक्की चला रही थी और प्रेम वश भगवान के अभंग गा रही थी–जब वह अति प्रेम में आकर चक्की चलाना भूल गई थी–उस समय भगवान नारायण स्त्री के रूप में सन्त जनाबाई के साथ जो चक्की चलाते रहे और वह अभंग भी गाते रहे थे–जब उसे सुध आई तो वह देखकर दङ्ग रह गयी थी–यह उसका चमत्कार था–

इति श्री

संत शाह अब्दुल लतीफ

संत शाह अब्दुल लतीफ के पिता का नाम सैयद था–इसका जन्म सन् 1689 में सिन्ध के हाला गांव में हुआ था–परन्तु कारण वश गांव हाला को छोड़ कर आप कोटड़ी में आ बसे थे–वचपन में आपको मौलवी नूर मुहम्मद के पास पढ़ने के लिए भेजा था–संत लतीफ ने फारसी की वर्ण माला अलिफ-वे से पढ़ना शुरु किया–संत लतीफ ने कहा कि अलिफ ईश्वर के नाम के साथ जुड़ा हुआ है, इस लिए मैं तो इसको सीखूंगा, एवं बार बार इसी को पढ़ूंगा–सन्त लतीफ वड़े दार्शनिक, तत्व ज्ञानी और परमात्मा के प्रेमी थे–आपके हिन्दू और मुसलमान दोनों शिष्य थे–एक बार एक मुसलमान शिष्य ने आप

से पूछा कि आपके शिष्य हिन्दू और मुसलमान में से कौन बड़े हैं और कौन छोटे हैं–सन्त ने जवाब दिया कि मेरे एक हाथ में जमीन की धूली है और दूसरे हाथ में धूनी की राख है–आप कहो इसमें बड़ी कौन है या छोटी कौन है–शिष्य ने कहा कि इसमें बड़ी छोटी कोई नहीं है–

तब सन्त शाह अब्दुल लतीफ ने कहा कि प्रभू के बनाए सभी जीव एक समान हैं न कोई छोटा है न कोई बड़ा है–भेद केवल मनुष्या कृत है–दूसरा एक बार सन्त लतीफ के विरोधियों ने एक वेश्या से कहा कि तू यदि शाह साहब को क्रोधित करा देगी तो हम तुम को पचास रुपये देंगे–लालच में आकर वेश्या ने स्वीकार कर लिया था—

एक बार सन्त उसे मार्ग में मिले, तब उस वेश्या ने सन्त लतीफ को भोजन का निमन्त्रण दिया–सन्त की दृष्टि में तो सब जीव एक समान हैं अतः उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया था–

घर आकर वेश्या ने एक मिट्टी के बरतन में थोड़ा ज्वार का आटा दो या तीन सेर नमक और कोई पन्द्रह बीस सेर पानी मिलाकर चूल्हे पर चढ़ा दिया–जब निश्चित समय पर शाह लतीफ भोजन करने के लिए आये–उस समय उस वेश्या ने गाली देना शुरू कर दिया–

सन्त लतीफ के कपड़े भी फाड़ दिए, और मारने भी लग गई–परन्तु सन्त शाह अब्दुल लतीफ किंचित मात्र भी क्रोध में नहीं आये–पुनः वेश्या घबरा गई कि हाय मेरी शर्त नष्ट हो गई–

ज्यों ज्यों वेश्या सन्त को अकारण दुःख दे रही थी, त्यों त्यों सन्त आनन्द में प्रभु को याद करते थे-सन्त को हंसता देख कर वेश्या अति क्रोधित हो गई एवं उसने जलती हुई राब का मटका उठाकर सन्त के सिर पर मार दिया-सन्त की चमड़ी भी उड़ गई थी एवं जल गए थे-

परन्तु सन्त तो बिल्कुल ही शान्त खड़े थे-उनको किंचित मात्र भी क्रोध नहीं आया था-बल्कि जमीन पर पड़ी राब भी सन्त लतीफ उठाकर खाने लग गये थे-यह आश्चर्य जनक चमत्कार देखकर वेश्या अति लज्जित हुई और उसकी आँखों में आंसू की धारा बहने लगी-अब वह सन्त से बार-बार क्षमा मांगने लगी-

परन्तु सन्त तो खुश थे और उन्होंने कहा कि मैया मेरी मां ने कभी ऐसी स्वादिष्ट राब कभी मुझे नहीं खिलाई थी-इससे तो मेरा पेट साफ हो गया है-इसमें क्षमा मांगने का कोई कारण ही नहीं तूने मेरा क्या बिगाड़ा है-जो मैं आपको क्षमा करू-ऐसी बात सुनकर वेश्या सन्त के पांव पड़ गयी और उनकी शिष्या बन गई थी-सन्त शाह अब्दुल लतीफ असंख्य जीवों को भक्ति के मार्ग पर लगाकर त्रेयसठ वर्ष की आयु में यानि सन् 1752 में ईश्वर के दरबार में ईश्वर से मिलने के लिए सिधार गये थे-

-इति श्री-

संत सुधन्वा

सुधन्वा के पिता का नाम राजा हंस ध्वज था। राजा हंस ध्वज का राज्य चम्पकपुरी में था। राजा हंस ध्वज के चार पुत्र और भी थे—(1) सुबल (2) सुरथ (3) सम (4) सुदर्शन—सबसे छोटे बेटे का नाम सुधन्वा था।

राजा हंस ध्वज बड़ा धर्मात्मा, प्रजापालक, शूरवीर एवं परमात्मा का भक्त था। उसके राज्य में प्रजा एक पत्नी व्रत थी। जो एक पत्नी व्रत न हो वह चाहे अति विद्वान हो या शूरवीर हो वह उसके राज्य में नहीं रह सकता था। पूरी प्रजा सदाचारी, भक्त एवं दान परायण थी।

तब एक बार राजा हंस ध्वज को विचार हुआ कि मैं अब वृद्ध हो गया हूं, पर अब तक भगवान कृष्ण के दर्शन तक नहीं किये हैं। अब पाण्डवों के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा आरहा है इस को रोक लेने से मैं युद्ध भूमि में जाकर श्री श्याम सुन्दर के दर्शन करूंगा।

अब राज्य में घोषणा हो गई कि जो व्यक्ति युद्ध रण क्षेत्र में ठीक समय पर उपस्थित नहीं होगा उसे गर्म तेल के कड़ाहे में डाल दिया जायेगा।

अब सन्त सुधन्वा अपनी माता से रण में जाने का आशीर्वाद लेकर अपनी पत्नी से भी मिलने गया।

पत्नी ने पति की पूजा की और प्रार्थना की कि आप के चले जाने पर एक पुत्र अञ्जली देने वाला तो अवश्य होना चाहिये। सन्त सुधन्वा ने पत्नी को पहले तो समझाया पर वह पतिव्रता न मानी। परन्तु अन्त में सन्त सुधन्वा ने पत्नी की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया।

पुनः स्नान एवं प्राणायाम करके सन्त युद्ध में रथ पर बैठकर चल पड़ा। उधर सर्व एकत्र हो गये थे। एक सन्त सुधन्वा ही नहीं आया था।

राजा ने अपनी प्रतिज्ञानुसार सन्त सुधन्वा को गर्म तेल के कड़ाहे में डाल देने की आज्ञा दे दी थी।

तब सन्त सुधन्वा ने गले में तुलसी की माला पहनी और परमात्मा से प्रार्थना की कि हे भगवान ! मैं मरने के लिये ही तो घर से चला था परन्तु मेरी प्रार्थना है कि मैं भगवान गोविन्द के चरणों में देह त्याग करूं प्रभु आप इस समय मेरी रक्षा करने के लिये अपना हाथ बढ़ा लो।

सन्त सुधन्वा के चमत्कार से परमात्मा ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। अब हरे कृष्णा हरे गोविन्द कहते-कहते सन्त सूधन्वा तेल के कडाहे में कूद पड़ा। सन्त के चमत्कार से तेल एक दम उस समय शीतल हो गया था। जब वह सन्त तेल के कड़ाहे से सही-सलामत निकल आया तो सर्व का संदेह हुआ कि तेल अति गर्म नहीं होगा।

तब एक वृक्ष के पत्तों को उस कड़ाहे में डाला गया तो सब पत्ते तिड़-तिड़ करके जल कर राख हो गये थे। दूसरा

जब एक नारियल डाला गया था जो चटख करके जल गया था। यह तो सन्त सुधन्वा का अद्भुत चमत्कार था कि उबलता तेल उसके लिये शीतल पड़ गया।

जब सन्त सुधन्वा कड़ाहे से बाहर आया तब राजा ने ने भी पुत्र का आदर किया और युद्ध करने को आज्ञा दी।

सन्त सुधन्वा का समाचार जब पाण्डव दल ने सुना तो उनमें खलबली मच गयी थी। अब युद्ध में वृषकेतु, प्रद्युम्न, कृतवर्मा, सात्यकि आदि वीरों को उस तेजस्वी सन्त सुधन्वा ने घायल करके पीछे हटने को विवश कर दिया था।

अन्त में वीर अर्जुन सामने आया। अर्जुन को अपनी शूरवीरता का दर्प भी था। परन्तु सन्त सुधन्वा तो भगवान कृष्ण के आसरे युद्ध कर रहे थे। सन्त को किञ्चित मात्र भी अभिमान नहीं था। पार्थ को अपने सामने एक बालक समान सन्त सुधन्वा को देखकर बड़ा आश्चर्य भी हुआ।

सन्त सुधन्वा ने कहा कि यह बात तो ठीक है कि आपके रथ पर सारथी रूप में स्वयं भगवान कृष्ण हो जाता है तब आपकी विजय निश्चित रूप से होती है। आज आपने उस समर्थ अपने सारथी को कहां छोड़ दिया ? आज आपके साथ युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण ने साथ तो छोड़ दिया है, आप मेरे साथ युद्ध कर भी सकोगे या नहीं ?

सन्त सुधन्वा की बातों से अर्जुन को बहुत क्रोध आया उन्होंने एकदम बाणों की वर्षा आरम्भ करदी। परन्तु हंसते-हंसते सन्त सुधन्वा ने अर्जुन के सर्व बाणकाट दिये थे।

अर्जुन ने दिव्यास्त्रों को भी सन्त सुधन्वा पर छोड़े पर सब व्यर्थ कर दिये गये थे। स्वयं पार्थ भी सन्त सुधन्वा के बाणों से घायल हो गया था। उनका जो आज सारथी था वह भी मरकर गिर गया था।

सन्त सुधन्वा ने पुनः हंस कर कहा कि हे धनञ्जय ! मैं तो पहले ही कहता था कि अपने सर्वज्ञ भगवान कृष्ण सारथी को छोड़कर आप ने अच्छा नहीं किया, आपका सारथी मारा गया आप स्वयं घायल हुए पड़े हो। अब भी शीघ्रता से अपने उस श्याम सुन्दर सारथी का स्मरण कीजिये।

अर्जुन ने बांये हाथ से घोड़ों की डोरी पकड़ी और दूसरे हाथ से युद्ध करने लगे थे। परन्तु मन ही मन में भगवान कृष्ण को पुकारने लगे थे। उनके स्मरण से भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हो गये थे। भगवान कृष्ण ने आते ही अर्जुन के हाथ से रश्मि ले ली थी।

सन्त सुधन्वा एवं अर्जुन ने भगवान को प्रणाम किया। सन्त सुधन्वा के नेत्र भगवान का दर्शन कर आनन्द से खिल उठे थे। जिस लिये सन्त सुधन्वा ने अर्जुन को रण में छकाया था वह कार्य अब पूरा हो गया था।

अब सन्त सुधन्वा ने अर्जुन से कहा कि अब तेरे सर्व समर्थ भगवान कृष्ण सारथि रूप में आ गये हैं। अब तू मुझे पर विजय पाने के लिये प्रतिज्ञा कर सकता है।

अर्जुन ने आवेश में आकर कहा कि अब मैं इन तीन बाणों को लेकर प्रतिज्ञा करता हूं यह भगवान कृष्ण साक्षी है

कि मैं तेरे को मार दूंगा। यदि न मार सका तो मेरे पूर्वज पुण्यहीन होकर नरक में गिरें।

इधर संत सुधन्वा ने भी घोर प्रतिज्ञा की कि यदि मैं यह तेरे तीनों बाणों को काट कर न फेंक दूं तो मुझे भी वीर गति प्राप्त न हो। यह भगवान साक्षी है। यह कह कर सन्त सुधन्वा ने अपने बाणों की वर्षा से भगवान कृष्ण को एवं अर्जुन को घायल कर दिया था। उनके रथ को तोड़ डाला और कुम्हार के चाक की भांति रथ को घुमाने लगा। तथा चार सौ हाथ रथ को पीछे हटा दिया था।

तब भगवान कृष्ण ने कहा कि हे पार्थ! यह सन्त सुधन्वा बहुत बांका वीर है। मुझ से पूछे बिना तूं ने ऐसी प्रतिज्ञा कर ली है सो ठीक नहीं किया। सन्त सुधन्वा एक पत्नीव्रत धारी है इसी के प्रताप से यह युद्ध कर रहा है।

अर्जुन ने कहा जब आप आ गये तब मुझे क्या चिंता है। मेरी प्रतिज्ञा आपको पूरी करनी है।

अब अर्जुन ने अपना पहला बाण जो कालाग्नि के समान था छोड़ दिया, परन्तु सन्त सुधन्वा ने उसे रास्ते में काट दिया था। यह देखकर देवता भी आश्चर्य में पड़ गये थे। अब अर्जुन ने अपना दूसरा बाण छोड़ा। सन्त सुधन्वा ने भगवान का नाम लेकर उसके दूसरे बाण के दो टुकड़े कर दिये थे। अब अर्जुन ने भगवान का नाम लेकर तीसरा बाण छोड़ दिया। इधर सन्त सुधन्वा ने भी भगवान का नाम लेकर अर्जुन के तीसरे बाण को काट दिया था।

परन्तु लीलाधारी भगवान कृष्ण ने ऐसी अद्भुत अपनी लीला दिखाई कि जिससे दोनों भक्तों की प्रतिज्ञा पूरी हो जावे और कार्य में सिद्धि भी प्राप्त हो जावे। भगवन की प्रेरणा से ऐसा हुआ कि तीसरे बाण के दो टुकडे हो गये परन्तु एक टुकडा तो पृथ्वी पर गिर गया दूसरा टूकडा सन्त सुधन्वा के मस्तिक पर जा लगा सो लगते ही सन्त सुधन्वा भगवान की शरण में चले गये थे। भगवान में संलग्न हो गये थे। यह थी भगवान की आश्चर्य जनक लीला जिससे दोनों भक्तों की प्रतिज्ञा पूरी हो गयी थी।

अब रण भूमि में हाहाकार मच गया कि सन्त सुधन्वा मर गया परन्तु उसकी प्रशंसा खूब हो रही थी। सन्त सुधन्वा का सिर कट कर भगवान के चरणों में जा पड़ा था। यह था सन्त सुधन्वा का चमत्कार।

इति श्री

संत चन्द्रहास

संत चन्द्रहास के पिता का नाम मेधावी था–उसका राज्य केरल देश में था–एक बार दूसरे शत्रु राजा ने उन पर चढ़ाई की–युद्ध में राजा मारा गया –उनकी रानी पति के साथ सती हो गई थी—उनका एक पुत्र संत चन्द्रहास था, जो अभी विल-

कुल शिशु अवस्था में था-अब उस को सम्भालने वाला पीछे कोई भी नहीं था-केवल ईश्वर का आसरा था-इसलिए उसके बारे में कहा गया है कि "जाको राखे साईयां, मार न सकि है कोय ! बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय !! उस शिशु को एक धाया अपने साथ, कुन्तलपुर ले आई—वहां पर मजदूरी करके अपना और राजकुमार का पालन-पोषण करती थी-राजकुमार इतना सुन्दर था कि सभी स्त्री-पुरुष ऐसे भोले बालक से स्नेह करते थे—अब तो अनाथ राजकुमार को केवल परमेश्वर का ही आसरा था-एक बार श्री नारद कुन्तलपुर आये उस बालक को एक शालग्राम की मूर्ति देकर "रामनाम" का मन्त्र बता गये थे—

ऐसे वह संत चन्द्रहास परमात्मा का भक्त बन गया था-जब संत चन्द्रहास परमात्मा के भजन में नाचता था तो उसे प्रत्यक्ष दिखता था कि एक बालक सांवरा सलोना हाथ में बंसी लिये उसके साथ भी नाच रहा है-कुन्तलपुर के राजा का कोई पुत्र नहीं था, केवल एक चम्पक मालिनी नाम की कन्या थी-राजा ने अपने गुरु महर्षि गालव के कहने पर उस बालक को अपना पुत्र बना लिया था—

परन्तु उसका मन्त्री धृष्ट बुद्धि अपने लड़के को राजा का पुत्र बनाना चाहता था-ताकि राजा के बाद मेरा बेटा ही राज गद्दी पर बैठे-वह नहीं चाहता था कि राजा इस अनाथ बालक को पुत्र बनावे-वह इस बात से मन ही मन में जलता था मन्त्री का एक मदन नाम का पुत्र था और एक विषया नाम की सुन्दर कन्या थी-एक बार राजा ने साधु-सन्तों को भोजन पर निमन्त्रण दिया था-संतों का भोजन हो रहा था एवं कथा

कीर्त्तन चल रहा था कि बाहर से संत चन्द्रहास बालकों से लड़ता-झगड़ता अन्दर आ गया था—

सबसे बड़े सन्त ने उस संत चन्द्रहास के माथे के चिन्ह देखकर कह दिया कि हे राजन ! यह बालक आपकी गद्दी पर बैठेगा—संतों के वाक्य कभी मिथ्या नहीं हो सकते हैं—राजा ने उस बालक को अपना पुत्र घोषित कर दिया था—अब मन्त्री यह देखकर जल-भुन गया था—मंत्री अपने पुत्र को राज गद्दी पर बैठाना चाहता था—अब कुछ दिनों के बाद मन्त्री उस संत चन्द्रहास को मरवाने की योजना बनाने लगा—

एक दिन मन्त्री ने एक बधिक को कहा कि तू इस चन्द्र हास को किसी प्रकार सुनसान जंगल में ले जाकर इसे मार देना और इसकी निशानी लाकर मुझे देना, मैं आपको बहुत धन दूंगा-बधिक ने स्वीकार कर लिया—

बधिक ने संत चन्द्रहास को जंगल में स्पष्ट कह दिया कि मैं तुम्हें मार डालने के लिए यहां लेकर आया हूं—संत चन्द्रहास ने कहा कि मुझे थोड़ी देर के लिए परमात्मा की प्रार्थना कर लेने दो पुनः मुझे मार डालना—उसने यह बात संत चन्द्रहास की स्वीकार कर ली थी—जब संत चन्द्रहास प्रार्थना कर चुका तो उसने बधिक से कहा कि आप मुझे मार डालें परन्तु सन्त चन्द्रहास का सुन्दर मुख देखकर और धर्म का पक्का देखकर उसने एक निरपराधी ईश्वर भक्त को मारना अस्वीकार कर लिया—

अब वधिक ने संत चन्द्रहास को कहा कि मुझे मन्त्री ने कहा था कि निशानी अवश्य ले आना—अब मैं यह तेरी छोटी

ऊंगली काट कर ले जाता हूं-संत चन्द्रहास ने अपनी अंगुली काट कर देदी थी- अब कुन्तलपुर के राज्य के अधीन एक छोटा राज्य चन्दनपुर का राजा घोड़े पर चढ़कर आ रहा था-राजा ने देखा संत चन्द्रहास जो अति सुन्दर था, पृथ्वी पर पड़ा है- अब उस राजा के भी कोई सन्तान नहीं थी--उस ने उस संत को उठाकर घोड़े पर लाद कर अपने राज्य में ले गया था-

संत चन्द्रहास का अपने बालक की भांति लालन-पोषण करने लगा—यह संत का चमत्कार था कि वह फिर से राजकुमार बन गया-राजा ने अपने राज्य का भार भी उस युवक संत चन्द्रहास पर छोड़ रखा था-चन्दनपुर का राजा कुन्तनपुर के राजा को दश हजार स्वर्ण मुद्रायें प्रति वर्ष देता था-अब कुन्तलपुर का मन्त्री जब चन्दनपुर के राजा से कर लेने आया तो क्या देखता है कि यह तो वही संत चन्द्रहास कुन्तलपुर के राजा का राजकुमार है-यह देख कर मन्त्री बहुत व्याकुल हुआ—

मन्त्री ने एक पत्र लिखा और उस युवराज से कहा कि मेरे को तो कुन्तलपुर कुछ दिनों बाद जाना है, अतः आप यह मेरा पत्र जो बहुत आवश्यक है मेरे लड़के मदन के ही हाथ में देना-उसने स्वीकार कर लिया था-संत चन्द्रहास घोड़े पर चढ़ कर कुन्तलपुर के लिए रवाना हो गया था-मार्ग में संत चन्द्रहास ने तालाब के पास उतर कर पानी पिया और उस बाग में एक वृक्ष के नीचे थोड़ी देर के लिए सो गया उसी समय मन्त्री की कन्या विषया भी उसी बाग में आई हुई थी- उसने जब एक सुन्दर युवक को सोते हुए देखा तो मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि प्रभू मेरा यही पति बने-उस

राजकुमार के हाथ में एक पत्र देखा–धीरे-धीरे वह पत्र उसके हाथ से निकाल कर पढ़ लिया –

उसमें लिखा था कि यह संत चन्द्रहास युवक राजकुमार आ रहा है–प्रिय बेटा मदन इस को आते ही विष दे देना, भूल न हो मैं कुछ दिनों बाद आऊंगा–अब पत्र को पढ़ कर उस कन्या को बड़ा कष्ट हुआ–उसने सोचा कि मेरे पिता जल्दी के कारण विष के आगे एक "या" का अक्षर लिखना भूल गया है, अतः उसने एक तिनका उठा लिया और आंख के काजल से उसे काला किया, और जहां विष लिखा था उसे "विषया" बना दिया –

पुन;वह पत्र संत चन्द्रहाप के हाथ में ज्यों का त्यों रख कर चली गयी–जब संत चन्द्रहाप निद्रा करके उठा तो वह शीघ्रता पूर्वक मन्त्री के घर गया और उसके पुत्र मदन को यह पत्र दे दिया था—पुनः मदन ने पिता का पत्र पढ़ कर ब्राह्मणों को बुलाकर उसका विवाह करवा दिया था—

मन्त्री जब तीन दिन बाद घर आया तो यह देख कर चकित रह गया–यह था उस संत चन्द्रहास का चमत्कार जो उसे विष की जगह कन्या विषया मिल गयी थी–परन्तु मन्त्री को और भी क्रोध हो गया था—उसने सन्त चन्द्रहास को मारने की योजना सोच ली थी–एक पर्वत पर एक देवी का मन्दिर था–उसने उस मन्दिर के पुजारी से कहा कि आज जो कोई युवक देवी की पूजा के लिए आवे उसे मार देना –मैं आपको बहुत धन दूंगा—

पुजारी ने स्वीकार कर लिया था—अब मन्त्रि वो संत चन्द्रहास जो उसका दामाद था को कहा कि हमारे यहां यह मर्यादा है कि जो विवाह करता है वह पहले इस पर्वत के ऊपर जो देवी का मन्दिर है उसकी पूजा करता है—अतः यह थाली है इसमें पुष्प-गन्ध धूप नैवेद्यादि हैं आप जाकर देवी की पूजा कर आवें-संत चन्द्रहास पूजा की थाली लेकर मन्दिर में जा रहा था कि मार्ग में उसे मन्त्रि का पुत्र मदन मिला—जब उस ने सुना कि सन्त चन्द्रहास पर्वत पर देवी की पूजा करने के लिए जा रहा है—उसने कहा कि आपको तकलीफ होगी आप पूजा की थाली मुझे दें मैं आपकी जगह पूजा कर आता हूं आप आराम करें—

अतः वह पूजा की थाली लेकर मंदिर में गया तो पुजारी ने उसका वध कर दिया—कुछ देर बाद मन्त्रि ने देखा कि संत चन्द्रहास तो यहां पर है—उसने पूछा कि आप मन्दिर में पूजा करने क्यों नहीं गये ? उसने कहा कि मैं जा रहा था कि मार्ग में मुझे मदन मिला, उसने कहा कि आप क्यों तक-लीफ करते हो, थाली मुझे दो मैं ही मन्दिर में जाकर पूजा कर आता हूं—यह सुनकर मंत्रि के होशो हवास उड़ गये—उसने समझ लिया कि आज मेरा पुत्र मारा गया—वह बहुत पछताया और व्याकुल हुआ—अब उसने अपने दमाद से प्रेम किया और उसको ही राजा की गद्दी पर बैठाया—

यह सन्त चन्द्रहास का चमत्कार था—इसलिए कहा गया है कि "जाको राखे साईयां मार सके न कोय"—अन्त में वह ही राज गद्दी पर बैठा था—

॥ इति श्री ॥

संत अनसूईया

सन्त अनसूईया के पति का नाम ऋषि अत्रि था। उसके पिता का नाम ऋषि कर्दम था और उसकी माता का नाम देवहूति था। उसकी माता के पिता का नाम स्वायम्भु मनु था। माता देवहूति के छोटे भाई कपिल मुनि थे। भारत वर्ष में सती साधवी स्त्रियों में सन्तनी अनसूईया का स्थान बहुत ऊंचा था। उनका जन्म उच्चकुल में हुआ था। सन्तनी अनसूईया में सत-धर्म-शील-सदाचार-लज्जा-क्षमा और तपस्यादि सदगुणों का स्वाभाविक रूप से विकसित था। पति की सेवा को ही यह नारी के लिये परम कल्याण का साधन मानती थी। सन्त अनसूईया ने अपने पतिव्रत के चमत्कार से ही ब्रह्मा विष्णु तथा शिव को शिशु बनाकर गोद में खिलाया था।

एक दिन की बात है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव ने सोचा कि मृत्यु लोक में इस समय सती सन्तनी अनसूईया की बहुत प्रशंसा हो रही है। अतः वे तीनों ब्राह्मण का रूप धारण करके सन्त अनसूईया के पास आये और उसके पतिव्रत की परीक्षा लेनी चाही। तीनों ने द्वार पर आकर अलख जगाई। सन्त अनसूईया ब्राह्मणों को अन्न देने के लिये आई। तब तीनों ब्राह्मणों ने कहा कि हम अन्न का दान तब लेंगे जब आप हम को अन्न बिना वस्त्र धारण करके देगी यानि बिल्कुल नग्न होकर वस्त्रहीन होकर दान दोगी। वरना हम खाली चले जायेंगे।